क्षत्रिय इतिहास

तथा

वैवाहिक प्रथादर्पण

प्रकाशकः—

रामरक्खा मल्ल कपूर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वंदे कृष्णं जगद्गुरुम्।　　नमामि रामं रघुवंश नायकम्।

क्षत्रिय इतिहास

लेखक—स्वर्गीय पण्डित राजाराम जी
प्रोफ़ैसर डी० ए० वी० कालिज लाहौर

तथा

वैवाहिक प्रथादर्पण

श्री पं० भक्तराम शर्म्मा, झीङ्गण

प्रकाशक—

रामरक्खा मल्ल कपूर
मन्त्री—क्षत्रिय सभा लाहौर।

Ac. Gunratnasuri MS　　Jin Gun Aradhak Trust

सर्वाधिकार सुरक्षित है ।

प्रकाशक

रामरक्खा मल्ल कपूर, मन्त्री—क्षत्रिय सभा लाहौर ।

सम्वत् २००७ वि० माघ प्रविष्ट २ सोमवार तदनुसार १५ जनवरी १९५१ को प्रकाशित हुआ ।

द्वितीयावृत्ति १०००   मूल्य–जाति सेवा और प्रेम

मुद्रक—भक्तराम शर्म्मा

चमन प्रिन्टिंग प्रेस गली कैंत वाली पहाड़ गंज देहली ।

Ac. Gunratnasuri MS   Jin Gun Aradhak Trust

क्षत्रिय इतिहास की विषय सूची

विषय	पृष्ठ
क्षत्र और क्षत्रिय	२
क्षत्रियों का ब्राह्मणों से सम्बन्ध	४
प्राचीन क्षत्रिय वंश	६
वर्तमान क्षत्रियों का प्राचीन क्षत्रिय वंशों से सम्बन्ध	४८
मलहौत्तरे	५०
कपूर	५३
खन्ने	५५
अपने नाम का परिवर्तन प्रधान शाखाओं ने किया	६०
सेठ	६२
चारजाति क्षत्रियों के गोत्रों का निर्णय	६४
कपूरों का कौशिक गोत्र	७८
खन्नों का कौत्स गोत्र	८४
मिहिरों का कौशल्य गोत्र	८७
गोत्र भूल जाने पर, कौनसा गोत्र उच्चारण करना चाहिये	९२
क्षत्रियों के गोत्र, पुरोहित, और कुलदेवता की सूची	९४
प्रचलित कथाएँ	९७
खखुरायण बरादरी का वर्णन	१०२
सरीन बरादरी का विशेष वर्णन	१०६
व्यवस्था म० महोपाध्याय मथुराप्रसाद दीक्षित जी की	१०८
व्यवस्था म० म० माधव शास्त्री भाण्डारी	१०९
इतिहास बाबा लालू जसराज जी	११०
अरदास बाबा लालू जसराय जी	१३०
विवध जातियां	१३१
पुरोहित और यजमान का अटूट सम्बन्ध तथा सेठों का "फाल्गुण अवारण"	१४२

Ac. Gunratnasuri MS   Jin Gun Aradhak Trust

वैवाहिक प्रथादर्पण की विषय सूची

विषय	पृष्ठ
प्रथा चाकरी	१
प्रथा पैर पाना	२
प्रथा सगन देना	५
,, पूज की चाकरी	८
,, फेरा भेजना	९
,, पूज	१०
,, जोड़े का मेचा	१७
,, टिक्का	१९
,, ढंग मिलनी हलूफ़ा	२५
,, सरोड़ा	३२
,, छन्ननियां	४३
,, पीड़ी पूजा	५४
,, फुल्ल क्ढ़ाई, मांयां, शान्ति, और मण्डल	६६
,, कवार धोती	९५
,, वैण्डा	१०९
,, घोड़ी	११४
,, छन्ननियां भरना और शकुन करना	१३४
विवाह संस्कार	१४७
चतुर्थी कर्म	१७९
प्रथा वेद करते	१८२
,, सत्तो हूरा	१९४
,, जनानी मिलनी	१९८
,, काण्डा	१९९
बुंजाहियों की वैवाहिक प्रथाएँ	२०१
दिल्ली वाले चारजाति क्षत्रियों की प्रथाएँ	२०४

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रामरक्खामल्ल कपूर मन्त्री—क्षत्रिय सभा लाहौर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भूमिका

इस पुस्तक का आरम्भ करने से पेश्तर (पूर्व) जाति-भाईयों की आगाही के लिए यह अर्ज़ करना आवश्यक जान पड़ता है कि सन् १६२५ ईस्वी में स्वर्गीय ऑनरेबल राय बहादुर लाला रामसरण दास साहिब रईस आज़म लाहौर ने इस अमर का इज़हार किया कि चार जाति बरादरी जो समस्त क्षत्रियों में शिरोमणि मानी जाती है, इस की तीन जातियों अर्थात् मिहिरोत्तरे, कपूर, और खन्नों का एक ही गोत्र 'कौशल्य' कहा जाता है, और इन तीनों के विवाहादि कार्यों पर भी इसी एक गोत्र का उच्चारण किया जाता है' जो कि धर्मशास्त्र के खिलाफ़ (प्रतिकूल) और दूषित माना गया है, और साथ ही कहा कि अगर चारजाति क्षत्रिय अपने इस छोटे दायरे को तोड़ कर सब क्षत्रियों के साथ विवाह सम्बन्ध करना शुरू कर दें तो उनका यह दोष दूर हो सकता है।

चुनाचे इस विषय पर तहक़ीकात (अन्वेषण) करने से जान पड़ा कि वाकई (वास्तव) में एक गोत्र में विवाह सम्बन्ध करना शास्त्र के विरुद्ध है। इस पर चारजाति बरादरी के मान्यवर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुरोहितगणों की सेवा में प्रार्थना की गई कि वह कृपा करके इस ओर ध्यान दें और गोत्र निर्णय करके चारजाति बरादरी में से इस दोष को जो यजमान और पुरोहित दोनों को कलंकित कर रहा है, दूर करने का प्रयत्न करें किन्तु सफलता न हुई, और केवल यह कह कर टाल दिया गया कि परमपरा से ऐसा ही चला आ रहा है, इस लिए इस का कोई दोष नहीं।

इसपर लाला गणपत राम जी कपूर बैंकर आफ़ मैसर्ज़ भगवन्ता मल्ल नत्थू मल्ल औफ़ लाहौर ने जो धर्म मर्यादा को जानने वाले हैं, इस विषय पर कई एक धर्मशास्त्रों का मुतालय किया और इस विषय में बहुत प्रमाणों का संग्रह करके स्वर्गीय श्री पण्डित राजा राम जी प्रोफ़ैसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर की सेवा में अर्पण कर दिया जिन्हों ने इस संग्रह की छान बीन करते हुए एक मनोहर पुस्तक "क्षत्रिय इतिहास, व चारजाति गोत्र निर्णय" नामक लिखकर कृतार्थ किया। और इस के साथ ही वैदिक प्रमाणों की पुष्ठि के लिए उच्च कोटि के विद्वानों अर्थात् महामहोपध्याय श्री पण्डित मथुरा प्रसाद जी दीक्षित साहित्याचार्य्य, विद्यावारिधि, राज गुरु सोलन नरेश, व महामहोपाध्याय श्री पण्डित माधव जी शास्त्री भाण्डारी, व्याकरणाचार्य्य वेदान्ताचार्य्य, साहित्यतीर्थ, मीमांसातीर्थ, प्रधानाध्यापक औरयण्टल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कालेज लाहौर से उक्त पुस्तक पर व्यवस्था लेकर दानवीर भाई लाला हेमराज जी मिहिरोत्तरा लून वाला ठेकेदार रेलवे, व लाला गणपत राम जी कपूर की मुशतरका (सम्मिलित) आर्थिक सहायता से हिन्दी भाषा में छपवा करके जाति भाईयों की सेवा में बिना मूल्य तकसीम की गई। क्योंकि उस समय बहुत से भाईयों को अपनी मातृभाषा का ज्ञात न था, इस लिए सन् १६३६ ईस्वी में उसी आधार पर प्रश्नोत्तर रूप में उर्दू लिपि की एक पुस्तक स्वर्गीय राय बहादुर लाला बिंदासरण मिहिरो-त्तरा ऐम० एल० ए० लाहौर की आर्थिक सहायता से छपवाकर बांटी गई, इसके बाद सन १६४० ईस्वी में जाति भाईयों के लाभ के लिए "वैवाहिक प्रथा दर्पण" नामक एक पुस्तक हिन्दी लिपि और उर्दू लिपि में लेखक' जाति के प्रसिद्ध कर्मकाण्डी पुरोहित श्री पण्डित भक्त राम जी झींगण औफ़ लाहौर—जाति भूषण लाला भगवान दास जी मिहिरोत्तरा लूनवाला औफ़ मैसर्ज़ धनी राम ऐण्ड सन्ज़ हार्डवेयर मर्चैंटस अनारकली लाहौर की आर्थिक सहायता से छपवा कर वसीय पैमाना (बहु संख्या) पर बिना मूल्य तकसीम की गई किन्तु मांग बढ़ती ही गई।

अब च्यूंकि भारतवर्ष के मनहूस बटवारा की रू से बेघर होकर आए भाईयों को अपने वंश, और रस्मोरिवाज का ज्ञान नहीं रहा और उन की दर्द भरी आवाज में प्रायः यह कहते हुए सुना गया है कि—

Ac. Gunratnasuri MS   Jin Gun Aradhak Trust

बताएं किस जगह पर है, निशाने बे निशां अपना ।
जहां बिस्तर जमाया, वहीं समझो मकां अपना ।

इस स्वतंत्रता के समय क्षत्रियों की इतिहासिक वंशावलि और धार्मिक रस्मोरिवाज के लोप हो जाने से क्षत्रिय जाति के नेस्तो नाबूद (लोप) हो जाने का भी अन्देशा प्रतीत हो रहा है। इस लिये जाति की प्राचीन प्रभुता और इस के रवायती (इतिहासिक) कारनामों को बरकरार (स्थिर) रखने के लिये उसी आधार पर मातृभाषा हिन्दी लिपि में चारजाति बरादरी के दान वीर भाईयों की आर्थिक सहायता से दोनों पुस्तकों का दूसरा ऐडीशन जिस में क्षत्रिय इतिहास और विवाह संस्कार (जो कि गृहस्थाश्रम का एक प्रधान अंग है) का विस्तृत वर्णन करके छपवाने का प्रबंध किया गया है। जिस में क्षत्रियों के मूलवंश और आदि पुरुषों का भली भान्ति ज्ञान हो सकता है, और वैवाहिक प्रथाओं का शास्त्रीय आधार पर होना सिद्ध किया गया है। आशा है कि जाति इस से लाभ उठाएगी।

इस मौकय (समय) पर यह बात काबिले ज़िकर (विशेष वर्णनीय) है कि संवत् १३४० विक्रमाजीत में जब शाह इलाउद्दीन ख़िलजी ने ओदर मल सक्का क्षत्रिय की सम्मति से जो उस समय दिवान शाही था, क्षत्रियों की एक धार्मिक रस्म को शरा इस्लाम अनुसार बदलने का फ़रमान जारी किया तो पंजाब के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नामवर क्षत्रियों अर्थात् मिहिरोत्तरा, कपूर, खन्ना; वा सेठ इन चारजातियों ने परस्पर विचार करके फ़रमान शाही की कबूलियत से इन्कार का हलफ़ लेकर बाहमी ऐहदो पयमान (प्रतिज्ञा) किया कि अगर बादशाह ज़बरदस्ती करेगा तो हम जान दे देंगे, मगर इस फ़रमान (आज्ञा) को कबूल नहीं करेंगे। इस के बाद मुख़्तलिफ़ मुकामात के तमाम क्षत्रिय देहली पहुंच कर इस ऐहदो पयमान में शामिल हो गये और नतीजा (फल) यह हुआ कि जब सब क्षत्रिय मिलकर दरबार में हाज़िर हुए तो बादशाह ने कसरत नराज़गी (बहुमत विरोध) के कारण अपना हुकम वापिस कर लिया, और फर्माया कि जैसी आप की इच्छा हो वैसा ही करो। जब बादशाही हुकम सुन कर फ़तेयाबी प्राप्त हुई तो उस दिन से इसी कारण ऊपर लिखित चार जातों ने सफलता के लिये अव्वल कदम उठाया था इस लिये समस्त क्षत्रियों में ऊंचे माने गये। और उन्हों ने 'कम खर्च बाला नशीं' के सुनैहरी सिद्धांत को अपना कर बहुत समय तक अपनी उच्चता को स्थिर रखा और अपने ही दायरा में विवाह सम्बन्ध करते रहें। इस में कुच्छ संदेह नहीं कि इस फ़तहयाबी का सेहरा चारजाति बरादरी के सिर पर है, लेकिन दरहक़ीकत समस्त क्षत्रिय शास्त्रानुकूल बराबरी का दर्जा रखते हुए एक ही बरादरी कहलाने के हकदार हैं। क्योंकि इस घटना से पहले प्राचीन काल में क्षत्रियों की कोई दर्जाबंदी न थी और इस पर विशेष

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ध्यान दिया जाए तो यह विजय प्राप्त महज़ (केवल) संगठन और परस्पर प्रेम का ही परिणाम है। लेकिन आज कई अन्य कारणों के अतिरिक्त समय के प्रभाव से क्षत्रिय जातियों ने अपने २ दायरे को फैलाकर परस्पर विवाह सम्बन्ध करने शुरू करदिये हैं, इस लिये चारजाति क्षत्रियों की प्रथाओं के साथ ही अन्य क्षत्रिय बरादरियों के लाभ के लिये प्रथाओं का संक्षेप से वर्णन किया गया है, जिससे लाभ हो सके।

लेकिन अब ज़माने के थपेड़ों और कलियुग के प्रभाव से क्षत्रिय जाति का शिराज़ा (शृंखला) बिखड़ा हुआ दिखाई दे रहा है। नीज़ यह कि क्षत्रियों की धार्मिक मर्यादा नष्ट भ्रष्ठ होती चली जा रही है और वैदिक संस्कारों की अदायगी में ऋषियों के बतलाये हुए धर्म मार्ग पर चलने की बजाय तरह तरह के ढोंग रचा कर धर्म की पवित्रता को कलंकित किया जा रहा है। बल्कि यहां तक कि इस भयानक समय में जब कि चारों तरफ़ मुसीबत के बादल मण्डला रहे हैं। परमात्मा की महान् शक्ति को भूल कर मन मानी कारवाइयां की जा रही हैं, और अगर इस पर विचार किया जाय तो दरअसल यही हमारे वर्तमान दुःखों और अशांति का कारण है, जो हमें ज़ाहरी आंखों से न दिखाई देने वाली महान् शक्ति की तरफ़ से कई एक रूप में बतौर दण्ड मिल रहा है। चुनाचे इस सम्बन्ध में दानाओं का कथन है—कि जिस तरह कोई दरख्त बगैर जड़ के और कोई मकान बगैर बुनयाद के कायम नहीं रह सकता, उसी तरह कोई कौम बगैर धर्म

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संस्कार और प्रभु भक्ति देर तक जिंदा नहीं रह सकती। खासकर क्षत्रियों को तो भगवान "रुद्र" (जिनका वर्णन यजुर्वेद के सोलहवें अध्याय में आया है) और शक्ति की उपासना करनी चाहिये, जो भारतवर्ष को स्वतन्त्र रखने के लिये शक्ति प्रदान करें।

पस मैं कौम का एक अदना सेवक होने का दम भरता हुआ कौम की तवज्जा (ध्यान) इस तरफ़ दिलाना चाहता हूं कि ऐ कौम! आज तेरे सैंकड़ों बच्चे तेरी गोद से निकल कर गैरों की गोद में चले जा रहे हैं। बेज़बान अबलाएं ज़ालिमों के ज़ुल्म से तंग आकर विलाप करती हुई दिखाई दे रही हैं, और खानदानों के खानदान इस हालत में भी ऐशप्रस्ती और फ़र्ज़ी जाओजलाल (झूठा दिखावा) की धुन में हज़ारों रुपये खर्च करते हुए बरबाद होते चले जा रहे हैं। गर्ज़िए कि आज तेरी किशती गर्दाबेफ़ना (विध्वंस की ओर) बहती चली जा रही है, और तू गहरी नींद में सोई हुई उठने का नाम तक नहीं लेती, जिस से मालूम होता है, कि अब तेरी ज़िंदगी के थोड़े दिन बाकी रह गये हैं। क्योंकि इन्कलाबे ज़माना ने तेरी सूरत ऐसी बदल दी है कि तुझ को असली हालत पर लाना इन्सानी ताकत से बाहर है। और अब तेरी बिगड़ी को ईश्वर ही बनाए तो बनाए वरना और कोई चारा नहीं है। हां! अगर कोई उपाय हो सकता है, तो सिर्फ़ यह कि हम अगाध श्रद्धा और प्रेम से पूर्ण पुरुष परमात्मा और अपने प्राचीन बुज़ुर्गों का जिन्होंने धर्मबल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तपोबल, और त्यागबल से मौत को भी जीत लिया था सहारा लेकर मैदाने अमल में आएं और संगठित होकर प्राणपन से क्षात्रधर्म का पालन करते हुए, शास्त्रानुकूल देश और जाति की रक्षा का प्रयत्न करके यह साबत करदें कि भारत वर्ष को पवित्र भूमि में असल नसल क्षत्रियों का खून आज तक दौरा कर रहा है। बस इसी में कल्याण हैं। आशा है कि कौम इस पर खास तवज्जा देगी।

अब मैं समस्त भाइयों का जिन की आर्थिक सहायता से मुझे इस पुस्तक को प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, दिल से शुकरिया अदा करता हूँ, और मेरी प्रार्थना है कि ईश्वर उन को इस जाति भक्ति और प्रेम का शुभ फल प्रदान करें।

आखिर में मैं श्री पण्डित भक्तराम जी झींगण का जिन्हों ने इस नाजुक समय में बिलामुआवजा (निशुल्क) अपना कीमती समय देकर पुरोहितपन को सार्थिक करते हुए हमारी रहनुमाई की हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। और साथ ही मैं लाला गणपत राम जी कपूर व चौधरी हरिचन्द जी खन्ना का जिन्हों ने इस पुस्तक के प्रकाशित करने में प्रेम पूर्वक मेरी सहायता की कृतज्ञ हूं।

जाति सेवक—रामरक्खामल्ल कपूर
मन्त्री—क्षत्रिय सभा; लाहौर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्वर्गीय श्री पं० राजाराम जी प्रोफैसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

ॐ स्वास्ति श्री गनेशाय नमः

गजाननं भूतगनादि सेवितम्,
कपित्थजम्बू—फलचारु—भक्षकम् ॥
उमासुतं शोक विनाशकारकम्,
नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥ १ ॥

मंगलं भगवान् विष्णुः मंगलं गरुड़ध्वजः ।
मंगलं पुण्डरीकाक्षः मंगलायतनोहरिः ॥ २ ॥

क्षत्रिय इतिहास

गोत्र निर्णय, तथा वैवाहिक प्रथा दर्पण

सामस्त संसार में यह बात मानी हुई है कि भारतवर्ष समस्त संसार का गुरु था, और यहां से ही सब लोग शिक्षा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ग्रहण करते थे जैसा कि मनुस्मृति में लिखा है—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः ।
स्वं स्व चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥अ०२।२०

अर्थात्—इस आर्यावर्त्त के ब्राह्मणों से समस्त संसार के लोग विद्या ग्रहण करते थे ।

इस से स्पष्ट है कि सभी लोग भारतवर्ष से ही शिक्षा ग्रहण करते थे। किन्तु आज के भारतवर्ष को देखकर दुःख होता है कि शिक्षा देना तो कहां आवश्यक वस्तुओं के लिये भी दूसरे देशों की ओर देखना पड़ता है।

समस्त संसार का गुरु भारतवर्ष आज विद्या में सब से पीछे है। भगवान् की कृपा से अब जो शताब्दियों बाद स्वतंत्रता प्राप्त हुई है भगवान् करे कि देश अपनी भूलों को सुधार कर पहले से भी अधिक उन्नति प्राप्त करे और समस्त संसार अपने कल्याण के लिये भारतवर्ष की ओर देखे।

क्षत्र और क्षत्रिय

क्षत्र उस शारीरिक बल का नाम है, जिस से एक वीर योद्धा दुष्टों का दमन कर के श्रेष्ठों की रक्षा करता है। अथवा उस प्रचण्ड तेज का नाम है, जो दुष्टों के दमन और श्रेष्ठों के परित्राण में दीक्षित शूरवीर के चेहरे पर ऐसा उग्ररूप धारण किये रहता है, कि दूसरे उसकी ओर आँख उठा कर देख नहीं सकते। इस बल के धारण करने से ही मनुष्य मनुष्यों पर शासन करने के योग्य होता है। अत एव दूसरे शब्दों में शासन-बल को ही क्षत्र बल कहते हैं। दस्यु भी बड़े बली और साहसी होते हैं पर उनका बल क्षत्र नहीं कहला सकता प्रत्युत वह क्षत्रबल का विरोधी है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उस बल को दमन करने वाला बल ही क्षत्रबल है। इस बल के धारने वाले को क्षत्रिय कहते हैं। सच तो यह है कि क्षत्रिय क्षत्र का ही रूप होता है, इसलिए उसे क्षत्र भी कहते हैं ब्राह्मण-ग्रन्थों में क्षत्र का स्वरूप इस प्रकार वर्णन किया है।

क्षत्रस्य वा एतद् रूपं यद् राजन्यः।

(शतपथ ५।१३।१।५।३)

क्षत्र का यह सचमुच रूप है जो क्षत्रिय (राजन्य) है

क्षात्रस्यैतद् रूपं यद् हिरण्यम्।

(शा०५।१३।२।२।१७)

क्षत्र का यह रूप है, जो सुवर्ण है, (अर्थात् धातुओं में सुवर्ण क्षत्र का रूप है—मनुष्यों में जिसका बल कुन्दन सोने की तरह निर्दोष होकर चमकता है' वही क्षत्रिय है)

क्षत्रᳪ हि ग्रीष्मः। (शा० २।१।३।५)

क्षत्र है ग्रीष्म ऋतु [ऋतुओं में प्रचण्ड तेज वाली गीरष्म ऋतु क्षत्र का रूप है। मनुष्यों में जिसके प्रचण्ड तेज के सम्मुख दूसरों का तेज फीका पड़ जाता है वही क्षत्रिय है]।

क्षत्रं हि राष्ट्रम्। (ऐत० ७।२२)

क्षत्र ही राज्य है [क्षत्र के अधीन ही राज्य की स्थिति है] इत्यादि प्रमाणों से सिद्ध है कि जो क्षत्ररूप है दुष्ट का दमन और श्रेष्ठों का परित्राण करने की सामर्थ्य रखता हैं वही सच्चा क्षत्रिय है।

ब्राह्मणानां क्षतात् त्राणात् ततः क्षत्रिय उच्यते

(महा० १२।५)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ब्राह्मणों को क्षत [चोट हानि] से बचाने से क्षत्रिय कहलाता है।

क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः। राज्येन किं तद् विपरीत वृत्तेः प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा॥ (रघुवंश० २।५३)

क्षत से बचाता है इसलिए क्षत्र का ऊंचा शब्द जगत् में प्रसिद्ध हो रहा है। जो इस से उलटा चलने वाला है, उस को राज्य से वा निंदा से मलीन हुए प्राणों से क्या लाभ ?

क्षत्रियों का ब्राह्मणों से सम्बन्ध।

क्षत्रिय, जो कि जाति और देश की रक्षा में दीक्षा लिए होते हैं, उनको ऐसे नेताओं की आवश्यकता है' जो विद्या-बल और आत्म-बल में सब से आगे बढ़े हुए हों, जो इन क्षत्रियों को ऐसे पथ पर ले चलें जिससे वे अपने रास्ते में आने वाले विघ्नों सङ्कटों और शत्रुओं पर विजय पाते हुए सदा बढ़ते रहें। उन का योगक्षेम सदा बढ़ता रहे। जाति और देश में शान्ति बनी रहे और पुष्टि होती रहे। ऐसे नेता ब्राह्मण थे जो शान्तिक और पौष्टिक (शान्ति रखने वाले और पुष्टि देने वाले) कर्मों की दिव्य और मानुष दोनों प्रकार की विधियों को जानते थे। जिनमें विद्या-बल और आत्म बल परिपूर्ण होता था। इन दोनों वर्णों के मेल से क्षत्र-तेज और ब्रह्म-तेज दोनों मिल कर एक कार्य के साधक होजाते थे। और इस बात को पूरी तरह जान लिया गया था कि दोनों के मिलाप में ही दोनों की अपनी भलाई भी है और देश और जाति की समृद्धि भी है। जैसा कि शास्त्र का शासन है

तद्यत्र ब्रह्मणः क्षत्रं वशमेति तद्राष्ट्रं समृद्धं तद्वीरवत्

ऐ० ब्रा० ८। ९

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अत एव जहां क्षत्र ब्रह्म के अधीन रहता है वह राष्ट्र समृद्ध होता है वह वीरों वाला होता है।

अभिगन्तैव ब्रह्मकर्ता क्षत्रियः।

(शत० ब्रा० ४।१।४।१)

पहुँचने वाला ब्राह्मण होता है और करने वाला क्षत्रिय होता है।

एतद्धत्वेवानवक्लृप्तं यत् क्षत्रियोऽब्राह्मणो भवति तस्मादु क्षत्रियेण कर्म करिष्यमाणेनोपसर्त्तव्य एव ब्राह्मणः।

(श० ब्रा० ४।१।४।६)

यह पूर्ण समर्थ नहीं होता है जब कि क्षत्रिय बिना ब्राह्मण के होता है अतएव कर्म करना चाहते हुए क्षत्रिय को ब्राह्मण के साथ मिलकर ही करना चाहिये।

राजा के विषय में कहा है—

क्षत्रियोऽजनि विश्वस्य भूतस्याधिपतिरजनि विशामत्ताऽजन्यमित्राणां हन्ताऽजनि ब्राह्मणानां गोप्ताऽजनीति

(ऐ० ब्रा० ८।१७)

तू क्षत्रिय बना है सारे लोगों का अधिपति बना है प्रजाओं से कर (टैक्स) लेनेवाला बना है शत्रुओं का मारने वाला बना है और ब्राह्मणों का रखवाला बना है।

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना॥

(यजु० २०।२५)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जहां ब्रह्म और क्षत्र दोनों पूरे २ साथी बनकर चलते हैं उस देश को मैं पुण्यदेश जानता हूं जहां देवता अग्नि के साथ हैं(अर्थात् द्विज सब अग्निहोत्री हैं)

भगवान् मनु बशिष्ठ और गौतम का भी यही उपदेश है:—

नाब्रह्म क्षत्रमृध्नोति नाक्षत्रं ब्रह्म वर्धते ।
ब्रह्मक्षत्र च संयुक्तमिह चामुत्र वर्धते

(मनु० ९।३२२)

न क्षत्र बिना ब्रह्म के बढ़ता है, और न ही ब्रह्म विना क्षत्र के बढ़ता है, ब्रह्म और क्षत्र मिला हुआ लोक परलोक में बढ़ता है ।

सो यह निश्चित सिद्धान्त हैं कि ब्रह्म और क्षत्र इन दोनों के मेल में ही उनकी अपनी और राष्ट्र की वृद्धि होती है । अतएव क्षत्रियकुलों और ब्राह्मणकुलों का सम्बन्ध अटूट सम्बंध रहा है राजाओं के मंत्री ब्राह्मण होते थे । और कोई भी क्षत्रिकुल बिन पुरोहित के नहीं होता था । और पुरोहित भी प्रायः कुलपरम्परा से ही होते थे । पुरोहितकुल अपने याज्य कुलो में क्षत्रतेज को प्रज्वलित रखने और उनको धर्म और ऐश्वर्य के मार्ग पर चलाने की जम्मावारी अपने ऊपर लेते थे। साक्षात् वेद भगबान् के वचनो में पुरोहित कहलाने का उसको अधिकार हैं जो निम्न वाक्यों को कहने और सार्थक कर दिखलाने का अपने अन्दर आत्मबल रखता है—

सꣳ शितं मे ब्रह्मसꣳ शितं वीर्यं वलम् । सꣳ
शितं क्षत्रं जिष्णु यस्याहमस्मि पुरोहितः ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उदेषां बाहू अतिरमुद्वर्चो अथो बलम् । क्षिणोमि ब्रह्मणाऽमित्रानुन्नयामि स्वाँ अहम् ॥

(यजु ११।८१—८२)

मेरा ब्रह्मबल तीव्र है मेरी इद्रिय शक्ति और शारीरिक बल तीक्ष्ण हैं मैंने उस क्षत्र को तीक्ष्ण और जय शील बना दिया है जिसका मैं पुरोहित (नेता) हूं ।।८१।।

मैंने इनकी भुजाओं को ऊंचा उठा दिया है इनके तेज और बलको ऊंचा कर दिया हैं । मैं अपने ब्रह्मबल से शत्रुओं को नीचे गिराता हूँ और अपनों को ऊंचा उठाता ।

तीक्ष्णीयांस परशोरग्नेस्तीक्ष्णतरा उत ।

इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहितः ॥

(अथ० ३।१९।४)

वे कल्हाड़े की धार से ज्यादा तीक्ष्ण हैं और अग्नि से बढ़कर तीक्ष्ण है, हां, वे इन्द्र के वज्र से भी बढ़कर तीक्ष्ण हैं, जिनका मैं पुरोहित हूं ।

पुरोहित कुलका याज्यकुल की ओर यह जो पवित्र कर्तव्य है इसका पालन ही पुरोहितकुल और याज्यकुलका सम्बन्ध स्थिर कर देता था । जहां जिन क्षत्रियो का पुरोहितों से सम्बन्ध टूटा वहीं वे जातियें वृषल हो गई ।जैसा कि कहा है—

शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः ।

वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेनच । पौण्ड्रका

श्चौड्रद्रविडाः काम्बोजा यवनाः शकाः । पारदाः,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पह्लवाश्चीनाः किराता दरदा खशाः ।

(मनु १०।४३।४४)

संस्कारों के लोप से और ब्राह्मणों के अदर्शन से ये जातियें लोक में धीरे २ वृषल बनगई हैं ।।४३।।

पौण्ड्रक, ओड़, द्रविड़, काम्बोज, यवन, शक, पारद, पह्लव, चीन, किरात, दरद और खश ।

यह क्षत्रबल यदि ब्रह्मबल से हीन न होजाता, तो आज दोनों कितने बढ़े हुए होते। यह क्षत्रबल वा आर्य्यबल (=हिन्दु बल)की बहुत बड़ी हानि हुई है, जिसके जम्मेवार उन क्षत्रियों से भी बढ़कर वे ब्राह्मण हैं, जिन्होंने कि इस जम्मावारी का बीड़ा उठाते हुए कहा था।

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः ।

हम राष्ट्र में पुरोहित होकर सदा जागते रहें ॥

ब्राह्मणों के जागते न रहने से ही यह सब कुछ हुआ। और अब भी जो न्हिदु द्वीपान्तरों में जाकर बस रहे हैं, वे ब्राह्मणों के अदर्शन से अपने स्वरूप को भूलते चले जा रहे हैं । हानि लगातार हो रही है और होती रहेगी जब तक कि ब्राह्मण निद्रा त्याग कर फिर न कहेंगे—

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः ।।

अस्तु, यहां प्रकृत इतना ही है, कि ब्रह्मबल और क्षत्रबल दोनों एक दूसरे के साथी हैं। दोनों की वृद्धि एक दूसरे के सहारे पर है। दोनों के मेल में ही राष्ट्र की वृद्धि है और जहां राष्ट की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वृद्धि है, वही पुण्यभूमि है। जैसा कि पूर्व इस विषय का यह मंत्र दिया है—

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
तं लोकं पुण्य प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना।

प्राचीन क्षत्रिय वंश।

प्राचीन क्षत्रिय वंश जिन की कीर्ति इतिहास पुराणों में गाई गई है प्रसिद्ध तीन हैं—**सूर्य वंश, चन्द्र वंश और अग्नि वंश।**

इन तीन मूल वंशों के वंशजो ने वहुत दीर्घ काल तक आर्यावर्त की भूमी का पालन किया। ये क्षत्रिय उस प्रचण्ड क्षत्र तेज वा क्षत्रवल से देदीप्यमान थे जिस का वर्णन ऊपर आ चुका है और इनके नेता ब्राह्मण उस बर्चस से बर्चस्वी थे जिस वर्णन का पूर्वोक्तउन मन्त्रों में आया है जो अपने यजमानो ओर एक सच्चे पुरोहित का कर्तव्य दिखलाते हैं। इस प्रकार ब्राह्मण और क्षत्र के मेल में [जैसा कि भगवान् वेद का आदेश है—

यत्र ब्रह्मच क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
तं लोक पुण्य प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना) ॥

आर्यावर्त पुण्यभूमि कहलाया।

आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमालयोः

(अमर० २।१।८)

इन प्रतापी राजवंशो के वंशज अपनी कीर्ति बराबर बढ़ाते चले गये। उन में से कई एक प्रतापशाली राजऋषियो के नाम पर नये वंश प्रचलित हुए जो अपना प्रसिध्द नाम अलग रखते हुए भी अपने मूल वंश की एक शाखा ही माने जाते थे जैसे बल्मीकिरामायण से पता लगता हैं कि सूर्य वंश में मनु के पुत्र इक्ष्वाकु से सूर्य वंशियो की दो शाखाएं अलग२ हो गई। एक मुख्य शाखा जो इक्ष्वाकु के बड़े पुत्र विकुक्षि से चली इस की राजधानी अयोध्या थी। दूसरी उप शाखा निमि से चली जो इक्ष्वाकु के दूसरे पुत्रों में से एक था, इस की राजधानी मिथिला थी। यद्यपि यह वंश मूल में सूर्य-वंश ही था, तथापि लोक में 'विदेह-वंश' इस अलग नाम से ही प्रसिद्ध था।

चन्द्रवंश की भी कई उपशाखाएं थी, जिन में से यादव वंश एक बड़ी प्रसिद्ध शाखा थी।

कई युगों तक ये क्षत्रियवंश धर्म से प्रजा का पालन करते हुए अपना यश बढ़ाते रहे। इन की शासन पद्धति प्रजाओ के लिए कितनी उत्तम थी इसकी झलक पुराने शास्त्रो से हमें स्थान २ पर मिलती है। छान्दोग्य उपनिषद् में राजा अश्वपति अपने राज्य प्रबन्ध के बिषय में बतलाते हैं।

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहितग्नि र्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

मेरे देश में कोई चोर नहीं न कोई कदर्य (कंजूष] हैं न कोई मद्य पीने वाला है और न कोई ऐसा पुरुष है, जो अग्निहोत्र न

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करत हो न व्यभिचारी है व्यभिचरिणी तो कहां ?

महाभारत शांतिपर्व में युधिष्ठिर को राजधर्मों का उपदेश देते हुए भीष्म पितामहजी केकयराज के साथ हुई एक घटना का इस प्रकार वर्णन करते हैं–कि

केकयराज जो अपने व्रतो में पक्के थे, एक समय अकेले वन में स्वाध्याय कर रहे थे, कि एक राक्षस ने उन को आकर पकड़ लिया। तब केकयराज ने उसे यह उत्तर दिये—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः ।
नानाहिताग्निर्नायज्वा मो ममान्तर माविशः ॥ ८
नच मे ब्राह्मणो ऽविद्वान् नाव्रती नाप्यसोमपः ।
द्विजातिविषये मह्यं मा ममान्तरमा विशः ॥९॥

(महाभारत शान्ति० अ० ७७) श्लोक ८ से ३५ तक

मेरे देश में न कोई चोर है न कंजूस, न मद्य पीने वाला, न अग्निहोत्रहीन, न यज्ञहीन, अतएव तू मुझे दबा नहीं सकता है ॥८॥ मेरे देश में कोई विद्या हीन, व्रत हीन, और सोम यज्ञों से हीन ब्राह्मण नहीं, अतएव तू मुझे दबा नहीं सकता ॥९॥ मेरी हद के अन्दर दक्षिणाहीन यज्ञ नहीं होते, न कोई व्रतहीन होकर वेदाध्ययन करता है. अतएव तू मुझे दबा नहीं सकता ॥१०॥ मेरे देश में ब्राह्मण छः कर्मों में टिके हुए–पढ़ते हैं, यज्ञ करते हैं, कराते हैं, दान देते हैं और लेते हैं। मुझ से आदर मान पा रहे हैं, उनके योगक्षेम (=जीविकाएं) लगे हुए हैं, दयावान् हैं, सत्यवादी हैं, अतएव तू मुझे दबा नहीं सकता है ॥११-१२॥ मेरे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

देश में क्षत्रिय भुजा की कमाई खाते हैं, मांगते नहीं, देते हैं, पढ़ाते नहीं, पढ़ते हैं, यज्ञ कराते नहीं, करते हैं, ब्राह्मणों की रक्षा करते हैं, रण में कभी पीठ नहीं दिखलाते, सदा अपने कर्तव्य पर स्थित हैं, अतएव तू मुझे दबा नहीं सकता ॥१३-१४॥ वैश्य मेरे देश में खेती, गौओं की रक्षा और बणिज व्यापार में तत्पर हैं, धोखे का उन में नाम नहीं, अप्रमत्त हो कर अपने कर्तव्यों पालन करते हैं शुद्धाचारी हैं, सत्यवादी हैं, दान; मद, शौच और सौहार्द में पक्के हैं, इस प्रकार वे अपने कर्म में आरूढ़ हैं, अतएव तू मुझे दबा नहीं सकता ॥१५–१६॥ मेरे देश में शूद्रजन अपने कर्तव्य पर आरूढ़ हुए, बिना असूया के तीनों वर्णों की सेवा करते हैं, अतएव तू मुझे दबा नहीं सकता है ॥१७॥

मैं स्वयं दीन अनाथ वृद्ध दुर्बल आतुर और स्त्रियों के स्वत्व की रक्षा करता हूँ और अपने पास से उनकी वृत्ति(वज़ीफ़ा) लगा देता हूँ; इस लिये तू मुझे दबा नहीं सकता है ॥ १८ ॥ अपने २ कुलाचार पर ठीक २ चलने वाली सभी जातियों की रक्षा करता हूँ, इस लिये तू मुझे दबा नहीं सकता है ॥ १९ ॥ तपस्वी जन मेरे देश में पूजे जाते हैं और उनकी पालना होती है, सत्कारपूर्वक उन को दिया जाता है, इस लिए तू मुझे दबा नहीं सकता है ॥ २० ॥ मैं बिन बांटे नहीं खाता हूँ, परस्त्री की ओर आँख नहीं उठाता हूँ, प्रभुता (के मद) से मैंने कभी मर्यादा का उल्लङ्घन नहीं किया है, इसलिये तू मुझे दबा नहीं सकता है ॥२१॥ मेरे देश में ब्रह्मचारी न होकर कोई भिक्षा मांगने वाला नहीं, और कोई भिक्षु ऐसा नहीं जो ब्रह्मचर्यवान् न हो, बिना ऋत्विज् कहीं होम नहीं होता है, इसलिए तू मुझे दबा नहीं सकता है ॥ २२ ॥ मैं वैद्यों का, वृद्धों का और तपस्वियों का कभी अपमान नहीं करता हूं, राष्ट्र के सोते हुए मैं जागता हूं, इस लिए

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तू मुझे दबा नहीं सकता ॥ २३ ॥ वेदाध्ययन में सम्पन्न, तपस्वो, सत्य धर्म के जानने वाला बुद्धिमान्, सारे राष्ट्र का स्वामी मेरा पुरोहित है ॥ २४ ॥ मैं दान से, सचाई से और ब्राह्मणों की रक्षा से दिव्य लोकों को चाहता हूं, बड़ों की सेवा करता हूं, अतएव मुझे राक्षसों से भय नहीं है ॥ २५ ॥ मेरे राष्ट्र में कोई विधवा नहीं, ब्राह्मण कोई ब्रह्मबन्धु❀ नहीं, कोई ज्वारिया नहीं, कोई चोर नहीं, कोई अधिकारियों का याजक नहीं, कोई पापकर्मा नहीं, अतएव मुझे राक्षसों से कोई भय नहीं है ॥ २६ ॥ मेरे शरीर में कोई दो अंगुल भर ऐसा स्थान नहीं, जो धर्मार्थ युद्ध करते हुए शस्त्रों से कटा न हो, अतएव तू मुझे दबा नहीं सकता है ॥ २७ ॥ मेरे देश में सब के सब लोग गौ ब्राह्मण और यज्ञों के लिए सदा भला चाहते हैं, इस लिए तू मुझे दबा नहीं सकता है ॥ २८ ॥

राक्षस बोला—जिस राज्य में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र, अपने २ धर्म पर दृढ हैं, वहाँ न अनावृष्टि का भय है, न दुर्भिक्षा, न किसी व्यर्थ झगड़े का ॥ ३३ ॥ जहाँ राजा अपने कर्तव्य पर आरूढ़ है, वहाँ न किसी पर अत्याचार होता हैं, न दिव्य और मानुष उत्पात होते हैं❀ ॥ ३४ ॥ जिस लिए सारी अवस्थाओं में तू अपने कर्तव्य पर दृष्टि रखता है, इसलिए तू भी आनन्द से अपने घर जा और मैं भो आनन्द से जाता हूं ॥ ३५ ॥

इस प्रकार के धर्मराज्य ये क्षत्रिय राजा करते रहे।

❀ ब्रह्मबन्धु, जो ब्राह्मणों के घर जन्मा हो, पर आप ब्राह्मणों के गुण कर्म न रखता हो ।

❀ अग्नि से हानि, जल (अति वृष्टि आदि) से हानि, रोग, दुर्भिक्ष, महामारी ये पांच दैव उत्पात हैं। राज कर्मचारियों से, राजा के मुंह लगों से, स्वयं राजा से, चोरों से और शत्रुओं से हानि ये पांच मानुष उत्पात है ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इतिहास पुराणों से जान पड़ता है, कि क्षत्रिय राज किसी की स्वतन्त्रता नहीं छीनते थे। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी ने जब बालि को मारा, तो राज्य वानरकुलभूषण सुग्रीव को दिया और युवराज बालि के पुत्र अंगद को बनाया, और रावण को मारा, तो राज्य उसी के भाई विभीषण को दिया। स्वतन्त्रता को आर्य राजे जैसा आप प्यार करते थे, वैसा ही दूसरी जातियों के लिए भी समझते थे। महाभारत का यह उपदेश इस बात को पूरा स्पष्ट कर देता है।

सेयं त्वामनुसम्प्राप्ता विक्रमेण वसुंधरा।
निर्जिताश्च महीपाला विक्रमेण त्वयाऽनघ॥ ४२॥
तेषां पुराणि राष्ट्राणि गत्वा राजन् सुहृद्वृतः।
भ्रातॄन् पुत्रांश्च स्वे स्वे राज्येऽभिषेचय॥ ४३॥
बालानपि च गर्भस्थान् सान्त्वेन समुदाचरन्।
रञ्जयन् प्रकृतीः सर्वाः परिपाहि वसुन्धराम्॥ ४४॥
कुमारो नास्ति येषां च कन्यास्तत्राभिषेचय।
कामाशयो हि स्त्रीवर्गः शोकमेवं प्रहास्यति॥ ४५॥
एवमाश्वासनं कृत्वा सर्वराष्ट्रेषु भारत।
यजस्व वाजिमेधेन यथेन्द्रो विजयी पुरा॥ ४६॥

(महा० शां० अ० ३३)

महर्षि व्यासजी युधिष्ठिर को उपदेश दे रहे हैं—

हे निष्पाप! अब यह भूमि अपने पराक्रम से तूने प्राप्त की है, और अपने पराक्रम से तूने राजाओं को जीता है॥ ४२॥ सो

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हे राजन् ! अब अपने सुहृदों सहित उन (विजित राजाओं) के देश और राजधानियों में जा कर [यथाऽधिकार] उनके भाईयों, पुत्रों वा पोतों को अपने २ राज्य में राजतिलक दे ॥ ४३ ॥ हाँ छोटे बालों को भी और गर्भस्थों को भी (अर्थात् गर्भवती रानियों को भी) (राज्यतिलक दे) और बड़े प्रेम भरे वर्त्ताव से सारी प्रजाओं और अधिकारियों को प्रसन्न करता हुआ पृथिवी का पालन कर ॥ ४४ ॥ जिन के कुमार नहीं हैं, वहाँ उन की कन्याओं को राजगद्दी पर बिठला। ऐसा करने से उन की स्त्रियें, जो अपने स्वत्त्व की आशा रखती हैं, शोक त्यागेंगी ॥ ४५ ॥ इस प्रकार हे भारत ! सब राष्ट्रों में आश्वासन (तसल्ली) दे कर फिर अश्वमेध यज्ञ करो, जैसा कि पहले विजयी इन्द्र ने किया था ॥ ४६ ॥

यह कैसा स्पष्ट प्रमाण इस बात का है, कि विजयी क्षत्रिय राजा विजित जातियों की स्वतन्त्रता कभी नहीं छीनते थे। उन के छोटे बच्चों को भी गद्दी पर बिठाते थे, और कुमार न होने की अवस्था में उन की स्त्रियों और कन्याओं को भी राजसिंहासन पर बिठा देते थे, पर किसी जाति की स्वतन्त्रता कभी नहीं छीनते थे।

आर्यों में प्रायः हर एक प्रसिद्ध क्षत्रियजाति का राज्य अपना स्वतन्त्र होता था। छोटी जातियां जो किसी सम्राट के अधीन होती थीं, वे भी कई अंशों में स्वतन्त्रता का सुख उपभोग करती थीं। पर—

"ऐसा को जन्म्यो भव माहिं। प्रभुता पाय जास मद नाहिं"

बहुत दूर चलकर हम यह पाते हैं। कि चन्द्रवंश की **हैहय और तालजंघ** इन दो प्रशाखाओं ने अपनी प्रचीन मर्यादा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का उलङ्घन किया। और यह भाव इनमें सरहद्दी जातियों शक यवन हूण, पारद, पह्लव आदि के संसर्ग से आया। इनके मन में यह धुन समाई, कि दूसरी जातियों पर अपना प्रभुत्व स्थापन करें। हैहय जाति में कृतवीर्य बड़ा प्रतापी धर्मात्मा ब्रह्मण्यराजा हुआ है। उसने बहुत से यज्ञ किये और अपने पुरोहित भगुवंशियों को धन से मालामाल कर दिया। उसके पीछे इसके वंशजों और उनके पुरोहितों में द्वेष उत्पन्न हो गया, जिस का परिणाम दोनों कुलों के लिए बहुत ही हानिकारक हुआ। इसकी कथा महाभारत में इस प्रकार लिखी है।

(महाभारत आदि पर्व अ० १६४)

कृतवीर्य इति ख्यातो बभूव पृथिवी पतिः ॥ ११ ॥
राज्यो वेदविदां लोके भृगूणां पार्थिवर्षभः ।
सतानग्रभुजस्तात धान्येन च धनेन च ॥ १२ ॥
सोमान्ते तर्पयामास विपुलेन विशाम्पतिः ।
तस्मिन् नृपतिशार्दूले स्वर्यातेऽथ कथञ्चन ॥ १३ ॥
बभूव तत्कुलेयानां द्रव्यकार्यमुपस्थितम् ।
भृगूणां तु धनं ज्ञात्वा राजानः सर्व एव ते ॥ १४ ॥
याचिष्णवोऽभि जग्मुस्तांस्ततो भार्गवसत्तमान् ।
भूमौ तु निदधुः केचिद् भृगवो धनमक्षयम् ॥ १५ ॥
ददुःकेचिद् द्विजातिभ्यो ज्ञात्वा क्षत्रियतो भयम् ।
भृगवस्तु ददुःकेचित् तेषां वित्तं यथेप्सितम् ॥ १६ ॥
क्षत्रियाणां तदा तात कारणान्तरदर्शनात् ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ततो महीतलं तात क्षत्रियेण यदृच्छया ॥ १७ ॥
खनताऽधिगतं वित्तं केनचिद् भृगुवेश्मनि ।
तद् वित्तं ददृशुः सर्वे समेताः क्षत्रियर्षभाः ॥ १८ ॥
अवमन्य ततः क्रोधाद् भृगूंस्तांश्छरणागतान् ।
निजघ्नुःपरमेष्वासाः सर्वांस्तान् निशितैः शरैः ॥ १९ ॥
आगर्भादवकृन्तन्तश्चेरुः सर्वां वसुन्धराम् ।
तत उच्छिद्यमानेषु भृगुष्वेवभयात्तदा ॥ २० ॥
भृगुपत्न्यो गिरिं दुर्गं हिमवन्तं प्रपेदिरे ॥ २१ ॥

कृतवीर्य इस नाम का एक सुप्रसिद्ध राजा हुआ है ॥ ११ ॥ जो कि वेद के जानने वाले भृगुवंशियों का यजमान था । उस राजा ने सोमयज्ञों में बहुत बड़े धनधान्य से अपने पुरोहितों को तृप्त किया । अब उस राजसिंह के स्वर्गवास होने पर ॥१२–१३॥ उसके वंशजों को द्रव्य की आवश्यकता पड़ी । भृगुओं के पास धन जानकर वे सब क्षत्रिय ॥ १४ ॥ उन से मांगने के लिए भृगुओं के पास गये । तब डर के मारे कई भृगुओं ने तो अपना धन भूमि में गाड़ दिया ॥ १५ ॥ कइयों ने छिनता देख दान पुण्य करके ब्राह्मणों को दे दिया, तो भी कई भृगुओं ने उन हैहयों को उन की आवश्यकता जान भरपूर धन दिया । किन्तु उनमें से किसी क्षत्रिय ने भूमि खोदकर भृगुओं के घरों से बहुत सा धन दबा हुआ निकाला, जो उन सब क्षत्रियों ने देखा ॥ १६–१७ ॥ तब वे क्रोध से भर गये और शरण पड़े भी उन भृगुओं का उन शस्त्रधारियों ने बाणों से बध किया ॥ १९ ॥ उनके छोटे बच्चों तक मार डाले गये । इस तरह जब वे भृगु काटे जा रहे थे, तब

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मारे डरके भृगुओं की पत्नियों ने हिमालय पर्वत की जा शरणली ॥ २०-२१ ॥

इनहीं भागी हुई स्त्रियों में से एक के गर्भ से और्वऋषि उत्पन्न हुआ जिसने हिमालय पर घोर तप किया और वेदविद्या के साथ शस्त्रास्त्रविद्या में पूर्णता प्राप्त कर हिालय में आश्रम बनाकर रहने लगा।

इधर हैहय और तालजंघों ने शक यवन आदियों को साथ लेकर सूर्यवंशीय राजा बाहु पर चढ़ाई कर उस का राज्य छीन लिया। राजा अपनी गर्भवती रानी को साथ लिये बनमें जा छिपा और फिर हिंमालय में और्व के आश्रम के पास जा रहा। कुछ दिन पीछे राजा का देहान्त होगया। उसकी रानी राजा के साथ सती होना चाहती थी, किन्तु और्वऋषि के उपदेश से उसने सती होना त्याग कर गर्भ की रक्षा की। जब बालक उत्पन्न हुआ, तो उसके जातकर्म आदि सारे संस्कार और्वऋषि ने किये और उसका नाम **सगर** रक्खा। और्व ने उसका उपनयन करके उसे सारे वेद और शास्त्र पढ़ाए, शस्त्र और अस्त्र सिखलाए और विशेष कर आग्नेय अस्त्र, जो भृगुओं का अपना निजका अस्त्र होने से **भार्गव आग्नेय** कहलाता था, उस में उसे पूरा निपुण किया।

जब वह बड़ा हुआ तो उसकी माता ने उसे बतलाया कि तू सूर्यवंशी राजपुत्र है और तेरे पिता का राज्य हैहय और तालजंघों ने छीना है। यह सुनकर राजपुत्र का हृदय क्रोध से भर गया और उसने हैहयों और तालजंघों को मारकर अपने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राज्य को वापिस लेने की प्रतिज्ञा की । सूर्यवंश का झंडा खड़ा किया गया और और्व तथा वसिष्ठ की सहायता से सूर्यवंशी अपने वंश के राज्य और कीर्ति को लौटाने के लिये उस झंडे के नीचे इकट्ठे हुए । घोर युद्ध आरम्भ हुआ और परिणाम इस प्रकार हुआ कि—

प्रायशश्च हैहयान्जघान शक यवन काम्बोज पारद पह्लवा हन्यमानास्तत्कुलगुरुं वसिष्ठं शरणं ययुः ॥ १८ ॥ अथैतान् वसिष्ठो जीवन्मृतकान् कृत्वा सगरमाह । वत्स-वत्सालमेभिरतिजीवन्मृतकैरनुसृतैः ॥ १९ ॥ एते मयैव त्वत्प्रतिज्ञापरिपालनाय निजधर्मद्विजसंगपरित्यागं कारिताः ॥ २० ॥ स तथेति गुरुवचनमभिनन्द्य तेषां वेषां-न्यत्वमकारयत् । यवनान् मुण्डितशिरसोऽर्द्धमुण्डाञ्छ-कान् प्रलम्बकेशान् पारदान् पह्लवांश्च श्मश्रुधरान् निःस्वा-ध्याय वषट्कारानेतानन्यांश्च क्षत्रियांश्चकार । ते च निज-धर्मपरित्यागाद् ब्राह्मणैश्च परित्यक्ता म्लेच्छतां ययुः ।-

(विष्णुपुराण ४।३)

सगर ने बहुत से हैहयों को मार डाला । शक, यवन, काम्बोज पारद और पह्लव हन्यमान होते हुए कोई बचाव न देखकर सगर के कुलगुरु वसिष्ठ की शरण जा पड़े ॥ १८ ॥ तब इनको वसिष्ठ ने जीवन्मृतक (जाति धर्म से वहिष्कृत) करके सगर से कहा । वत्स वत्स अब इन जीवन्मृतकों का पीछा न

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करो ॥ १६ ॥ आपकी प्रतिज्ञा पालने के लिये मैंने इन से क्षत्रियों का धर्म और ब्राह्मणों का सम्बन्ध छुड़वा दिया है ॥ २० ॥ सगर ने 'तथास्तु' कह कर गुरु के वचन का आदर करके उनके वेष बदल दिये । यवनों के सिर मुंड़ा दिये, शकों के बीच में से मुड़ाये, पारदों के सिर पर लंबे बाल और पह्लवों को लम्बी दाढ़ियां रखवाईं । इन सब को तथा इनके साथी अन्य क्षत्रिय जातियों को वेद और यज्ञ से हीन कर दिया ❀ । वे अपने धर्म के त्याग और ब्राह्मणों के त्याग से धीरे २ म्लेच्छ हो गये ।

ये ही वे क्षत्रिय जातियां हैं, जिन के विषय में महाभारत और मनु में कहा है—

शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः ।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ॥
पौण्ड्काश्चौड्रद्रविड़ा काम्बोजा यवनाः शकाः ।
पारदाः पह्लवाश्चीनाः किराताः दरदाः खशाः ॥

(मनु० १० । ४३—४४)

संस्कारों के लोप से और ब्राह्मणों के अदर्शन से ये क्षत्रिय जातियां लोक में धीरे २ वृषल बन गई हैं ।

❀ कदाचित् इस अभिप्राय से कि आदिकाल से वेद और यज्ञ के रक्षक प्रसिद्ध क्षत्रिय वंश की इन्होंने स्वतन्त्रता छीनी थी ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पौण्ड्रक, ओड्र, द्रविड़, काम्बोज, यवन, शक, पारद, पह्लव, चीन, किरात, दरद और खश ।

यह पहली नैतिक भूल है, जो क्षत्रिय और ब्राह्मण दोनों से हुई । हैहयों को अपने ही बड़ों का दान दिया धन अपने पुरोहितों से कभी नहीं लेना चाहिये था । पर यदि मांगा ही गया था तो पुरोहितों को चाहिये था दे देते, न कि दबाते । पर हैहयों ने तो अति ही कर दी, जब कि इतनी सी बात पर न केवल उनको लूट लिया, बल्कि जान से भी मार डाला । भृगुओं का तो उसी समय बढ़ा अनिष्ट हुआ, किन्तु हैहयों ने अपने भी अनिष्ट का बीज बो दिया । जिस से कि भृगुवंशी उनके हिती होने के स्थान अब उन के विद्वेषी बने । और फिर जब उन निर्मर्याद हैहयों ने सूर्यवंशी बाहु का राज्य छीना, तो सूर्यवंश और उन के पुरोहितकुल से भी विद्वेष उत्पन होगया । यह सारा ब्रह्मबल (भृगुओं और वसिष्ठों का) और सूर्यवंशियों का क्षत्रबल हैहयों के विरुद्ध हो गया । यह कारण था, कि हैहय अन्ततः परास्त हुए । और इस से भी बढ़ कर भूल यह हुई कि यवन शक आदि क्षत्रिय जातियों को ब्राह्मणों ने त्याग दिया । यह बहुत बड़ा क्षत्रिबल अब अन्य धर्मों में प्रविष्ट हो चुका है ।

अस्तु, सगर ने हैहयों को पराजित किया, पर उन का राज्य नहीं छीना । हाँ भृगुओं के साथ हैहयों का द्वेष और भी बढ़ गया । इसी और्व ऋषि का पुत्र ऋृचीक ऋचीक का पुत्र **जमदग्नि** और जमदग्नि का पुत्र **परशुराम** हुआ । इस सम्बन्ध से परशुराम और्व का प्रपोता था । परशुराम बलवीर्य और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शस्त्र अस्त्र विद्या में अद्वितीय था । उस समय कृतवीर्य के वंश में अर्जुन हैहयों का राजा था यह अर्जुन ऐसा रणवीर था, कि इस की बराबरी का शूरवीर उस समय कोई न था । इस का उपनाम सहस्रबाहु इस लिए पड़ा था, कि यद्यपि अन्यदा इस की दो ही भुजाएं थीं, तथापि संग्राम में ऐसा लड़ता था, कि मानो इस की दो नहीं, सहस्रों भुजाएं हैं ❀ । इस शूरवीर राजा अर्जुन और परशुराम के युद्ध का वृतान्त महाभारत में इसप्रकार लिखा है—

अथानूपपतिर्वीरः कार्तवीर्योऽभ्य वर्तत ॥२०॥
तमाश्रमपदं प्राप्तमृषिरर्घ्यात् समार्चयत् ।
स युद्धमदसंमत्तो नाभ्यनन्दत् तथार्चनम् ॥२१॥
प्रमथ्य चाश्रमात् तस्माद्धोमधेनोस्ततो बलात् ।
जहार वत्सं क्रोशन्त्या बभञ्ज च मह द्रुमान् ॥२२॥
आगताय च रामाय तदा चष्ठ पिता स्वयम् ।
गां च रोरुदतीं दृष्टवा कोपो रामं समा विशत् ।

❀ रघुवंश में हैहयाधिपति सहस्रबाहु अर्जुन के वर्णन में कालिदास ने लिखा है–' संग्रामनिर्विष्टसहस्रबाहुः अर्थात युद्धों में उसकी भुजाएं सहस्र अनुभव होती थीं । इस पर मल्लिनाथ ने संजीविनी में यह टिप्पणा दी है–युद्धादन्यत्र द्विभुज एव दृश्यत इत्यर्थः—युद्ध से बिना वह दो ही भुजा वाला दिखलाई देता था ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समन्युवशमापन्नः कार्तवीर्यमुपाद्रवत् ॥२३॥
तस्याथ युधि विक्रम्य भार्गवः परवीरहा ।
चिच्छेद निशितैर्भल्लैर्बाहून् परिघसन्निभान् ॥२४।
सहस्रसंमितान् राजन् प्रगृह्य रुचिरं धनुः ।
अभिभूतः स रामेण संयुक्तः कालधर्मणा ॥२५॥
अर्जुनस्याथ दायादाः रामेण कृतमन्यवः ।
आश्रमस्थं विना रामं जमदग्निमुपाद्रवन् ॥२६॥
ते तं जघ्नुर्महावीर्यमयुध्यन्तं तपस्विनम् ।
असकृद्राम रामेति क्रोशन्तमनाथवत् ॥२७॥
कार्तवीर्यस्य पुत्रास्तु जमदग्निं युधिष्ठर ।
घातयित्वा शरैर्जग्मुर्यथा गतमरिन्दमाः ॥२८॥
अपक्रान्तेषु चैतेषु जमदग्नौ तथागते ।
समित्पाणिरुपागच्छदाश्रमं भृगुनन्दनः ॥२९॥
स दृष्टवा पितरं वीरस्तदा मृत्युवशं गतम् ।
अनर्हं तं तथाभूतं विललाप सुदुःखितः ॥३०॥

महाभारत वन० ११७

अब अनूप देश का राजा अर्जुन जमदग्नि के आश्रम में आया, ऋषि ने अर्घ्य लेकर उस की पूजा करनी चाही, पर युद्धमद से मस्त राजा ने उस की पूजा को स्वीकार न किया ॥ २०—२१ ॥ उलटा आश्रम के वृक्षों को काट डाला और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ऋषि की होमधेनु का बछड़ा बलात ले कर चल दिया ॥ २२ ॥ उस के पीछे परशुराम आश्रम में आया, तो पिता ने उसे सारा वृत्तान्त कह सुनाया, इस वृत्तान्त को सुन कर और गौ को पुकारती देख कर परशुराम को क्रोध चढ़ आया, क्रोध से भरा वह उसी समय अर्जुन के पीछे भागा ॥ २३ ॥ उसे जा पकड़ा दोनों का युद्ध हुआ, युद्ध में परशुराम ने अपने धनुष और भालों से उसकी गेली जितनी मोटी सहस्र भुजाओं को काट डाला और वह वीरगति को प्राप्त हुआ (वीरों की मौत मरा) ॥ २४–२५ ॥ इसके पीछे अर्जुन के दायाद (वारिस) क्रोध से भरे हुए आश्रम में आये, उस समय परशुराम वहाँ न था। अकेले जमदग्नि को पाकर, युद्ध न करते हुए भी उग्र तपस्वी को उन्हों ने मार डाला, जो मरते समय अनाथ की तरह राम राम पुकार रहा था ॥ २६–२७ ॥ अर्जुन के शूरवीर पुत्र इस प्रकार जमदग्नि को मार कर जिधर से आये थे, उधर चले गये ॥२८॥ उनके चले जाने और जमदग्नि के भूमिशायी हो जाने के पीछे हाथ में समिधा लिए आश्रम में आ पहुंचा ॥ २९ ॥ वह वीर पिता को मृत्यु के वश हुआ और अनुचितरूप से भूमि पर पड़ा हुआ देख कर अत्यन्त दुःखित हो विलाप करने लगा ॥ ३० ॥

ममापराधात् तैः क्षुद्रैर्हतस्त्वं तात बालिशैः ।
कार्तवीर्यस्य दायादैर्वने मृग इवेषुभिः ॥ १ ॥
धर्मज्ञस्य कथं तात वर्तमानस्य सत्पथे ।
मृत्युरेवंविधो युक्तः सर्वभूतेष्वनागसः ॥ २ ॥
किं नु तैर्न कृतं पापं यैर्भवांस्तपसि स्थितः ।
अयुध्यमानो वृद्धः सन् हतः शर शतैः शितैः ॥ ३ ॥

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

किंनु ते तत्र वक्ष्यन्ति सचिवेषु सुहृत्सु च ।
अयुध्यमानं धर्म्मज्ञमेक हत्वाऽनपत्रपाः ॥ ४ ॥

(महाभारत मन० अ० ११८)

मेरे अपराध से हे तात ! तुझे अर्जुन के उन क्षुद्र दायादों (वारिसों) ने बन में मृग की नांई मार डाला है ॥ १ ॥ हे तात तुझ जैसे धर्मज्ञ, सन्मार्ग पर चलने वाले, किसी से वैर न रखने वाले का ऐसा मृत्यु युक्त न था ॥ २ ॥ उन पापियों ने क्या पाप नहीं किया, जिन्हों ने तप में स्थित वृद्ध और युद्ध न करते हुए को बाणों से मार डाला है ॥ ३ ॥ वे निर्लज्ज युद्ध न करते एक धर्मज्ञ ऋषि को मार कर मन्त्रियों और मित्रों में बैठ कर क्या बड़ाई करेंगे ॥ ४ ॥

भला परशुराम पिता की इस अनुचित हत्या को चुप चाप कैसे सह सकता था, उसके क्रोध की सीमा न रही । हैहयों से उस के बड़े भंयकर युद्ध हुए । उस ने हैहयों को और दूसरे उन क्षत्रियों को भी जो दस्युओं की नांई प्रजा को पीड़ा देते थे, बार २ रण में प्रास्त किया । और अपने शत्रुओं में से किसी एक को भी बच कर जाने न दिया । ऐसी २ ही लड़ाइयों में उसने धर्म से गिरे हुए क्षत्रियों का इस प्रकार नाश किया । यह स्मरण रखना चाहिये, कि परशुराम ने उन्ही क्षत्रियों का नाश किया है, जो क्षात्रधर्म से गिरे हुए थे । पहले तो उसने जिस सहस्रबाहु अर्जुन का वध किया । वह हैहयों का अधिपति था, और हैहयों का भृगुओं से वैर ही था, तथापि परशुराम ने पहले

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हैहयों से कोई विरोध नही दिखलाया। यह नया वैर भी स्वयं हैहयों ने आरम्भ किया। जमदग्नि ने अर्जुन का आदर किया और अर्जुन ने उस का अनादर किया। उस के आश्रम का विनाश किया। यह उसका स्पष्ट पापमय कर्म था। जैसा कि महाभारत में कहा है—

कार्तवीर्यो महावीर्यो बलेनाप्रतिमस्तदा।
रामेण जामदग्न्येन हतो विषममाचरन् ॥ ३ ॥
तं कार्तवीर्यं राजानं हैहयाना मरिन्दमम्।
रथस्थं पार्थिवं रामः पातयित्वाऽवधिद्रणे ॥ ४ ॥

(सभा० अ० ४६)

महाशक्ति अर्जुन जो बल में अपनी उपमा नहीं रखता था, किन्तु अनुचित आचरण करने से उसे जमदग्नि के पुत्र राम ने मार डाला ॥ ६ ॥ हैहयों के राजा अर्जुन को रथ पर से नीचे गिरा कर राम ने रण में मार डाला ॥ ४ ॥

अर्जुन का जमदग्नि को सताना ही एक अनुचित कर्म न था, किन्तु वह अपजे बल के घमंड में प्रायः लोगों को सताया करता था, जैसा कि अकृतव्रण ने युधिष्टर से अर्जुन के वर्णन में कहा था—

अव्याहतगतिश्चैव रथस्तस्य महात्मनः।
रथेन तेन तु सदा वरदानेन वीर्यवान् ॥ १३ ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ममर्द देवान् यक्षांश्च ऋषींश्चैव समन्ततः ।
भूतांश्चैव स सर्वांस्तुपीडयामास सर्वतः ॥ १४ ॥

(महाभारत वन० अ० ११६)

उस महाबली (अर्जुन) के रथ को कहीं रोक न थी । वह बली उस रथ और (दत्तात्रिय के) बरदान से सदा देवता यक्ष ऋषियों और दूसरे लोगों को तंग किया करता था ।

हैहय प्रभुता के मद में सच्चे क्षात्रधर्म से गिर गये थे । हैहय उनके साथी व। और भी इसी प्रकार के जो क्षत्रिय सच्चे क्षात्रधर्म को त्याग कर दस्युवृत्ति बन रहे थे, उन्हीं से पृथिवी को परशुराम ने शुद्ध किया था, जैसा कि महाभारत में कहा है—

निर्दस्युं पृथिवीं कृत्वा शिष्टेष्टजनसंकुलाम् ।
कश्यपाय ददौ रामो हयमेधे महामखे ॥

(महाभारत द्रोण ७० । २१)

यह पृथिवी दस्युओं से खाली करके और शिष्टजनों से पूर्ण करके परशुराम ने अश्वमेध यज्ञ में कश्यप को दान कर दी ।

महाभारत से इस बात का पता लगता है, कि परशुराम के डर से उस समय हैहयों का साथ देने वाली कई जातियों ने क्षात्रधर्म का ही त्याग कर दिया था । जैसा कि—

ततस्तु क्षत्रियाः केचिद् जमदग्नि निहत्य च ।
विविशुः गिरिदुर्गाणि मृगाः सिंहार्दिता इव ॥१४

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तेषां स्वविहितं कर्म तद्भयान्नानुतिष्ठिताम् ।
प्रजा वृषलतां प्राप्ता ब्राह्मणानामदर्शनात् ॥ १५ ॥
एवं ते द्रविडाऽऽभीराः पुण्ड्राश्च शबरैःसह ।
वृषलत्वं परिगता व्युत्थानात् क्षत्रधर्मतः ॥ १६ ॥
(अश्वमेध० अ० ३०)

तब कई क्षत्रिय जमदग्नि को मार कर सिंह से पीड़ित हुए मृगों की तरह पर्वतों के किलों में जा घुसे ॥ १४ ॥ परशुराम के डर से उन्होंने अपने विहित कर्मों (क्षत्रियोचित संस्कारों) को त्याग दिया ॥ १५ ॥ इस प्रकार वे द्रविड़, आहीर, पुण्ड्र और शबर क्षत्रधर्म से निकल कर वृषल बन गये ।

इस प्रकार यह ब्रह्मक्षत्र के वैर का फल ब्रह्मक्षत्र दोनों के लिए और सारी आर्य जाति के लिए बहुत हानिकारक सिद्ध हुआ । सगर और वसिष्ठ ने जिन क्षत्रियों का बहिष्कार किया, वे वृषल (वैदिक संस्कारों से हीन क्षत्रिय) बन गये । और कई एक परशुराम के डर से भी वृषल बन गये । इस का बड़ा दुष्परिणाम जो आर्यजाति के लिए आगे चल कर हुआ, इस का वर्णन हम आगे करेंगे ।

इस दुर्घटना के पीछे यद्यपि वह पहली महिमा, पहला ऐश्वर्य और पहला सदाचार फिर मुड़ कर वापिस नहीं आया, तथापि इस के पीछे ब्राह्मण क्षत्रिय दोनों सम्हल गये । दोनों तेज फिर इकट्ठे हुए । वंशों की वृद्धि होने लगी, ऐश्वर्य बढ़ा और धर्म वृद्धि हुई ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस के अनन्तर फिर एक ऐसा समय आता है, जब कि क्षत्रियवीर आपस में लड़ मरे। यह युद्ध कौरव और पाण्डवों में हुआ, पर इस में भारत के सभी क्षत्रियवीर दोनों में से किसी एक का साथ देने के लिए युद्धक्षेत्र में आ डटे। न केवल भारत के क्षत्रिय ही, किन्तु अफगानिस्थान बिलोचिस्थान और चीन आदि देशों के क्षत्रियों ने भी इस युद्ध में पूरा भाग लिया। भाइयों के परस्पर वैर का परिणामरूप यह युद्ध कितना भयंकर हुआ इस का परिणाम इस से हो सकता है, कि इस सर्वनाशी युद्ध में पाण्डवों के ७ और कौरवों के तीन ही वीर पुरुष शेष बचे थे। जैसा कि अश्वत्थामा ने सौप्तिक वध (शब खून) करके दुर्योधन को आकर बतलाया था—

दुर्योधन जीवसि चेद् वाक्यं श्रोत्रसुखं शृणु ।
सप्त पाण्डवतः शिष्टा धार्तराष्ट्र त्रयोवयम् ॥४८॥
ते चैव भ्रातरः पञ्च वासुदेवोऽथ सात्यकिः ।
अहं च कृतवर्मा च कृपः शारद्वतस्तथा ॥४६॥

(महाभारत सौप्तिक)

हे दुर्योधन यदि तू जीता है तो अपने कानों को सुख देने वाला यह वचन सुन। पाण्डवों की ओर से अब सात ही जीते बचे हैं और आप की ओर से हम तीनों॥ ४८ ॥ अर्थात (पाण्डवों की ओर) वे पाचों भाई कृष्ण और सात्यकि। और (अपनी ओर) मैं, कृतवर्मा और कृपाचार्य ॥४६॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वास्तव में यह सर्वनाशकारी युद्ध उपस्थित न हुआ होता, तो इस तेजस्वी क्षत्रबल का सामना सारी दुनिया में कोई न कर सकता था । दुनिया की सभी जातियां उस समय भारत के क्षत्रियों का सिक्का मानती थीं । इस युद्ध ने क्षत्रियों का सारा बल नष्ट कर दिया । उस समय के नेता इस भ्रातृयुद्ध के दुष्परिणामों को जानते थे । उन्हों ने इस युद्ध को रोकने की पूरी २ चेष्टा की, पर दुर्योधन की मित्रमण्डली इतनी अभिमान में चूर थी, कि उस ने किसी की एक न सुनी ! भीष्मपितामह, विदुर, द्रोणाचार्य, वेदव्यास, धृतराष्ट्र और गान्धारी सब ने अलग २ समझाया, पर दुर्योधन किसी के कहने पर न आया । अन्ततः भगवान् श्रीकृष्णजी ने इस भ्रातृवैर को मिटा कर सन्धि कराने का पूरा प्रयत्न किया, पर वे भी सफल मनोरथ न हुए । जो लोग यह कहते हैं, कि श्रीकृष्ण ने यह लड़ाई कराई, क्योंकि जब अर्जुन शस्त्र छोड़ बैठा था, तब श्रीकृष्ण ने ही युद्ध का उपदेश देकर फिर खड़ा किया, वे लोग श्रीकृष्ण के चरित्र की महिमा को जानते नहीं हैं । श्रीकृष्ण ने अपने आप को प्राण संकट में डाल कर इस भयंकर युद्ध को मिटाने की पूरी २ चेष्टा की । वे सन्धि कराने के निमित्त हस्तिनापुर गये । युधिष्ठिर ने भी यहां तक कह दिया, कि—

अविस्थलं वृकस्थलं, माकन्दीं वारणावतम् ।
अवसाने च गोविन्द किञ्चिदेकं त्रपञ्चमम् ॥

[महाभारत उद्यो० ७१ । २३]

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अविस्थल, वृकस्थल, माकन्दी, वारणावत और पाँचवां जो उनकी इच्छा हो, ये पांच ग्राम हे श्रीकृष्ण वे हमें देदें, तो भी युद्ध मिट सकता है ।

एवमुक्तः प्रत्युवाच धर्मराजं जनार्दनः ।
उभयोरेव वामर्थे यास्यामि कुरु संसदम् ॥८७॥
शमं तत्र लभेयं चेद् युष्मदर्थमहापयन् ।
पुण्यं मे सुमहद् राजश्चरितं स्यान्महाफलम् ॥८८॥
मोचयेयं मृत्युपाशात् संरब्धान् कुरुसृञ्जयान् ।
पाण्डवान् धार्तराष्ट्रांश्च सर्वां च पृथिवी मिमाम् ॥८९

(महाभारत उद्यो० ७२)

यह सुन कर श्रीकृष्ण युधिष्ठर से बोले । तुम दोनों (पाण्डवों और कौरवों) की भलाई के लिए मैं कुरुओं की सभा में जाऊंगा ॥ ८७ ॥ यदि वहाँ तुम्हारे स्वत्व को हानि पहुंचाये बिना मैं शान्ति स्थापन कर सका, तो हे राजन् यह बड़ा भारी पुण्य का काम होगा ॥ ८८ ॥ मैं इन भड़के हुए कुरुओं और सृञ्जओं को मृत्यु की फाँसी से छुड़ा सकूंगा । पाण्डवों और कौरवों को बल्कि इस पृथिवी को ही मृत्यु से छुड़ा सकूंगा ॥ ८९ ॥

हस्तिनापुर में पहुंचने पर जब विदुर ने श्रीकृष्णजी से कहा कि आप आशा कभी सफल नहीं होगी, दुर्योधन इतना मदान्ध हो रहा है, कि सन्धि की कोई भी बात मानने को त्यार नहीं । कोई अच्छा फल तो दूर रहा, मैं तो यह समझता हूं, कि आप

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का उन के घर में आना खतरे से खाली नहीं ।

तेषां समुपविष्टानां बहूनां दुष्टचेतसाम् ।
कथ मध्य प्रपद्येथाः शत्रूणां शत्रुकर्षण ॥

(महाभारत उद्यो० ६२ । २७)

उन दुष्ट अभिप्राय वाले बहुत से मिल कर बैठे हुए शत्रुओं के मध्य में आप कैसे प्रविष्ट होंगे ।

इस उत्तर में जो कुछ श्रीकृष्ण ने कहा है, वह उन के मन के शुद्ध और विशाल भावों का पूरा प्रतिबिम्ब है ।

यथा ब्रूयान्महाप्राज्ञो यथा ब्रूयाद्विचक्षणः ।
यथा वाच्यस्त्वद्विधेन भवता मद्विधः सुहृत् ॥ २ ॥
धर्मार्थयुक्तं तथ्यं च यथा त्वय्युपपद्यते ।
तथा वचनमुक्तोऽस्मि त्वयैतत् पितृमातृवत् ॥ ३ ॥
सत्यं प्राप्तं च युक्तं चाप्येवमेव यथात्थ माम् ।
शृणुष्वागमने हेतुं विदुरावहितो मम ॥ ४ ॥
दौरात्म्यं धार्तराष्ट्रस्य क्षत्रियाणां च वैरिताम् ।
सर्वमेतदहं जानन् क्षत्तः प्राप्तोऽद्य कौरवान् ॥ ५ ॥
पर्यस्तां पृथिवीं सर्वां साश्वां सरथकुञ्जराम् ।
यो मोचयेन्मृत्युपाशात् प्राप्नुयाद्धर्ममुत्तमम् ॥ ६ ॥
धर्मकार्यं यतञ्छक्त्या नो चेत् प्राप्नोति मानवः ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्राप्तो भवति तत्पुण्यमत्र मे नास्ति संशयः ॥ ७ ॥
सोऽहं यतिष्ये प्रशमं क्षत्तः कर्तुममायया ।
कुरूणां सृञ्जयानां च संग्रामे विनिशिष्यताम् ॥८॥
सेयमापन्महाघोरा कुरुष्वेव समुत्थिता ।
कर्णदुर्योधनकृता सर्वे ह्येते तदन्वयाः ॥ १० ॥
व्यसने क्लिश्यमानं हि यो मित्रं नाभिपद्यते ।
अनुनीय यथाशक्ति तन्नृशंसं विदुर्बुधाः ॥ ११ ॥
आकेशग्रहणात् मित्रमकार्यात् संनिवर्तयन् ।
अवाच्यः कस्यचिद्भवति कृतयत्नो यथाबलम् ॥१२॥
तत्समर्थं शुभं वाक्यं धर्मार्थसहितं हितम् ।
धार्तराष्ट्रः सहामात्यो ग्रहीतुं विदुराहति ॥१३॥
हितं धार्तराष्ट्राणां पाण्डवानां तथैव च ।
पृथिव्यां क्षत्रियाणां च यतिष्येऽहममायया ॥१४॥
हिते प्रयतमानं मां शङ्केद् दुर्योधनो यदि ।
हृदयस्य च मे प्रीतिरानृण्यं च भविष्यति ॥१५॥
ज्ञातीनां हि मिथो भेदे यन्मित्रं नाभिपद्यते ।
सर्वप्रयत्नेन माध्यस्थ्यं न तन्मित्रं विदुर्बुधाः ॥१६॥
न मां ब्रूयुरधर्मिष्ठा मूढा ह्यसुहृदस्तथा ।
शक्तो नावारयत्कृष्णः संरब्धान्कुरुपाण्डवान् ॥१७॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उभयोः साधयन्नर्थमहमागत इत्युत ।
तत्र यत्नमहं कृत्वा गच्छेयं नृष्ववाच्यताम् ॥१८॥
(उद्यो० ९३)

जैसे एक महाप्राज्ञ, जैसे अनुभवी और जैसे एक आप जैसा सुहृदय, मेरे जैसे को कह सकता है, वैसा आपने कहा है ॥२॥ धर्म अर्थ से युक्त जो यह पिता माता की नांई सच्चा हित वचन आप ने कहा है यह आप ही के योग्य है ॥ ३ ॥ सचाई से भरीं हुई, युक्ति युक्त और देश कालोचित बात तो यही है, जो आप कह रहे हैं, तो भी हे विदुर सावधान हो कर मेरे आगमन का हेतु सुनिये ॥ ४ ॥ दुर्योधन की दुर्जनता और (उसके साथी) क्षत्रियों का (मेरी ओर) वैर यह सब जानता हुआ मैं हे क्षत्तः! आज यहां कौरवों की सभा में आया हूं ॥ ५ ॥ क्योंकि इस समय घोड़ों रथों हाथियों समेत विनष्ट होती हुई इस सारी पृथिवी को जो बचाएगा वह उत्तम धर्म को प्राप्त होगा ॥ ६ ॥ मनुष्य यदि किसी धर्म को पूरा करने का शक्तिभर यत्न करता हुआ भी पूरा नहीं कर पाता, तो भी वह उसके पुण्य को प्राप्त होता है, इस बात में मुझे संशय नहीं है ॥ ७ ॥ सो मैं हे क्षत्तः! संग्राम में विनष्ट होने को तय्यार हुए कुरुओं और सृञ्जयों की शान्ति कराने में शुद्ध भावना से पूरा यत्न करूंगा ॥ ८ ॥ यह भयंकर आपद् कुरुओं में ही उठी है. यह उत्पन्न तो कर्ण और दुर्योधन ने की है, इस का फल सब को भोगना पड़ेगा ॥ १० ॥ व्यसन में क्लेश उठाते हुए मित्र को यथाशक्ति रास्ते पर लाकर जो बचाता नहीं है, बुद्धिमान् उसे दुर्जन कहते हैं ॥ ११ ॥ जो

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मित्र को बालों से पकड़ कर अकार्य से हटाने में यथाशक्ति पूरा यत्न करता है, उस पर किसी का आक्षेप नहीं रहता ॥ १२ ॥ इस लिए दुर्योधन और उस के मन्त्रियों को, ऐसा धर्म अर्थ से युक्त, हित से भरा, न्याय युक्त शुभ वाक्य ग्रहण करना ही चाहिये ॥ १३ ॥ न केवल धृतराष्ट्र के पुत्रों और पाण्डु के पुत्रों का ही किन्तु पृथिवी पर के सारे क्षत्रियों का हित साधने के लिए शुद्ध भाव के साथ पूरा यत्न करूंगा ॥ १४ ॥ भलाई के लिए प्रयत्न करते हुए मुझ पर यदि दुर्योधन शंका भी करे, तो भी रे हृदय की तो प्रसन्नता हो जायगी, और मेरी अनृणता भी हो जायगी (सजातियों को बचाना हर एक के ऊपर ऋण होता है) ॥ १५ ॥ जातियों की परस्पर फूट में जो मित्र बीच में पड़ क अ नी सारी शक्ति लगा कर उनको बचाने की चेष्टा नहीं करता है, बुद्धिमान् उसे मित्र नहीं जानते ॥ १६ ॥ (कुछ भी न हुआ, तो भी) अधर्मी मूढ़ अमित्र त मुझे यह न कहेंगे, कि समर्थ हो कर भी कृष्ण ने जोश में आए कुरुओं और पाण्डवों को न रोका ॥ १७ ॥ दोनों की भलाई के अर्थ में आया हूं, इस में यत्न करके मैं लोगों के आक्षेप के योग्य नहीं रहूंगा ॥ १८ ॥

इस सर्वनाशी महाभारत युद्ध के पीछे न भारत के क्षत्रियों का वह तेज रहा. न ही भारत अपनी पुरानी महिमा को प्राप्त कर सका, प्रत्युत क्षत्रियों का तेज और प्रताप घटते २ अन्ततः राज्य शूद्रों, व्रात्यों और वृषलों के हाथों में चला गया । जैसा कि विष्णुपुराण में लिखा है—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महानन्दिसुतः शूद्रागर्भोद्भवोऽतिलुब्धो महापद्मो नन्दः परशुराम इवापरोऽखिलक्षत्रान्तकारी भविता ॥४॥ ततः प्रभृति शुद्रा भूमिपाला भविष्यन्ति । सचैकच्छत्रा-मनुलङ्घितशासनो महापद्मः पृथिवीं भोक्ष्यति ॥ ५ ॥ तस्याप्यष्टौ सुताः सुमाल्याद्या भवितारस्तस्य च महापद्म-स्यानुपृथिवीं भोक्ष्यन्ति महापद्मस्तत्पुत्राश्च एक वर्षशतम-वनीपतयो भविष्यन्ति । नवैव तान्नन्दान् कौटिल्यो ब्राह्मणः समुद्धरिष्यति ॥ ६ ॥ तेषामभावे मौर्याश्च पृथवीं भोक्ष्यन्ति कौटिल्य एव चन्द्रगुप्तं राज्येऽभिषेयति ॥७॥ तस्यापि पुत्रो बिन्दुसारो भविष्यति । तस्याप्यशोकवर्ध-नस्ततः सुयशास्ततो दाशरथस्ततः सङ्गतस्ततः शालिशूक-स्तस्मात् सोमशर्मा तस्य च्छतधन्वा तस्याप्यनुबृहद्रथनामा भविता । एवं मौर्या दश भूपतियो भविष्यन्ति । अब्दशतं सप्तत्रिंशदुत्तरं तेषामन्ते पृथवीं शुंगा भोक्ष्यन्ति ॥ ८ ॥

महानन्दि राजा का एक पुत्र महापद्मनन्द जो शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न होगा, बड़ा लोभी वह राजा परशुराम की नांई सारे क्षत्रियों का नाश करने वाला होगा ॥ ४ ॥ उस से ले कर शूद्र राजे होंगे । महापद्म इस सारी भूमि को अकेला भोगेगा, उस के शासन को सब मानेंगे ॥ ५ ॥ महापद्म के पीछे उस के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सुमाली आदि आठ पुत्र पृथिवी को भोगेंगे। महापद्म और उस के पुत्र एक सौ वर्ष तक राज्य करेंगे। उन नौ ही नन्दों को कौटिल्य (चाणक्य) ब्राह्मण उखाड़ फैंकेगा ॥ ६ ॥ उन का नाश हो जाने पर मौर्य्य राजे पृथिवी को भोगेंगे। कौटिल्य ही चन्द्रगुप्त को राज्यतिलक देगा ॥ ७ ॥ उस का पुत्र बिन्दुसार होगा, उस का अशोकवर्धन, उस से सुयश, उस से दशरथ, उस से सङ्गत, उस से शालिशूक, उस से सोमशर्मा, उस से शतधन्वा, उस से अनुबृहद्रथ होगा। १३७ वर्ष इन का राज्य होगा। इस के पीछे भूमि को शुंग भोगेंगे ॥ ८ ॥

क्षत्रियों का तेज प्रताप फीका पड़ जाने से पहले शूद्र राजा हुए, फिर बृषल। चन्द्रगुप्त और उस के वंशज बृषल थे। बृषल वही क्षत्रिय थे, जिन को क्षत्रियों ने निकाल दिया, और ब्राह्मणों ने भी त्याग कर दिया। अब इन को वैदिक-धर्म से भी वह प्रेम न था, जो इन के पूर्वजों को था प्रत्युत इन का प्रेम बौद्ध-धर्म से था, और चन्द्रगुप्त के पोते अशोकवर्धन के समय तो बौद्ध-धर्म राज्य-धर्म हो ही गया। उस पहली भूल का फल अब क्षत्रिय और ब्राह्मण दोनों को भोगना पड़ा। क्षत्रियों के राज्य छीने गये, उन पर अत्याचार हुए और मारे गये। ब्राह्मणों के धर्म पर चोटें हुईं। जब तक क्षत्रियों का प्रताप चमकता रहा, तब तक विदेशियों की चढ़ाइयां भारत पर नहीं हुईं। जूं ही कि इन का तेज न्यून हुआ, और सनातन वैदिक-धर्म का ह्रास हुआ, बाहर से भी आक्रमण भारत पर होने लगे, जैसा कि इस के आगे विष्णु पुराण में अन्ध्रभृत्य राजाओं तक का वर्णन करके फिर लिखा है—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सप्ताभीरा दश गर्दभिला भूभुजो भविष्यन्ति ततः षोडश शका भूभुजो भवितारः । ततश्चाष्टौ यवनाश्चपुर्दश तुषारा मुण्डाश्च त्रयोदश एकादश मौनाः । एते पृथिवीं त्रयोदशवर्षशतानि नव नवत्यधिकानि भोक्ष्यन्ति ॥१४॥ ततश्च पौरा एकादश भूपतयोऽब्दशतानि त्रीणि महीं भोक्ष्यन्ति ॥ १५ ॥ तेषु च्छन्नेषु कैलिकिला यवना भूपतयो भविष्यन्ति मूर्धाभिषिक्तस्तेषां विन्ध्यशांक्तः ॥१६॥ .....मगधायां वश्वस्फटिकसञ्ज्ञोऽन्यान् वर्णान् करिष्यति पटुकैवर्तपुलिन्दब्राह्मणान् राज्ये स्थापयिष्यत्युत्साद्याखिलक्षत्रजातिं...स्त्रीराज्यमूषिकजनपदान्कनकाह्वया भोक्ष्यन्ति सौराष्ट्रावन्तिशूद्रानर्बुदमरुभूमिविषयांश्च व्रात्याद्विजाभीरशूद्राद्या भोक्ष्यन्ति । सिन्धुतटदार्विकोर्वीचन्द्रभागाकाश्मीरविषयान् व्रात्याम्लेच्छादयः शूद्रा भोक्ष्यन्ति एते च तुल्यकाला सर्वे पृथिव्यां भूभृतो भविष्यन्ति । अल्पप्रसादा बृहत्कोपा सर्वकालमनृताधर्मरुचयः स्त्रीबालगोवधकर्तारः परस्वादानरुचयोऽल्पसारा उदितास्तमितप्रायाः स्वल्पायुषो महेच्छात्यल्पधर्माश्च भविष्यन्ति ॥ १८ ॥ तैश्च विमिश्रजानपदास्तच्छीलवर्तिनो राजाश्रयशुष्मिणो म्लेच्छाश्चार्याश्च विपर्ययेण वर्तमानाः प्रजाः क्षपयिष्यन्ति ॥ १९ ॥ तत-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रानुदिनमल्पाल्पह्रासाद्यवच्छेदाद्धर्मार्थयोर्जगतः संक्षयो भविष्यति ॥ २० ॥ ततश्चार्थ एवाभिजनहेतुर्धनमेवाशेषधर्महेतुरचिरुथिरेव दाम्पत्यसम्बन्धहेतुरनृतमेव व्यवहारजयहेतुः स्त्रीत्वमेव भोगहेतुः ॥ २१ ॥ रत्नताम्रभागितैव पृथिवीहेतुर्ब्रह्मसूत्रमेव विप्रत्वहेतुर्लिङ्गधारणमेवाश्रमहेतुरन्याय एव वृत्तिहेतुः ॥ २२ ॥ दौर्बल्यमेवावृत्तिहेतुर्भयगर्भोच्चारणमेव पाण्डित्यहेतुः ॥ २३ ॥ दानमेव धर्महेतुराढ्यतैव साधुत्वहेतुः ॥ २४ ॥ स्नानमेव प्रसाधनहेतुः स्वीकरणमेव विवाहहेतुः सद्वेषधार्येव पात्रं दूरायतनोदकमेव तीर्थमित्येवमनेकदोषोत्तरे भूमण्डले सर्ववर्णेष्वेव यो यो बलवान् स भूपतिर्भविष्यति ॥ २४ ॥

फिर सात अहीर, फिर दस गर्दभिल राजे होंगे। उनके पीछे सोलह शक (पूर्वोक्त वृषल) राजे होंगे। उनके पीछे आठ यवन (पूर्वोक्त वृषल) चौदह तुषार, तेरह मुण्ड, ग्यारह मौन, (ये उनासी राजे) तेरह सौ निनानवें वर्ष पृथिवी को भोगेंगे ॥ १४ ॥ फिर ग्यारह पौर राजे तीन सौ वर्ष पृथिवी को भोगेंगे ॥ १५ ॥ उनके उखड़ने पर कोलिकिला के रहने वाले यवन राजे होंगे, उनमें से विन्ध्याशक्ति का क्षत्रियों की नांई अभिषेक होगा। ॥१६॥ मगधा में विश्वस्फटिक सारी क्षत्रियजाति को उखाड़ कर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कैवर्त, पट्टु, पुलिन्द और *ब्राह्मणों को राज्य पर बिठलायेगा। स्त्रीराज्य और मूषिक देशों को कनक भोगेंगे। सौराष्ट्र और अवन्ति को शुद्र, अर्बुद और मरु भूमि के प्रदेशों को व्रात्य क्षत्रिय आभीर और शूद्र आदि भोगेंगे। सिन्धु तट, दार्विका भूमि, चन्द्र भागा और कश्मीर के प्रदेशों को व्रात्य म्लेच्छ आदि शूद्र भोगेंगे। ये सारे समकालीन खण्ड २ के राजे होंगे, इनमें दया घट जायगी क्रोध बड़ा होगा, सदा झूठ और अधर्म में रुचिवाले होंगे। स्त्री बालक और गौओं का वध करने वाले, दूसरों का धन हड़प कर जाने वाले, थोड़ी महिमा वाले, झट

---

*स्वतन्त्र भारत होने से पहले पुराणों में जो भारत में राजाओं के विषय में भविष्य वाणीयें लिखी हुई हैं, उन के सम्बन्ध में कई लोगों की धारणा है कि पुराणों में भविष्य वाणियें पीछे से प्रक्षिप्त की गई हैं किन्तु आज भारत की वर्तमान स्थिति से सिद्ध होता है कि यह ऋषिओं की भविष्य वाणियें पूर्णतया ठीक हैं। जैसे कि ऊपर विष्णुपुराण के ऊद्धर्ण में बताया गया है कि ब्राह्मणों को राज्य पर बिठाया जावेगा। सिंन्धु तट, दर्विका भूमि चन्दभामा (चनाब) और काश्मीर के प्रदेशों को व्रात्य म्लेच्छ आदिं शूद्र (यवन) भोगेंगे। इत्यादि आज भारत की राज्य सत्ता में ब्राह्मणों की विशेषता है और १५ अगस्त सन् १९४७ को पं० जवाहर लाल नहरू को अभिषेक हुआ, और काश्मीर में अब्दुल्ला के प्रधानपद द्वारा राज्यसत्ता चल रही है। तथा (पश्चमीय भारत) में यवन राज्य है, और यह सब समकालीन खंड राज्य हैं। इस प्रत्यक्ष प्रमाण के होते हुए कौन कह सकता है कि भविष्यवाणियें मिथ्या हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चढ़ने और, झट गिरने वाले, थोड़ी आयु वाले, बड़ी इच्छाओं वाले और बहुत थोड़ा धर्माचरण करने वाले होंगे ॥ १८ ॥ उनके अधीन देश उन्हीं के शील वाले (यथा राजा तथा प्रजा:) राजा के सहारे से बलवान् (न कि धर्म के सहारे से) म्लेच्छ और आर्य उलट पलट वर्तते हुए प्रजा का नाश करेंगे ॥ १६ ॥ तब दिनो दिन धर्म के घटते जाने और अर्थ के कटते जाने (कट २ कर बाहर जाने) से लोग क्षीण होते जायेंगे ॥ २० ॥ तब धन ही कुलीनता का हेतु, धन ही सारे धर्मों का हेतु, अपनी पसन्द ही पति पत्नि भाव का हेतु, झूठे सबूत पहुंचाना ही मुकद्दमे जीतने का हेतु, स्त्री होना ही (चाहे कोई हो) भोग का हेतु ॥ २१ ॥ अच्छी बातों का होना ही उत्तम भूमि का हेतु, ब्रह्मसूत्र (यज्ञोपवीत) ही ब्राह्मणत्व का हेतु, चिन्ह धारण करना ही आश्रम का हेतु (खड़ावें धारलीं तो ब्रह्मचारी, भगवे पहन लिये, तो सन्यासी) अन्याय (छल कपट रिशवत आदि) ही जीविका का हेतु ॥ २२ ॥ दुर्बलता ही बेरोजगारी का हेतु, धमाके से बोलना ही पाण्डित्य का हेतु ॥ २३ ॥ दान ही धर्म का हेतु, धनी होना ही भलीमानसी का हेतु ॥ २४ ॥ स्नान ही सजावट का हेतु, स्वीकरण (मनजूर कर लेना) ही विवाह का हेतु, दम्भी ही पात्र, दूर होने वाला जल ही तीर्थ ऐसे ऐसे अनेक दोषों की प्रधानता वाले इस भूमण्डल में सभी वर्णों में से जो जो बलवान् होगा, वह २ राजा होगा ।

इससे स्पष्ट है, कि क्षत्रियों पर बहुत बड़ी विपत्तियां आईं, जिनमें वे पहले तो आप ही मर मिटे तब अपने राज्य छिनने दिया । पर जो बच रहे, उन के नाश के लिए भी शत्रुओं ने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नाना प्रकार की कुटिल चालें चलीं, क्योंकि इन्हीं क्षत्रियों से उन्हें भविष्यत् में भय था जो राज्य के वास्तव अधिकारी थे। मिहिर प्रकाश* में लिखा है :—

शिशुनागां दे वेले जद होया राजा नन्द ।
मिहिर पौरव ते अग्नि दा तेज होया सब मन्द ॥
शूद्री पेटों जम्मयाँ लीता राज सम्हाल ।
करनी उस करतार दी फलय्या युग दा काल ॥
नाल खावना पीवना होर साज ते राज ।
क्षत्रियाँ तों मंग के कीता जंग समाज ॥
परशुराम वाँगूं होया जित्या सारा जग ।
लोड़ जिन्हाँ धन राज दी रल मिल गये उन संग ॥
अग्नि-वंश रवि-वंश से पौरव-वंशी जात ।
ऋषि आदिक सब वंश दे खत्री पै गये मात ॥
धर्म न दित्ता आपना दित्ता धन ते राज ।
कलयुग होरां आन के कीती होर समाज ॥
अग्नि रवि ते सोम ए जगत होए विख्यात ।
जे रखिये एह नाम तां शत्रु कर दे घात ॥
सम्मति सिद्ध बनाय के गोत नाम इह थाप ।
रखिया नाम मिहिरोत्तरे सूर्य-वंशियां आप ॥
पौरव-वंशी आ बने उत्तम जात कपूर ।
अग्नि-वंश खन्ने बने जेहड़े रण विच शूर ॥

---

*यह हस्तलिखित पुस्तक गुजरात के बुधसिंह नामक क्षत्रिय की बनाई हुई है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मिहिरे इक्क कपूर दो अद्धे खन्ने जान ।
ढाई घर गिन घत तूं कुल्ल करिये परमान ॥
मिहिर-वंशियाँ पौरवाँ कीता अन विचार ।
अग्नि-वंशियां वी मनों कीता ए निरधार ॥

मूल लुकावो नाम नूं पता न पावे कोई ।
धर्म बीज दे कारणे सिर ते लवो संजोई ॥
बदले रूप स्वरूप ते होर बटाये नाम ।
कितां कारां पलटियां धर्म-रक्ष दे काम ॥

श्रीमद्भागवत में भी लिखा है—

महानन्दिसुतो राजन् शूद्रगर्भोद्भवो बली ।
महापद्मपतिः कश्चिन्नन्दः क्षत्रविनाशकृत् ॥
ततो नृपा भविष्यन्ति शूद्रप्रायास्त्वधार्मिकाः ।
[भाग० १२।१।६]

हे राजन् ! महानन्दी का पुत्र शुद्रा के गर्भ से उत्पन्न हुआ महाबली महापद्म नाम नन्द क्षत्रियों का नाश करने वाला होगा । उस के अनन्तर प्रायः शूद्र अधर्मी राजे होंगे । इसकी टीका में लिखा है—

शूद्रा भूमिपाला इति नन्दसमयानन्तरं क्षत्रियाणा-मतिनिर्बलतया तेषु विद्यमानेष्वपीतरेषां बलवतां शूद्रादीनां भूमिभोगित्वम्—

शूद्र राजे होंगे, इसका यह अभिप्राय है, कि नन्द के समय के अनन्तर क्षत्रियों के निर्बल हो जाने से उन की विद्यमानता

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में भी दूसरे बल वाले शूद्र आदि भूमि के मालिक होंगे ।

ऐसे सङ्कटों में ही पञ्जाब के क्षत्रिय क्षात्र-धर्म अपनी जीविका के स्थान वैश्य-धर्म से जीविका करने लगे जैसा कि भविष्योत्तर पुराण अध्याय ४१ में लिखा है--

ततः प्रभृति ते सर्वे क्षत्रिया द्विजपालितः ।
त्यक्तक्षत्रियधर्माणो वणिग्वृत्ति समाश्रताः ।
ते सूर्य शशिवंशीया अग्निवंशसमुद्भवाः ।
उत्तमाः क्षत्रियाः ख्याता इतरे मध्यमाः स्मृताः

उस समय से ले कर ब्राह्मणों से रक्षा किये वे क्षत्रिय क्षत्रिय-धर्म को त्याग वैश्य-वृत्ति से जीविका करने लगे । वे सूर्य वंश, चन्द्र वंश और अग्नि वंशी क्षत्रिय ही उत्तम क्षत्रिय माने गये हैं, दूसरे मध्यम माने गये हैं ।

कल्कि पुराण में भी लिखा है---

वैश्यवृत्त्यापि जीवेरन् क्षत्रियाश्च कलौ भुवि ।

कलियुग में क्षत्रिय वैश्य वृत्ति से भी जीविका करेंगे ।

मिहिर प्रकाश में भी एक उद्धृत श्लोक मिलता है---

वैश्याचाराश्च राजानो धनधान्योपजीविनः ।
युगप्रक्रमेण पूर्वं भविष्यन्ति द्विजातयः ॥

क्षत्रिय युग के प्रभाव से वणिज व्यापार से जीविका करते हुए वैश्यों के आचार वाले होंगे ।

मुसलमानों की चढ़ाइयों और लूट मार के दिनों में पञ्जाब

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के क्षत्रिय ब्राह्मणों को बड़े २ सङ्कट झेलने पड़े हैं । बहुतेरे ब्राह्मण क्षत्रिय धर्म की रक्षा के लिए अपनी जन्म भूमि से सदा के लिए स्नेह तोड़ घर से बेघर हो पहाड़ों की गुफाओं में जा छिपे । चम्बे आदि के पहाड़ों में जो जङ्गली जातियां गद्दियों के नाम से प्रसिद्ध हैं, उनकी दशा देख कर तुम उन्हें जङ्गली मनुष्य कहोगे, वे भेड़ बकरियां चराते, मोटा खाते और मोटा पहनते हैं । विद्या उन में नहीं है, हुनर उन में नहीं है सीधे सादे सरल प्रकृति के लोग हैं । पर उन के गौर शरीर लम्बे आकार, सुप्रशस्त मस्तक विशाल छाती, लम्बी भुजाएं और चेहरे पर तेज देख कर तुम अनुमान कर सकते हो, कि यद्यपि ये अब हीन दशा में हैं, पर हैं किसी उच्च वंश के वंशधर । उन के अतिथि बन कर देखो, तो उन के अतिथि सत्कार को देख कर कहोगे' कि ये इतने विशालहृदय वाले पुरुष सच मुच किसी महावंश में जन्मे हैं ।

उन के पुरोहित हैं उन के विवाह आदि संस्कार वेद मन्त्रों से होते हैं, तब वे जङ्गली नहीं, निःसन्देह किसी सभ्य जाति के कीर्तिशेष हैं । वे अपने आप को भूल नहीं गये । उन से पुछो, तुम कौन हो, तुम्हारा मूल स्थान कौन है । वे आप को बतलायेंगे, हम क्षत्रिय हैं । उन की जातियां पूछो, उन में कपूर हैं, सेठ हैं, खन्ने हैं । वे ही जातियां उन की हैं, जो यहां क्षत्रियों में उच्च जातियां मानी जाती हैं । वे यह भी बतलाते हैं, कि हमारे पूर्वज लाहौर अमृतसर आदि के रहने वाले थे, जो मुसल्मानों के अत्याचारों के समय अपना धर्म बचाने के लिए घर बार और अपना सर्वस्व छोड़ कर यहाँ चले आये ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ये विपत्तियाँ हैं, जो पञ्जाब पर आती रही हैं। धर्म की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व त्याग कर, घर से बेघर हो, इस प्रकार बनों में भटकते फिरना और अपनी आने वाली सन्तानों को भी ऐश्वर्य से वञ्चित कर जङ्गलों में भटकने के लिए छोड़ देना, उन का धर्म से सच्चे प्रेम का कैसा प्रबल प्रमाण है। ऐसी आपत्तियों में क्षत्रियोचित जीविका उन के लिए अत्यन्त कठिन थी, अत एव वे गडरियों का जीवन धार अपनी बिपत्ति के दिन अबतक काट रहे हैं। धर्म रक्षा के निमित्त जिन क्षत्रियों को हम पहाड़ों में जाकर गडरिया वृत्ति धारण किये हुए देखते हैं, तो उन्हीं के पूर्वजों में से ऐसी ही विपत्तियों में वैश्यवृत्ति धारण की हो, तो उस में आश्चर्य नहीं रहता। ठीक ऐसी ही विपत्तियों में पञ्जाब के क्षत्रियों ने वैश्य वृत्ति धारण की थी। धर्म शास्त्र भी आपत्काल में क्षत्रिय के लिए इसी वृत्ति का उपदेश देते हैं--

इदं तु वृत्तिवैकल्यात् त्यजतो धर्मनैपुणम्।
विट्पण्यमुद्धृतोद्धारं विक्रेयं वित्तवर्धनम्॥

(मनु० १०।८५)

जीविका के न मिलने से अपनी धर्मजीविका त्यागने वाले ब्राह्मण क्षत्रिय को धन के बढ़ाने वाली वैश्यवृत्ति स्वीकार कर लेनी चाहिये, हां इन वस्तुओं (रस, पका अन्न इत्यादि वस्तुओं) को वे न बेचें।

जीवेदेतेन राजन्यः सर्वेणाप्यनयंगतः।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

न त्वेव ज्यायसीं वृत्ति मभिमन्येत कर्हिचित् ॥

(मनु० १० । ९५)

समय के फेर में आया हुआ क्षत्रिय इन सब से जीविका करे पर ब्रह्मण की जीविका (दान लेना आदि) कभी स्वीकार न करे। सो पञ्जाब के क्षत्रिय जो कुछ काल से क्षत्रियोचित वृत्ति (प्रजापालनादि) से नहीं प्रायः वैश्य वृत्ति से जीविका कर रहे हैं, यह इनका राज्य छिन जाने और शत्रुओं के प्रबल होजाने से विवश होकर स्वीकार किया आपद्धर्म है । वस्तुतः इन की नाड़ियों मेंशुद्ध क्षत्रिय रक्त बह रहा है, इस में कोई संदेह नहीं इस में प्रमाण यह हैं —

(१) क्षत्रिय नाम से पुकारा जाना-पञ्जाब के क्षत्रिय वंश परम्परा से अपने आप को क्षत्रिय मानते लिखते और बतलाते चले आये हैं और इन की पड़ोसी जातियां भीइन को ऐसा ही मानती लिखती और कहती चली आई हैं। यह एक ही ऐसा प्रबल प्रमाण है कि इस के होते हुए कोई सन्देह शेष नहीं रहता और किसी प्रमाणान्तर की आवश्यकता नहीं रहती । गोत्र वर्ण आदि के निर्णय के लिए वंश की परम्परा से बढ़ कर कोई और प्रमाण नहीं होता । यदि इस में भी संशय किया जाय तो ब्राह्मण के ब्राह्मण माना जाने और वैश्य के वैश्य माना जाने में भी संशय हो सकता है, उन के ब्राह्मणत्व और वैश्यत्व में भी तो वंश की परम्परा ही प्रमाण हैं, तथापि इन के क्षत्रियत्व के और भी पुष्कल प्रमाण हैं जैसे कि—

(२)प्राचीन क्षत्रियों की नाईं इनके कुलपुरोहित हैं कुलपुरोहित

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सारस्वत ब्राह्मण हैं, जिन के विषय में भविष्योत्तर पुराण में लिखा है—

सारस्वतास्तु ये विप्राः क्षत्रियाणां पुरोहिताः ।

(३) इन के उपनयनादि सारे संस्कार क्षत्रिय मर्यादा के अनुसार होते हैं, और सूतक पातक की मर्यादा भी वही है जो धर्मशास्त्रों में क्षत्रियों को बतलाई है—

(४) इन के वंश प्राचीन क्षत्रियों से मिलते हैं—

(५) इन में जो ऐतिह्य (दन्त कथाएं) प्रचलित हैं, उन से भी ये प्रचीन क्षत्रियों के वंशधर सिद्ध होते हैं । इस प्रकार के पुष्कल प्रमाणों के होते हुए कोई संदेह शेष नहीं रहता कि पंजाब के क्षत्रिय प्रचीन क्षत्रियों के वंशधर हैं । न ही प्राचीन समय में इस में कभी कोई संदेह वा विवाद उठा है, निर्विवाद ऐसा ही मानते चले आते हैं ।

वर्तमान क्षत्रियों का प्राचीन क्षत्रियवंशों से सम्बन्ध

वर्तमान काल के क्षत्रियों में कुछ अवान्तर भेद पाये जाते हैं । जैसे चार जातिक्षत्रिय, पञ्चजातिक्षत्रिय, छः जाति क्षत्रिय बुंजाही, सरीन खुखरैन आदि । और भिन्न २ अल्लों की दृष्टि से तो इस समय क्षत्रियों की लग भग पाँच सौ जातियां पाई जाती हैं । इन सारे अवान्तर भेदों और उन के कारणों पर विचार करना यहाँ अभिप्रेत नहीं । व्यवहार के लिए ऐसे उपभेद आप से आप उत्पन्न हो जाया करते हैं । प्राचीन काल में भी हर एक वंश के कई अवान्तर भेद हो जाते थे । लोग मूल उन्हें उन के नाम से नहीं किन्तु अवान्तर नाम से ही

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुकारते थे और उसी नाम से वे प्रसिद्ध होते थे । जैसे सूर्य-वंश में पहला राजा मनु हुआ । मनु के पुत्रों में एक कुरुष था । उस के नाम से क्षत्रियों की एक अलग शाखा चली । जैसा कि विष्णु पुराण ४ । १ । १५ में आया है—

करूषात् कारूषा महाबलाः क्षत्रियाः बभूवुः ।

कुरूष से कारूष क्षत्रिय महाबली हुए ।

इक्ष्वाकु के पुत्रों में एक **निमि** था, जिस से **विदेह** क्षत्रियों की एक अलग शाखा चली । जिन की राजधानी मिथिला थी और राजा का उपनाम जनक होता था । इसी प्रकार सूर्यवंश की और भी कई उपशाखाएं होगईं । उन सारी शाखाओं के क्षत्रिय सूर्यवंशी होने पर भी सूर्यवंशी नाम से नहीं, किन्तु अवान्तर नामों से ही पुकारे जाते थे । इसी प्रकार चन्द्रवंश में **ययाति** के पुत्र **यदु** से यादवों की एक अलग शाखा चली । यादवों की हैहय और तालजङ्घ ये दो और प्रसिद्ध शाखाएं निकलीं, और भोजक, अन्धक, वृष्णि आदि एक ही यादव-वंश की उपशाखाएं थीं । इस प्रकार भेद, उपभेद आरम्भ से ही होते आये हैं । जो इस समय तक कई नये २ उपभेद हो गये हैं । इन में कई जातियाँ काम धन्धे के कारण भी प्रसिद्ध हुई हैं, जैसे भण्डार का काम करने से भण्डारी, लिखने पढ़ने का काम करने से महते इत्यादि नाम पड़े हैं । हाँ यह निःसन्देह है, कि पंजाब के क्षत्रिय हैं प्राचीन क्षत्रियों के ही वंशधर । क्षत्रिय स्वयं तो वंश-परम्परा से इस बात को सिद्धवत् मानते

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ही चले आते हैं, पर इस के साधक प्रमाण और भी पाये जाते हैं ।

मलहौत्तरे

विष्णुपुराण के प्रमाण से पूर्व दिखला चुके हैं, कि महानन्दि राजा का पुत्र जो शूद्रा के पेट से था, उस ने प्रबल हो कर क्षत्रिय-वंशों का बहुत नाश किया, उस के पीछे दूसरे राजाओं ने भी उसी नीति पर चल कर क्षत्रियों का विनाश किया । मिहिरप्रकाश में लिखा हैं, कि उस समय क्षत्रियों ने उन के अत्याचारों से बचने के लिए मिल कर एक सम्मति कर के अपने नाम और स्वरूप को इस प्रकार छिपाया—

अग्नि रवि ते सोम ए जगत होए विख्यात ।
जे रखिये ए नाम तां शत्रु करदे घात ॥
सम्मति सिद्ध बनाय के गोत नाम ए थाप ।
रखिया नाम मिहिरोत्तरे सूर्यवंशियाँ आप ॥
पौरववंशी आ बने उत्तम जात कपूर ।
अग्निवंश खन्ने बने जेहड़े रण विच्च शूर ॥
बदले रूप सरूप ते होर वटाए नाम ।
क्रिरताँ काराँ पलटियां धर्म रक्ख दे काम ॥
मिहिरवंशियां पौरवां कीती आन विचार ।
अग्नि वंशियां भी मनों कीता ए निर्धार ॥
मूल लुकावो नाम नूं पता न पावे कोई ।
धर्म बीजदे कारणे सिर ते लवो संजोई ॥

इस से सिद्ध है, कि क्षत्रियों की इन तीन जातियों ने तो अत्याचारों से बचने के लिए ये नाम थाप लिये । सूर्यवंशियों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ने अपना नाम मिहिर वा मिहिरोत्तर रक्खा । मिहिरोत्तर का अपभ्रंश अब मलहौत्रे बोला जाता है । चन्द्रवंशियों ने अपना नाम खन्ने रक्खा । ये नाम उन्हों ने अपने मूलवंश का ध्यान रख कर ही रक्खे प्रतीत होते हैं । जैसा कि **मिहिर** शब्द संस्कृत है । जो उणादि सूत्रों में इस प्रकार सिद्ध किया है:—

इषि मदि मुदि खिदि छिदि भिदि मन्दि चन्दि तिमि मिहि मुहि मुचि रुचि रुधि बन्धि शुषिभ्यः किरच् ।

(उणादि १ । ५१)

इष्, मद्, मुद्, खिद् छिद्, भिद्, मन्द्, चन्द्, तिम्, मिह्, मुह्, मुच्, रुच्, रुध्, बन्ध्, शुष् इन धातुओं से किरच् (इर) प्रत्यय होता है ।

इस सूत्र से मिह सेचने (भ्वादि परस्मैपदी अनिट्) से इर प्रत्यय आकर मिह+इर=मिहिर सिद्ध होता है ।

भट्टोजिदीक्षित ने कौमुदी में इस सूत्र की व्याख्या में लिखा है । मिहिरः=सूर्यः । मेहतीति मिहिरः अर्थात् मेंह बरसाने वाला । सूर्य ही किरणों द्वारा जल और रसको खींच कर मेंह बरसाता है इस लिए मिहिर नाम सूर्य का है । कोशों में भी मिहिर शब्द सूर्य का पर्याय माना है । अमरकोश में सूर्य के ३७ नामों में—

विकर्तनार्क मार्तण्डमिहिरारुणपूषणः ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यहाँ मिहिर सूर्य का नाम दिया है। दूसरे कोशों में भी मिहिर सूर्य के नामों में दिया है। **त्रिकाण्डशेष** में दो नाम दिये हैं महिर और मिहिर। जैसे—

महिर मिहिरगीथाः कालकृत् पद्मपाणिः।

सो मिहिर तो सूर्य का पर्याय है। सूर्य कहो मिहिर कहो एक ही अर्थ है। **मिहिरोत्तर** का अर्थ है। मिहिर=सूर्य, जिस वंश का उत्तर अर्थात् प्रधान पुरुष है, वह मिहिरोत्तर है। उत्तर का अर्थ उत्तम श्रेष्ठ प्रधान है, जैसा कि अमर कोश में आया है।

उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्वप्युत्तरः स्यात्।

(१) ऊपर (२) उत्तर दिशा में होने वाला और (३) श्रेष्ठ इन अर्थों में उत्तर शब्द है।

विश्वकोष में आया है—

उत्तरं प्रतिवाक्ये स्यादूर्ध्वोदीच्योत्तमेऽन्यवत्।
उत्तरस्तु विराटस्य तनये दिशि चोत्तरा॥

उत्तर—उत्तर शब्द उत्तर देने अर्थ में नपुंसक, ऊपर, उत्तर दिशा में होने वाला और उत्तम इन तीन अर्थों में त्रिलिङ्ग, विराट के पुत्र का नाम हो तो पुल्लिङ्ग और उत्तर दिशा का नाम हो तो स्त्री लिङ्ग होता है। सो सूर्यवाचक मिहिर शब्द से परे श्रेष्ठ वाचक उत्तर शब्द के जोड़ने से मिहिरोत्तर शब्द सिद्ध हुआ। इसी का अपभ्रंश मलहोत्तरा है। मिहिर के र को ल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

क्षत्रिय कुलभूषण स्वर्गीय जयदयाल जी कपूर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

क्षत्रिय कुल भूषण स्वर्गीय श्री जयदयाल जी कपूर
आफ़ अमृतसर
मालक फर्म "मैसर्ज़ जयदयाल कपूर एण्ड संन्ज़"
सौदागरान काग़ज़, देहली ।

आप का जन्म सन् १८८० ई० में दिवाली के पवित्र दिन हुआ। उक्त फर्म के आप जन्म दाता और प्रधान थे। आप ने काग़ज वा स्टेशनरी आदि के कार्य्य को विशेष समृद्ध किया और फर्म की शाखाएं भारतवर्ष के बड़े बड़े प्रसिद्ध व्योपारिक नगरों में स्थापित कीं। उत्तरीय भारत में भी विशेष विख्याति प्राप्त की। स्वर्गीय लाला जी अपने पवित्र विचारों और सज्जनता के कारण सर्वप्रिय थे, इसके अतिरिक्त अपनी जीवन यात्रा में हिन्दुओं की सब से बड़ी संस्था अर्थात् आर्य्य समाज में सम्मिलित होकर, हिन्दू जनता और देश की सेवा भी खूब करते रहे। अपने परिवार को उन्नत और परम सुखी बनाकर कुच्छ समय रुग्न रहने के पश्चात् आपका ४ चार अक्तूबर सन् १९५० को स्वर्गवास हुआ।

आपके होनहार सुपुत्रों ने अपने पूज्य पिता जी का नाम चिरस्थाई रखने के लिये प्रकाशक को योग्य आर्थिक सहायता देकर पितृभक्ति और जाति प्रेम का परिचय दिया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करके और स्वर में भेद करके मल्हौत्तरा शब्द सिद्ध हुआ है। र ल की स्वर्णता होने से र के स्थान ल सहज ही हो जाता है। जैसा कि कहा है—

रलयोर्डलयोश्चैव शषयोर्बवयोस्तथा।
वदन्त्येषां च सावर्ण्यमलंकारविदो जनाः॥

अलंकार शास्त्र के जानने वाले पण्डित र ल की, ड ल की, श ष की, और ब व की, आपस में स्वर्णता कहते हैं॥ इससे मिहिरोत्तरा से मलहौत्तरा हो जाना सहज ही है। कई इसे मिहिरावतार शब्द का अपभ्रंश कहते हैं।

कपूर

कर्पूर=कपूर। "पौरव वंशी आ बने उत्तम जात कपूर"। इस से कपूर चन्द्रवंशी सिद्ध हैं। यह शुद्ध संस्कृत शब्द कर्पूर है, जिस का पञ्जाबी में कपूर, फारसी में कफ़ूर और अंगरेजी में कैंफर (Camphor) है। संस्कृत में संयुक्त र का पंजाबी में आकर लोप हो जाता है। जैसे ब्राह्मण का बाह्मण, कर्म का कम्म, सर्प का सप्प; सर्व का सब, दर्भ का दब, कर्चूर का कचूर, इसी प्रकार कर्पूर का कपूर हुआ है॥ कर्पूर शब्द—

खर्जि पिञ्जादिभ्य ऊरोलचौ। (उणा ४।९०)

सूत्र से कृपू सामर्थ्ये (भ्वादि आत्मनेपदी वेट्) से ऊर प्रत्यय आकर कृप्+ऊर=कर्प्+ऊर=कर्पूर सिद्ध होता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कल्पते इति कर्पूरः। जो चारों ओर सुगन्ध फैलाने के समर्थ है वह कर्पूर है। कर्पूर का अर्थ कपूर है। अब देखना यह है, कि चन्द्रवंश का उसके साथ क्या सम्बन्ध है। अमर कोश में कपूर के ५ नाम ये कहे हैं:—

अथ कर्पूर मस्त्रियाम्। घनसार श्चन्द्र संज्ञः सिताभ्रो हिमबालुका

(अमर० २।६।१३)

कर्पूर, घनसार, चन्द्रसंज्ञ सिताभ्र, और हिमबालुका। इस में चन्द्रसंज्ञ शब्द है। इस का अर्थ यह है चन्द्रस्य संज्ञाः संज्ञाः यस्य स चन्द्रसंज्ञः—चन्द्र के जो नाम है वे जिसके नाम हैं अर्थात् चन्द्र के सारे नाम कर्पूर के नाम हैं। सो चन्द्र के नाम कर्पूर के नाम होने से कर्पूर नाम रखने में अपने मूल नाम को ध्यान में रक्खा गया है॥

चन्द्र वंश की शाखाओं के वर्णन में आया है—

मार्कण्डेय उवाच—

अत्रिवश समुत्पन्नान् गोत्रकारान् निबोध मे।
कर्पूरायणशाखेया स्तथा शाराहणाश्च ये॥

(विष्णु धर्मोत्तर अध्याय ११३ श्लो० १)

मार्कण्डेय (राजा वज्र से) बोले-अत्रिवंश में उत्पन्न हो कर जो राजऋषि गोत्रप्रवर्तक हुए हैं उन्हें मुझ से जानो कर्पूरायण शाखा वाले और शाराहण इत्यादि।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

खन्ने—मिहिर प्रकाश के—'अग्नि वंश खन्ने बने जेहड़े रण विच्च शूर' इस वचन से पाया जाता है, कि खन्ने अग्निवंशी हैं। अब यह देखना है कि यह अग्निवंश कौन है। एक अग्नि वंश का वर्णन इस प्रकार है, कि जब वैदिक धर्मियों पर बहुत सी विपत्तियां आने लगीं, तब ब्राह्मणों ने आबू पर्वत पर एक महायज्ञ किया। उस यज्ञ के अग्निकुण्ड से चार वीर पुरुष उत्पन्न हुए-परमार, सोलंकी, चौहान और पड़िहार। इन के नाम पर आगे चार वंश चले। इस अग्निवंश से खन्नों का कोई ऐतिहासिक मेल नहीं।

दूसरा अग्निवंश बहुत प्राचीन काल का है, वह अंगिरा वंश है। मत्स्य पुराण अध्याय १६५ में यज्ञ की अग्नि से भृगु अंगिरा और अत्रि की उत्पत्ति बतलाई हैं। महाभारत वनपर्व में मार्कण्डेय युधिष्ठिर संवाद में अङ्गिरा ऋषि की तपश्चर्या के वर्णन में मार्कण्डेय वतलाते हैं—

अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ।
यथा क्रुद्धो हुतवहस्तपस्तप्तु' वनं गतः ॥६॥
यथा च भगवानग्निः स्वयमे वाङ्गिराऽभवत् ।
संतापयंश्च प्रभया नाशयंस्तिमिरावलिम् ॥७॥
पुराऽङ्गिरा महाबाहो चचार तप उत्तमम् ।
आश्रमस्थो महाभागो हव्यवाहं विशेषयन् ॥८॥
तपश्चरंस्तु हुतभुक् संतप्तस्तस्य तेजसा ।
भृशंग्लानश्चतेजस्वी न किञ्चित् प्रजज्ञिवान् ॥६॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अथ संचिन्तयामास भगवन् हव्यवाहनः ।
अन्योऽग्निरिव लोकानां ब्रह्मणा संप्रकाशितः ॥१०॥
अग्नित्वं विप्रनष्टं हि तप्यमानस्यमे तपः ।
कथमग्निः पुनरहं भवेयमिति चिन्त्य सः ॥११॥
अपश्यदग्निवल्लोकांस्तापयन्तं महामुनिम् ।
सोपासर्पच्छनैर्भीतस्तमुवाच तदाङ्गिराः ॥१२॥
शीघ्रमेभवस्वाग्निस्त्वं पुनर्लोकभावनः ।
विज्ञातश्चासि लोकेषु त्रिषु संस्थानचारिषु ॥१३॥
त्वमग्ने प्रथमः सृष्टो ब्रह्मणा तिमिरापहः ।
स्वस्थानं प्रतिपद्यस्व शीघ्रमेव तमोनुद ॥१४॥

अग्निरुवाच—

नष्टकीर्तिरहं लोके भवाञ्जातो हुताशनः ।
भवन्तमेव ज्ञास्यन्ति पावक न तु मां जानाः ॥१५॥
निक्षिपाम्यहमग्नित्वं त्वमाग्निः प्रथमो भव ।
भविष्यामि द्वितीयो ऽहं प्राजापत्यक एव च ॥१६॥

अङ्गिरा उवाच ।

कुरु पुण्यं प्रजास्वर्ग्यं भवानग्निस्तिमिरापहः ।
मां च देव कुरुष्वाग्निं प्रथमं पुत्रमञ्जसा ॥१७॥

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

मार्कण्डेय उवाच—

तच्छ्रुत्वाङ्गिरसो वाक्यं जातवेदास्तथाऽकरोत् ।
राजन् बृहस्पतिर्नाम तस्याप्याङ्गिरसः सुतः ॥१८॥
ज्ञात्वा प्रथमजं तं तु वन्हेरङ्गिरसः सुतम् ।
उपेत्य देवाः पप्रच्छुः कारण तत्र भारत ॥१९॥
सतुपृष्टस्तदा देवैस्ततः कारणमब्रवीत् ।
प्रत्यगृह्णन्त देवाश्च तद्वचोऽङ्गिरसस्तदा ॥२०॥

(महा० वन० २२०)

इस विषय में एक पुराना इतिहास बतलाते हैं, जिस प्रकार कि क्रुद्ध हुआ अग्नि तप तपने के लिए बन को गाया ॥६॥ और जैसा कि अङ्गिरा अपनी प्रभा से जगत् को सन्तप्त करता हुआ और अन्धकार-पुञ्ज का नाश करता हूआ स्वयमेव अग्निरूप हो गया ॥७॥ पहले हे महाबाहो ! महाभाग अङ्गिरा ने आश्रम में रह कर अग्नि से भी बढ़ कर उत्तम तप किया ॥८॥ तप तप्त हुआ अग्नि भी उसके तेज से सन्तप्त हुआ और बहुत घबराया, पर कुछ न जान सका ॥९॥ अग्नि सोचने लगा कि क्या ब्रह्मा ने लोक-रक्षा के लिए यह कोई अन्य अग्नि प्रकाशित कर दिया है ॥१०॥ जान पड़ता है,कि तप तप्त २ मेरा अग्निपन (पुण्यकर्म की साधनता) नष्ट हो गया है । अब मैं फिर किस तरह अग्नि बनूं ऐसा सोच कर उस ने ॥११॥ अग्नि की नाई (अपने तेज से) लोकों को तपाते हुए महामुनि (अङ्गिरा) को देखा और डरता २ उस के निकट गया तब अङ्गिरा ने, अग्नि से कहा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

॥१३॥ हे अग्ने ! ब्रह्मा ने तुझे अन्धकार का मिटाने वाला मुख्य अग्नि बनाया है, तुम अपने स्थान में प्रविष्ट हो शीघ्र अन्धकार को मिटाओ ॥१४॥

अग्नि ने उत्तर दिया—लोक में मेरी कीर्ति तो अब जाती रही, आप अग्नि बन गये हैं, लोग अब आप को ही अग्नि जानेंगे मुझे नहीं ॥१५॥ सो मैं अपना अग्निपन तुझ में डालता हूं, तू ही मुख्य अग्नि बन, मैं प्रजापति का पुत्र दूसरा अग्नि बनूंगा ॥१६॥

अङ्गिरा बोले—हे अग्ने ! लोगों के स्वर्ग के साधन पुण्य कर्म को तुमही पूर्ण करों, आपही अन्धकार के मिटाने वाले हैं और हे देव ! मुझे अपना साक्षात् प्रथम पुत्र बनाओं ॥१७॥

मार्कण्डेय बोले—अङ्गिरा के उस वचन को सुन कर अग्नि ने वैसे ही किया। हे राजन् ! उस अङ्गिरा का पुत्र बृहस्पति हुआ ॥१८॥ अंगिरा को अग्नि का प्रथम पुत्र जान कर देवता अंगिरा के पास आये और उस से इस का कारण पूछा ॥१९॥ देवताओं के पूछने पर अंगिरा ने करण बतलाया और देवताओं ने अंगिरा के वचन को स्वीकार किया (अर्थात् उसे अग्नि का पुत्र मान लिया) ॥२०॥

सारांश यह है कि लोकोत्तर तपश्चर्या से अंगिरा ने अपना इतना तेज बढ़ाया, कि तेजस्विता में अंगिरा और अग्नि में कोई भेद नहीं रहा। तब देवताओं ने अंगिरा को अग्नि-वंशीय ब्राह्मण माना।

अंगिरा-वंशीय ब्राह्मणों में ब्रह्म-धर्म और क्षत्र-धर्म एक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समान पाये जाते थे। वेद-विद्या और तपश्चर्या में ये पूरे ब्राह्मण थे और शस्त्रास्त्रों की विद्या तथा उन के प्रयोग में क्षत्रियों के भी गुरू थे। अंगिरा-वंश में ही द्रोणाचार्य हुए हैं। क्षत्रिय वंशों से इन के विवाह सम्बन्ध भी होते रहे हैं और कई क्षत्रिय वंश भी इन में आकर मिले हैं, जैसा कि विष्णु पुराण में मनु के पुत्र नभाग की सन्तान परम्परा में रथीतर तक का वर्णन कर के कहा है—

एते क्षत्र प्रसूता वै पुनश्चाङ्गिरसः स्मृतः।
रथीतरस्य प्रवराः क्षत्रोपेता द्विजातयः॥

ये रथीतर के वंशज क्षत्रियों से जन्म लेकर फिर अंगिरा माने गये हैं जो कि क्षत्रधर्म से युक्त ब्राह्मण हैं (क्षत्रोपेत द्विजाति हैं)। सूर्यवंशीय युवनाश्व का पुत्र जो **हरित** हुआ है, उसके वंशज हारीत नाम के अंगिरागोत्री ब्राह्मण प्रसिद्ध हुए। जिन का प्रवरपाठ इस प्रकार पढ़ा गया है—**अथ हारितानां त्र्यार्षेयम् आंगिरसाम्बरीष युवनाश्वेति।** हारीतों के तीन प्रवर हैं। अंगिरा, अम्बरीष और युवनाश्व। इस प्रकार क्षत्रियवंश अंगिरागोत्र में मिलते रहे। जो क्षत्र अंगिरागोत्र में मिले, वे अग्निवंशी कहलाये।

खन्नों का अंगिरावंश से सम्बन्ध इस प्रकार है, कि खन्नों का गोत्र **कुत्स** है। और प्रवर तीन हैं। यह कुत्स अंगिरा गण में हुआ है। जैसा कि प्रवरमञ्जरी में आपस्तम्बोक्त केवल अंगिरों के प्रवरकाण्ड में आया है—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अथ कुत्सानां त्र्यार्षेयः आंगिरस मान्धात्रकौत्सेति ।

कुत्सवन्मन्धातृवदङ्गिरोवदिति ।।

कुत्सों के तीन प्रवर हैं, अंगिरा, मान्धाता और कुत्स । सो अंगिरा वंश में उत्पन्न हुए कुत्स के वंश धर होने से खन्ने अग्निवंश कहे गये हैं । मिहिर प्रकाश में खन्नों के विषय में बल पूर्वक यह बात कही है ।

वंश विकुक्षि सूर्यदा दूजा पौरव वंश ।
अग्निवंश खन्ना होया इस विच्च कुझ नहीं दंश ।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है, कि खन्ना शब्द के साथ अग्निवंश का क्या सम्बन्ध है । इस का उत्तर यह है कि खन्ना शब्द संस्कृत खण्ड शब्द से निकला है । और खण्ड का अर्थ है एक हिस्सा वा टुकड़ा । पूर्व दिखला चुके हैं, कि अंगिरागोत्री अग्निवंशी क्षत्रोपेत द्विजाति कहे गये हैं । अर्थात् ब्रह्म क्षत्र का मेल है । अग्निवंशी बहुत से क्षत्रिय ब्राह्मण हो गये और बहुत से क्षत्रिय रहे । सो सम्पूर्ण अग्नि वंश का एक खण्ड था; जिस ने अपना इस प्रकार नाम परिवर्तन किया, इस लिए उन्हें खण्ड कहा गया, जिस का पञ्जाबीरूप खन्ना है ।

अपने नाम का परिवर्तन प्रधान शाखाओं ने किया ।

यह स्मरण रहे, कि सूर्यवंश चन्द्रवंश और अग्निवंश की अनेकों उपशाखाएं थीं उन के नाम तो पहले ही अलग हो चुके थे । और यद्यपि वे सूर्यवंशी चन्द्रवंशी और अग्निवंशी ही थे,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तथापि लोक में अपने अलग २ नमों से ही प्रसिद्ध थे । जैसे सूर्यवंशी करूष के वंशज लोक में कारूष नाम से ही प्रसिद्ध हो गये थे । इस प्रकार हर एक वंश की अनेकों उपशाखाएं लोक में प्रसिद्ध हो चुकी थीं । वे अपने प्रसिद्ध नामों से पुकारी जाती थीं, न कि सूर्यवंश, चन्द्रवंश और अग्निवंश इन मुख्य नामों से प्रसिद्ध थीं । ये शाखाएं ही शत्रुओं की क्रूर दृष्टि का मुख्य लक्ष्य थीं, शत्रु इन्हीं को जड़ से उखाड़ना चाहते थे । इसलिए इस संकट में नामपरिवर्तन की आवश्यकता भी इन्हीं प्रधान शाखाओं को ही हुई । क्योंकि मुख्यतया राज्याधिकारी प्रधान शाखा वाले ही समझे जाते थे, मिहिर प्रकाश में भी यह आशय इस प्रकार दिखलाया है—

अग्नि रवि ते सोम ए जगत होए विख्यात ।
जे रखिये एह नाम तां शत्रु करदे घात ॥
मिहिर-वंशियां पौरवाँ कीता आन विचार ।
अग्नि-वंशियां वी मनों कीता ए निरधार ॥
मूल लुकावो नाम नूं पता न पावे कोई ।
धर्म बीज दे कारणे ❀सिर ते लवो संजोई ॥

सूर्यवंश की प्रधानशाखा ने (जो सूर्यवंश नाम से ही लोक विख्यात थी) अपना नाम मिहिर वा मिहिरोत्तर रक्खा, इसी प्रकार चन्द्रवंश की प्रधान शाखा ने (चन्द्रवंश नाम से लोक-विख्यात थी) अपना नाम कपूर रक्खा और अग्निवंश की प्रधान शाखा ने ही (जो अग्निवंश नाम से प्रसिद्ध थी) अपना

❀ धर्म की रक्षा के लिए और बीज अर्थात रक्त को शुद्ध रखने के लिए ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नाम खण्ड का खन्ने रक्खा। क्षत्रियों में इन के उच्च माने जाने का भी यही कारण हुआ, कि ये तीनों वंश प्रधान शाखाओं से सम्बन्ध रखते थे, और यह उच्चता इनकी नई न थी, किन्तु पहले से ही चली आती थी।

कक्कड़ संस्कृत के कुकुर वा कौकुर शब्द से निकला है। विष्णुपुराण अंश ४ अध्याय १३ से यदुवंश का वर्णन आरम्भ होता है। यदुवंशियों में राजऋषि अन्धक आया है। अन्धक के चार पुत्रों में एक कुकुर था। उस के वंशज कुकुर कहलाये, जिस का परिवर्तित रूप कक्कड़ है।

सूर्यवंश, चन्द्रवंश और अग्निवंश की नांई यदुवंश भी क्षत्रियों में प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध वंश था। ऊपर कहे तीन वंशों के साथ इस चौथे वंश का मेल आवश्यक समझा गया, इस लिए पीछे यदुवंशी कक्कड़ों को पूर्वोक्त तीन वंशों के साथ मिला कर ये चार जति क्षत्रिय कहलये। जो कक्कड़ इन तीन वंशों के साथ सम्मिलित हुए, वे श्रेष्ठ कहलाये, जिस का परिवर्तित रूप अब **सेठ** प्रसिद्ध है। इस समय कक्कड़ दो नामों से प्रशिद्ध हैं। सेठ और कक्कड़। जो चार जाति क्षत्रियों में सम्मिलित हैं, वे सेठ कहलाते हैं, दूसरे कक्कड़। पहले तीन वंशों में अग्निवंशी तो आधे सम्मिलित हुए थे, इस लिए उनको ढाई घर भी कहते थे। इस का अभिप्राय यह था, कि अग्नि-वंशी आधे सम्मिलित थे, पर वास्तव में वंश तीन ही थे, इस लिए वे तीन वंश ढाई घर कहलाते थे, जब चौथे यदुवंश को मिलाया, तो यही चारजाति क्षत्रिय कहलाये। जैसा कि

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

मिहिर प्रकाश में सिखा है—

ढाई घर संज्ञा हुई ढाई वंश दी आद ।
राज इन्हा दा न रह्या नवीं होई मर्याद ॥
मिहिर इक कपूर दो अद्धे खन्ने जान ।
ढाई घर गिन घत्त तूं कुल करिये प्रमाण ॥
पिछों आप रलाय के ढाई कीते होर ।
सेठ ओन्हां नूं थाप्या ढाई घरी दे जोर ॥
त्रय वंश ढाई होय विके जेठे सान ।
पिछों सेठ रलाय के चार होय प्रमाण ॥

ये चार प्रसिद्ध वंश तो इस प्रकार प्राचीन क्षत्रिवंशों से मिलते हैं । दूसरे क्षत्रिवंश भी इन्ही पुराने क्षत्रिवंशों से सम्बन्ध रखते हैं । जैसा कि गुरु गोबिन्दसिंह जी ने वेदिवंश के विषय में लिखा है, कि वे सूर्यवंशी हैं । सूरि शब्द तो वेद में नेता के अर्थ में प्रयुक्त है, जो विद्वान् ब्राह्मण वा राजकुमार के लिए प्रयुक्त हुआ हैं । यह भी अनुमान किया ज.ता हैं, कि तालवारों का सम्बन्ध चन्द्रवंश की तालजघ शाखा के साथ है । समय के फेर से पञ्जाब के क्षत्रिय कई शतकों से संकटों पर संकट उठाते हुए अपने धर्म की रक्षा करते चले आते हैं, यह कुछ छोटी सी बात नहीं है, सो यदि ऐसे संकटों में किसी लिखित के न रहने से वे अपने मूल वंश को निश्चितरूप से भूले भी हों, तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं । सर्वथा यह निः-सन्देह है, कि इन का सम्बन्ध प्राचीन क्षत्रियवंशों से है, जो पञ्जाब में बहुतायत के साथ बसे हुए थे, भूमि के अधिपति थे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

और सारस्वत ब्राह्मणों के यजमान थे। जैसा कि भविष्योत्तर में लिखा है—

सारस्वतास्तु ये विप्राः क्षत्रियाणां पुरोहिताः।

सारस्वत ब्राह्मण जो कि क्षत्रियों के पुरोहित हैं। और अब भी सारस्वत ही इन के पुरोहित हैं।

चार जाति क्षत्रियों के गोत्रों का निर्णय।

अब हम एक ऐसे प्रश्न पर विचार करना चाहते हैं, ज वास्तव में बड़े महत्त्व का है। इस समय चार जाति क्षत्रियों के गोत्र दो प्रसिद्ध हो रहे हैं-कौशल्य और वत्स। वत्स सेठों का है और कौशल्य मिहिर, कपूर और खन्ने इन तीनों का है, पर विवाह सम्बन्ध मिहिर, कपूर और खन्ने इन तीन वंशों में परस्पर होता है, जिन का गोत्र एक हैं। क्या यह एक आश्चर्य की बात नहीं, कि क्षत्रियों में ये चार जाति जो प्रतिष्ठित माने जाते हैं, उन में एक गोत्र में विवाह हो, जब कि धर्मशास्त्रों में इस का स्पष्ट निषेध है। जैसा कि मनु ने कहा है—

असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः।
सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि मैथुने॥

(मनु० ३।५)

जो माता की ओर से सपिण्डा न हो और पिता की ओर से सगोत्रा भी न हो, वह द्विजों के लिए विवाह कर्म में श्रेष्ठ है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जब धर्मशास्त्र की यह आज्ञा है' कि विवाहसम्बन्ध एक गोत्र में नहीं होना चाहिये, तो फिर कौशल्यगोत्रियों में विवाह-सम्बन्ध क्या धर्मशास्त्र की मर्यादा के विरुद्ध नहीं, और ऐसा करने में ये उच्च क्षत्रिय जातियां ही क्या उस मर्यादा को तोड़ नहीं रहीं ? यह एक प्रश्न है, जिस का निर्णय होना आवश्यक है ।

इस प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व यह बताना उचित है कि धर्मशास्त्र किस कन्या से विवाह करने की आज्ञा देते हैं । याज्ञवल्कय आचाराध्याय में, विवाह सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है—

अविपलुत ब्रह्मचर्यो लक्षण्यां स्त्रियमुद्वहेत् ।
अनन्यपूर्विका कान्तामसपिण्डां यवीयसीम् ॥५२॥
अरोगिणीं भ्रातृमती मसमानार्षगोत्रजाम् ।
पञ्चमीं सप्तमीं चैव मातृतः पितृतस्तथा ॥५३॥

अखण्डित ब्रह्मचर्य वाला उत्तम लक्षण वाली स्त्री को विवाहे, जो कुमारी है, सुन्दरी है, असपिण्डा है और आयु में अपने से छोटी है ॥ ५२ ॥ रोगन नहीं, भाईयों वाली है, जो अपने गोत्र और प्रवर में नहीं जन्मी । माता की ओर से पांचवीं और पिता की ओर से सातवीं है ।

मनुस्मृति में इस प्रकार लिखा है—

असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि मैथुने ॥

[मनु० ३। ५]

जो माता की ओर से सपिण्डा (छः पीढ़ियों में से) न हो और पिता की ओर से सगोत्रा भी न हो (अर्थात् न समान गोत्र की हो न छः पीढ़ियों में से हो) वह द्विजों के लिए विवाह सम्बन्ध में श्रेष्ठ है।

इस से स्पष्ट है कि एक गोत्र में विवाह नहीं करना चाहिये। इस के अतिरिक्त भुआ, मासी और मामे की कन्याओं से भी विवाह का निषेध है। ऋग्वेद यम यमी संवाद में यह लिखा है—

पापमाहु यः स्वसारं निगच्छेत् ।

अर्थात् अपनी धर्म बहिनों से गमन करने वाला पापी होता है। मनु ने इन के ब्याहने में प्रायश्चित्त लिखा है—

पैतृष्वसेयीं भगिनीं स्वस्रीयां मातुरेव च ।
मातुश्च भ्रातुराप्तस्य गत्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥
एतास्तिस्रस्तु भार्यार्थे नोपयच्छेत्तु बुद्धिमान् ।

(मनु० ११। १७१-१७२)

बुआ की कन्या, मासी की कन्या, और अपने मामे की कन्या ये बहनें हैं। इन को गमन कर चान्द्रायण व्रत करे (तब शुद्ध होता है) इन तीनों को बुद्धिमान् पुरुष पत्नी बनाने के लिए कभी न विवाहे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसी प्रकार भुआ मामी आदि जो मातृवत् मानी जाती हैं और भाई की कन्या आदि जो कन्यावत् मानी जाती हैं, उन के साथ विवाह का निषेध है ।

पूर्व लिखा जा चुका है कि एक गोत्र में ब्याह न करे । गोत्र किसे कहते हैं, इस विषय में—

शब्दकल्पद्रुम में गोत्र का अर्थ लिखा है—

गोत्रं वंशपरम्परा प्रसिद्धमादि पुरुषं ब्राह्मण रूपम् ।

वंश परम्परा से प्रसिद्ध चला आ रहा, वंश का आदि पुरुष ब्राह्मणरूप गोत्र कहलाता है ।

ब्राह्मणों में भी गोत्रप्रवर्तक ऋषि प्रधानतया आठ ही माने हैं, जैसा कि बौधायन का वचन है ।

विश्वामित्रो जमदग्निर्भरद्वाजोऽथ गौतमः ।

अत्रिर्वसिष्ठः कश्यप इत्येते सप्तऋषयः ॥

सप्तानामृषीणा—मगस्त्याष्टमा—नां यदपत्यं तद् गोत्रम् ॥

विश्वामित्र, जमदग्नि, भारद्वाज, गौतम, अत्रि, वसिष्ठ और कश्यप ये जो सात ऋषि हैं, इन सातों ऋषियों और आठवें अगस्त्य की जो संतान है वे इन ऋषियों के गोत्र में हैं ।

किसी अन्य स्मृति में भी आया है—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जमदग्निर्भरद्वाजो विश्वामित्रोत्रिगोतमाः ।

वसिष्ठ कश्यपागस्त्या मुनयो गोत्र कारिणः ।

एतेषां यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्वते ।

जमदग्नि, भारद्वाज, विश्वामित्र, अत्रि, गोतम, वसिष्ठ कश्यप, अगस्त्य ये ऋषि गोत्रकारक हुए हैं । इनकी जो संतानें हैं, वे उन गोत्रों को मानती हैं ।

प्रवर—अब देखना यह है, कि प्रवर क्या हैं । गोत्रप्रवर्तक ऋषि की संतान में जो मन्त्र द्रष्टा ऋषि हुए वे उस गोत्र के प्रवर कहलाते हैं ।

इन मूल आठ गोत्रों की ज्यों २ संतान की वृद्धि होती गई त्यों २ इनके अवान्तर गोत्र कई बनते गये । धर्मप्रदीप में २४ गोत्र गिने हैं । धीरे २ सहस्रों और लाखों गोत्र होगये । जैसा कि कहा है—

गोत्राणां च सहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानि च ।

ऊनपञ्चाशदेतेषां प्रवरा ऋषि दर्शनात् ॥

गोत्र सहस्रों, लाखों और करोड़ों हैं, पर उन के प्रवर केवल ४६ हैं, क्योंकि वे ही ऋषि अर्थात् मन्त्र द्रष्टा हुए हैं ।

अब ये जो सहस्रों लाखों और करोड़ों गोत्र कहे हैं, ये आर्षगोत्र नहीं, किन्तु लौकिक गोत्र अर्थात्-आज कल की प्रसिद्ध जातियां वा अल्लें हैं ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इन प्रमाणों से यह सिद्ध हुआ, कि गोत्र दो प्रकार के हैं आर्षेय और लौकिक । आर्षेय गोत्र के भूल जाने पर, क्षत्रिय और वैश्य का आर्षेय गोत्र वही माना जाता है, जो उन के पुरोहित का हो या काश्यप गोत्र माना जाता है। जैसा कि मनु ३ । ५ पर मेधातिथि ने यह कल्प सूत्र उद्धृत किया है—

पौरोहित्यान् राजन्यवैश्ययोः ।

पुरोहितों के गोत्र प्रवर ही क्षत्रिय और वैश्य के होते हैं ।

इसके अनुसार ही मिताक्षरा में भी आया है—

यद्यपि राजन्यविशां प्रातिस्विकगोत्राभवात् प्रवराभाव स्तथापि पुरोहितगोत्रप्रवरौ वेदितव्यौ । तथा च यजमानस्यार्षेयान् प्रवृणीत इत्युक्त्वा "पौरोहित्यान् राजन्यविशां प्रवृणीते" इत्याहाश्वलायनः ।

यद्यपि क्षत्रियों और वैश्यों के अपने निज के गोत्र न होने के कारण प्रवर भी नहीं हैं, तथापि पुरोहित के गोत्र और प्रवर ही उन के भी जानने चाहिये । जैसा कि (यज्ञ के प्रकरण में) 'यजमान के प्रवर उचारता है' यह कह कर "क्षत्रियों और वैश्यों के (गोत्र प्रवर) उन के पुरोहितों के उचारे" यह आश्वलायन ने कहा है ।

इस से स्पष्ट है कि जिन क्षत्रियों को अपना गोत्र भूल गया हो केवल वह ही पुरोहित के गोत्र को अपना गोत्र जानें

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जिन को गोत्र ज्ञान के अतिरिक्त पुरोहित ज्ञान भी न रहा हो वह काश्यप गोत्र समझे। जैसा कि प्रवर मंजरी में कहा है—

गोत्र नाशे तु काश्यपः ।

अर्थात् गोत्र न जानने पर काश्यप गोत्र ही जानना चाहिये। इसी लिये समस्त अरोड़ों का काश्यप गोत्र है। मगर विवाह सम्बन्ध में वह भी लौकिक गोत्र का त्याग करते हैं जैसे नारंग नारंगों से मोंगे मोंगों से विवाह नहीं करते। पूर्वकाल में यह अपने गोत्र और पुरोहित को भूल गए थे इस लिये इन्हें काश्यप गोत्र मानना पड़ा। और विवाहसम्बन्ध के लिये लौकिक गोत्र (प्रचलित जातियें, अर्थात् नारंग, मोंगा आदि,) का त्याग करना पड़ा। इस लिये अरोड़ों का एक गोत्र होते हुए भी कोई आपत्ति नहीं आती। यह जातियें भी गोत्र हैं इस में यह प्रमाण हैं—

भगवान् **पाणिनि** का एक सूत्र है—

गोत्रावयवात् [४ । १ ७९]

इस में जो गोत्रावयव शब्द आया है, उस पर विचार करते हुए महाभाष्यकार **पतञ्जलि मुनि** लिखते हैं—

भारद्वाजीयाः पठन्ति । सिद्धं तु कुलाख्याभ्यो लोके गोत्राभिमताभ्यः ।

भारद्वाजीय पढ़ते हैं। यह तो इस से सिद्ध है, कि लोक में प्रसिद्ध जो कुल (जातियां) हैं, वे गोत्र माने गये हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यहां कुल जो वंश वा जातियां हैं, उन को स्पष्ट गोत्र माना गया है ।

अमरकोश में वंश के ये नौ नाम आये हैं ।

संततिर्गोत्र जनन कुलान्यभि जनान्वयौ ।
वंशोऽन्ववायः संतानः [२ । ७ । १]

संतति, **गोत्र,** जनन, कुल, अभिजन, अन्वय, वंश, अन्ववाय, संतान ।

मेदिनी कोष में आया है—**गोत्र कुलाख्ययोः**

गोत्र कुल का और नाम का नाम है ।

हलायुध ने लिखा है—**अन्ववायोऽन्वयो वंशो गोत्रं चाभिजनं कुलम् ।**

अन्ववाय, अन्वय, वंश, **गोत्र,** अभिजन और कुल ये वंश हैं । इत्यादि अनेकों प्रमाण हैं, जिन में वंश, कुल और गोत्र पर्याय माने गये हैं । अतएव ये प्रसिद्ध वंश वा जातियां भी **गोत्र** हैं । यह बात इससे और भी स्पष्ट हो जाती है, कि प्राचीन काल में अपने प्रसिद्ध नाम के पीछे ब्राह्मण अपना गोत्रनाम लगाते थे, जैसे राममिश्र **भारद्वाज** यहां भारद्वाज गोत्र नाम है, जो राममिश्र के पिता पितामह भी अपने नाम के साथ लगाते आये और पुत्र पौत्र भी लगाते जाएंगे । और लोग भी उन्हें गोत्रनाम से पुकारते हैं । जैसे आइये **भारद्वाज**

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जो इत्यादि । इसी प्रकार अरोड़ों ने भी अपने प्रसिद्ध नाम के पीछे जाति नाम लगाया । जैसे गोकुल चन्द्र नारंग, अमर नाथ मोंगा, इत्यादि इस से सिद्ध है कि गोत्र के नाश होने पर प्रचलित जातियें ही गोत्र मानी गई हैं । और यही लौकिक गोत्र माना गया ।

मनु के उक्त श्लोक (३ । ५) पर सब से पुराने टीकाकार **मेधातिथि** लिखते हैं—

अन्ये तु गोत्रं वंशमाहुः न तत्रावध्यपेक्षा याव देतज्ज्ञायते वयमेकवंशा इतितावदविवाहः ।

दूसरे आचार्य गोत्र वंश को कहते हैं । उस में अवधि की अपेक्षा नहीं, किन्तु जहां तक यह ज्ञान हो कि हम एक वंश के हैं, वहां तक आपस में विवाह न हो । इस से स्पष्ट है कि गोत्र के अज्ञान में एक जाति में विवाह वर्जित है ।

एक यह भी बात ध्यान देने योग्य है, कि आदि गोत्र तो आठ थे । और वे आदि ऋषियों के नाम पर थे । पर ज्यों २ उन की संतान की वृद्धि होती गई, त्यों २ एक ही गोत्र के अन्तर्गत कई २ गोत्र बनते गये । ये अवान्तर गोत्र हर एक शाखा के मूल पुरुषों के नाम पर ही बनते रहे । इस प्रकार जब गोत्र बहुत बढ़ गये, तो सहज ही होना था, कि दो अलग २ वंशों के प्रवर्तक मूल पुरुषों का नाम एक ही मिल जाय ऐसी अवस्था में उन दोनों का गोत्रनाम एक हो जायगा, यद्यपि उस गोत्र के प्रवर्तक मूल पुरुष दोनों के अलग २ हैं ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पर ऐसी अवस्था में वास्तव दृष्टि में तो उन का गोत्र एक नहीं होगा । तो भी नाम एक होने में गोत्र के एक होने का झमेला पड़ेगा अवश्य । इस झमेले को मिटाने के लिए ही याज्ञवल्क्य ने गोत्र के साथ प्रवर भी रख दिया, क्योंकि गोत्रनाम एक होने में भी यदि वंश का भेद है, तो प्रवरनाम कभी नहीं मिलेंगे । इस से गोत्र के वस्तुतः एक होने वा न होने का निर्णय हो जायेगा । प्रवर गोत्र के इस झमेले को मिटाते हैं । इसी कारण से प्रवर का अर्थ दिया है–' **गोत्र प्रवर्तकमुनिव्यावर्तकोमुनिगणः** — गोत्र प्रवर्तक ऋषि का व्यावर्तक [दूसरों से निखेरनें वाला] ऋषिगण प्रवर कहलाता है । यद्यपि याज्ञवल्क्य में कहे ' **असमानार्षजाम्** ' का अर्थ दो प्रकार का हो सकता है । एक यह जो अपने गोत्र प्रवर में न जन्मी हो, दूसरा यह जो न अपने गोत्र में जन्मी हो, न प्रवर में जन्मी हो । पहले अर्थ में याज्ञवल्क्य का वसिष्ठ, गौतम और मनु के साथ मेल हो जाता है, क्योंकि वसिष्ठ और गौतम ने तो प्रवरों का निषेध किया है गोत्र का नहीं, और मनु ने गोत्र का किया है प्रवरों का नहीं, पर प्रवर कहो व गोत्र बात एक ही है । क्योंकि जिस मूल ऋषि के नाम पर गोत्र है उसी के वंश में जन्मे प्रवर पुरुष उस गोत्र के प्रवर कहलाते हैं ।

सो चाहे गोत्र का निषेध कहो, चाहे प्रवरों का । बात एक ही है । याज्ञवल्क्य ने जो गोत्र के साथ प्रवर दिये हैं, वे इसी लिए दिये हैं, कि गोत्र नाम एक होने पर भी वस्तुतः वे गोत्र

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

एक नहीं भी होते, ऐसी जगह गोत्र के एक होने वा न होने का निर्णय प्रवरों से करलो। यही आशय इस वचन का याज्ञवल्क्य के सब से पुराने टीकाकार विश्वरूप ने लिया है। असमानार्ष के स्थान उस ने 'असमानर्षि' पाठ पढ़ा है। इस पर उस की व्याख्या इस प्रकार है—

असमानर्षि गोत्रजाम्, असमानार्षेय गोत्र प्रभव म् असमानप्रवरा–मित्यर्थः। तथा च गौतमः असमान प्रवरैर्विवाह इति। यद्यपि असगोत्रामिति मानवं तदप्येव-मेव व्याख्येयम्। ततश्च समानगोत्राणामप्यसमानप्रवरा-णामनिषिद्धो विवाहः। यथा पञ्चार्षेयाणां भरद्वाजानाम्।

अर्थ—असमान ऋषि गोत्र में जन्मी का अर्थ है जिस के प्रवर एक न हों। जैसा कि गौतम ने कहा है 'जिन के प्रवर समान न हों, उन के साथ विवाह सम्बन्ध हो, और जो मनु ने असगोत्रा कहा है, उस की भी यही व्याख्या करनी, कि प्रवर एक न हों। इसी लिए गोत्र एक होने पर भी यदि प्रवर एक न हो, तो विवाह का निषेध नहीं माना जाता, जैसे पांच प्रवरों वाले भारद्वाज गोत्रियों का तीन प्रवरों वाले भारद्वाज गोत्रियों के साथ विवाह होता है।

देखिये कैसा स्पष्ट कहा है, कि यद्यपि गोत्र दोनों वंशों का भारद्वाज है, तथापि इन दोनों वंशों का परस्पर विवाह सम्बन्ध धर्म विरुद्ध नहीं माना जाता, क्योंकि वस्तुतः वे दोनों वंश अलग २ हैं, यद्यपि दोनों के मूल पुरुषों का नाम एक है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस लिए जिन वंशों में वंशनाम भिन्न २ होने पर भी गोत्र नाम एक है। उन में यदि परस्पर विवाह होता चला आ रहा है, तो यही समझना चाहिये, कि उन के गोत्र प्रवर्तक मूल पुरुष एक नाम के हैं, न कि एक व्यक्ति। हां प्रवर भी वही हों, तो एक गोत्री ही कहेंगे, अन्यथा कभीं नहीं, और जिन लोगों को प्रवर याद नहीं रहे, पर गोत्र नाम एक है। और परस्पर विवाह भी होता है, वहां भी यही समझना चाहिए, कि उन के प्रवरों में अवश्य भेद होगा, तभी उन में विवाह होता चला आ रहा है। यदि प्रवरों में भेद न होता, तो उन में परस्पर विवाह सम्बन्ध भी प्रवृत्त न होता।

अब हम इस बात का निर्णय करना चाहते हैं, कि वास्तव में इन चारजातिक्षत्रियों के दो ही गोत्र हैं, वा चार हैं। **मिहिरप्रकाश** में इन के गोत्रों के विषय में इस प्रकार लिखा है—

चार गोत ते वंश त्रय ढाई चार दे वक्ख।
आप जान के रखदे सापिण्डां दी रक्ख॥

इस प्रमाण से यह स्पष्ट पता लगता हैं, कि चार जाति क्षत्रियों के गोत्र चार हैं, न कि दो।

किन्तु इस प्रमाण से चार जाति क्षत्रियों के वंश जो कहे गये हैं, इस का अभिप्राय यह है, कि चौथा जो यादववंश है, वह वस्तुतः चन्द्रवंश ही है, कोई अलग वंश नहीं, क्योंकि यादव-वंशियों का आदि पुरुष यदु चन्द्रवंशी राजा ययाति का पुत्र था, जिस से यादव वंश चला।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दूसरा, हम यह देखते हैं, कि पञ्च जाति (पंज-जाति) क्षत्रियों की पांचों जातियों के पांच अलग २ गोत्र हैं। जैसा कि—

जाति	गोत्र	जाति	गोत्र
वाही	काश्यप	सहगल	कौशल्य
विज्ज	भार्गव	बेरी	अवलष्य
बहल	भारद्वाज		

इसी प्रकार छः जाति क्षत्रियों के गोत्र भी छः हैं। जैसे—

जाति	गोत्र	जाति	गोत्र
टंडन	अंगिरस	धवन	ऋष्यशृङ्ग
ककड़	वत्स	चोपड़े	अवलष्य
तालवाड़	हंसलस	मेहरे	काश्यप

जब इन जातियों के गोत्र अलग २ हैं, तो फिर कोई कारण नहीं प्रतीत होता, कि चार जातियों के गोत्र दो क्यों हों। और यह कैसे सम्भव हो सकता था, कि इन के गोत्र तो दो ही हों, तो भी अपने अलग २ गोत्र रखने वाले क्षत्रिय इन को प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखते, इस लिए यह निश्चित है, कि **मिहिर प्रकाश** में जो चार गोत्र लिखे गये हैं, वे किसी मूलाधार पर लिखे गये हैं।

हम सहर्ष इस बात को प्रकट करते हैं, कि यह प्रश्न पहले उठ चुका है और इस का पूरा अन्वेषण किया गया है। (बाबू मोतीलाल जी सेठ डिप्टी इन्सपैक्टर औफ स्कूलज ने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अंगरेज़ी में एक पुस्तक Ethnological Survey of the Khatris (क्षत्रियों का जाति अन्वेषण) नाम की पुस्तक बहुत बड़े अनुसन्धान के साथ लिखी है, जिस को खत्री हितकारी सभा आगरा ने १६०५ ई० में छपवाया है। उस में इन चारों जातियों के गोत्र के सम्वन्ध में यह निर्णय किया है—

Another point indirectly urged against the Khattris, in respect to the Gotras, is, that "the fact two persons belonging to the same Brahmanical Gotra, does not operate as a bar to intermarriages, provided that their tribal sections are different. Thus the three Sections, Kapur, Khannas and Mahras all belong to the Kausalya Gotra; but members of these groups intermarry freely. "This seems to be the result of incorrect information. The Kapurs,, Khannas and Mehras have Kausika, Kautsa and Kausalya respectively for their gotras.

एक और आक्षेप जो क्षत्रियों के विरुद्ध गोत्र के विषय में किया जाता है, यह है, कि दो अलग २ वंशों की दो व्यक्तियों में आर्षगोत्र की समानता होने पर भी विवाह हो जाता है, जैसा कि कपूर, खन्ने और मिहिरे तीनों का ही कौशल्यगोत्र होने पर भी आपस में विवाह बिना रोक टोक हो रहा है। पर यह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उन के मिथ्या ज्ञान का परिणाम है, क्योंकि कपूर, खन्नों और मेहरों के क्रमशः कौशिक, कौत्स और कौशल्य गोत्र हैं ॥

इस में कपूरों का कौशिक और खन्नों का कौत्स गोत्र जो निर्णय किया है, उसे हम प्रमाण की कसौटी पर परख कर देखते हैं, कि वस्तुतः इन गोत्रों के साथ वंशों का कोई मुख्य सम्बन्ध है ।

कपूरों का कौशिक गोत्र

कौशिक—यह गोत्र कपूरों का दिखलाया है । हम पीछे सिद्ध कर चुके हैं, कि कपूर चन्द्रवंशी हैं । चन्द्रवंश के मूल पुरुष चन्द्र का पौत्र **पुररवा** हुआ, उस के कुछ पीढ़ियों के अनन्तर राजा कुश हुए, राजा कुश का पुत्र राजऋषि **कुशिक** हुआ । कुशिक का पुत्र राजा **गाधि** और गाधि का पुत्र **विश्वामित्र** हुआ जिस ने दीर्घकाल तक राज्य करके ब्राह्मणत्व लाभ किया । ब्रह्मपुराण में पुररवा के वंश का वर्णन करते हुए लिखा है—

अजकस्य तु दायादो बलाकाश्वो महीपतिः ।
बभूव मृगयाशीलः कुशस्तस्यात्मजोऽभवत् ॥२२
कुशपुत्रा बभूवुर्हि चत्वारो देववर्चसः ।
कुशिकः कुशनाभश्च कुशाम्बो मूर्तिमांस्तथा ॥२३
बल्लवैः सह संवृद्धो राजा वनचरस्तदा ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कुशिकस्तु तपस्तेपे पुत्रमिन्द्र समं प्रभुम् ॥२४॥
लभेयमिति त शक्रस्त्रासादभ्येत्य जज्ञिवान् ॥२५
अत्युग्र तपसं दृष्ट्वा सहस्राक्षः पुरन्दरः ।
समर्थं पुत्र जनने स्वयमेवान्वपद्यत ॥२६॥
पुत्रत्वं कल्पयामास देवेन्द्रः सुरसत्तमः ।
सगाधिरभवद्राजा मघवान् कौशिकः स्वयम् २७
विश्वामित्रं तु दायादं गाधिः कुशिक नन्दनः ।
जनयामास पुत्रं तु तपोविद्याशमात्मकम् ॥५५॥
प्राप्य ब्रह्मर्षि समतां योऽयं ब्रह्मर्षितां गतः ।
विश्वामित्रस्तु धर्मात्मा नाम्ना विश्वरथःस्मृतः॥५६

अजक का दायाद (वारिस) राजा बलाकाश्व हुआ। बलाकाश्व का पुत्र कुश हुआ, जो मृगया में बहुत रुचि रखता था ॥ २२ ॥ कुश के चार पुत्र देवों के सदृश कान्ति वाले हुए— कुशिक, कुशनाभ, कुशाम्ब और मूर्तिमान् ॥ २३ ॥ राजा कुशिक अहीरों के साथ बन में बढ़ा, और बन में इस भावना से घोर तप किया, कि इन्द्रतुल्य वीर तेजस्वी मेरे घर में पुत्र हो। इन्द्र उस के इस तप को धेख कर डरा ॥ २४–२५ ॥ इन्द्र ने उस अत्युग्र तपस्वी को वैसा पुत्र पाने के समर्थ जान स्वयमेव उस का पुत्र होना स्वीकार कर लिया ॥ २६ ॥ तब इन्द्र स्वयमेव उस के पुत्र रूप से गाधि नाम राजा हुआ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कुशिक पुत्र गाधी ने विश्वामित्र को जन्म दिया, जो तप, विद्या और शम का मानो रूप हुआ ॥ ५५ ॥ और ब्रह्मर्षियों की समता पाकर ब्रह्मर्षि बना । विश्वामित्र का दूसरा नाम विश्वरथ था ॥ ५६ ॥

इस से यह तो स्पष्ट है, कि चन्द्रवंश में कुशिक ऋषि हुआ है। अब देखना यह है, कि यह ऋषि गोत्रप्रवर्तक हुआ है, वा नहीं ।

श्रीमद् भागवत (९ । १६) में शुनःशेप की कथा का वर्णन करते हुए लिखा है, कि शुनःशेप जो भृगुगोत्री था, विश्वामित्र ने उसे मृत्यु से बचाया, इसलिए वह देवरात नाम से विश्वामित्र का पुत्र बना, और अपना भार्गव गोत्र त्याग विश्वामित्र का जो कौशिक गोत्र था वह स्वीकार किया । वहां यह लेख आया है—

एष वः कुशिका वीरो देवरातस्तमन्वित ॥३६॥
एवं कौशिकगोत्रत्वं विश्वामित्रैः पृथग्विधम् ।
प्रवरान्तरमापन्नां तद्धि चैवं प्रकल्पितम् ॥३७॥

(विश्वामित्र कहते हैं—) हे कुशिक (कुशिक गोत्र में उत्पन्न हुए पुत्रों) यह देवरात मेरा पुत्र है इस के पीछे चलो । इस प्रकार विश्वामित्र के पुत्रों द्वारा कौशिकगोत्र प्रवरो के भेद से अलग २ हो गया ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ऐतिहासिक पक्ष को लेकर ऋग्वेद में सायणाचार्य ने इन स्थलों में कौशिक गोत्र का वर्णन किया है—

कुशिकासो ह्वामहे (ऋ० ३।२६।१)

कुशिकासो कुशिकगोत्रोत्पन्नाः कुशिकाः अर्थात् कुशिक के गोत्र में उत्पन्न हुए।

कुशिकास एरिरे (३।२६।१५)

कुशिकाः कुशिकगोत्रोत्पन्ना ऋषयः=कुशिक के गोत्र में जन्मे ऋषि।

कुशिकासो अवस्यवः (ऋ० ३।४२।६)

कुशिकासः कुशिकगोत्रोत्पन्नाः=कुशिक के गोत्र में जन्मे।

पिबध्वं कुशिकाः सोम्यं मधु (ऋ० ३।५३। १०)

हे कुशिकाः कुशिकगोत्रोत्पन्नाः।

कुशिकाश्चेतयध्वम् (ऋ० ३।५३।११)

हे कुशिकाः कुशिकगोत्रोत्पन्नाः।

अपिबत्पायत कुशिकेभिरिन्द्रः (ऋ० ३।५३।६)

कुशिकेभिः कुशिकगोत्रोत्पन्नैर्ऋषिभिः। इत्यादि प्रमाणों से कुशिक का गोत्र प्रवर्तक होना निर्विवाद सिद्ध है। पाणिनि के निम्न दो सूत्र भी इसी बात की पुष्टि करते हैं—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अनृष्यानन्तर्ये बिदादिभ्योऽञ् ।

(अ० ४।१।१०४)

इस सूत्र में विदादियों से परे गोत्र में अञ् कहा है और गणपाठ में विदादि गण में कश्यप और भरद्वाज के मध्य में कुशिक पढ़ा है । इस से कुशिक से गोत्र अर्थ में कौशिक शब्द बनता है । यह गोत्र नाम हर एक कुशिक गोत्री के लिए बोला जा सकता है । और विश्वामित्र जो कुशिकगोत्री था, उसे कौशिक नाम से रामायण आदि ग्रन्थों में अनेक बार पुकारा गया है ।

यञ ञोश्च (२।४।६४)

इस सूत्र से गोत्र अर्थ में आये यञ् अञ् प्रत्ययों का बहुवचन में लुक् (उड़ जाना) कहा है—इस के अनुसार कौशिक बहु वचन में कुशिक ही रहता है । इसी से बहुवचन में 'कुशिकासः, कुशिकेभिः' आया है—

कुशिकासो हवामहे (ऋ०३।२६।१)

पर सायनाचार्य ने भी यही स्पष्ट किया है—

कुशिकशब्दात् गोत्रमित्यर्थे विदादित्वदञ् तस्य बहुषु यञञोश्चेति लुक् ।

अर्थ—कुशिक शब्द से गोत्र अर्थ में विदादि होने से अञ् हुआ । उस का बहुवचन में 'यञञोश्च' करके लुक हो कर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

'कुशिकासः' सिद्ध हुआ ॥

जब यह बात प्रमाणों से निश्चित है, कि कपूर चन्द्रवंशी हैं और जैसा कि पूर्व में दिखला चुके हैं, कि चन्द्रवंश की कपूरायण शाखा प्राचीन काल में ही प्रसिद्ध थी। और कि चन्द्रवंश में कुशिक ऋषि गोत्रप्रवर्तक हुआ है तो कपूरों का गोत्र कौशिक सिद्ध है। इस की पुष्टि इस बात से और भी अधिक होती है, कि प्राचीन काल में चन्द्रवंशियों के कुल पुरोहित भृगुवंशी थे। और चन्द्रवंश में कुशिक और उस के वंशधर भी भृगुओं के ही याज्य थे। जैसे कि ब्रह्मपुराण (१०।५७) में विश्वामित्र के विषय में कहा है—जज्ञे भृगुप्रसादेन कौशिकाद् वंशवर्धनः=भृगु की कृपा से [विश्वामित्र] कुशिक के गोत्र का बढ़ाने वाला हुआ। इस से भृगुओं का कुशिकों का याजक (पुरोहित) होना स्पष्ट है। इधर वर्तमान काल में भी कपूरों के पुरोहित कपूरिये हैं, जो भार्गव गोत्री अर्थात् भृगुवंशी हैं। यद्यपि इस समय, कपूरों के पुरोहित बग्गे वा पम्बू आदि भी हैं, तथापि यह तो निश्चित है, कि बहुत से पुरोहित वंशों में से कुल पुरोहित सम्बन्ध तो एक ही वंश के साथ होना चाहिये, और वह कपूर और कपूरिये इस शब्द सादृश्य से कपूरिये के साथ ही सम्बन्ध न्याय्य प्रतीत होता है। कपूरिये का अर्थ कपूरों वाला। आर्षेय गोत्र कौशिक निर्विवाद है।

कौशिक गोत्रियों के प्रवर तीन हैं, जैसा कि आश्वलायन—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रौतसूत्र (उ० ६ । १४ । २) में आया है—

कुशिकानां विश्वामित्र देवरातौदलेति ।

कुशिकों के विश्वामित्र, देवरात और औदल ये तीन प्रवर हैं । इन में जो देवरात है, वह पहले भृगुवंशी, शुनःशेप नाम से प्रसिद्ध था, विश्वामित्र के वंश में आजाने से देवरात नाम से प्रसिद्ध हो कर कौशिक गोत्रियों का प्रवर बना ।

खन्नों का कौत्स गोत्र

कौत्स—खन्नों का गोत्र कौत्स कहा है । पहले दिखला चुके हैं, कि खन्नों का प्राचीन सम्बन्ध अंगिरा वंश के साथ है, जो अग्निवंश नाम से प्रसिद्ध था । कुत्सगोत्र के वर्णन में प्रवरमञ्जरी में आपस्तम्ब में कहे अंगिरावंश में आया है—

अथ कुत्सानां त्र्यार्षेयः आंगिरस मान्धात्र कौत्सेति ।

कुत्स गोत्रियों के तीन प्रवर हैं, अंगिरा, मान्धाता और कुत्स ।

मत्स्यपुराण (अ० १९६ श्लो० ३७) में इस प्रकार आया है—

कुत्सगोत्रोद्भवाश्चैव तथा त्रिप्रवरा मताः ।
अङ्गिरास्त्रसदस्युश्च पुरुकुत्सस्तथैव च ।
कुत्साः कुत्सैरवैवाह्या एवमाहुः पुरातनाः ।

कुत्स गोत्र के तीन प्रवर माने गये हैं—अंगिरा, त्रसदस्यु और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुरु कुत्स । कौत्स गोत्रियों का कौत्सगोत्रियों के साथ विवाह नहीं होना चाहिये, ये पुराने लोग कहते हैं ॥

इन दो प्रमाणों में आपाततः विरोध प्रतीत होता है। आपस्तम्ब में अंगिरा, मान्धाता और कुत्स ये तीन प्रवर कहे हैं, मत्स्यपुराण में अंगिरा, त्रसदस्यु और पुरु कुत्स । इस का समाधान यह है, कि मान्धाता का उपनाम त्रसद्दस्यु वा त्रसदस्यु था, जैसा कि श्रीमद्भागवत (९।६।३३) में मान्धाता के वर्णन में कहा है—

त्रसदस्युरितीन्द्रोऽङ्ग विदधे नाम तस्य वै ।
यस्मात् त्रसन्ति ह्युद्विग्ना दस्यवो रावणादयः ॥

इन्द्र ने उस (मान्धाता) का नाम (उपनाम) त्रसदस्यु रक्खा, क्योंकि रावण आदि दस्यु उस से घबराते और भय खाते थे (त्रसत्—दस्यु=डरते हैं दस्यु जिससे)।

यह मान्धाता सूर्यवंशी राजा युवनाश्व का पुत्र था। यह मन्त्र द्रष्टा ऋषि हुआ है। ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त १२४ के ५ मन्त्रों का ऋषि युवनाश्व का पुत्र मान्धाता है। सो त्रदस्यु और मान्धाता तो एक ही हैं। रहा कुत्स और पुरु कुत्स, यह केवल सत्यभामा, भामा, की नांई शब्दभेद है अर्थ भेद नहीं। यह पुरु कुत्स मान्धाता का पुत्र हुआ है। यह भी बड़ा पराक्रमी राजा हुआ। विष्णुपुराण में लिखा है, कि नागवंशियों की स्वतन्त्रता को गन्धर्वों ने छीन लिया था। नागों ने पुरुकुत्स से पुकार की, तब इस ने गन्धर्वों को जीत कर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नागों को पूर्ववत् स्वतन्त्रता दिलाई, इस पर नागों ने इसे वर दिया—

पुरुकुत्साय च भवतः संततिच्छेदो न भवतेत्युरगपतये वरं ददुः (ष्णु० ४।३।१२)

पुरुकुत्स को नागपतियों ने वर दिया, कि तेरे वंश का कभी उच्छेद नहीं होगा, इसी से वह प्रवरों में माना गया ।

इन तीन प्रवरों में अङ्गिरा तो ब्राह्मण हैं, जिस से अग्नि-वंश चला, शेष दो अर्थात् मान्धाता और कुत्स सूर्यवंशी क्षत्रिय हैं ॥

हम पूर्व पृष्ठ ५६ पर दिखला चुके हैं, कि अंगिरावंश में क्षत्रियों के वंश आकर मिलते रहे । सूर्यवंश के पुरुकुत्स शाखा वाले भी इसी प्रकार अंगिरा गोत्र में आकर मिले और आंगिरस कहलाये, जैसा कि वायुपुराण (अ० ८८) में आया है—

तस्यामुत्पादयामास मान्धाता त्रीन् सुतान् प्रभुः ॥७१॥
पुरुकुत्समम्बरीषं च मुचुकुन्दं च विश्रुतम् ।
अम्बरीषस्य दायादो युवनाश्वोऽपरः स्मृतः ॥७२॥
हरितो युवनाश्वस्य हारिता सूरयः स्मृताः ।
एते आङ्गिरसः पुत्राः क्षत्रोपेता द्विजातयः ॥७३॥

उस (चन्द्रवंशीय राजा अयुत की भगिनी विन्दुमती) से मान्धाता के तीन पुत्र हुए—पुरुकुत्स, अम्बरीष और मुचुकुन्द । अम्बरीष का पुत्र युवनाश्व द्वितीय हुआ, युवनाश्व का हरित

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हरित के वंशधर हारित कहलाये, जो अंगिरा वंश में चले गये अतएव ये क्षत्रोपेत द्विजाति कहलाये अर्थात् इस गोत्र के प्रवर अंगिरा ब्राह्मण और मान्धाता तथा पुरुकुत्स क्षत्रिय हैं।

इन के खन्ने कहलाने का मुख्य कारण भी यही है, कि अपने प्रवरों में यह क्षत्रिय और ब्राह्मण का मेल रखते हैं। सो उक्त प्रमाण में खन्नों का गोत्र कौत्स सिद्ध है और पुरोहित सम्बन्ध इस की पूरी २ पुष्टि करता है। खन्ने के पुरोहित झिंगन ब्राह्मण हैं, जिन का गोत्र भारद्वाज है। भारद्वाज गोत्र के तीन प्रवर हैं, जैसा कि आश्वलायन श्रौतसूत्र (उ० ११।३।५) में आया है—

भरद्वाजाग्नि वेश्यानामङ्गिर सवार्हस्पत्यभारद्वाजेति.।

भरद्वाज और अग्निवंशियों के प्रवर—अङ्गिरा, बृहस्पति और भरद्वाज हैं। मत्स्यपुराण अ० १६६ श्लो० १६-२० में भी ये ही प्रवर कहे हैं।

पुरोहित और यजमान दोनों के प्रवरों में अंगिरा प्रथम हैं। दूसरे दो प्रवर पुरोहित गोत्र में बृहस्पति और भरद्वाज ब्राह्मण हैं और यजमानों के दूसरे दो प्रवर मान्धाता और पुरुकुत्स क्षत्रिय हैं। सो क्षत्रिय तो अंगिरा के सम्बन्ध से अग्निवंशीय क्षत्रिय कहलाये और अंगिरावंशीय ब्राह्मण उन के पुरोहित हुए।

मिहिरों का कौशल्य

कौशल्य—मिहिरे वा मिहिरोत्तरों का गोत्र कौशल्य है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पूर्व दिखला चुके हैं, कि मिहिरे वा मिहिरोत्तरे सूर्यवंशी हैं। सूर्यवंशी में श्रीरामचन्द्रजी के ज्येष्ठ पुत्र कुश की वंश परम्परा में **हिरण्यनाभ कौशल्य** हुआ है, जैसा कि—

कुशस्य चातिथिस्तस्मान्निषधस्तत्सुतो नभः ।
पुण्डरीकोऽथतत्पुत्रः क्षेमधन्वाऽ भवत् ततः ॥१॥
देवानीकस्ततोऽनीहा पारियात्रोऽथतत्सुतः ।
ततो बलस्थलस्तस्माद् वज्रनाभोऽर्क संभवः ॥२॥
खगणस्तत्सुतस्तस्माद् विधृतिश्चाभवत् सुतः ।
ततो हिरण्यनाभोऽभूद् योगाचार्यस्तु जैमिनेः ॥३॥
शिष्यः कौशल्य अध्यात्मं याज्ञवल्क्योऽध्यगाद् यतः ॥४॥
योगं महोदयमृषिर्हृदयग्रन्थि भेदकम् ॥५॥

(श्रीमद्भागवत ९।१२)

(१)कुश का पुत्र । (२) अतिथि, अतिथि से । (३) निषध निषध से । (४) नभ, नभ से । (५) पुण्डरीक, पुण्डरीकसे । (६) क्षेम धन्वा, क्षेम धन्वा से । (७) देवानीक, देवानीकसे । (८) अनीहा, अनीहा से । (९) पारियात्र पारियात्र से । (१०) बलस्थल, बलस्थल से । (११) वज्रनाभ वज्रनाभ से । (१२) खगण, खगण से । (१३) विधृति उससे **हिरण्यनाभ** हुआ, जो **कौशल्य** नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह जैमिनि का शिष्य था, और योगविद्या का आचार्य था, जिससे याज्ञवल्क्य ने बड़े

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

फल वाला, और हृदय की ग्रन्थियां खोलने वाला अध्यात्म योग सीखा ।

यहां सूर्यवंशी हिरण्यनाभ का दूसरा नाम कौशल्य कहा है, और इसे बड़ा विद्वान् और योगाचार्य बतलाया है । विष्णुपुराण (४ । ४ । ४७) में भी ऐसा ही कहा है—

हिरण्यनाभस्ततो महायोगीश्वरो जैमिनिशिश्यो यतो याज्ञवल्क्यो योगमवाप ।

उससे हिरण्यनाभ जो जैमिनि का शिष्य महायोगीश्वर हुआ, जिससे याज्ञवल्क्य ने योग प्राप्त किया ।

विष्णुपुराण (३ । ६) में आया है—

सहस्रं संहिताभेदं सुकर्मा तत्सुस्ततः ।
चकार तं तच्छिष्यौ जग्रहाते महामतौ ॥२॥
हिरण्यनाभः कौशल्यः पौष्यञ्जिश्च द्विजोत्तमः ।
उदीच्य सामगाः शिष्यास्तेभ्यः पञ्चदशस्मृताः ॥३
हिरण्यनाभात् तावन्त्यः संहितायै द्विजोत्तमैः ।
गृहीतास्तेपि चोच्यन्ते पण्डितैः प्राच्यसामगाः ॥४

(व्यास शिष्य जैमिनि का पुत्र सुमन्तु) उसके पुत्र सुकर्मा ने सामवेद की सहस्र शाखाएं बनाईं । जिनको उसके महामती दो शिष्यों हिरण्यनाभ कौशल्य और पौष्यञ्जि ने ग्रहण किया ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हिरण्यनाभ से पन्द्रह शिष्यों ने जो कि ब्राह्मण थे, पन्द्रह शाखाएं पढ़ीं, वे पन्द्रह शिष्य भी प्राच्यसामग कहलाते हैं।

इससे आगे श्लोक ६ में आया है—

हिरण्यनाभ शिष्यश्च चतुर्विंशतिः संहिताः ।
प्रोवाच कृतिनामासौ शिष्येभ्यः सुमहामतिः ॥

हिरण्यनाभ का शिष्य महामति कृति हुआ, जिसने २४ संहिताओं का प्रवचन किया ।

प्रश्न उपनिषद् (५।१) में भी हिरण्यनाभ कौशल्य का वर्णन वेदवादियों में आया है :—

अथ हैनं सुकेशा भारद्वाजः पप्रच्छ 'भगवन् हिरण्यनाभः कौशल्यो राजपुत्रोमामुपेत्यैतं प्रश्नमपृच्छत्, "षोडशकलं भारद्वाजं पुरुषं वेत्थ" तमहं कुमारमब्रवं नाहं नाहमिमं वेद' ।

सुकेशा नाम भारद्वाज ने पिप्पलाद ऋषि से पूछा—"हे भगवान् ! राजकुमार हिरण्यनाभ कौशल्य मेरे पास आया और उससे पूछा "हे भारद्वाज ! तू सोलह कलावाले पुरुष को जानता है, मैंने उस कुमार से कहा 'मैं तो इसे नहीं जानता' इत्यादि ।

इन प्रमाणों से यह सिद्ध है, कि हिरण्यनाभ राजा होकर भी संहिताओं का प्रवचन करने वाले ऋषियों में से था, इसी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जिये इसके नाम का गोत्र चला।

इस गोत्र के प्रवर तीन हैं। जैसाकि मत्स्य पुराण (अ० १९६) में अंगिरा के गण में "**कौशल्या पार्थिवास्तथा**" = 'कौशल्य राज्ञे' (श्लोक ९) कहकर प्रवर इस प्रकार कहे हैं—

अङ्गिराः सुवचोतथ्य उशिजश्च महानृषिः।
परस्परमवैवाह्या ऋषयः परिकीर्तिताः ॥११॥

अंगिरा, सुवचोतथ्य और उशिज ये तीन प्रवर हैं, इनके परस्पर विवाह नहीं होने चाहिये।

सेठों का वत्स गोत्र

वत्स—सेठों का गोत्र वत्स निर्विवाद है। इनके प्रवर पांच हैं, जैसाकि आश्वलायन (उ० ६। १०। ६) में लिखा है—

जामदग्न्यावत्सास्तेषांपञ्चर्षेया भार्गव च्यवनाप्नवानौर्व जामदग्न्येति।

जामदग्न्यवत्सों के पांच प्रवर हैं-भृगु, च्यवन, आप्नवान, और्व और जमदग्नि।

इनके पुरोहित कुमडिये ब्राह्मण हैं। उनके भी गोत्र और प्रवर यही हैं। इस प्रकार इन चार जाति क्षत्रियों के चार भिन्न २ गोत्र सिद्ध हैं।

कौशिक और कौत्स के स्थान कौशल्य का उच्चारण असली गोत्र के भूल जाने से प्रचलित हुआ है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस भूल को मिहिर प्रकाश में इस प्रकार प्रकट किया गया है—

कुल सूरज श्रीरामजी सूरज दा परवार ।
चन्द्रवंश विच आनके होए कृष्णमुरार ॥
गाधराज क्षत्री दा पुत्र विश्वामित्र पछान ।
वेद प्रधान भूत गायत्री कीता उस वरदान ॥
होए ते हैसन क्षत्री युग त्रय दे परमान ।
विच इस युग के आनके भुल्ले अपना ज्ञान ॥
ज्यूं ज्यूं राज गंवाच्या लिखतां गइयां नाल ।
राज धर्म दी इकवी चाल रही न सम्हाल ॥
इक ढाई निखड़े है वकख त्रय गोत ।

आश्वलायन श्रौतसूत्र (१३ । ५) में लिखा है—

सर्वेषां मानवेति संशये ।

संशय में सब वर्णों का गोत्र प्रवर मानव उच्चारण करे अर्थात् यदि कोई अपना असली गोत्र प्रवर भूल जाय वा उसे संशय हो, तो चाहे वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य कोई भी हो उसका गोत्र प्रवर **मानव** कहना चाहिये । पुरानी चाल तो यह थी, जो ऊपर कही है, कि जो अपना गोत्र भूल जाय उसका गोत्र **मानव** । इसके स्थान आजकल की चाल यह है, कि जो अपना गोत्र भूल जाय उसका गोत्र **कौशल्य** । इसी से यह कहावत प्रचलित हो रही है, जिस का कोई न गोत्र उसका कौशल्य गोत्र

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पर जब शास्त्र प्रमाण से अपने मूल गोत्र प्रवर का निश्चय हो जाय, तो फिर माँगवां गोत्र पढ़ने की जगह अपने ही गोत्र का उच्चारण करना चाहिये ।

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणंते कार्याकार्य व्यवस्थितौ ॥
ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥

(गीता १६ । २४)

इसलिये कार्य अकार्य की व्यवस्था में शास्त्र तेरे लिए प्रमाण है । शास्त्र में जो कहा है, उसे समझ कर तदनुसार इस लोक में तुझे कर्म करना उचित है ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

क्षत्रिय जाति और उन के गोत्र की अनुक्रमणिका

चार जाति बरादरी

जाति	गोत्र	पुरोहित	कुलदेवता
मिहिरोत्रा	कौशल्य	जैतली	शिवादेवी
कपूर	कौशिक	कपूरिया, पम्बू	चण्डिकादेवी
खन्ना	कौत्स	झिगन	चण्डिकादेवी
सेठ	वत्स	कुमरिया	चण्डिकादेवी

पञ्जाति बरादरी

बेरी	अवलश	होसल	अष्टभुजि
बहल	भारद्वाज	सारथी	अष्टभुजि
वाही	काश्यप	होसल	चण्डिकादेवी
विज	भार्गव	...	...
सहगल	कौशल्य	होसल	चण्डिकादेवी

छः जाति बरादरी

तालवाड़	हंसलस	त्रिकखा	त्रिशूल
टण्डन	आंगरस	झिगण	चण्डिकादेवी
चोपड़ा	अवलश, कौशल्य	बग्गे	चण्डिकादेवी
धवन	शृङ्गी ऋषि	त्रिकखा	त्रिशूल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कक्कड़	वत्स	कुमरिया	चण्डिकादेवी
वोहरा	काश्यप	...	...

बुंजाई बरादरी

जाति	गोत्र	जाति	गोत्र
पुरी	भारद्वाज	नन्दा	भारद्वाज
तुली	अवलश	झण्डा	अवलश
भण्डारी	अवलश	भल्ले	कौशल्य
कत्याल	कौशल्य	महता	कौशल्य
वधावन	कौशल्य	कौड़ा	कौशल्य
कोछड़	भार्गव	शामी होका	नीलश
दुगल	अवलश	थापर	काहल
सेखड़ी	काश्यप	सभरवाल	आंगरस
पाटनी	काश्यप	टकसाली	कौशल्य

खुखराईन बरादरी

जाति	गोत्र	पुरोहित	कुलदेवता
चढा	वत्स	लत्र	बाबा सोडर
साहनी	वत्स	वसुदेव	भद्रकाली
आनन्द	काश्यप	बिजड़ा	दुर्गा माई
भसीन	काश्यप	बिजड़ा	दुर्गा माई
कोहली	काश्यप	दत्त	सत्यवती

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सूरी	भार्गव	पान्दा	शेषनाग
सेठी	पोलस्त	सूदन	वैष्णो देवी
सभरवाल.	हंसलस	मदनखम्ब	बाबा मघर

सरीन बरादरी (बड़ी)

नय्यड़	काश्यप	खोसला	काश्यप
मरवाह	काश्यप	तिरहोन	कौशल्य
भल्ले	कौशल्य	मुरगाई	काश्यप
बबोटा	काश्यप	बहल	कौशल्य

सरीन बरादरी (छोटी)

सोनी	कौशल्न	खुल्लर	काश्यप
कुपाही	काश्यप	पूरी	काश्यप
कहड़	काश्यप	सोडी	न मालूम
कुन्द्रा	न मालूम	कमरा	....
सिल्ली	....	केसर	...
जुलके	...	मुकरानी	....
धुस्से	...	सबखी	...

नोट स्मरणीय— कोहली दो प्रकार के हैं । एक भुटनेर है दुसरे सम्बड़वालिए । न० १. का पुरोहित कोतवाल और देवता भद्रकाली है । न० २. का पुरोहित दत्त और देवता सत्यावती है ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रचलित कथाएं

जिस दिन टोडर सत कुसत लिखियो धरेवा
कोरे कागज़ बादशाही पर कीनो थेवा।
उच्च मुलतान दिल्ली से तखत मंगायो
सब ही महाजन जोड़ कंजनोट बठायो
इक लल्लू, जगधर, भीम न मनयो ते
कागज़ पाड़ जलायो
जंजूं ; टिका, छत्तारियां गल मिहिरयां पायो

भावार्थ—जिस दिन टोडरमल्ल दिवान शाही ने जो सका क्षत्रिय था, विधवा विवाह के विषय में सच भूठ लिख कर कागज पर बादशाही मोहर लगा दी, और उच्च मुलतान, दिल्ली के समस्त क्षत्रियों को नगर कंजनोढ में जमा करके बादशाह की आज्ञा सुनाई। उस समय लल्लू, जगधर और भीम प्रसिद्ध मिहरे क्षत्रियों ने इस हुकम को न माना, और कागज़ फाड़ कर जला दिया, और यज्ञोपवीत और टिक्के की महिमा कथन करने हुए, समस्त क्षत्रियों को अपने साथ मिला लिया।

इस घटना के अनन्तर टोडर मल्ल ने अकबर बादशाह के पास इस की सूचना दी कि लल्लू, जगधर और भीम ने आप की आज्ञा की परवाह नहीं की और आज्ञापत्र फाड़ कर उस पर थूक दिया है, और समस्त क्षत्रियों को अपने साथ मिला कर यहां से चले गये हैं। बादशाह यह सुन कर बहुत क्रोधित हुआ, और शीघ्र इन तीनों को उपस्थित (हाजिर) होने की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आज्ञा दी । राज सभा में जाने से पहले यह तीनों अपने प्रान्त के एक महन्त के पास गये, जो बहुत विद्वान् था । और इस घटना का वर्णन करते हुए प्रार्थना की कि आप धर्ममर्यादा को स्थिर रखने के लिये हमारी सहायता करें । महन्त जीने यह सुन कर सहायता करने की प्रतिज्ञा की और अपने चंवर-बरदार को राजसभा में जाने के लिये उन के साथ कर दिया । माग में चंवर-बरदार ने उन से सब वृतान्त जान कर यह सम्मति दी कि आप राजसभा में चलें और मैं अभी आता हूं और हर प्रकार से आप की सहायता करूंगा । यह सुनकर तीनों राजसभा में चले गये । और उस के कुच्छ समय बाद महंत जी का भेजा हुआ दूत काले कपड़े पहने हुए राजसभा में आगया और राजा को सम्बोधित करते हुए कहा कि हे बादशाह ! मैं मक्का मदीना की यात्रा कर के आ रहा हूं । और मुझ को ईश्वरीय ज्ञान हुआ है कि तू दूसरे के धर्म में हस्तक्षेप करके अपनी आज्ञा मनवाना चाहता है । तू उस आज्ञा को शीघ्र लौटा ले नहीं तो बहुत हानी उठायेगा ।

यह सुन कर बादशाह डर गया और अपनी आज्ञा लौटाने के लिये तयार हो गया । इस पर टोडरमल्ल ने बादशाह को रोका और कहा कि यह एक कपट हैं और इस में किंचित भी सचाई नहीं है । क्यों कि यह मनुष्य मुसलमान नही है और न ही मक्का मदीना से आया है, यह तो मुसलमानी भेस बना कर आप की आज्ञा भंग करवाना चाहता है । अब इस का उपाय यह है कि आप इस को अपने साथ खाना खाने की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आज्ञा दें यदि इस ने आज्ञा न मानी तो वास्तविकता (असलीयत) प्रकट हो जायेगी ।

यह वार्तालाप सुनकर दूत घबराया और समय पा कर लल्लू, जगधर, और भीम को कहा कि अब मैं इस सोच में हूं कि यदि मैंने खाना खाने का विरोध किया तो हम सब मारे जावेंगे। और यदि बादशाह के साथ खाना खाया तो मैं मुसलमान हो जाऊंगा, और इस अवस्था में मेरी और मेरी अगामी सन्तान की पालना कौन करेगा । उस पर तीनों ने कहा यदि आप मुसलमान हो जाएं तो हम और हमारी औलाद अर्थात् मिह्रिरे क्षत्रिय जब तक संसार में रहेंगे आप की और आप की संतान की सहायता करेंगे । यह सुन कर महन्त का दूत प्रसन्न हो गया, और अब उस को भोजन करने की आज्ञा हुई तो उस ने अपनी स्वीकृति दी और बादशाह के साथ भोजन करने बैठ गया और टोडर मल्ल दिवान मुख देखता रह गया ।

इस के बाद बादशाह ने अपनी आज्ञा 'धरेवा' भंग कर दी, और कहा कि मैं भविष्य में किसी के धर्म में हस्तक्षेप नहीं करूंगा । लल्लू, जगधर, भीम को विदय करते हुए कहा कि जिस प्रकार आप लोगों की इच्छा हो वैसा करो ।

राजाज्ञा सुन कर यह तीनों इस सफलता की प्रसन्नता में सभा से चलते हुए परस्पर यह निर्णय किया कि विवाह के समय उस महन्त के दूत की अगामि संतान की वस्त्र और धन आदि से सहायता की जाए । यह सहायता "कब।"

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नाम से प्रसिद्ध हुई। जो मिहिरे क्षत्रिय आज तक इस बंधान की मर्यादा पूरी करने के लिये कन्या वालों से डोली ले जाने से पूर्व "कवा" नाम से कपड़ा लेते हैं यह सहायता वास्तव में चराल जाति के लिये निश्चित थी। क्यों कि उस जाति का अब कोई लेने वाला नहीं रहा, इस लिये जाति भाट को दे कर मर्यादा पूरी की जाति है। और इस को अब तक "कवा" नाम से ही बोला जाता है।

एक और कविता इस प्रकार बोली जाती है—
खन्ने मुकुट खतरायन के - आद अंत के परम प्रधाना।
दूसरे इन के हैं मिहिरे जिन दल जित्यो—
अकबर सुलताना।
सेठ कपूर दो ही रल बैठे वनज करें—
शाही मनमाना।
चार जात चारों छत्रधारी ज्यों—
चित्तौड़ पर छत्रपति राणा।

अर्थात्—खन्ने अग्निवंश का एक खंड था, और इस वंश में ब्रह्मबल और क्षत्रबल दोनों बराबर के पाए जाते थे, इस लिये इस कविता में इन को उच्च पदवी दे कर क्षत्रिय जाति का मुकुट कहा गया है। और इन के साथ दूसरी जाति मिहिरे बताए हैं। जिन्होंने धरेवा के सम्बंध में विरोध करके अकबर बदशाह के दिल को जीता था। शेष दो जातियें सेठ और कपूर दोनो मिल कर अपनी इच्छा के अनुसार राजकीय व्यवहार किया करते थे. और यह चारों जातियें इस प्रकार छत्रधारी थीं, जिस

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रकार गढ़ चितौड़ पर छत्रपति राणा प्रताप था। उपरि लिखित वर्णन का परिवेक्षण करने पर मालूम हुआ है कि टोडर मल्ल दिवान टंडन क्षत्रिय था न कि सका क्षत्रिय, जैसा कि ऊपर बताया गया है। यह घटना शाह अलाउद्दीन खिलजी के राज्य समय की है। जब कि ओडर मल्ल सका क्षत्रिय दिवान शाही था। क्यों कि टोडर और ओडर शब्द मिलते जुलते हैं, इस से ज्ञान होता है कि टोडर मल्ल के सम्बन्ध से यह घटना अकबर बादशाह के समय की वर्णन करते हुए कविता में चारजाति क्षत्रिय बरादरी की स्तुति की गई है।

यह घटना चाहे किसी जमाने में हुई हो इस पर विचार करने की आवश्यकता नहीं क्यों, कि यह एक सत्य है कि इस बरादरी ने क्षात्रधर्म की रक्षा के लिये किसी न किसी जमाने में अपने आप को कष्ट में डाला, और यह इस की उच्चता का कारण है। किन्तु वर्तमान् समय अनुसार पर्यवेक्षण से ज्ञान होता है कि यह घटना विपरीत है, क्यों कि चारजाति बरादरी अपनी उच्चता के अभिमान में आज विलासिता और नामवरी के लिये प्रथाओं की घुड़दौड़ में सब से आगे कदम बढ़ाती हुई क्षत्रिय जाति के विध्वंस का कारण हो रही है। आशा है कि जाति भाई इस पर विचार करते हुए अपनी प्राचीन प्रभुता को स्थिर रखने का यत्न करेंगे।

ब्राह्मण पंजाति बरादरी न० १

जैतली, झिंगन, त्रिक्खे, कुमरिये तथा मोहले

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस बरादरी के पण्डित प्रायः क्षत्रिय चारजाति बरादरी के पुरोहित हैं।

ब्राह्मण पञ्जाति बरादरी नं० २

कालिए, मालिए, कपूरिए, बग्गे तथा बठूरिए

इस बरादरी में जो कपूरिए ब्राह्मण हैं वह कपूरों के पुरोहित हैं। और इन के अतिरिक्त कपूरों के पुरोहित पम्बू व बग्गे भी पाये जाते हैं।

विशेष वर्णन

चारजाति बरादरी में ढंग, मिलनी के समय जो ढाई रुपये बाबत पुरुञ्जां दिये जाते हैं, यह ढाई वंश का निशान हैं। जो पंचायती खजाना में जमा होते थे। और इस से खर्च पंचायत पूरा किया जाता था, परन्तु आजकल पुरोहित जी को ही दे दिये जाते हैं।

खखुरायण बरादरी का का विशेष वर्णन

(आनरेबल राए बहादुर लाला रामसरन दास साहिब
सी. आई. ई. ऐम. सी. ऐस. रईस आज़म पंजाब)

खुखरायण बरादरी की वास्तव में पांच जातियें हैं। और यह बरादरी खालिस पंजाली के नाम से प्रसिद्ध हैं। और मध्य पंजाब माझा में विशेष पाई जाती है। क्यों कि इस

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बरादरी की पांच जातियां के केवल तीन गोत्र हैं इस लिये ढाइ घर पंजाती कहलाती हैं। इन जातियों के नाम और गोत्र निम्न लिखित हैं।

बड्डा, साहनी, वत्स गोत्र। आनन्द, भसीन काश्यप गोत्र।
सूरी भार्गव गोत्र।

खुखरायण आठ जाति दस जाति और ग्यारह जाति दोआबा, देहाती मध्य पंजाब, छाछी पोठोहार काबुल और धन्नी प्रांत में पाइ जातीं हैं। इस बरादरी में अधिक जातियां जैसे काहली, सभरवाल, सेठी, घई, पुरी और चंडहोक भुंजाई बरादरी से सम्मिलित हैं।

खोखर जाति शुद्ध क्षत्रिय थी। यह जाति खोखर गांव से जो कि अटक प्रान्त का एक गांव है या था से सम्बन्ध रखती है। कहा जाता है कि इस काल में एक छोटी सी रियासत थी। और इस में खोखर जो रानीपूत शुद्ध क्षत्रिय थे, रहा करते थे इस लिये इन को अब खुखरायण कहा है।

यह क्षत्रियों में योधा जाति (फ़ौजी कौम) है। और इन के पुरोहित मोहयाल ब्राह्मण हैं, जो कि ब्राह्मणों में योधा जाति है। पुरोहितों और यजमानों के गोत्र एक ही हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मौखिक विशेष वर्णन प० फीनाराम पुरोहित खुखरायण बरादरी

भेरा के प्रांत में एक राजा खोखर था। उस के राज्य से पहले क्षत्रियों के सम्बंध गोत्रों के अनुसार हुआ करते थे। खुखरायण बरादरी का जाति बन्धन उस के राज्य से आरम्भ हुआ है, और इस का कारण यह है कि राजा का एक मंत्री आनन्द था उस के ऊपर राजा क्रुद्ध हो गये और मन्त्री राजा की आज्ञा से मारा गया। मन्त्री के मरने के पश्चात राजा पर किसी शत्रु ने चढ़ाई कर दी है यह देख कर राजा बहुत अचम्भित हो गया और दरबारियों से कहा कि यह धावा मेरे अत्याचार का फल ज्ञात होता है। और साथ ही पूछा कि अब मन्त्री की कुल में कोई शेष है या नहीं। इस पर दरबार के एक वृद्ध ने राजा को कहा कि कल बतलाया जावेगा। इस के दूसरे दिन राजा के पास सूचना भेजी गई कि मन्त्री की एक विधवा बहु है जो गर्भवती है, और अपने माता पिता के घर रहती है। यह सुन कर राजा ने एक सवार को राजपत्र दे कर उस के पास भेजा। सवार जब राजपत्र ले कर वहां पहुंचा तो उस को ज्ञात हुआ कि इस लड़की के घर लड़का उत्पन्न हुआ हैं।

सवार राजपत्र दे कर लौट आया, और यह समाचार राजा को दिया। राजपत्र देखकर लड़की को चिंता हुई कि राजा को किसी ने मेरा पता बतला दिया है और अब मैं मारी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जाऊंगी, क्योंकि मैं उसी वंश में से हूं ।

उसी समय दैववशात् शत्रु का मन्त्री मार्ग में मर गया। शत्रु इस को अपशकुन जान कर लौट गया। यह देख कर राजा प्रसन्न हुआ, और कहने लगा कि शत्रु का लौटना मेरे स्वर्गवासी मन्त्री की दैव शक्ति का कर्तव्य है। चालीस दिन के पश्चात् जब लड़की राजसभा में उपस्थित हुई, तो राजा ने उसे कहा तू मेरी पुत्री है। मैं तेरी हर प्रकार की सहायता करूंगा। राज्य की ओर से उस को मासिक कुछ धन की सहायता मिलने लगी। जब लड़का बड़ा हुआ और विवाह के लिये कन्या का कोई प्रबन्ध न हो सका तो राजा ने अपने सभासदों को आज्ञा दी कि तुम आपस में विवाह सम्बन्ध किया करो। इस आज्ञा के अनुसार उस लड़के का विवाह हो गया। क्योंकि यह जाति बन्धन खोकर राजा की आज्ञा से हुआ था, इस लिये इस बरादरी को खोखरायन कहा जाता है।

विभिन्न जातियों का वर्णन

जिला झंग के चोपड़े वा टण्डन। चनाब के उरार कक्कड़। सतलुज के पार टण्डन। गंगा के पार तालवाड़। बंगाल के नन्दे क्षत्रिय सेठ कहलाते हैं। इसी प्रकार चोपड़े भी कई नामों से प्रसिद्ध हैं, जैसे जट चोपड़े, कानूगो चोपड़े, खीर खाने बेरी, दासी पोते, मखमली चूने वाले इत्यादि।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

'सरीन' बरादरी का विशेष वर्णन

ज़बानी

श्रीमान् बाबा करतार सिंह साहिब बेदी रईस

रावलपिंडी

इतिहासिक रूप 'सरीन' क्षत्रियों का इस प्रकार है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के दो पुत्र लव, और कुश हुए। जिन्हों ने मद्र देश के राजा की पुत्रियों से विवाह किया, और उस प्रान्त में रह कर 'लव' ने लवपुर (लाहौर) और कुश ने कुशपुर (कसूर) नाम के दो विशाल नगर बसाए। और इन दोनों के वंशज चिरकाल तक राज करते रहे। कुशवंश में 'काल केत, और लववंश में' काल राए, नाम वाले प्रतापी राजा हुए। इन दोनों वंशों में परस्पर विरोध हो गया। काल केत राजा बलवान था, उस ने राजा काल राए और लववंशी क्षत्रियों को उस प्रान्त से निकाल दिया। तदनन्तर राजा काल राए ने "सनयोढ़ा" देश में जा कर वहां के राजा की पुत्री से विवाह किया। उस राजकन्या से जो पुत्र हुआ उस का नाम 'सोडीराए' रक्खा, और सोडीराए के वंशज 'सोडी' क्षत्रिय कहलाए। कुछ समय के अनन्तर सोडी क्षत्रियों ने कुश वंशी क्षत्रियों को जीता और वह कुशवंशी क्षत्रिय काशीपुरी में चले गये। वहां उन्हों ने वेदों का ज्ञान प्राप्त किया। जब सोडी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

क्षत्रियों ने यह वृतान्त सुना तो वह अतिप्रसन्न हुए, और उन्हों ने कुशवंशियों को बुला कर अपने राज्य का कुछ भाग उन्हें दे दिया। तब से कुशवंशी क्षत्रियों की प्रसिद्ध संज्ञा (अल्ल) वेद ज्ञाता होने के कारण 'बेदी' हुई। कुछ समय बाद इन दोनों वंशों के हाथ से राज्य जाता रहा, और बेदी क्षत्रियों के पास बीस ग्राम शेष रह गए। तदनन्तर संवत् १५२६ विक्रमादित्य में इस बेदी वंश में श्री गुरु नानक देव जी महाराज का जन्म तलवन्डी (ननकाना साहिब) जिला शेखुपुरा में हुआ। जिन्हों ने प्रभु भक्ति का प्रचार किया। जैसा कि भविष्य पुराण में लिखा है कि जब धर्म का ह्रास होगा तब क्षत्रिय जाति के बेदी वंश में नानक जी का जन्म होगा, जो धर्म का प्रचार करेंगे। गुरु महाराज के ज्योति जोत समाने के बाद नौं गुरु और हुए। उन में से श्री गुरु तेग बहादुर, और श्री गुरु गोविन्द सिंह साहिब सोढी विशेष प्रसिद्ध हुए, जिन्हों ने हिन्दु धर्म की रक्षा के लिये अपना सारा परिवार बलिदान कर दिया क्यों कि इस बरादरी के महापुरुषों ने अपने सर दे कर धर्म की रक्षा की थी, इस लिये यह 'सर ईन' अर्थात् सर देने की ईन (रीत, मर्यादा) वाले कहलाए। जिन को आज 'सरीन' कहा जाता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

॥ श्री ॥

मैने क्षत्रिय चार जाति गोत्र निर्णय प्रकाशक रामरक्खा मल कपूर जी का देखा और अच्छी तरह सुना ! इसमें किया गया निर्णय सर्वथा शास्त्रीय है, अर्थात् कपूर खन्ने मिहरोत्तरे और सेठ इन चारों के गोत्र भिन्न भिन्न हैं। जो कि विशेष अनुसन्धान पूर्वक शास्त्रों के प्रमाण से दिखाये गये हैं।

यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि इन के भिन्न गोत्र होने के कारण ही आपस में चार जातियों के परस्पर विवाह सम्बन्ध होते चले आ रहे हैं. और अनुसंधान से शास्त्रों से तथा प्राचीन परंपरा से जो कपूरों का कौशिक खन्नों का कौत्स मिहिरोत्तरों का कौशल्य और सेठों का वत्स गोत्र निर्णय किया गया है इस विषय में किसी प्रकार का किसी को भी संदेह हो नहीं सकता क्योंक यह विवेचन शस्त्रानुसार किया गया है। शुभम।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

क्षत्रिय चार जाति गोत्रप्रवर निर्णय ।

क्षत्रियणां पुरोहित गोत्र प्रवरावेवेति सर्व सिद्धान्तः, इत्यादि निर्णयसिन्धु प्रभृति ग्रन्थों के अनुसार कपूर क्षत्रियों का अनादिकाल से 'कौशिक, यह गोत्र प्रचलित है, अतः कुशिकानां विश्वामित्र देवरातऔदल' (आश्वलायन श्रौतसूत्र ६.१४–२इस शास्त्र के अनुसार कपूरों के विश्वामित्र देवरात औदल यही प्रवर अनादि कल से सिद्ध हैं इसमें परिवर्तन नहीं हो सकता है । तथा मल्होत्रे क्षत्रियों का पूर्वोक्त सिद्धान्त के अनुसार कौशल्यगोत्र है, अतः "अङ्गिरा सुवचोतथ्यः उशिजश्च महानृषि, परस्परम-वैवाह्य ऋषयः परिकीर्त्तिताः ,, । इस मत्स्य पुराण १६६-११ के अनुसार कौशल्य गोत्र के अङ्गिरा' सुवचोतथ्य, तथा उशिज यही प्रवर हैं ।

खन्नों का कौत्सगोत्र प्रसिद्ध है, अतः इनके प्रवर 'अथ कुत्सानां त्र्यार्षेयः, अंगिरस मान्धात्रकौत्सेति । इस आपस्तम्ब के वचनानुसार, तथा 'मत्स्य पुराण' १६६–३७ के अनुसार आङ्गिरस–मान्धाता कौत्स ही प्रवर है, अतः उपरिनिर्दिष्ट क्षत्रिय जातियों को उचित है कि संस्कारादिकों में इन ही गोत्र प्रवरों का उल्लेख करें, तथा विवाहादिकों में इसी के अनुसार सगोत्रत्व समान प्रवरत्व का निषेद आदि विचार करें । इतिशम् ।

महामहोपाध्याय, माधव शास्त्री भाण्डारी
व्याकरणाचार्य, वेदान्ताचार्य, साहित्यतीर्थ,
मीमांसातीर्थ, प्रधान संस्कृताध्यापक ओरियण्टल
कालेज लाहौर ।

१०–२–३६.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

१ आश्व० श्रौत० ६-१२-३ के अनुसार कुत्सों के आङ्गिरस आम्बरीष यौवनाश्व यह प्रवर हैं।

संक्षिप्त इतिहास श्री बाबा लालू जस राज जी

लेखक

हरि चन्द खन्ना पुत्र लाला हरणाम दासखन्ना चौधरी लाहौर वाले

श्री बाबा लालूजस राज जी का इतिहास लिखना इस समय अति कठिन प्रतीत हो रहा है। न तो महाभारत के समय के लिखे ग्रन्थों में और न ही किसी पुराण में आपकी कोई गाथा आई है। इस से भली भांती जान पड़ता है कि आप महाभारतीय समय के बाद में हुए हैं। आप का समय और जीवन चरित्र जानने के लिए यह आवश्यक है कि उन समस्त गाथाओं की जो आप के श्रद्धालुओं और आप के कनिष्ट भ्राता श्री बाबा बौड़ राय जी की संतान (इस वंश को खन्ना जाति में बाबयों का वंश कहा जाता है) में वंश परम्परा चली आ रही हैं जांच पड़ताल करें, और दीपालपुर के भग्नावशेष से उनके जीवन इतिहास और समय का ज्ञान करें, कि जिस समय में आप ने दर्शन दिए थे। क्षत्रियों की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मन्दिर श्री बाबा लालू जसराय जी, दिपालपुर।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आप के प्रति अनन्य भक्ति से यह भी प्रतीत होता है कि आप ने अवश्य कोई ऐसा महत्त्व पूर्वक कार्य किया है जिस कारण चार जाति क्षत्रिय और विशेष कर खन्ना जाति आप को अपना परम पूज्य मानती है ।

समस्त प्रसिद्ध गाथाओं के अनुसार आप का कर्म क्षेत्र दीपालपुर ही माना गया है । यह नगर कभी अखण्ड भारत ही था, परन्तु इस समय पश्चिमी पाकिस्तान बन जाने के कारण ज़िला मिन्टगुमरी के रेलवे स्टेशन उकाड़ा से १६ मील और बसीरपुर से १३ मील दूर स्थित है । जिला मिन्टगुमरी के गवर्नमेंट गज़ट को पढ़ने से ज्ञान होता है कि कभी ब्यास नदि इस नगर के समीप बहती थी । उस स्थान को देखने से प्रतीत होता है कि किसी समय यह एक अतिसुन्दर नगर होगा, जिस के भग्नावशेष इस समय तक भी दूर २ तक दिखाई देते हैं । आधुनिक दीपालपुर दुर्ग (किला) के एक भाग पर बसा हुआ है और बचे खुचे बुर्ज उस किला की प्राचीन स्मृति को ताज़ा कर रहे हैं इस के चारों तरफ अभी तक खाई मौजूद है, जिस में कभी इस नगर की रक्षा के लिए जल भरा रहता था, परन्तु अब खेती बाड़ी हो रही है । सवाए लाहौर और दीपालपुर के पञ्जाब के किसी नगर के इर्द गिर्द खाई दिखाई नहीं देती, इस से भी प्रतीत होता है कि कभी यह पञ्जाब का बहुत बड़ा प्रसिद्ध नगर होता होगा । इस की बनावट से यह भी प्रतीत होता है कि इस नगर ने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समय के कई उतराव झड़ाव देखे हैं, कई वार यह उजड़ा और कई वार बसा, और हर वार उजड़ने के पश्चात् पूर्व भग्नावशेष की नींव पर ही नया नगर बनता रहा। इसी कारण से यह इर्द गिर्द की भूमि से ३० या ४० फुट ऊंचा है। इस का तीन चौथाई भाग अब भी भग्नावस्था में पढ़ा है, और वर्तमान दीपालपुर केवल एक चौथाई भाग पर बना हुआ है। जिस के इस समय केवल तीन द्वार बचे हुए दिखाई देते हैं कहते हैं किसी समय इस नगर के बारह द्वार होते थे।

इतिहास के देखने से यह भी ज्ञात होता है कि मुग़लों के समय तक यह पञ्जाब के अति प्रसिद्ध शहरों में गिना जाता था। अकबर के समय में यह शहर मौजूदा लाहौर और जालन्धर की तरह एक कमिश्नरी का मुख्य स्थान था। अकबर का एक नवरत्न भी इसी नगर दीपालपुर का रहने वाला था। मिन्टगुमरी गज़ट के पढ़ने से यह भी ज्ञान होता है कि जब बाबर ने इस दीपालपुर को विजित किया तो उस ने काबुल में अपने बंधुओं को एक पत्र भेजा जिस में बाबर ने लिखा कि मैंने दीपालपुर को जो कि पञ्जाब में लाहौर से दूसरे दर्जे का नगर है विजित कर लिया है। यह पत्र अभी तक एक शिला पर खुदा हुआ काबुल के शालामार बाग में स्मृतिरूप लगा हुआ है। बाबर को विशेष कर यह बात लिखने का कारण यह था कि जब कभी भी मुग़ल लोग भारत पर आक्रमण करते थे तो दीपालपुर का तत्कालीन गवर्नर गाज़ी तुग़लक मुगलों को मार २ कर पञ्जाब से भगा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

देता हुआ काबुल और लग़मान तक उन का पीछा करता चला जाता था। इसे इलाउद्दीन खिलजी ने दीपालपुर का हाकिम बना रक्खा था। यह वही गाज़ी तुग़लक था जो कि, बाद में शाह खसरु ऊर्फ नासरउद्दीन खिलजी को १३२० ई० में वध कर देहली के सिंहासन पर बैठा और गयासउद्दीन तुग़लक के नाम से प्रसिद्ध हो तुग़लिया वंश की नींव रखने वाला हुआ।

इतिहास के पढ़ने से यह भी ज्ञान होता है कि बाबर से पहले महमूद गज़नवी आदि और अकबर के बाद भी शत्रु प्रायः इस पवित्र नगर पर आक्रमण करते रहे हैं। कभी वह भी समय था, जब हम सिन्ध के पश्चिम की ओर आक्रमण किया करते थे। बालमीकीय रामायण के उत्तर काण्ड के सर्ग २२ को पढ़ने से प्रतीत होता है कि केकय देश के राजा और भरत के मामा राजा युधाजीत ने अपने राज पुरोहित अङ्गिरस के पुत्र गार्ग्य के हाथ महाराज रामचन्द्र को संदेश भेजा, कि मेरे राज्य के साथ मिलता हुआ सिन्ध नदी के दोनों ओर गंधरवों का देश है। जिस का राजा इस समय शैलूष है। यह देश बड़ा सुन्दर और फल पुष्प आदि से भरा हुआ है। यह लोग बहुत सिर पर चढ़ रहे हैं। इस देश वासियों के हाथों मैं बहुत ही दुःखी हो रहा हूं। इस लिये हे महाबाहु आप इन को अपने बस में करें। फिर इस के आगे उत्तर काण्ड के २३ सर्ग में आया है कि महाराज राम चन्द्र जी ने यह बात स्वीकार कर महाराज भरत के दोनों पुत्रों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तक्ष और पुशकल को राज तिलक दे भरत के साथ बहुत बड़ी सेना दे उस ओर भेजा । और भरत जी को कहा कि इन देशों को जीत कर इन का राज्य दोनों कुमारों में बांट कर मेरे पास लौट आओ । भरत जी ने आज्ञा का पालन करते हुए गंधर्वों को प्रास्त किया । महाराज ने फिर सिन्ध के पूर्व की ओर राजकुमार तक्ष के नाम पर तक्षशिला (टेकसिला) और सिन्ध के पश्चिम की ओर राजकुमार पुष्कल के नाम पर पुष्कलावत (कलात) बसाया । महाराज भरत इस देश में पांच साल ठहर कर लौट आये ।

इस प्रकार यह सारा देश जिस की राजधानी गांधार (कंधार) थी सूर्यवंशियों के हाथ आ गया । इस के बाद समय व्यतीत होने पर सूर्यवंश की कुछ शाखाऐं चन्द्रवंश और अग्निवंश कहलाने लगीं । और देश के इस भाग में चारों ओर छा गईं समय व्यतीत होता गया । महाभारत का युद्ध हुआ और परिणाम (नतीजा) यह हुआ कि भारत छोटे २ राज्यों में बट कर बलहीन हो गया ।

यहां यह लिखना अनुचित न होगा कि चारजाति क्षत्रिय समृद्धावस्था में दूर २ तक बस गये थे, और कालान्तर में मध्य-भारत और पञ्जाब में लौट आए उस हस्त लिखित ग्रन्थ के अनुसार जो ला० राम रक्खा मल्ल जी कपूर ने मुझे खोज करने के लिए दिया था, उससे यह प्रतीत होता है कि कपूर शाखा का बहुत सा भाग तीराह कामराय में रहता था । कोट कपूरा यूसफ़ ज़ई में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उन की राजधानी थी। कंधार के इधर उधर यह जाति प्रायः रहती थी। प्रथम आतश प्रस्तों [पारसी] और फिर अमीर सबुक्तगीन से युद्ध करने के पश्चात् उस देश से इन को निकाल दिया गया। उन्हों ने पञ्जाब में अपने नाम पर कोट कपूरा बसाया। कक्कड़ अथवा सेठ जाति के विषय में लिखा है कि यह अधिकतर करिसटान टमन में बसे हुए थे जब मुसलमानों ने आक्रमण करने आरम्भ किये तो जो इसलाम धर्म ग्रहण कर अपने देश में रहे वह आज तक भी कक्कड़ पठान कहलाते हैं। और जो अपने धर्म की रक्षा चाहते थे उस देश को छोड़ पूर्व की ओर आ गये। मलहोत्तरा या मेहरा के विषय में लिखा है कि यह महाराज लक्ष्मण की संतति में से एक राजा मलहोत्तरा हुआ है उस की संतान में से हैं। और खन्नों के विषय में ज्ञान होता है कि यह हिंगलाज में अधिक संख्या में बसे हुए थे। इसी लिये खन्ना जाति श्री हिंगलाज जी की विशेष प्रसंशा करती है। क्यों कि खन्ना जाति भगवति चण्डिका को जिस का मंदिर हिंग लाज में था अपना कुल देवता मानती है। इसी आधार पर जान पड़ता है कि खन्ना जाति का बहुत बड़ा अंग श्री हिंगलाज जी के ही निकट रहता था। और कभी मालवा से ले कर फारस की सीमा तक इन चार जाति क्षत्रियों के छोटे २ राज्य स्थापित थे। इस के पश्चात् बुद्ध का समय आया, और बुद्ध राजधर्म बन गया। इसके पश्चात् शिशुनागों ने अपने समय

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में शुद्ध क्षत्रियों (सूर्यवंश, चन्द्रवंश, और अग्निवंश) के साथ युद्ध कर दस पीढ़ी तक राज्य किया। फिर महां पद्म नन्द जो शूद्रा के गर्भ में से था सिंहासन पर बैठा। हस्तलिखित ग्रंथ मिहर प्रकाश के अनुसार उस ने उच्च क्षत्रियों पर ऐसे २ अत्याचार किये कि लोग परशु राम को भी भूल गये। उस समय क्षत्रिय समस्त देश को त्याग कर मध्य पञ्जाब में आ गये।

उस समय में भारत को निर्बली देख कर पश्चिम में फारस के राजा गुशतासप ने जो कि अग्नि पूजक (पारसी) था, हजरत मसीह से ७०० सात सौ वर्ष पहले अपने सेवापती काईलेकस के आधीन बहुत बड़ी सेना दे भारत पर आक्रमण कर अफगानिस्तान और बलोचिस्तान को अपने आधीन कर लिया। इस प्रकार बहुत से क्षत्रिय आतशप्रस्तों के भय से पञ्जाब देश में आ गये। इसके पश्चात् मसीह से ३०० वर्ष पूर्व यूनान के महाराजा सिकन्दर आज़म ने भारत पर आक्रमण कर पश्चिम पञ्जाब को पराजित कर हड़प्पा तक अपना राज्य स्थापित कर लिया। हड़प्पा के भग्नावशेष देखने से यह ज्ञान होता है कि युनानी इस नगर को अपनी राजधानी या सीमान्त छावनी की भांति उपयोग करते रहे हैं। क्योंकि हड़प्पा से पूर्व की ओर भारत में और कहीं भी यूनानियों के चिह्न दिखाई नहीं देते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस समय क्षत्रियों ने अपने बाहुबल से फिर छोटे २ राज्य देश में स्थापित कर लिये थे। इतिहास के प्रसिद्ध ज्ञाता माई करडल साहिब बहादूर यूनानी लेखों के आधार पर अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि उस समय संभवतः ढाई हजार वर्ष पूर्व क्षत्रियों ने रावि और ब्यास नदि के मध्य अपना राज्य स्थापित कर लिया था। उन्हीं दिनों एक क्षत्रिय राजा जिस का कि नाम राजा श्रीचन्द खन्ना था दीपालपुर पर राज्य करता था। गाथा के अनुसार कहा जाता है कि एक दिन राजा श्रीचन्द बहुत उदास और चिन्ता में बैठे थे कि अकस्मात उनके राज पुरोहित पंडित चन्द्रमुनि जी झिंगण (लालू पंडित) जी आ गये। राजा से उदासीनता का कारण पूछा राजा ने कहा वृद्धावस्था निकट आ रही है। सिर के बाल सफेद होने लग पड़े हैं। उधर डर मारे जा रहा है कि मुलतान का राजा (जिस का नाम सिंह भूप था (कुछ लोग इसे राजा श्रीचन्द का भाई भी बतलाते हैं) कहीं मेरे राज्य को छीन न ले, कोई पुत्र भी नहीं जो कि राज्य की रक्षा करे। इसलिये इन विचारों में हर समय मगन रहता हूँ। गाथाओं के अनुसार पंडित चन्द्र मुनि जी दीपाल पुर से कोई ३ कोस पूर्व की ओर एक महात्मा बाबा छज्जल जी की सेवा में उपस्थित हुए। और सब वृतान्त कह सुनाया। बाबा छज्जल जी ने श्री हिंगलाज जी जाकर भगवती चण्डिका की उपासना करने की सम्मति दी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री हिंगलाज जी हिन्दुओं का एक महान तीर्थस्थान है जिस का वर्णन कई स्थानों पर पुराणों में भी आया है परन्तु इस समय शायद थोड़े हि लोगों को ज्ञान होगा कि यह तीर्थस्थान कहां है। शिव पुराण में लिखा है कि भगवती सती ने अपने पति का अनादर देख अपने पिता राजा दक्ष के द्वारे यज्ञ के कुंड में अपने शरीर की आहूति दे दी, तो भगवान् शंकर को बहुत दुःख हुआ। आप सती माता के जले हुवे शरीर को कन्धे पर डाल भारत की परिक्रमा को निकले। आप सती भवानी का पवित्र शरीर उठाये घूम रहे थे। मार्ग में जहां कहीं भी सती माता का अंग गिरता गया। वह स्थान एक तीर्थ बन गया। और बड़े २ विशाल मन्दिर वहां पर स्थापित हो गये। दक्षिण में कन्या कुमारी का मन्दिर आसाम में कामाक्षी देवी का मन्दिर और इसी प्रकार पश्चिम में हिंग लाज भवानी की स्थापना हुई। कहते हैं कि चण्डी भवानी सती की यहां भुजाएं गिरी थीं। इस से एक उत्तम शिक्षा भी प्राप्त होती है (१) यदि तुम पश्चम को अपने आधीन रखना चाहते हो तो सर्वदा अपनी भुजाओं को काम में लावो। (२) भारत की वास्तविक सीमा वह हैं जहां जहां से शिव जी महाराज सती का शरीर ले कर घूमते रहे। यह स्थान बलाचिस्तान की रयास्त कलात में समुद्र के तट पर एक पहाड़ी पर बसा हुआ है। आज से

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

एक शताब्दी पहले प्राय: हिन्दू साधू महात्मा स्थलों घनघोर बनों में घूमते हुये श्री हिंगलाज भवानी के दर्शणों को जाया करते थे। आज से ५० वर्ष पहले एक अंग्रेज भ्रमण यात्री (सियाह) के कथन के अनुसार जो कि उन्हों ने हिंग लाज की यात्रा के बाद लिखा था और प्राय: उर्दू के समाचार पत्रों में उस का अनुबाद भी छपा था। वहां लिखा है कि गत शताब्दी में गिनती में कुछ लोग ही श्री हिंगलाज जी के दर्शनों के लिये इस मन्दिर में गये।

इस तीर्थ के सम्बन्ध में मैंने एक योगी सुन्दर नाथ जी से जो कि लाहौर के मुहल्ला सथां में भैरव स्थान के पुजारी थे कुछ वृतान्त अपने बचपन में सुना था। वह और साधुओं के साथ इस मन्दिर की यात्रा कर आये थे उनका कहना है कि वहां केवल ज्योती के ही दर्शन थे। मुझे यह लिखतेहुए लज्जा आती है कि उस समय वहां एक मुसलमानी बैठी थी जो कि ज्योति को हर समय प्रचण्ड रखती थी। × शोक है कि राज पाट खो कर हम तीर्थ स्थानों को भी भुला बैठे हैं, और दो अथवा तीन शताब्दि-

---

× नोट—आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी ने मुझे सुनाया था कि मैंने अपने पिता जी के साथ हिंग लाज जी की यात्रा की और चण्डिका के मन्दिर में ज्योति के दर्शन किये थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यों के पश्चात् ऐसा समय आएगा कि हम पाकस्तान में रहे हुए कटासराज ननकाना आदि तीर्थों को भी इसी भांति भुला बैठेंगे।

इस महान् तीर्थ पर कहा जाता हैं कि पंडित चन्द्र मुनि जी ने कई साल तप किया। और अंत में भवानी चण्डी ने प्रसन्न हो कर वररूप में दो बीर पंडित जी को दिये एक का नाम यश और दूसरे का राज था इस पर पंडित जी ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि हे जगदम्बे राजा की तो तीन रानियां हैं और बीर दो हैं इस से एक रानी की गोद तो खाली ही रहेगी। चण्डी भवानी ने प्रसन्न हो कर कहा कि तीसरी रानी के गर्भ से सन्तान होगी और वही सिंहासन पर पैठेगी। क्योंकि दोनों बीर पंडित जी लाये थे इसी लिये वह जगत में बाबा लालू जस राज के नाम से विख्यात हुए। भावनी जी के वरदान के अनुसार तीसरी रानी के गर्भ से जो बालक उत्पन्न हुआ वह बोहड़ राय कहलाया उस की सन्तान आज तक खन्ना जाती में 'भोरहे' (अर्थात् बौरहे की सन्तान) कहलाती है जिस का कुछ वर्णन आगे आयेगा। यह बात इन दोनों बीरों के सम्बन्ध में विशेष कर कहीं जाती है कि जब यह दोनों बीर पंडित जी के साथ दीपालपुर की ओर आ रहे थे तो मार्ग में इन का युद्ध दो राक्षसों से हुआ जिन का कि नाम हर और हरूप कहा जाता है। इन बीरों ने उन दोनों राक्षसों को युद्ध में मारडाला इस लिये इन दोनों वीरों को विशेषतया मान्ता होने लगी कहा जाता है कि भगवती की भविष्य वाणी के अनुसार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इन बीरों का किसी कारण उनकी माता ने अपमान किया और इस पर यह दोनों बीर श्रावण वदि नवमी को ज्योति ज्योत समा गये। दैववश यह दोनों बीर एक ही दिन आये और एक ही दिन अन्तरध्यान हुए इस लिये इन की देवता वत पूजा होने लगी। और उन की स्मृति में यह मन्दिर-दीपालपुर में बनाया गया। प्रत्येक हिन्दू मन्दिर में एक ज्योति जलाई जाती है किन्तु इस मन्दिर में हर समय दो ज्योतियें जलाई जाती हैं कहा जाता है कि एक काले वीर (यश) और दूसरी लाल वीर (राज) की स्मृति में हैं। यह भी कहा जाता है कि जब यह बीर पृथिवी में समा रहे थे तो इन की माता ने उन की चोटी जोर से पकड़ ली इस लिये यह चोटी की प्रथा दीपालपुर जा कर मनाई जाती है।

इस गाथा पर विशेष ध्यान देने से प्रतीत होता है। कि जहां हर और हरुप से युद्ध हुआ और वह दोनों मारे गये वह जगह हड़प्पा के नाम से प्रसिद्ध हुई। भग्नावशेष से यह भी जान पड़ता है कि यह (हड़प्पा) एक युनानी विजित नगर था। इस लिये यह ज्ञात होता है कि पञ्जाब से यूनानियों को निकालने में और निष्कंटक क्षत्रिय राज्य के स्थापन करने में इन बीरों का विशेष हाथ था। इस लिये सब क्षत्रियों में इन की मान्ता भी विशेष रूप से होने लगी और दीपालपुर में जहां उनकी स्मृति बनाई गई वह स्थान एक तीर्थ स्थान बन गया। श्रावण

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वदि नवमी को जिस दिन यह दोनों बीर अन्तरध्यान हुए उस दिन और दूसरे दिन दशमी को चार जातिय क्षत्रियों में विशेष उत्सव मानाया जाता है जो कि महोत्सव के नाम से विख्यात है। निरक्षर लोग और स्त्रियें इसे मौरसाहिब कहते हैं। नवमी के दिन तो केवल बाबा लालू जसराज के कनिष्ट भ्राता बाबा बौढ़राय जी की सन्तान जहां कहीं भी हो यह उत्सव मनाती है। विशेषकर उन की सन्तान लाहौर और अमृतसर में हा रहती है। उन के नाम पर ही लाहौर की गली बाबयां और अमृतसर का बाज़ार बाबयां प्रसिद्ध है। लाहौर की गली बाबयां में एक बहुत प्राचीन भूमि के कोई १० फिट नीचे जा कर एक बाबा जी का मन्दिर बना हुआ है और यह मन्दिर ५०० वर्ष से भी अधिक का बना ज्ञात होता है। नवमी के दिन बाबा जी की सन्तान के लोग ही केवल इस उत्सव को मनाते हैं। पहले इस प्राचीन मन्दिर में चंडिका का हवन यज्ञ किया जाता है और पश्चात् ५० अथवा ६० ब्राह्मणों को भोजन खिलायाजाता है और दक्षिणा दी जाती है। क्योंकि श्राद्ध कर ने का अधिकार केवल उस कुल को ही होता है इसलिये नवमी के दिन केवल यही वंश इस कर्म को करता है। दीपालपुर में भी इस दिन कुछ नहीं किया जाता। शेष क्षत्रिय खन्ना जाति और दूसरे क्षत्रिय अन्य दिन दशमी को सीधा (गुड़ आटा) या लुची और हलुआ देते हैं। यह बाबा जी की पतलें कहलाती

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हैं। लाहौर में यह मेला नवमी के दिन गली बाबयां में मनाया जाता था और दूसरे दिन दशमी को यह मेला लाहौर के शाहालमी दरवाजे के बाहर विशेष रूप से मनाया जाता था। जहां कभी हजारों की उपस्थिति होती थी। उस समय इस जगह रतनचंद का तालाब नहीं था। और यह स्थान मैदान बाबयां के नाम से प्रसिद्ध था। नवमी और दशमी को जब इस वंश के लोग गद्दी पर बैठते थे तो ब्राह्मण भी उनके आगे उस दिन मस्तक झुकाना उत्तम मानते थे। दशमी के दिन यह मेला लाहौर और अमृतसर के अतिरिक्त जालंधर खन्ना जगरावां देहली कानपुर आदि नगरों में भी मनाया जाता है और एक विशेष बात जो इसवंश में चली आती है वह यह है कि जब कभी भी इस वंशमें किसी लड़के या लड़की, का कोई शुभ कर्म विवाह आदि होता है तो बाबा जी का पहले मंगला चरण अरदास गाई जाती है और पीछे उस लड़के या लड़की की घोड़ी या सुहागं गाये जाते हैं।

समय व्यतीत होता गया और साथ २ दीपालपुर भी उन्नती करता गया। फिर ग्यारवी शताब्दी का समय आया। महमूद गजनवीने अपना पहला हमला मुलतान पर कर दीपालपुर का सारा देश क्रान्तकर डाला अब प्रति वर्ष महमूद हिन्द पर आक्रमण करने लगा और उधर क्षत्रिय भी रक्षा के लिये

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मन्दिर पर प्रति वर्ष उपस्थित होने लगे। और अपने सीस की बली होने से भी झिझकते नहीं थे। क्योंकि खन्ना जाति प्राय: युद्ध करती आई है इस लिये ही क्षत्रियों के भाट जब कभी विवाह आदि के समय कविता और दोहे बोलते हैं। तो खन्ना जाति को "खड्ग धारी" नाम से पुकारते हैं। खन्ना जाति के प्रतिवर्ष दीपालपुर में उपस्थित होने के कारण से खन्ना जाति में यह प्रथा पड़ गई कि जब तक खन्ना बालक अपनी चोटी नहीं दे लेता तब तक उसकी शादि नहीं हो सकती। और एक विशेष बात जो ध्यान में रखने के योग्य है वह यह है कि जिस बालक की यह प्रथा (रस्म) करनी होती है। वह बालक ध्वाजा हाथ में ले और लाल वस्त्र ही पहन दीपालपुर जाता है और यह वह रंग है जो कि बली का चिन्ह माना गया है। यह है दास के विचार में चोटी प्रथा की वास्तिवक नीव (बुन्याद)।

चोटी की प्रथा हिन्दुओं के १६ संस्कारों में से नहीं है। किन्तु फिर भी चार जाति के हर बालक को प्राय: और हर खन्ना बालक को आवश्यक मानानी होती है। किन्तु अब तो यह प्रथा यहां तक चल पड़ी थी कि जिस किसी के गृह में सन्तान नहीं होती थी। वह यहां आकर इस मन्दिर में संकल्प (सुखना) करता था कि जब कभी इसके घर लड़का होगा तो यह उस की चोटी इस मन्दिर में आ कर देगा। यह प्रथा इस प्रकार से मनाई जाती है कि जब बालक मन्दिर में जाता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तो अपने साथ एक नारयल ले जाता है। जो उस समय शीश के स्थान गिना जाता है पंडित लोग उसकी चोटी उतरवा देते हैं। उस समय उस बालक का सिरकटा हुआ माना जाता है इसलिये उस का सिर और मुख कपड़े से ढांप दिया जाता है। इस अवस्था में उस बालक के माता पिता उस बालक को नहीं देख सकते और न ही हाथ लगा सकते हैं, और ना ही उस बालक को आपने स्थान पर ले जा सकते हैं। दूसरी ही कोई स्त्री माता बनकर बालक को अपने स्थान पर ले जाती है दूसरे दिन प्रातःकाल उस बालक को देवता के प्रति सीस झुकवा कर बालक पूर्वावस्थ में अपनी माता को लौटा दिया जाता है। यह है वह प्रथा जो इस मन्दिर में प्रतिवर्ष माघ के महीने के हर शनिवार की रात्री को इस मन्दिर में की जाती है। और रविवार को मत्था टेकना, सोमवार मुण्डन, और मंगलवार यज्ञो पवित भी किये जाते हैं।

ऐसा जान पड़ता है कि इस मन्दिर पर जाते हुए खन्ना जाति पर यवनों (मुसलमानों) के जिस स्थान पर आक्रमण हुआ करते थे। वह स्थान अब भी रत्ता खन्ना के नाम से प्रसिद्ध है, यह स्थान जो खन्नों के रुधिर से लाल हुआ था दीपालपुर से लग भग चार मील पश्चिम की ओर है।

इस इतिहास के अनुसार चोटी की प्रथा हो सकती है तो केवल दीपालपुर में और कहीं नहीं हो सकती यह पञ्जाब

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भर में एक ही मेला है जो कि एक महीना लागातार मनाया जाता है इस अवसर पर बहुत दूर २ काबुल, कंधार, गजनी, अफ्रीका ब्रह्मा आदि देशों से भी विशेषकर खन्ने और अन्य क्षत्रिय इस प्रथा को मनाने के लिये दीपालपुर आते हैं। इस मन्दिर में हर शुभ कार्य करने से पहले चण्डिका देवी का पूजन होता है यह भवानी चण्डिका का मन्दिर बाबा जी के मन्दिर के सामने बना हुआ है। राणा प्रताप, सेवा जी मरहट्टा, श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी, आदि योद्धाओं ने भी चण्डिका की विशेष प्रशंसा की है क्योंकि यह बल पराक्रम ओज आदि के देने वाली शक्ति मानी गई है। और यह खन्ना जाति भी इसी चण्डिका को अपना कुल देवता मानती है और हर काम में पहले इस की पूजा करती है।

दूसरे मन्दिरों की तरह दीपालपुर के मन्दिर में कोई विशेष मूर्ति स्थापित नहीं, वहां ज्योति के दर्शन हैं। क्योंकि बाबा जी चण्डिका के भेजे हुए शक्ति रूप वीर थे; इस लिये भगवती चंडिका की ज्योति के ही दर्शन मन्दिर में हैं, और दो वीरों की स्मृतिरूप दो ज्योतियें स्थापित हैं। कहते हैं कि किसी श्रद्धालु भक्त ने श्री बाबा लालु जसराज जी की स्वर्णमूर्ति बना कर इस मन्दिर में रक्खी, जो कि परम्परा के विरुद्ध थी, इस लिये इस का फल उसको हानिप्रद मिला। भविष्य में इस मूर्ति के दर्शन भी न हो सकें इस लिये उस के आगे एक आवरण

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(परदा) डाला हुआ है। आश्चर्य यह है कि पाकस्तान बनने के बाद जहां लुटेरों ने इस मन्दिर की हर एक बहुमुल्य और अनमोल वस्तुओं को लूट लिया और किसी वस्तु को नहीं छोड़ा वहां इस मूर्ति की ओर वह आंख उठा कर भी देख नहीं सके और यह मूर्ति उसी स्थान पर पहली अवस्था में पुराने परदे के पीछे अब भी सं २००७ विक्रम, सन् १६५० की यात्रा तक स्थापित थी और किसी ने उस को हाथ तक भी नहीं लगाया।

महमूद गौरी के बाद उसके एक उत्तराधिकारी कुतबउलदीन ने खानदान गुलामा की नीव डाली जब यह खानदान भी बलहीन हो गया तो उसका शव (मृत शरीर) पर जलाल-उलदीन खिलजी ने खानदान खिलज्या कि नीव रक्खी, उस समय इस दीपालपुर के इरदगिरद क्षत्रियों का बड़ा पराक्रम था इस लिये यहां के क्षत्रियों को बस में रखने के लिये जलाल-उलदीन व अलाउलदीन ने अपने सबसे बड़े सैनिक (सिपाह-सालार) गाज़ी तुगलक को दीपालपुर का गवर्नर बना रक्खा था, (इस की बाबत पहले भी कुच्छ लिखा जा चुका है, ऐसे योद्धा और खूनखार पुरुष को दीपालपुर में गवर्नर बानकर बिठाने का यह परिणाम निकलता है कि इस देश के क्षत्रियों से खिलजियों को विशेष भय था, ऐसा जान पड़ता है कि जहां क्षत्रियों का राज पाट जाता रहा वहां भाग्य ने भी इन से मुंह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मोड़ा और बियासा नदी ने भी अपना बहाऊं बदला फैरोज़पुर के निकट सतलुज से नाता जोड़ लिया और सारा देश जो कभी बड़ा पैदा वार देने वाला था वंजर और जंगल हो गया, और इस प्रान्त के क्षत्रियों को विवश इस देश से निकल भारत के चारों ओर जाना पड़ा, इसी लिये यह क्षत्रिय अपने आप को मुलतान की ओर से आया हुआ बतलाते हैं।

दीपालपुर में यात्रियों के ठहरने के लिये एक बहुत विशाल धर्मशाला है जो कि दो मंजली बनी हुई है, और मैं निश्चित रूप से कहता हूं कि ऐसी विशाल धर्मशाला सारे भारत वर्ष में और कहीं नहीं। यह धर्मशाला चारजाति बरादरी के दान बीरों और हमारे पूज्य लाला वंशीधर कपूर अमृतसर निवासी के अनथक परिश्रम का परिणाम है। जिसका मूल्य इस समय भी कई लाख रुपये होगा, वहां हर यात्री को रहने के लिये स्थान बरतन बालटी लालटेन जो आवश्यक वस्तुएं कमेटी श्री बाबा लालूजसराज की ओर से विना मूल्य मिलती थी। इस धर्मशाला में इस समय लगभग एक सौ के मुसलमानों के परिवार टिके हुए हैं,

इस मन्दिर की यात्रा को सं०२००६ वि० में क्षत्रियों का एक जत्था गया था, यह हिन्दुओं में सब से पहला जत्था था जो पञ्जाब के अन्दर मन्दिर की यात्रा को गया। इस जत्था में बाबा बौढ़राय के खानदान में से चार यात्री थे, और पंडित

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चन्द्रमुनि जी के वंश से एक पण्डित हरीराम जी थे। उस जत्था में ४ बालकों ने अपनी चोटी का उस अवसर पर संस्कार किया जिन में से एक बालक कृष्ण कुमार खन्ना श्री बाबा बौढ़राय जी की सन्तान में से था। अन्त में मैं क्षत्रियों के दूरदर्शी महांपुरुषों की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने इस चोटी को प्रथा का रूप देकर हर खन्ना पुरुष को दीपालपुर जाना आवश्यक ठैहराया और काबुल से लेकर आसाम तक, कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक, इस बिखड़ी हुई बरादरी को एक माला में पिरो कर रख दिया। और इन का यह प्रशंसनीय विचार इस जाति में संगठन, जान पहचान, प्रेम, बलीदान और बीरता पैदा करने का साधन हुआ। बड़े शोक से लिखना पड़ता है कि देश के विभाजन द्वारा जहां हम लोगों की सम्पत्ति, धन, मान, मर्यादा और संगठन की हानी हुई वहां हमसे पवित्र तीर्थ स्थान भी छीन गये। आओ हम परमात्मा को साक्षी रख कर प्रतिज्ञा करें कि यदि अपने बालकों की चोटी का संस्कार करेंगे तो केवल दीपालपुर जाकर ही करेंगे, किसी और स्थान पर यह प्रथा करना पाप समझेंगे। अन्त में परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिन शीघ्र आये, जब यह भारत फिर अखण्ड हो जिस से कि हम स्वतंत्रता से दीपालपुर जाकर इस पवित्र प्रथा को फिर से कर सकें, और वहीं पर श्री बाबा लालूजसराय जी का अरदास करें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अरदास

श्री बाबा लालू जसराय जी की

चढ़े जब चन्द मकरन्द पूजा कर हैं,
भानकी जोत पर हैं उजालू।
देवी, देव, सब सिद्ध पूजा कर हैं,
निरत नारद वेद पालू
कहे जोधाराय तेरी जागती जोत रहे, सदा निगम पूर्ण उजालू।
दूध, पूत, धन, और लक्ष्मी देत हैं,
सोई जागती जोत जसराय लालू ॥१॥

बड़ो है तू दाता, जाको सुमिरें परभाता,
नाम लेत दुःख जाता, ऐसे लालू जसराय जी।
लाल जाका मन्दिर बनों, स्वरूप जाका सुन्दर बनों,
ध्वजा जाकी लाल बनों, भूषण रहें मन भाय जी।
हिंगलाज के सपूत, बैरी मारे सब दूत,
ऐसो कहे जोधाराय होवो संतन सहाय जी।
भिंगण जय जयकार बुलाएं, खन्ने जाकर चोटी रखाएं।
भट्ट जा की स्तुति गाएं, भक्तन मन भाय जी।
आओ माघ के महीने, खोलो ढंग डौर खजीने।
आओ पूरी पाओ जागतीजोत, श्री बाबा लालू जसराय जी ॥२॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विविध जातियां

उद्धरण (इक्तबास) हस्त लिखित पुस्तक उर्दू लिपि जो कि श्री गोरखनाथ जी नन्दा सम्पादक 'रसाला' ओ३म देहली से प्राप्त हुई।

इस पुस्तकमें क्षत्रियों की लगभग सात सौ ७०० जातियों के नाम लिखे हैं,प्रसिद्ध जातियों को विस्तार से लिखा हुआ है जिन में से कुछ यहां लिखि जाती हैं। हरिचन्द खन्ना

वैदिक काल और पौराणिक काल में तो क्षत्रिय महाराजा और योद्धा ही हुआ करते थे। भारतवर्ष में ही नहीं समस्त संसार पर क्षत्रियों का ही प्रभुत्व था। पौराणिक काल के बाद भी भारतवर्ष के बाहर क्षत्रियों का ही सार्वभौम राज्य रहा, किन्तु शोक है कि कई कारणों से क्षत्रियों में निर्बलता आजाने से राज्य करना तो कहां विदेशियों की दासता भी करनी पड़ी।

क्षत्रिय जाति की आजीविका (गुजारा) वर्तमान समय में सेना (मिलटरी) राज सेवा, व्योपार और खेती बाड़ी हो गई है, केवल इन कार्यों के और कुछ नहीं कर सकते। यदि इस जाति की प्राचीन कथाएं और इतिहास के प्रमाण लिये जायें, तो सेना में तलवार चलाना और बहादुरी में यही जाति प्रसिद्ध है और राज गद्दी का काम भी इन्हीं के हाथ था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तुगलक के समय में जगन्नाथ वा श्रीधर नामी क्षत्रिय सरदार फौज थे। और मलक राजू आनन्द सेना का मुखिया था। सय्यदों के समय मलक कर्मचन्द आनन्द खिजर खां की फौजका सिपाह सालार था। और शब्द कक्कड़ भी मलक का पद (ओहदा) था।

'सदापाल भल्ला और साधारण' दोनों सय्यदों के समय में सरदारउलमलक थे, और उन्होंने सय्यदों का नाश किया। और कडामा वा नारनौल का देश साधारण ने लिया। सदापाल भल्ला देहली में अमीरउल्लउमरा था। अन्ततः बहलोल लोदी के साथ उसने घोर युद्ध किये। कहावत है कि सरकटे हुए कोसों तक लड़ता हुआ चला गया। भल्लों में देहली के अन्दर अब भी कोई नई ईंट नहीं लगवाता।

शहनशाह अकबर के समय राजा टोडरमल्ल ने बंगाल के बागी बादशाह दाऊदकरारानी को बारम्बार परास्त किया। और सलवात में जब यूसफ़जईयों के हाथ से अकबर के नामी सरदारों ने शकिस्त (पराजय) खाई तो राजा टोडरमल्ल ने बुढ़ापे की अवस्था में फिर इस चढ़ाई का काम अपने हाथ लिया और शत्रुओं का नाश करने के बाद। पूर्ण प्रबन्ध करके राज्यसत्ता का रोब (भय) पुना स्थापित किया। राजा टोडर मल्ल सूर्यवंशी टंडण जाति के हुए हैं और यह जाति राजालेवे मूलपुरुष के नाम पर चली है

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चन्द्रवंश—वेगी—वग के वंश में पिशावर के समीप अपनी 'हिस्साबजहीर' बतलाती है। यूसफ़जई पठानों ने जब अपना अधिकार कर लिया, जिस कदर कतल से बचे पञ्जाब की तरफ अटक के इस ओर चले आए।

चन्द्रवंश—बैल—शाख बग से यह जाति निकली है असल जाति बग है, ३६५ हिज़री तदनुसार सं० १०१४ वि० में सुलतान महमूद ने जब दयापाल को घेरा डाला, तो विजय राओ के भाई ने जो इस समय सम्भल तहसील भखर में है किलादार था। किन्तु जब किला फ़तेह न हुआ तो निराश होकर छोड़ दिया। जब देवपाल विजय हुआ और बजराए सूरी बली (शहीद) हुआ तो यह शाख जितनी बची पञ्जाब की ओर चली आई।

सूर्यवंश—बेदी—वेद के ज्ञाता होने के कारण वेदी कहलाए श्रीगुरु बाबा नानक देव जी का इसी वंश में जन्म हुआ है (इस वंश में बाबा सरखेम सिंह जी, राजा सरगुरुबख्श सिंह जी. बाबा हरी सिंह जी, बाबा करतार सिंह जी, बाबा हरदित्त सिंह जी और कंवर महेन्द्र सिंह जी जो वर्तमान समय में सिटी मैजिस्ट्रेट देहली सूबा के हैं वेदी वंश के नामी व्यक्तियां है। बाबा करतार सिंह गुरु नानक देव जी की चौदहवीं पीढ़ी में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

से हैं। वेदी खानदान का विस्तृत वर्णन पृ० १०६ पर पढ़ें।

सूर्यवंश—भल्ले—दरायज की शाख द्रुग से निकास हैं इस शाख का मूल पुरुष श्रेष्ट होने के कारण भला (भल्ला) नाम हुआ।

सूर्यवंश—भसीन—भसीन संतान सूर्यबरुए तकसीम, देश पसीन का हुआ। और जवालूस पसीन हिन्दोस्तान को चला गया, पसीन इन की राजधानी थी।

सूर्यवंश—पुरी—पुरी, इस जाति के मूला पुरुष पुरी ने अपने नाम पर पुरीदेश बसाया और अपनी राज्य सत्ता स्थापित्त की,राजा जनक इस पुरी वंश के बड़े नामी राजा हुए हैं। पुरियोंका राज्य खिलजियों के समय समाप्त हुआ, पुरीवंश की शाखें कटक तक राज्य करती रही हैं।

चन्द्रवंश—पाटनीयें—पाटनी दारायज की शाख द्रुग के सम्बन्ध में हकूमत कपिलवत्स से पाटनी जाति चली है। इस जाति के अधिक लोग बुद्ध धर्म में और कुच्छ जैन मत में सम्मिलित हो गये, शेष कुच्छ लोग स्मृति रूप चले आ रहे हैं।

चन्द्रवंश—तुली—तुली हिस्सा प्रथम छंदी पश्चात तुली पत्त इस के हिस्से में आया। अकबर बादशाह के समय में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वरयाम चौधरी बादशाह के साथ आया, और कला नौर अतिरिक्त और भी प्रान्त अपने साथ मिलाकर अपना राज्य स्थापित कर लिया।

चन्द्रवंश—जग्गी—काम राए की शाख वजौरे से जग्गो जाति चली है। जब तनूर राज पूतों का आक्रमण हुआ, तो इस जाति का बड़ा हिस्सा राजपूतों में मिल गया। जो बचे, वह जग्गी प्रसिद्ध चले आते हैं,

सूर्यवंश—चोपड़े—राजा कुश की वंश से चोपड़ा हुआ है, इस जाति के लोग अधिक अपने वृतान्त याद नही रखते अकाल गढ़ के दिवान इसी जाति के थे। मूलराज चोपड़ा सूबा मुलतान हुआ है।

चंद्रवंश—चंधोक—चधोक बलख की शाख है, यह शाख बरमीक आवाद थी, पठानों के जोर पकड़ने पर यह पञ्जाब की ओर चले आए,

सूर्यवंश—हांडा—राजा लव की सन्तान में से हैं, हांडा यूसफजई की ओर है, यह जाति बुंजाही बरादरी में है।

सूर्यवंश—धौन— वराज की शाख वेग से मूल पुरुष धावन से प्रसिद्ध हुई है।

सूर्यवंश—स्याल—शिल की शाख सूरी है, स्याल-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कोट सूरी शाख ने बसाया, वंश परम्परा राज करते चले आए हैं किन्तु पुरु जाति के राजपूतों ने आक्रमण करके इन से राज छीन लिया, इस जाति का बड़ा भाग राजपूतों में सम्मिलित हो गया, जो बाकि रहे वह भिन्न २ पंजाब के नगरों में चले गये, और जहां गुज़ारा पाया बस गये।

सूर्य वंश—महता—गिंद की शाख है, महता का हिस्सा कंधार के उत्तर में तुमन था, आतशप्रस्तों (पारसी) के आक्रमण से यह लोग पंजाब में चले आये।

चन्द्रवंश—नंदा—शाख पब्बी है, टैक्सला की राज सत्ता में से तीन राजे अर्थात् नन्दा, रोकरा, पतरन्दा, बराबर तकसीम (विभाग) थी। नन्दानी, हिन्दोना अपने नामों पर राजधानी बनाई, सुलतान महमूद गजनवी के समय बादशाह से युद्ध हुआ, और यह लोग जान बचाकर जेहलम की ओर चले आए।

चन्द्रवंश—नय्यर—यह बग की शाख है, प्रसिद्ध और शूरवीर हुई है। दिवान मोती राम, दिवान मोकम चन्द और दिवान किरपा राम सूबा कश्मीर इस जाति से हुए हैं, और दिवान मोतियां वाले कहलाए हैं। दिवान राम दयाल ने किला फलौर बनवाया। और हजारा के युद्ध में शहीद (बली) हुए।

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

सूर्यवंश—सूरी—शाख सिल से है। क्षत्रियों में ऐसी बहादुर जाति कम हुई है। इस जाति का जीवन हकूमत के साथ ही हिन्दु हकूमत की जिंदगी थी। जब तक सखीराओ सूरी जिंदा रहा, सुलतान महमूद रहा, जंग में लगा रहा और तुरक हिन्द की तरफ बढ़ न सके। आजकल यह जाति खुखरायन बरादरी में सम्मिलित है।

सूर्यवँश—मग्गी—यह जाति राजा हरिचन्द की सातवीं पीढ़ी में से हैं।

सूर्यवंश—मर्वाह—राजा रघु की छटी पीढ़ी में राजा मरू हुआ, उसके नाम पर मरू के स्थान पर मर्वाह जाति हुई। यह जाति आजकल सरीन बरादरी में सम्मिलित है।

सूर्यवंश—मुर्गाई—इस जाति ने इलाका मुर्गा को बसाया और जब आतशप्रस्तों (पारसी) का आक्रमण हुआ तो इस तरफ चली आई। आजकल सरीन बरादरी में सम्मिलित हैं।

सूर्यवंश—मधहोक—यह जाति बलख की शाख है।

सूर्यवंश—मैंहन्दरू—यह जाति तुली की शाख है।

सूर्यवंश—मलहोत्रा—राजा लक्षमण जी की वंश से

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राजा मलहोत्रा मालवा का राजा हुआ है। राजपूतों के आक्रमण से राज्य जाता रहा।

सूर्यवंश—कोछड़—यह जाति सिल की शाख सूरी से है। सही, यह जाति सेठ है। क्योंकि इस का मूलपुरुष नेज़ावरदार फौज का अफसर था इसलिये मशहूर हो गया। वजीराबाद के कोछड़ नामवर वंश में से हैं।

सूर्यवंश—कौड़ा—यह जाति शाख काकड़ी से है। दामनको (पहाड़ का किनारा) तहसील कलाची में यह जाति बसी हुई थी। जब देवपाल फतह हुआ; अपना इलाका छोड़कर चली आई।

चन्द्रवंश—खोसला—यह जाति कुन्दराह शाख़ से चली है। कई खोसले अपने आपको मलहोत्रा बताते हैं। अच्छी अच्छी मुलाज़मत में आबाई दिवान सलामत राओ 'राओ' के हैं। राये अमोलक राम व सालग्राम अच्छे २ पदों पर लगे हुए थे। यह जाति सरीन बरादरी में सम्मिलित है।

चन्द्रवंश—कोहली—बंग शाख़ टैकसला से यह जाति चली है। सदालूस खुखरैन था। उस समय के बादशाह के राज्य में बड़े २ औहदेदार इस ज़ाति से हुए हैं। यह जाति खुखरैन बरादरी में सम्मिलित हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चन्द्रवंश—कपूर—'कोट कपूरा' यूसफ़ज़ई के समय राजधानी थी। सुबक्तगीन के समय युद्ध करके वतन मालूफ़ा से खारज कर दिया गया। इस जाति के लोग दुर्रानी बादशाहों के समय बड़े २ पदों पर लगे हुए थे। लाला दरबारी मल्ल डेरा इस्माईलका नवाब था। महाराजा रणजीत सिंह ने शाह शुजाह से दफ़तर में इन्तजाम के लिये लिया हुआ था। दिवान सुन्दर दास बजीराबाद के नाजम थे। दिवान सुन्दरदास की सन्तान अंग्रेजी अमलदारी में बड़े२ पदों पर लगी हुए थी।

चन्द्रवंश—खुल्लड़—वंश शाख टैकसला से चली है। इस जाति के अधिकतर लोग आदमपुर और जाडला में जावसे कसबा औड़ जिला जालन्धर तहसील नवाशहर का एक वंश 'पंज्जे' नाम से प्रसिद्ध हैं। लोकोक्ति है कि इस वंश के पांच सगे भाई एक राजा के मन्त्री थे, इसलिये इनकी अल्ल (प्रसिद्ध) 'पंज्जे' हो गई।

सूर्यवंश—ककड़ी—आतशप्रस्तों के समय इस जाति का बहुत सा भाग पठानों में सम्मिलित हो गया। जो अपना धर्म बचा कर चले आये वह ककड़ी कहलाते हैं।

चन्द्रवंश—गजराल—इस जाति ने सरदार हरिसिंह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मलुआ के आधीन बड़ी २ फौजी सेवाएं की। इस जाति के सरदार 'माजा' में बहुत प्रसिद्ध हैं।

सूर्यवंश—तालआड़—शाख काकड़ है। दुआबा बिस्त में इनका इलाका था।

चन्द्रवश—थापड़—शाख कामराय से थापड़ जाति चली है।

चन्द्रवश—शामीहोक—बलख को शाख है।

सूर्यवंश—चड्ढा—खोजी वंश में 'चड्ढा' मूलपुरुष हुआ उसके नाम पर यह शाख प्रसिद्ध हुई। फतूहात आर्या में खोखर साथ रावल पिण्डी में इस शाख ने कब्जा (अधिकार) किया इस लिये यह जाति चडा नाम, से मशहूर हुई।

इन उद्धरणों के अतिरिक्त कई और भी उदाहरण दृष्टीगोचर हो रहे हैं जिन्हें नीचे लिख रहा हुं:—

श्री महा सिंहजी खन्ना-महाराजा, रणजीत सिंहजी के समय में काश्मीर के गवर्नर थे, आपका महाराजा के साथ इतना प्रेम था कि आपकी मृत्यु पर महाराजा रणजीत सिंह जी ने पितावत शोक प्रकट किया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिवान मूलराज चोपड़ा—सिक्खों के समय इलाका मुलतान के गवर्नर थे। सिक्खों की पराजय के बाद जब अंग्रेजों ने अपना अधिकार जमाना चाहा तो आप ने रण भूमि में अपना जीवन दे दिया किन्तु अधिकार नहीं दिया।

राजा चंदुलाल जी कपूर अपने प्रभाव से हैदराबाद दक्खन के प्रधान मन्त्री बने, और उन्होंने हैदराबाद को ऐसा सुखी बनाया कि आज तक हैदराबाद दक्खन को "चन्दुलाल का हैदराबाद कहते हैं। भारत में सम्मिलित होनेसे पूर्व जिनके वंशज सर्व प्रिय और अन्तिंम महामन्त्री राजा कृष्णप्रसाद जी थे।

वर्तमान समय के महाराजा बर्दवान् महाराजाधिराज सर उदय चन्द महताब कपूर के पूर्वज लाहौर के मुहल्ला कोटली कपूरां के रहने वाले थे। इन्होंने अपने बुद्धि वल और पराक्रम से बंगाल का मंत्रीपद, और पश्चात् बरद्धवान् का राज-पद प्राप्त किया।

ऊपर के उदाहरणों से यह ज्ञान पड़ता है कि पूर्व समय में क्षत्रिय उच्च पदों पर रहते हुए अपनी शूरवीरता का परिचय देते रहे हैं। इसके अतिरिक्त पूर्व स्मृति को ताजा करते हुए कई उदारण अब भी दृष्टि गोचर हो रहे हैं, जिन से जान पड़ता है कि क्षत्रियों में क्षात्रधर्म अब भी विद्यमान है, जो स्वतंत्रता स्थिर रखते हुए भारत को संसार का पथ प्रदर्शक बनाएगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुरोहित और यजमान का अटूट सम्बन्ध तथा सेठों का "फाल्गुण अवारण"

अब हम पुरोहित और यजमान के परस्पर प्रेम और अटूट सम्बन्ध का जाति भाईयों के ज्ञान के लिये इतिहासिक रूप में निवेदन करना चाहते हैं। और वह इस प्रकार है कि—

कक्कड़ों और सेठों के पुरोहित सारस्वत 'कुमड़िया' जाति के ब्राह्मण हैं। पञ्जाब से जब कुच्छ कक्कड और सेठ देहली में गये तो उन के साथ उन का पुरोहित भी गया। वहां पुरोहित का एक बुजुर्ग मुगल बादशाह की राज सेवा (नौकरी) में सम्मिलित हो गया, और बहुत बड़े पद पर नियुक्त हुआ। एक दिन फाल्गुण मास में शिवरात्री के दूसरे दिन जबकि प्रातः भोजन करने से पहले पुरोहित को भोजन दिया जाता है, बादशाह की सवारी एक कक्कड़ क्षत्रिय के मकान के पास शाही सड़क पर से जा रही थी, और कक्कड़ों का पुरोहित भी एक हाथी पर सवारी के साथ था। पुरोहित ने जाते हुए एक स्त्री को अपने पड़ोसी को यह कहते हुए सुना कि—पुरोहित जी अभी तक नहीं आये देखो उनको लापरवाही अगर आते तो मैं उन्हें भोजन दे कर भोजन करती। यह शब्द पुरोहित के कान में पड़े और वह हाथी से उतार कर आये, और अपनी शाल बिछा कर भोजन ले लिया, और हाथी पर सवार होकर जलूस

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में सम्मिलित हो गये । इस घटना की सूचना जब बादशाह के पास पहूंची तो वह अपने ब्राह्मण बज़ीर पर बहुत क्रुद्ध हुआ राज भवन में पहूंचकर बादशाह ने ब्राह्मण मन्त्री से कहा कि—मांगने की आदत छोड़ दे, मन्त्री ने शोक से यह आज्ञा न मानी. और कहा वंश परम्परा आजीविका (गुज़ारा) है, यहमैं किसी अवस्था मेंभी नहीं छोड़ सकता,अन्तमें बादशाह ने जागीर देने का वचन दिया ; किन्तु पुरोहित न माना; और उत्तर दिया कि मेरी कुच्छ पीढ़ी के पश्चात् जागीर समाप्त हो जाएगी, और जिसको आप खरायत कहते हैं वह वंशपरम्परा के लिये है' इस पर यह वाद विवाद इतना बढ़ गया कि बादशाह ने उसको जान से मरवा कर उस के शव (मृत शरीर) को सड़क के द्वार पर लटका दिया गया । इसी लिये उस के बंशज "खल ऊपर के कुमाडिये" कहलाते हैं । और यही कारण है कि ककड़ क्षत्रिय फाल्गुण मास को दूषित (मनहूस) मानते हैं, इस मास में कोई विवाहादि शुभ कार्य्य नहीं करते' और नही कोई नया कपड़ा बनाते हैं, आजकल यह मास सेठ और ककड़ों में "अवारण" नाम से प्रसिद्ध है' इस इतिहास से यह ज्ञान होता है कि पुरोहित ने अपना सम्बन्ध स्थिर रखने के लिये जीवन तक दे दिया, और यजमान उस का शोक आज तक मानते चले आ रहे हैं,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विवाह सम्बन्ध में आर्य समाज के प्रवर्तक श्रीस्वामी दयानन्द जी महाराजकी आज्ञा

(देखो उर्दू अनुवाद महाशय लक्ष्मण—पृ० ६१)

(१) गुरु की अजाजत (आज्ञा) से स्नान कर और गुरुकुल से हसबकायदा (नियमानुसार) वापिस आकर ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य अपने २ वर्ण के मुताबिक (अनुसार) उमदा सफात (सुलक्षण) वाली लड़की से शादी करें। मनु० ३।४

(२) जो लड़की, मां के खानदान (वंश) की छः पुश्तों में और बाप के गोत्र की न हो उस से शादी करनी चाहिये।

(३) चाहे कितनी ही दौलत, अजनास, गाय, बकरी हाथी घोड़े, हकूमत, और जर बगैरा से मालामाल यह खानदान हो तो भी शादि करने में मंदरजा जेल दस खानदा को तरक (त्यागना) कर देना चाहिये। मनु० ३।६।

(४) जो खानदान नेक अमलसे गिरा हुआ हो, नेक आदमी जिस में न हों, जो वेद की तालीम के खिलाफ हो, जिसम पर बड़े २ बाल हों, या जिन में बवासीर, तपदिक, दमा, खांसी मिरगी, और श्वेत या गलित कोढ़ हो। उन खानदानों की लड़की या लड़के के साथ व्याह होना न चाहिये, क्योंकि यह सब ऐब और मर्ज व्याह करने वाले के खानदान में भी आजाते हैं। इस लिये अच्छे और तन्दरुस्त खानदान के लड़के और लड़कियों का आपस में व्याह होना चाहिये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भूमिका

संस्कार का अर्थ है—किसी वस्तु को दोषों से रहित करके गुणों से युक्त करना। इस अर्थ के अनुसार जब हम संसार की ओर ध्यान देते हैं, तो ज्ञान होता है कि—इस संसार में संस्कार के बिना कोई भी वस्तु विशेष अच्छी नहीं लगती, चाहे कितनी भी बहुमूल्य क्यों न हो। हीरे के टुकड़े को यदि सान पर चढ़ा कर संस्कार करके चमक न लाई जाए तो उतना बहुमूल्य नहीं होता जितना कि चमक दार होने पर। स्वर्ण का अग्नि में जितना संस्कार किया जाए, उतना ही उज्ज्वल होता है। लकड़ी की बनी हुई वस्तु रंग रोगन के द्वारा संस्कृ की हुई अधिक शोभा पाती है। इसी प्रकार शिक्षित पशु पक्षी भी संस्कार के प्रभाव से गुणयुक्त होने पर अधिक मान पाते हैं, तो भला मनुष्य को यदि धार्मिक भावों के द्वारा श्रेष्ठ संस्कार करके अच्छे गुण डाले जाएं तो मनुष्य क्यों न अच्छा बन जाए। जन्म के समय सभी मनुष्य प्रायः समान होते हैं। मगर जन्म के बाद माता, पिता, संरक्षक या संगती के कारण जैसे २ संस्कार हों वैसा २मनुष्य बन जाता है। इन समाज के संस्कारों से यदि मनुष्य पर प्रभाव पड़ता है, तो ईश्वरीय शक्तियों से युक्त दैवी षोड़षसंस्कार जो ऋषियों ने नियत किये हुए हैं, भला मनुष्य पर क्यों न प्रभाव डालेंगे। शास्त्रों में इस बात को इस प्रकार लिखा है कि—

जन्मना जायते शुद्रः संस्कारै द्विज उच्यते।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अर्थात् जन्म से मनुष्य शूद्र के समान होता है, और संस्कारों से द्विज कहा जाता है। इन संस्कारों के प्रभाव से ही हिन्दुओं में 'गौतम' और 'कणाद' जैसे अनेक महार्षि हुए हैं। 'ईश्वर प्राप्ति' जो मनुष्य जन्म का लक्ष्य होता है, वह इन संस्कारों से ही प्राप्त होती है। जैसे कि गर्भाधानादि संस्कारों से गर्भ के दोषों को दूर करना, उपनयन आदि से दोषो को दूर करके गुणों से युक्त करना, और विवाहादि से सन्तान के द्वारा पितृऋण से मुक्त होने के अतिरिक्त संसारिक सुखों का उपभोग करते हुए ईश्वर को प्राप्त करना, संस्कारों से सिद्ध होता है। शास्त्रों में लिखा है कि 'इन संस्कारों से रहित ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, अपने धर्म से पतित होकर शूद्र बन जाते हैं। इस लिये इन संस्कारों को अवश्य करना चहिये।

संसार की सभी जातियों और धर्मों में इन संस्कारों को भिन्न २ रूप से किया जाता है। और जिनके द्वारा मनुष्य उस जाति या धर्म से प्रेम रखता है। आजकल विधर्मी अपने संस्कारों और धर्मों को फैलाने के लिये, एक ऐसी चाल चल रहे हैं। जिन से हिन्दु अपने संस्कारों से हीन होकर और विधर्मी संस्कारोंसे प्रभावित होकर पतित हो रहे हैं। उनकी यह चाल है कि वह शिक्षा की ओट में हिन्दुओं को अपनी शिक्षा द्वारा अपने संस्कार डालते हुए वैदिक संस्कारों से विमुख कर रहे हैं। जिस के फलस्वरूप हिन्दु अपने संस्कारों को निरर्थक समझते हुए हर बातमें अश्रद्धा के कारण शंका किया करते हैं। इसी प्रकार अन्त में विधर्मी भावों से प्रभावित होकर अपने धर्म से

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पतित हो जाते हैं। भला जिस बालक के जन्म से भी पहले अर्थात् गर्भाधान से लेकर सनातन-वैदिक-मर्यादा के अनुसार संस्कार किये गये हों, वह कभी धर्म से पतित हो सकता है ? मगर आजकल तो जहां जातकर्म संस्कार से बालक के कान में 'ओंकार' और वेदमन्त्रों का शब्द सुनाया जाता था, वहां विधर्मी-धाय (बच्चा जनने वाली) होने के कारण 'खुदा' और 'गाड' के शब्द सुनाए जाते हैं। जहां यज्ञोपवीत संस्कार से वेद का अध्ययन कराया जाता था, वहां शेक्सपीयर की प्रेमभरी कविताओं को कंठस्थ कराया जाता है। और जहां विवाह संस्कार में 'पतिव्रतधर्म और पत्नीव्रतधर्म' उपदेश के अतिरिक्त दो शरीर होते हुए भी आत्मा तथा सूक्ष्म शरीर की अभिन्नता का उपदेश दिया जाता था; वहां आज सिवलमैरिज (मैजिस्ट्रेट के सामने विवाह का इकरार करना) के द्वारा केवल स्त्री पुरुष के सम्बन्ध (जिस में तलाक भी हो सकता है) का बोध कराया जाता है। जिस के कारण नमक मर्च के झगड़े पर तलाक दिया जाता है। इन कुसंस्कारों के प्रभाव से ही जहां कहीं धर्मकार्य या कोई संस्कार हो रहा हो तो 'क्यों' कैसे, किस लिये आदि २ प्रश्न किये जाते हैं। यदि उत्तर में शास्त्रों के प्रमाण दिये जाएं तो वह यह कहते हैं कि शास्त्रों को छोड़ो युक्ति या विज्ञान (सांईस) से सिद्ध करो

यहां यह विचारने योग्य बात है कि आज कल कई संस्कार कराने वाले तो पहले ही इतने धुरन्धर विद्वान् होते हैं, कि उत्तर देते हुए इधर उधर की बातें करने लगते हैं। यदि कोई

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विद्वान् उत्तर दे भी तो वह आधुनिक विज्ञान पढ़ा हुआ नहीं होता और यदि पढ़ा हुआ भी हो, तो हमारे वैदिककर्म उस विज्ञान के आधार पर बने हैं, जहां तक की आधुनिक-विज्ञान की अभी तक दृष्टि भी नहीं पड़ी। जैसे परलोकज्ञान; योगसाधन और कायाकल्प आदि। भला जब कि 'हवाई जहाज़' और 'रेडियों' नहीं बने थे, तब क्या कोई रामायण में वर्णित 'पुष्पक विमान' और 'महाभारतीय युद्ध के समाचार सुनाना' मानता था। तब तो इन्हें लोग गप्पें कहा करते थे। किन्तु जब यह दोनों बने, अर्थात् यहां तक विज्ञान पहूंचा, तब लोगों को इन की सचाई का ज्ञान हुआ। इसी प्रकार अभी भी कर्मकाण्ड में 'श्राद्ध' आदि कई ऐसे विषय है, जहां तक अभी विज्ञान नहीं पहूंचा।

कलियुगी मनुष्यों के ज्ञान को जानते हुए, गीता के सोलहवें अध्याय में श्रीकृष्णचन्द्र जी ने इसी लिये अपने श्रीमुख से कहा है कि—

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ ॥

अर्थात् यह काम करना चाहिये या नहीं, ऐसी व्यवस्था में तुम्हें शास्त्र ही प्रमाण हैं। इसी प्रकार मनुमहाराज जी ने भी मनुस्मृति के दूसरे अध्याय के तेरहवे श्लोक में कहा है—

धर्म जिज्ञासमानाना प्रमाणा परमं श्रुतिः॥

अर्थात् धर्म के कार्यों में शंका होने पर श्रुति (वेद, ब्राह्मण, स्मृति आदि) प्रमाण होती है। इत्यादि

इन सिद्धांतों के अनुसार कर्मकाण्ड' में शंका नहीं करनी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चाहिये क्यों कि कर्मकाण्ड श्रुति विहित है। वेदमन्त्रों में ही ऐसी शक्ति होती है कि वह संस्कारों के फल को पूर्णरूप दे देते हैं। इस लिये मैंने इस पुस्तक में वेद, ब्राह्मण, सूत्र और स्मृतियों के प्रायः प्रमाण दिए हैं। (जिन को आर्य्य समाज भी मानता है) हां कहीं २ शास्त्रीय मत को पुष्ठ करने के लिये, युक्ति विज्ञान और पुराणों का भी आधार लिया है।

क्षत्रियों का पुरोहित होने के कारण संस्कार कराते हुए, जो कई प्रकार के प्रश्न लोग मेरे से किया करते थे, उनका जब मैंने अन्बेषण किया तो मेरा विचार हुआ कि इस अन्वेषण को सर्वसाधारण के लाभार्थ पुस्तकरूप में छपवा दिया जाए। मगर कई कारणों से यह विचार पूर्ण न हो सका। कुच्छ समय बाद ईश्वर कृपा और उनकी प्रेरणा से एक दिन लाला गणपत राम कपूर और लाला राम रक्खामल्ल जी कपूर ने मुझे बुलाया और कहा कि विवाह की प्रथाओं के विषय में एक पुस्तक शास्त्रीय आधार पर लिख दें। जिस से जाति को ज्ञान द्वारा लाभ हो सके। मैंने अपनी इच्छापूर्ण होते हुए जान कर इस पुस्तक को लिखना आरम्भ कर दिया।

विवाह संस्कार में जिन कर्मों को लोग प्रथाएं कहते हैं, वह वास्तव में प्रथाएं नही शास्त्रीय कर्म ही हैं। इस पुस्तक में इन कर्मों को अर्थात् कथित प्रथाओं को विधिसहित स्फुटतया इस लिये लिख दिया है, कि यह कर्म क्रमशः पद्धतियों में न आने से

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शास्त्रविहितकर्म होने पर भी परिवर्तित होते गए, और अपने वास्तविक-स्वरूप को प्राय: छोड़ गए (जैसा कि ज्ञान होता है) । इसलिये, लोग इन को केवल प्रथाएं ही समझने लगे । समयान्तर में विदेशी सभ्यता के कारण लोग इसे भूल ही न जाएं। इसलिये इन कथितप्रथाओं को प्रमाण और विधि सहित लिखना अवश्यक समझ कर इन को पुस्तक रूप में लिख दिया है ।

इन कर्मों का वास्तिवक स्वरूप लोग न समझते हुए इनको प्रथाएं ही समझते हैं, इस लिये मैंने भी इस पुस्तक में इन कर्मों को 'प्रथा' के नाम से ही लिखा है । और इस पुस्तक का नाम भी वैवाहिक प्रथा-दर्पण' इसी लिये रक्खा है । यह प्रथाएं चारजाति क्षत्रियों की हैं । इन की विधि में कहीं देश भेद या जाति भेद के कारण भूल होगई हो तो, कृपया मुझे सूचित कर दें । जिससे आगामी मुद्रणमें यथोचित शुद्ध कियां जा सके । शीघ्रता के कारण कहीं प्रूफ शोधन में अशुद्धि रह गई हो तो कृपया शोध लें पुन: शोध दी जाएगी ।

श्री लाला गणपत राम जी कपूर,श्री रामरक्खा मल्ल जी कपूर और श्री लाला हरिचन्द जी खन्ना का धर्म प्रेम, और जाति सेवा देख कर मैं ईश्वर से प्रार्थना करताहूँ, ऐसे महानुभावों को आयु प्रदान करते हुए, विशेष बल दें, जिस से वह जातिसेवा करते हुए भारतवर्ष की सनातन-वैदिक-धर्म मर्यादा स्थिर रखने के लिये सर्वदा उद्योग करते रहें ।

भक्तराम शर्म्मा झींगण लाहौर वाले

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री पं० भगतराम शर्मा झींगण लाहौर वाले

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

॥ ओं स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥

मङ्गलं भगवान् विष्णुः मङ्गलं गरुड़ध्वजः ।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षः मङ्गलायतनो हरिः ॥

वैवाहिक-प्रथा-दर्पण

१—प्रथा चाकरी

माता पिता जब अपने बालक को गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के योग्य समझते हैं, तब ही अपने गोत्र से भिन्न स्ववर्णा किसी योग्य कन्या को देखकर, उस के माता पिता को उस कन्या के विवाह के लिये जाकर कहते हैं, और अपनी विवाह रूप

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इच्छा प्रगट करते हैं । जब कन्या के माता पिता भी सहमत हो जाते हैं, तो वर की जन्मकुण्डली और कन्या की जन्मकुण्डली द्वारा ग्रहों तथा नक्षत्रों का किसी विद्वान् ज्योतिषी से मिलान कराते हैं। कन्या की जन्मकुण्डली न होने पर कन्या और वर के प्रसिद्ध नामों पर नक्षत्रों का मिलान कराते हैं। मिलान हो जाने पर स्वीकृतिरूप कन्या की माता वर की माता को एक थाल मिठाई और कुछ रुपये भेंट में दे देती है । जिस से वर पक्ष वालों को विश्वास हो जाता है कि कन्या के माता पिता हमारे ही बालक को अपनी कन्या देंगे । इस कर्म को 'चाकरी' कहते हैं । इसके अर्थ की ओर ध्यान दें तो 'चाकरी' का अर्थ 'चाहकरी' अर्थात् विवाह के लिये कन्या प्राप्ति की इच्छा करना है । दूसरा अर्थ चाकरी का सेवा करना होता है । जिस से यह ज्ञान होता है कि कि कन्या की प्राप्ति के लिये वरपक्ष वालों ने कन्या पक्ष वालों की चाकरी, (सेवा) करके कन्या को ग्रहण किया। अर्थात् कन्या वालों ने बड़े मान से कन्या को दिया है, इसलिये वरपक्ष के लोग कन्या का मान करेंगे । चारजाति क्षत्रियों में चाकरी दो वार होती है। एक शकुन से पहले, दूसरी पूज से पहले । जो शकुन से पहले चाकरी होती है, उसको केवल 'चाकरी' ही बोला जाता है, और पूज से पहले की जाने वाली चाकरी को 'पूज की चाकरी' बोला जाता है। दोनों चाकरियों में स्त्रियों का ही काम है । चाकरी का अभिप्राय यह होता है कि कन्या के माता पिता से शकुन देने की प्रार्थना की जाए। और कन्या के माता पिता का मान हो, कि मेरे घर आकर वर के माता पिता ने कन्यादान की चाह की और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रार्थना करने पर मैंने दान किया । कन्या को ऐसे ही किसी के गले नहीं मढ़ा ।

दूसरा अभिप्राय यह भी है कि शास्त्र की विधि अनुसार पुरुषों ने 'वाग्दान' के लिये कन्या पिता के पास प्रार्थना करने जाना है । ऐसा न हो कि जाने पर कन्या पिता न माने और लज्जित हो कर लौट आना पड़े । इसलिये 'चाकरी प्रथा' द्वारा कन्या के माता पिता की स्वीकृति स्त्रीयों द्वारा जान ली जाती है । इन युक्तियों द्वारा ज्ञान होता है कि 'प्रथा चाकरी' उपयुक्त प्रथा है ।

२—प्रथा पैर पाना

चार जाति क्षत्रियों में 'वाग्दान' (सगन) दो प्रकार से दिया जाता है । एक तो पुरुषों में, जिसे 'सगन' बोला जाता है । दूसरा स्त्रियों, में जिसे 'पैर पाना' बोला जाता है । पुरुषों में दिये जाने वाले सगन के विषय में आगे लिखा जाएगा, यहां केवल पैर पाना के विषय में लिखूंगा । जब किसी कन्या के माता पिता ने स्त्रियों में सगन देना होता है, अर्थात् 'पैर पाना' होता है, तब लड़के वाली स्त्रियें लकड़ी वालों के घर जाती हैं । वहां पर उन को दूध पिलाया जाता है । इस के बाद लड़के की माता लड़की को गोदी में बिठा कर उस की झोली में मिठाई और फल डाल कर देखनी करती हैं, अर्थात् लड़की को देख लेती है ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मुख धुलाती और वारा फेरा करती हैं। यह 'देखनी' भी पैर पाना का अंग ही है। इस के बाद लड़की की माता वर की माता को भैंटा रूप रुपये और मिठाई की तवी (लोहे का बड़ाथाल) फलों का टोकड़ा, कूजे और मिठाई के थाल देती है। इस के बाद दोनों पक्ष की स्त्रियें गीत गाती हैं और अपस में दोहे (डोहे) देती हैं। इस कार्य को 'पैर पाना' कहा जाता है। इस के बाद लड़की की माता और स्त्रियें लड़के की देखनी करने लड़के वालों के घर जाती हैं। वहां लड़के की देखनी कर के लड़के को और पिता आदि सम्बन्धियों को रुपये भेंट देती हैं। फिर लौट आती हैं। इस का नाम 'पैर पाना' इस लिये हुआ कि—शास्त्रों में तो 'वाग्दान विधि' में कन्या पिता के पास वर पिता और कुछ पुरुषों का जाना लिखा है। परन्तु 'पैर पाना' में स्त्रिये ही जाती हैं। जिस से यह प्रगट होता है कि—शास्त्र विधि अनुसार तो पुरुष ही कन्या पिता के पास जावेंगे। परन्तु पहले कन्या माता के पास वर माता और स्त्रिये गौन रूप में हो आती हैं। और कन्या को देख आती हैं, अर्थात् कन्या गृह में जाना तो पुरुषों का ही है। स्त्रियें तो केवल कन्या गृह में पैर पाकर और कन्या को देख कर लौट आती हैं। इस कारण इस का नाम 'पैर पाना' हुआ। शनैः २ समय के प्रभाव से लोगों ने स्त्रियों में ही 'सगन' देना प्रारम्भ कर दिया। स्त्रियों में 'सगन' देने को 'पैर पाना' कहा जाने लगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

३—प्रथा सगन देना

चार जाति क्षत्रियों में जो शकुन (सगन) दिया जाता है। वह शास्त्रीय 'वाग्दान,' है, इसमें लड़के का पिता अपने सम्बन्धि और मिलाप वालों को साथ लेकर ज्योतिष शास्त्रोक्त शुभ समय में लड़की वालों के घर जाता है। वहां लड़के के पिता को १ रु० और सवा पांच सेर गुड़ का भेला रुमाल ऊपर डाल कर शकुन का दिया जाता है। (आज कल लोग जाति मर्यादा को भंग कर और लड़के का शकुन के समय बुला, रुपये आदि देकर शास्त्र विरुद्ध करते हुए भावी संतान पर हानी प्रद बोझा डाल रहे हैं) घर आकर लड़के का पिता सब को कूजे या लड्डु बांट देता है। इस को सगन देना कहा जाता हैं।

प्रथा सगन देने का सूत्र ग्रन्थ से सम्बन्ध

क्षत्रियों में कन्यागृह में जाकर सगन लगाने की जो प्रथा है वह ऐसे ही नहीं। यह पारस्कर गृह्यसूत्र के 'पदार्थ क्रम' के अनुसार है। मैं वहां का सभी पाठ विस्तार भय से नहीं लिख रहा भाव लिख देता हूँ लिखा है कि—ज्योतिषशास्त्रोक्त शुभ समय में लड़के का पिता दो, चार, या आठ योग्य पुरुषों को साथ लेकर और कन्यागृह में जाकर कन्यापिता से प्रार्थना करे कि 'आप अपनी कन्या मेरे पुत्र को देवें'

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कन्या पिता अपने सम्बन्धियों की अनुमति लेकर कहे 'हां अपनी कन्या आप के लड़के को दूंगा' इसके बाद वर पिता का ताम्बूलादि से पूजन (सत्कार) कर यह मन्त्र पढ़े ।

अव्यङ्गेऽपतितेऽक्लीबे दशदोषविवर्जिते ।

इमाङ्कन्यां प्रदास्यामि देवाग्निद्विजसन्निधौ ॥

अर्थात् देवता, अग्नि और ब्राह्मणों के सन्मुख, वर का अङ्ग भङ्ग न होने पर, धर्म से पतित न होने पर, और नपुंसक न होने पर तथा दश दोष रहित काल में इस कन्या को मैं दूंगा ।

इस से यह भाव निकलता है कि यदि इन दोषों में से दोष हुए तो मैं अपनी कन्या अन्य वर को दे सकता हूँ । दोष न होने पर इसी को दूंगा (कन्या विवाह हो जाने से पूर्व वर में ऊपर लिखे दोष होने पर अन्य वर को दी जा सकती है ॥)

इसके बाद वर पिता (लड़के का पिता) गन्धाक्षत वस्त्र भूषण, पुष्प, माला आदि से कन्या का सत्कार करे । और ब्राह्मण आशीर्वाद के मन्त्रों को पढ़ें ।

सगन देना

ऊपर लिखी सब विधि चारजाति क्षत्रिय करते हैं । मगर कन्या का पूजन 'वर वरण' (टिका) और ढङ्गों के बाद 'प्रथा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सगोड़ा' और 'कवार धोती' में वस्त्र और भूषणों से करते हैं। 'वाग्दान' का नाम 'सगन' इस लिये हुआ प्रतीत होता है कि ऊपर लिखी विधि के अनुसार मन्त्रों का बोलना तो समय के प्रभाव से जाता रहा। केवल शकुन की प्रधानता से शकुन नाम ही प्रसिद्ध हो गया। और शकुन को पञ्जाबी में 'सगन' नाम से लोग बोलने लगे। वास्तव में यह 'वाग्दान' ही है।

मनुस्मृति के नवम अध्याय ९९ श्लोक में वाग्दान के विषय में लिखा है—

एतत्तु न परे चक्रुर्नापरे जातु साधवः।
यदन्यस्य प्रतिज्ञाय पुनरन्यस्य दीयते॥

मनु० ९ अ० ९९ श्लो०

अर्थात्—पहले समय के शिष्ट (सभ्य) लोग और वर्तमान समय के लोग, एक को कन्या देने का वचन देकर अर्थात् वाग्दान करके दूसरे को नहीं देते।

इस से यह सिद्ध होता है कि 'वाग्दान' विवाह का अंग है और इस के हो जाने पर मनु जी की आज्ञा है कि उसी को कन्या देनी चाहिये, जिसे वाग्दान दिया हो। आज-कल की तरह, जरासी बात पर अपने वचन से फिर कर किसी दूसरे को कन्या विवाह कर नहीं देनी चाहिये। क्योंकि मनुजी ने लिखा है कि—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सकृदंशो निपतिती सकृत्कन्या प्रदीयते ।
सकृदाह ददानीति त्रीण्येतानि सतां सकृत् ॥

मनु० ६ अ० ४७ श्लो० ॥

एक वार (भाईयों का) विभाग होता है, एक वार कन्या दी जाती है, एक बार देने का वचन कहा जाता है, यह तीनों सत्पुरुषों के एक वार होते हैं । इस से यह सिद्ध होता है कि एक बार बचन दे कर पुनः वचन से फिरना नहीं चाहिये । यह शास्त्रों कीआज्ञा है ।

४—प्रथा पूज की चाकरी

जैसे पूर्व, 'प्रथा चाकरी' में लिख दिया है कि चाकरी एक प्रकार से सगन देने की प्रार्थना करनी होती है । उसी प्रकार विवाह प्रारम्भ करने के लिये, पूज जो विवाह का प्रथम अंग है, उसके लिये 'प्रथा पूज की चाकरी' द्वारा प्रार्थना की जाती है । उसकी स्वीकृति के उत्तर में कन्या माता वरमाता को भेटा के दो रुपये और मिठाई के एक या दो थाल देती है । इस समय स्त्रियों में सर्व साधारण बुलावा (सद्दा) नहीं होता प्रत्युत निकट सम्बन्ध की स्त्रियें ही होती हैं अर्थात् घर की ही पांच सात स्त्रियें होती हैं । जिन्होंने पहले स्त्रियों को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

'पैर पाना' के रूप में न बुलाया हो वह इस समय अधिक स्त्रियें भी बुला लेते हैं। और विशेष रूप से उनका स्वागत करते हैं।

५—फेरा भेजना

पूज से पहले चार जाति क्षत्रियों में फेरा भेजा जाता है। जिसमें निम्नलिखित पकान्न होते हैं। चार सौ ४०० लुच्चियां दो सौ २०० बड़ी पूरियां एक सौ १०० मट्ठियां पच्चास ५० गुणे। पच्चास वेसनियां। पच्चीस कचौड़ियां। १ एक थाल हलुआ। और सबजी आदि। इसको पूरा फेरा कहते हैं, पूरा फेरा कोई २ देता है। आम फेरा इस से आधा होता है और उसकी संख्या इस प्रकार है—

२०० लुच्चियां १०० बड़ी पूरियां। १०० मट्ठियां (आधे फेरे में भी मट्ठियां सौ होती हैं) २५ वेसनियां। २५ गुणे। १३ कचौड़ियां। १ थाल हलुआ। और सबजी आदि।

फेरा क्या है ?

चार जाति क्षत्रियों में बरातियों (जंज) को तो खिलाते नहीं, उसके स्थान में वरगृह में ही फेरे के रूप में पकान भेज

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

देते हैं या दोबारा 'ढङ्गों' में पकान्न (लड्डू) और कच्चा अन्न भेज देते हैं । यू० पी० प्रान्त में इस फेरे को 'मंजमानी' कहते हैं । और वह लोग सब प्रकार के खाद्य पदार्थ फेरे की तरह लड़केवालों के घर भेज देते हैं । पूज की चाकरी करने के लिये जब स्त्रियें फेरा पाने आती हैं । उसी समय साथ पकान्न भेजने के कारण इस पकान्न को 'फेरा' कहते हैं ।

६—प्रथा पूज

इस प्रथा से विवाह का प्रारम्भ होता है । यह प्रथा ज्योतिष शास्त्रानुसार शुभ मुहूर्त्त में की जाती है । और इसमें कुलदेवता स्थापन की जाती है । कन्या की पूज में निम्नलिखित सामान होता है—

सात ७ गुड़ की रोड़ियें । एक १ परात लड्डुओं की । २ तेवर (तथोर) २ चादरें । ७ या ६ उत्तरीय (ओढ़ने का कपड़ा बाग़, फुलकारीयां, या दुपट्टे) । केसर । पुष्पमाला । १ भूषण (ज़ेवर) । विवाहपत्रिका (साहे चिट्ठी) ७ सात रुपये चार पैसे । मंगलसूत्र (मौली) । पूजन की थाली । पताशे इत्यादि । पूज से पहले कन्या और वर के माता पिता को 'पुण्याहवाचन' और 'नान्दीमुख करना, शास्त्रों में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लिखा है। नान्दीमुख विवाह से दस १० दिन पहले तक करा जा सकता है। नान्दीमुख कर लेने के बाद यदि विवाह में 'सूतक' या 'पातक' विघ्न हो जाए तो भी कोई दोष नहीं होता। क्योंकि शास्त्रों में लिखा है कि कर्म प्रारम्भ हो जाने पर सूतक, पातक का दोष नहीं होता। जैसे कि—

व्रत यज्ञ विवाहेषु श्राद्धे होमार्चने जपे ।
प्रारब्धे सूतकन्न स्यादनारब्धेतु सूतकम् ॥

व्रत, यज्ञ, विवाह, श्राद्ध, होम, पूजन और जप के प्रारम्भ हो जाने पर सूतक नहीं होता। यदि प्रारम्भ न हुआ हो और सूतक के दिनों में कर्म करना हो तो दोष होता है। विवाह का प्रारम्भ नान्दीमुख से माना है। जैसे—

प्रारम्भोवरणं यज्ञे सङ्कल्पो व्रत सत्रयोः ।
नान्दीमुखं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रिया ॥

यज्ञ, वरणी होने पर, व्रत और सत्र, (यज्ञ) सङ्कल्प होने पर; विवाह, नन्दीमुख होने पर, और श्राद्ध, अन्न के पकने पर प्रारम्भ हो जाता है। इसलिये नान्दीमुख करने के बाद विघ्न होने पर भी दोष नहीं होता।

कन्या की पूज

शुद्ध स्नान और वस्त्र धारण करने के बाद कन्या को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

काष्ठपीठ (पटड़ी) पर बिठा कर पुरोहित गणपत्यादि पूजन के बाद कुल देवता का पूजन कराते हैं। और कुल देवता को किसी शुद्ध स्थान पर पूर्वाभिमुख पूजन कर के स्थापन कर देते हैं। इस के बाद विवाह पत्रिका और वर की जन्म-पत्रिका' एक रुपया चार पैसे, चार लड्डु, गुड़ और पांच ५ पताशे कन्या के आंचल (झोली) में डाल दिये जाते हैं। कुलदेवता, ग्रह, और पितरों के निमित्त कन्या के हाथ से पताशे लगवा लिये जाते हैं। और ५ पांच पताशे घर की वृद्धा स्त्री को दे दिये जाते हैं। इस के बाद विवाहपत्रिका को पुरोहित पढ़ कर सुना देता है। जिस से सब को समय विभाग का पता हो जाता है। तदनन्तर यदि मण्डल (ब्राह्मण भोजन) न कराना हो तो ग्रहों का विसर्जन करके कन्या को वारा फेरा करके पटड़ी से उठा लिया जाता है और उपस्थित लोगों को पांच २ पताशे बांट दिये जाते हैं। और पुरोहित किसी सेवक के द्वारा सब सामान उठवा कर वर के घर जल के मेल से ले जाता है। द्वार पर तेल गिरवा कर वहां पर वर की माता को पीठासन (पीड़ी) पर बिठा कर उस की झोली में यह सब सामान डाल देता है। पांच ५ रुपये पूज के साथ देता है। एक रुपया चार पैसे शकुन के झोली में डालने के लिये और एक रु० १) कुल देवता की भेटा का पुरोहित जी को दे देता है।

वर की पूज

वर का पिता पुण्याहवाचन और नान्दीमुख करने के

Ac. Gunratnasuri MS   Jin Gun Aradhak Trust

बाद कन्या गृह से पूज आ जाने पर वर से गणपत्यादि पूजन पुरोहित द्वारा कराता है। पुरोहित कुल देवता पूजन करके स्थापन कर देता है। और वर की झोली में (१ रु० चार पैसे विवाह पत्रिका, जन्म-पत्रिका, ४ लड्डु, गुड़, ५ पताशे डाल देता है। और तब विवाहपत्रिका (साहे चिट्ठी) सुना देता है। आगन्तुक पुरुषों को पताशे दे कर विदा किया जाता है। इस कर्म को पूज कहते हैं।

पूज का विवरण

पूज में कुल देवता का पूजन और स्थापन करना होता है। जो कुल देवता षोड़षमातृकाओं के अंतरगत आई है। षोड़ष मातृकाए यह हैं—१ गौरी २ पद्मा ३ शची ४ मेधा ५ सावित्री ६ विजया ७ जया ८ देवसेना ६ स्वधा १० स्वाहा ११ मातर: १२ लोकमातर: १३ धृति: १४ पुष्टि: १५ तुष्टि: १६ आत्मकुल-देवता। पूज में सोलहवीं १६ मातर, आत्मकुल देवता का पूजन कर के स्थापन किया जाता है। आत्मकुल देवता के नाम भेद से अन्य अवान्तर भेद भी हैं। और भिन्न २ वंशों में भिन्न २ नाम से कुल देवता का पूजन किया जाता है। वास्तव में कुल—देवता आत्म-कुल-देवता या षोड़ष मातृकाओं के अंतरगत ही होता है। चण्डिका, शिवा-माता, आदि इसके अवान्तर भेद हैं। नामान्तर भेद के कारण भिन्न २ प्रतीत होती हैं। पूज में जिस कुल देवता का पूजन किया जाता है। उस की मूर्त्ति धातुओं से बनी होती है या लकड़ी की बनी होती है। विस्तार भय से प्रमाण नहीं

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लिखता। कुल देवता स्थापन में विशेषतया पूजन ही होता है। इस लिये इस का नाम पूज ही प्रसिद्ध हो गया है। मातरों के पूजन के विषय में अथर्ववेद में इस प्रकार लिखा है—

मा नो मेधां मा नो दीक्षां
मा नो हिं सिष्टं यत्तपः।
शिवानः शं सन्त्वायुषे
शिवा भवन्तु मातरः॥

अथर्व० १६।४०।३।

अर्थ—तुम मत हानी पहुंचाओ हमारी मेधा (बुद्धि) को मत हमारी दीक्षा को, मत हमारे तप को, वे षोड़ष माताएं हमारी आयु के लिये शिव हों, हमारे लिये (कल्याणकारी) हों।

इस से सिद्ध होता है कि वेद में मातरों का पूजन करना और प्रार्थना करना आता है इस लिये वैदिक मर्यादा होने से मातरों का पूजन करना स्मृतियों में लिखा है।

॥ पूज में ७ रूपये चार पैसे

पूज में जो सात रुपये चर पैसे दिये जाते हैं उन में एक रुपया चार पैसे विवाहपत्रिका (साहे चिट्ठी) के होते हैं जो वर की झोली में डाले जाते हैं। एक रुपया कुल देवता की भेटा का होता है। और एक रुपया पूज के साथ होता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

४) चार रुपये पूज के साथ बधाई के होते हैं। जो भूषण होता है वह भी बधाई का होता है। पहले समय में बधाई के ३१ इकत्तीस या ५१ इकावन या इस से भी अधिक रुपये दिये जाते थे अब उसके स्थान में पूज के साथ भूषण हो गया है। दिल्ली वालों में अभी तक बधाई के रुपये ही दिये जाते हैं। और भूषण नहीं दिया जाता। ऐसे ही ब्राह्मणों में भी भूषण नहीं दिया जाता। किसी के मत में पूज के सात रुपयों की बांट इस प्रकार है कि—तीन रुपये मातृवंश की और तीन रुपये पितृवंश की माताओं के, एक रुपया साहे के साथ झोली का। यह बांट असङ्गत प्रतीत होती है। क्योंकि पूर्वप्रान्त के चार जाति क्षत्रियों में पूज के साथ तीन रुपये भेजे जाते हैं। सात रुपये नहीं। यदि साङ्कल्पिक रूप ६ रुपये मातृकाओं के होते तो सभी में सात रुपये ही होते। ऐसे ही ब्राह्मणों में भी तीन रुपये ही होते हैं। इन में बधाई के चार पैसे ही होते हैं। रुपया और भूषण भी नहीं होता। इस लिये सात रुपयों की बांट जो ऊपर लिख दी है वही ठीक है।

पूज में लड्डू आदि

लड्डू और गुड़ गणपति और कुलदेवता के प्रसाद के लिये होते हैं। केसर और फूल पूजन के लिये होता है। वस्त्र वर की माता के लिये और दो चादरें नानी और दादी के लिये होतीं हैं। विवाहपत्रिका (साहे चिट्ठी) में विवाह का दिन ज्योतिष शास्त्रानुकूल शुभ देख कर लिखा होता है। जिसमें

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विवाहादि कर्म किये हुए शुभ फलदायक होते हैं । इस विषय में अथर्ववेद के १६ उन्नासवें काण्ड के सातवें ७ सूक्त में एक २ नक्षत्र का नाम लेकर कल्याण की प्रार्थना की है । और इसी काण्ड के आठवें सूक्त के २ दूसरे मंत्र में अट्ठाइसों ही नक्षत्रों से कल्याण को प्रार्थना की है । जैसे—

अष्टाविशानि शिवानि शग्मानि
सह योग भजन्तु मे ।
योगं प्रपद्ये क्षेमं च क्षेमं प्रपद्ये
योगं च नमोहोरात्राभ्यामस्तु ॥

अट्ठाईस कल्याणमय नक्षत्र इकट्ठे मेरे लिये लाभ देवें, मैं लाभ और रक्षा को पाऊं, तथा रक्षा और लाभ को पाऊं, दिन और रात को नमः हो ।

इस मन्त्र में नक्षत्र जो ज्योतिष के मूल कारण हैं, उनसे कल्याण की कामना की गई है ।

झोली में रुपया डालना

पूज में और विवाह के विशेष समयों पर झोली में रुपया इसलिये डाला जाता है कि विवाह-आदि में जब भी देवताओं का पूजन किया जाता है तब ही देवताओं के आगे, जहां अन्य प्रार्थनाएं की जाती हैं वहां लक्ष्मी (जिस से संसार के सब काम चलते हैं) प्राप्ति की भी प्रार्थना की जाती है । प्रार्थना के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बाद झोली में लक्ष्मी के प्रसाद रूप लक्ष्मी की प्रत्यक्ष मूर्त्ति (रुपया) प्राप्त करने के लिये आंचल अर्थात् झोली फैला कर लक्ष्मी का मान किया जाता है। दूसरे शकुन शास्त्रानुसार भी लक्ष्मी की प्राप्ति शुभ शकुन माना है। तीसरे रुपये पर राजा की मूर्त्ति होने से ईश्वर और राजा की साक्षी (गवाही) में वह कर्म किया जाता है, यह भी भाव प्रगट होता है। राजा ईश्वर का अंश इसलिये होता है कि गीता में लिखा है—'नराणाञ्च नराधिपः'। अर्थात् मनुष्यों में मैं राजा हूँ। इसलिये राजा में ईश्वर का अंश माना है। रुपया राजा की मुद्रा [मुहर] होती है, इसलिए रुपया उपयोग में लाया जाता है।

७—प्रथा जोड़े का मेचा

यह प्रथा पूज होने के बाद उसी दिन ही होती है। इसमें वर का पुरोहित किसी पात्र (टोकरी आदि) में २१ इक्कीस लड्डू। १ एक जुट्ट। १४ चौदह छुहारे। और १ एक तिलेई कुड़ता (जो काले, नीले रङ्ग का न हो) जल के मेल से कन्या गृह में द्वार पर तेल गिरवा कर प्रवेश करता है। वहां पर कन्या को पूर्व की ओर मुख करा और पटड़ी पर बिठा कर झोली में १ जुट्ट, १४ छुहारे, ७ लड्डू और कुड़ता डाल देता है। और २ लड्डू कुलदेवता के हाथ से लगवा लेता है। ४ चार लड्डू जोड़े वाली के लड़की वालों को दे देता है। (यह जोड़े वाली

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वह होती है कि जिस से लड़की वालों ने मेचा लेने के लिए कुड़ता मांगा हुआ हो) उसको शकुन के चार लड्डू दिए जाते हैं बाकी आठ लड्डू लड़की वालों को लड़के का मेचा लेने के लिए दे आता है। इसी प्रकार लड़की वालों का पुरोहित भी एक कुड़ता और लड्डू साथ लेकर लड़के का मेचा लेने जाता है। इस कर्म का नाम जोड़े का मेचा है। आज कल लड़के वालों का ही पुरोहित कुड़ता और लड्डू जो लाता है वह वापिस ले जाकर लड़के का शकुन कर देता है। जिससे न किसी से कुड़ता मांगना पड़ता है और न कन्या पुरोहित को दुबारा जाना पड़ता है। जो चार लड्डू जोड़े वाली के दिए होते हैं वह बच्चों को बांट दिये जाते हैं।

इस प्रथा का उद्देश्य

यद्यपि इस प्रधथा का सम्बन्ध सूत्र ग्रंथों से नहीं तो भी इसका होना अत्यावश्यक है। क्योंकि इस प्रथा से लड़के और लड़की के वस्त्रों का माप लेना उद्देश्य होता है। पहले समय में पूज हो जाने के बाद लड़की का माप लेकर लड़के वाले 'वरी' के वस्त्र बनवाते थे और लड़की वाले लड़के का माप लेकर लड़के के वस्त्र जो घोड़ी के समय पहन कर लड़के ने आना होता है बनवाते थे। आजकल लोग 'प्रथा मेचा' से पहले ही माप देकर वस्त्र बनवा लेते हैं। पूज हो जाने के बाद मेचा देकर वस्त्र बनवाना उत्तम है। यह वस्त्र वेद विहित 'वरवेष' और

'कन्या वेष' होने के कारण विशेष महत्व रखते हैं। वरवेष के विषय में 'प्रथा घोड़ी में' ऋग्वेद के मन्त्र लिखकर सिद्ध किया है कि वरवेष कैसा हो इसलिये पूज के बाद मेचा लेना अच्छा है।

वैसे तो माप लेना सभी जातियों में है। उनमें कई लोग तो मौली (मङ्गलसूत्र) से माप लेते हैं। और चारजाति क्षत्रिय कुड़ते से माप लेते हैं। इस प्रथा का नाम जोड़े का मेचा है और इसका अर्थ है वस्त्रों की मिति अर्थात् माप लेना।

८—प्रथा टिका

प्रथा पूज वा मेचा के बाद और 'ढंग मिलनी' से पहले वा 'ढङ्ग मिलनी' होने के बाद और 'सरोड़ा' से पहले की जाती है। इस में निम्न लिखित सामान होता है।

१ तवलबाज, १ टोकरी लड्डूओं की १ रेशमीफूल माला, केसर (कटोरी में पिसा हुआ) चावल, 'पुष्प माला' ७ 'पान लगे हुए' १ नारयल, दुसाचा (लाल रुमाल जिस पर कनारों से गणेश बना हुआ होता है) १ वंश पात्र (बांस का छाबा) वर की भेटा के लिये रुपये।

कन्या पुरोहित, नियत मुहूर्त के समय पर कन्या के भाईयों को साथ लेकर और ऊपर लिखा सामान किसी सेवक से उठवा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कर जल के मेल से लड़के के घर द्वार पर तेल गिरवा कर प्रवेश करता है। वहां लड़के को पूर्व की ओर मुख कराकर पटड़ी पर बिठाता है। और कन्या के भाईयों को उत्तर की ओर मुख कराकर बिठाता है। तवलबाज में गणपति बना कर सभी से पूजन कराता है। इस के बाद लड़की के बड़े भाई से लड़के के मस्तक पर केसर का तिलक और चावल लगवाता है और गले में रेशम की बनी फूल माला डलवा कर नारयल रुपया, लड्डू, थान और दुसार्चा झोली में डाल देता है। और वर को लड्डू खिला देता है। इस के बाद दूसरे भाई भी तिलक लगा कर लड्डू खिला देते हैं और भेटा के रुपये दे देते हैं। और गले में पुष्प माला डाल देते हैं। लड़के का पुरोहित लड़की के भाईयों को भी केसर से तिलक लगा देता है और झोली में जो पहले ही लड़के वाले शकुन (कूजे, जुट्ट, बादाम गरी, छुहारे, लाचीदाना,)बना कर तयार रखते हैं, डाल देता है। और गले में पुष्प माला जो लड़की वाले साथ लाते हैं डाल देता है। तथा भाईयों के सर से वारा फेरा करा देता है। इस प्रथा को 'टिका' कहा जाता है।

इस प्रथा का नाम टिक्का कैसे हुआ ?

वैदिक कर्म–यज्ञादि में 'वरण' कर्म मुख्य कर्म है और इसमें आचार्य, ब्रह्मा आदि को वरणित किया जाता है। क्योंकि विवाह भी एक वैदिक कर्म है इसलिये इसमें भी आचार्यादि को वरणित करने के अतिरिक्त दान लेने वाले वर को भी वरणित

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करना शास्त्र विधि होने के कारण आवश्यक ही है। वरणित करने से यह ज्ञान किया जाता है कि हमारे अभीष्टकर्म करने के लिये जिस की हमें आवश्यकता है उसने स्वीकार कर लिया है। वर का भी इसी कारण ही वरणित किया जाता है। पारस्कर गृह्यसूत्र के पदार्थक्रम में लिखा है कि वर के घर जाकर कन्या का भाई वरवरण करे। जैसे—

ततो वर गृहे गत्वा वर वरण कार्यम्। तत्र गणपतिं स्मृत्वा देश कालौ सँङ्कीर्त्य करिष्यमाणविवाहाङ्ग वरणं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य उपवीतादि द्रव्यैस्त्वां वृणे। इति तानि द्रव्याणि वराय दत्त्वा पादौ प्रक्षाल्य चन्दनादिभिः पूजां कुर्यात्।

अर्थात् वर के घर जाकर गणपति पूजन के बाद संकल्प करके यज्ञोपवीतादि वरण द्रव्यों को देकर वरण करे। और पांओं धोकर चन्दनादि से पूजन करे।

इससे वर वरण स्पष्ट ही सिद्ध होता है। इस वरवरण में मुख्य कर्म वर का पूजन है जो तिलक लगा कर किया जाता है। तिलक लगाना मुख्य होने से पञ्जाबी भाषा में तिलक को 'टिका' बोला जाता है। वास्तव में टिका वरवरण ही है।

वरण में क्या वस्तुएं देनी चाहियें ? और कन्या का भाई या ब्राह्मण वरण करे इस विषय में चन्द्रेश्वर लिखते हैं कि—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उपवीतं फलं पुष्पं वासांसि विविधानि च ।
देयं वराय वरणे कन्या भ्राता द्विजेन च ॥

वर के वरण में कन्या का भाई, या (अभाव में) ब्राह्मण यज्ञोपवीत, फल, पुष्प और विविध वस्त्र वर को देवे ।

वरवरण के समय वर और कन्याभ्राता को किस ओर मुख करके बैठना चाहिये ? इस विषय में व्यास स्मृति में लिखा है—

वरस्तु प्राङ्मुखः पूज्यः पूजकः स्यादुदङ्मुखः

अर्थात वर की पूजा पूर्वाभिमुख बिठा कर करनी चाहिये और पूजा करने वाला उत्तराभिमुख बैठे । इसी कारण वर पूर्वाभिमुख बैठता है और कन्या का भाई उत्तर मुख बैठता है ।

आगे विधि में लिखा है कि कन्या का भाई तस्मिन्कालेऽग्नि सानिध्ये ' इत्यादि मन्त्र को पढ़े जिसका भाव इस प्रकार है—

विवाह के समय, अग्नि के सामने स्नातक, निरोगी, सर्वाङ्गपूर्ण, धार्मिक और पुरुषत्वयुक्त आप को मेरा पिता कन्या दान देगा । इस के बाद वर आशिष मन्त्र को पढ़ता है ' ओं ऋतवस्था ऋतावृधा ' इत्यादि । इन मन्त्रों से सिद्ध होता है कि वरण शास्त्रविहित ही है । यह कोई देशाचाल नहीं ।

रेशमी फूलमाला

रेशमी फूलमाला इसलिए होती है कि ऊपर लिखे चन्द्रेश्वर

Ac. Gunratnasuri MS   Jin Gun Aradhak Trust

के वरण द्रव्यों में नानाविध वस्त्र देना भी है, क्योंकि चार जाति क्षत्रिय वर को घोड़ी के समय पहनने के लिए 'वैण्डा' में वस्त्र देते हैं और पहले वरवरण में नहीं देते। इसलिए रेशमी फूलमाला देकर उसी से पुष्पमाला और सस्त्र का काम ले लेते हैं। और शास्त्राज्ञा का भी पालन कर लेते हैं। दूसरे यज्ञोपवीत का भी काम इसी से लेते हैं। क्योंकि यज्ञोपवीत भी लम्बी तन्तुओं से बना होता है और उन्हीं तन्तुओं में रेशम के फूल बनाकर गूंथ दिये हैं। क्योंकि उत्साह (चाव) से सामान्य वस्तु की सुन्दरता बढ़ाने के लिये विशेष वस्तुएं साथ लगाई जाती हैं। इसलिये सूत्र के बने यज्ञोपवीत के स्थान में रंगे हुए रेशम के यज्ञोपवीत में रेशम के फूल बना कर शोभा बढ़ाने के लिये साथ लगाए गये हैं। रेशम का भी यज्ञोपवीत होता है, यह स्मृत्यर्थसार में लिखा है। जैसे—

कार्पासक्षौमगोवालशाणवल्कतृणादिकम् ।
यथा सम्भवतो धार्यमुपवीतं द्विजातिभिः ।

तवलवाज—यज्ञों के वरण द्रव्यों में एक पात्र कमण्डलू होता है। और विवाह यज्ञ के वरवरण में कमण्डलू के स्थान में तवलवाज ही देशाचार से प्रसिद्ध हो गया है। पहले समय में कमण्डलू के स्थान में कांसी का कटोरा फिर कांसी का तवलवाज, एक बड़ा पात्र होने के कारण प्रसिद्ध हो गया, जिसके स्थान में अब पीतल का कूण्ड या चान्दी का तवलवाज देने लग पड़े हैं

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

छाबा

यह एक बांस का बना हुआ पात्र होता है। इसमें टिक्के का सब सामान रखकर लाया जाता है। इसको भी पवित्र माना है। क्योंकि धातु अपवित्र भी हो सकते हैं और यह वंशपात्र अपवित्र नहीं होता, इस कारण वंशपात्र को विशेष महत्व दिया हुआ है।

पान

पूजन के बाद मुखवास: (पान) खिलाना तो एक पूजन का अंग ही माना गया है। इसलिये तिलक के बाद पान खिलया जाता है।

लड्डू

लड्डू मिष्टान्न रूप में शकुन के लिये झोली में डाले जाते हैं। ऊपर लिखे आशीर्वाद के मन्त्र 'ऋतवस्था ऋतावृधा' इत्यदि में 'घृतच्युतो मधुच्युतो' भी पाठ आता। जिसका भाव यह है कि घृत और मिठाइयें आपके घर में बहें। अर्थात् आप घृत की मिठाइयें लोगों को दें। इस अशीर्वाद के मत्र को जानते हुए चार जति क्षत्रिय लोग घी और खाण्ड से बने लड्डू वर को पहले ही खिला देते हैं। और शास्त्रों में मुख में मिष्टान्न देना शुभ शकुन माना है। दूसरे मोदक (लडडू) गणपति का नैवेद्य होता है, टिक्के में गणपति पूजन में लडडू नैवेद्य प्रसाद रूप वर को दिये जाते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

९—प्रथा ढङ्ग, मिलनी (हलूफा)

प्रथा ढङ्ग, मिलनी चारजाति क्षत्रियों में सायङ्काल के समय होती है । और यह तीन प्रथाएं मिली हुई होती हैं, १ ढंग, २ मिलनी; ३ लड़के की देखनी, इन तीनों को ही ढंग या मिलनी बोला जाता है । इस में लड़की वालों को निम्न लिखित सामान प्रस्तुत [तय्यार] रखना चाहिये—

१ मटका (चटूरा) मट्टिका (आज कल लोग पीतल का भी देते हैं) जिस में २१ सेर तक दूध का दही जमाया जाता है कम से कम यथा शक्ति भी दिया जा सकता है । और गले में लाल हलवान और पुष्प माला पड़ी होती है । हलदी मिले आटे से ढकन (चपनी) द्वारा मुख बन्द किया हुआ होता है । ७ सात या ९ नौ तवियां (पीतल या लोहे के बड़े थाल) में ढाई सौ, से साढ़े चार सौ तक बेसन के आध २ सेर के बड़े लड्डू बनवा कर रक्खे हुए होते हैं, और लड्डूओं के ऊपर चान्दी के वर्क लगवाए जाते हैं । तीन बोरियें या गांठें (प्रतिगांठ लग भग २० सेर के होती है, जो कि १ गोधूम (गेहूँ, कनक) की । २ चावल की । ३ मूंग साबूत की होती हैं) १ गड़वा घी का । १३ या सात भेलियां (रोड़ी) गुड़ एक टोकड़े में जिसको सालू (लाल कपड़ा) से ढक देना चाहिये । परात में गरी छुहारा और ४ खोपे । १ परात फेनियों की । १ परात गुलभिस्त (एक प्रकार की मिठाई होती है जो पञ्जाब में विशेष रूप से बनती है) १ रकेबी हलदी । १ रकेबी नमक । १ रकेबी मूंग

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की दाल । १ रकेबी मैदे की । और १ रकेबी खाण्ड की । १ टोकरी लड्डूओ की । (जिससे वर का मुख चुलाया जाता है इस टोकरी को लड़के के घर नहीं भेजना चाहिये मुख चुलाने के लिये पास ही रखना चाहिये)—१ गुलाब पाशी, (जो चान्दी की बनी होती है, इस में गुलाब भर कर अपने जामाता (दामाद) से मिलनी के समय दोनों ओर से छिड़काई जाती है । यहां पर यह ध्यान रखना उचित प्रतीत होता है कि गुलाब छिड़कने वाला जामाता जिन्हों पर उसने गुलाब छिड़कना हो उनकी जाती का नहीं होना चाहिये) सब सामान उठवाने के लिये मजदूरों का भी पहले प्रबन्ध किया जाता है । और यदि चट्ठूरा डोली में उठवाना हो तो डोली का भी प्रबन्ध पहले करना चाहिये । ढंग मिलनी के समय के लिये साधारण बुलावा अर्थात् सम्बन्धियों और मेल मुलाकात में दिया जाता है ।

सब लोगों के आने और स्वागत हो जाने पर पुरोहित द्वारा वरवंश के वृद्ध पुरुष (वड्डे) को ढंग दिखाने के लिए बुलाया जाता है । और जब वहां से 'वड्डा' आवे तो उसे चट्ठूरा दही का और लड्डू आदि दिखाए जाते हैं, वृद्ध पुरुष (वड्डे) को भेटा का १) एक रुपया दिया जाता हैं । बड्डे के जाने के बाद सब सामान मजदूरों से उठवा कर सब लोगों को साथ लेकर लड़के वालों के घर जाया जाता है । और उनके घर सब सामान रखवा दिया जाता है । मजदूरों को मजदूरी लड़की वाला देता है । और चट्ठूरे वाले को मजदूरी का १) एक

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

रुपया लड़के वाला देता है।

जब लड़की वाले लड़के वालों के पास पहुँचते हैं। तब स्वागत के लिए लड़के वाले खड़े हो जाते हैं। और सब लोग गोलाकार (दायरे में) खड़े हो जाते हैं। दोनों ओर से गुलाब की छिड़काई होती है, और भाट सब को रोली से पगड़ियों पर टीका लगा देता है। जिससे हिन्दुत्व प्रगट होता है। पगड़ियों पर रोली इस लिये लगाई जाती हैं कि पगड़ियें अधिकतर सफेद होती हैं और इस शुभ अवसर पर रोले से रङ्गने का उद्देश्य प्रगट किया जाता है। फिर भाट वंशस्तुति (यश) कवित्तों में गाता है।

इसके बाद लड़की वालों का पुरोहित अञ्जली (बुक) में तीन रुपये रक्ख कर सब को दिखाता हुआ वर के पुरोहित को दे आता है। और पुनः ५ पांच, ७ सात, ९ नौ, ११ ग्यारह, १३ तेरह, १५ पन्द्रह, और १७ सत्तरह रुपये क्रमशः दे आता है। जिनका जोड़ अस्सी रुपया होता है। तदनन्तर २॥) ढ़ाई रुपये पुच्छों के और १) रु० दोहे (डोहे) का, दिया जाता है। इस के बाद भूषण (जेवर) और चान्दी का बरतन दिया जाता है। इस कर्म को ढंग कहते हैं।

वर की देखनी

इसके बाद वर की देखनी होती है। इसमें लड़के वालों का पुरोहित वर और नफर (नौकर) को साथ लाता है। कन्या

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पिता वर को शकुन के लड्डू (जो लड्डूओं की टोकरी पहले लाई होती है) दे देता है। मुख में लड्डू देकर देखनी अर्थात् विशेष परिचय करके भेटा में दो रुपये देता है। बाद में सब सम्बन्धि वर की देखनी करके भेट में १ एक एक रुपया दे देते हैं। कन्यापिता वर के सिर से ।) चार आना वारा फेरा करके नफ़र को दे देता है। लड़का अपने पक्ष में लौट आता है। इस कर्म को देखनी कहते हैं।

मिलनी

इस के बाद मिलनी की जाती हैं। इसमें सबसे पहले कन्या पिता और वर पिता आपस में मिलनी इस प्रकार करते हैं।

वर पिता और कन्या पिता एक दूसरे को आलिङ्गन करके बड़े प्रेमपूर्वक नम्रभाव से मिलते हैं। कन्यापिता वरपिता का भेटा के दो रुपये हाथ में दे कर सिर से वारा फेरा करके नापित को देता है, और वरपिता कन्यापिता के सिर से वारा फेरा करके नापित को दे देता है। इसके बाद पितृवंश के सब सम्बन्धियों की मिलनी (विशेष परिचय) होता है। और भेटा (सलामी) का १) एक एक रुपया दिया जाता है।

इसके बाद नानकी मिलनी होती है। वर के मातृवंश [नानके] सम्बन्धियों को एक एक रुपया दिया जाता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसके बाद कन्यापिता वरपिता को समौले (शेष सम्बन्धियों के लिये) ४ से ७ तक रुपये यथाशक्ति हाथ में देता हुआ लौट आता है। इस सारे कर्म को ढंग या मिलनी कहा जाता है।

ढंगों का अर्थ और ढंग देने के लिये क्यों जाया जाता है ?

चार जाती क्षत्रिय मनुस्मृति के तृतीय अध्याय में लिखे आठ प्रकार के विवाहों में से सर्वोत्तम ब्राह्मविवाह के महत्त्व को समक्ष रखते हुए वर के सम्बन्धियों को बरात के रूप में घर बुला कर खिलाने के स्थान में उन के घर ही सब खाद्य पदार्थ पक्वान्न (लड्डू आदि) आमान्न (कच्चा अन्न चावल मूंग आदि) और दही लड़के वालों के घर ही भेज देते हैं। ब्राह्मविवाह में केवल लड़के को ही ला कर कन्या दान कर देना लिखा है। विस्तार भय से यहां प्रमाणादि नहीं देता 'प्रथा घोड़ी' में इस को विस्तार पूर्वक दिया है। ढंग शब्द का अर्थ है विधि अर्थात् तरीका। यह सब कर्म विधि पूर्वक अर्थात् बातरीका संपन्न होता है, इस लिये इस कर्म को ढंग कहते हैं। मिलनी में सम्बन्धियों का मिलाप होता है, और देखनी में वर को अच्छी प्रकार देखा जाता है इस लिये इनके नाम सार्थक ही हैं।

चटूरे के विषय में

ढंगों में दिये हुए लड्डूओं के साथ दही खाने के लिए भेजा जाता है। क्यों कि भारत वर्ष में दूध और दही खान

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पानादि में विशेष स्थान रखता है, इस लिये खाने के लिये दही का भेजना भी आवश्यक है। पूर्व समय में चार जाति क्षत्रिय ढाई मट्टियें दही की देते थे। समयान्तर में ढाई मट्टियों के स्थान में एक चटूरा ही दिया जाने लगा और बाकी डेढ़ १॥ मट्टी के स्थान में चान्दी का कटोरा या गिलास दिया जाता था अब बढ़ते २ एक कटोरे के स्थान में कितने ही चान्दी के बर्तन दिये जाते हैं। प्राचीन मर्यादा भंग करके इस को बढ़ाया जा रहा है, जो उचित नहीं।

ढङ्गों में पुरोहित द्वारा रुपये और भूषण क्यों दिये जाते हैं ?

ढंगों में जो भी कुछ दिया जाता है वह पहले पुरोहित द्वारा ही दिया जाता है। इसका कारण यह है कि हिन्दुओं में पुरोहित का स्थान सबसे ऊँचा माना है पुरोहित के अर्थ ही यह हैं कि 'पुरःहितेन वर्तत इति पुरोहितः' अर्थात् यजमान के हित के लिये जो सर्वदा आगे रहें वह पुरोहित होता है। यद्यपि आजकल समय के प्रभाव से कई एक पुरोहित उतनी योग्यता नहीं रखते तो भी चार जाति क्षत्रिय चाहे पुरोहित कैसा भी हो उसके मानार्थ उसको आगे हीं स्थान देते हैं। और शास्त्र और वेद की मर्यादा को स्थिर रखते हैं। पुरोहित का कितना ऊँचा स्थान हैं इस विषय में पुराणों और स्मृतियों के प्रमाण विस्तार भय से न देकर मैं अथर्ववेद के तीसरे काण्ड के उन्नीसवें सूक्त (जो

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुरोहित के विषय में है) में से एक मन्त्र लिखता हूँ । जिसमें पुरोहित युद्ध के लिये जाती हुई सेना को उत्साहित करता हुआ आशीर्वाद में ईश्वर से प्रार्थना करता है कि—

तीक्ष्णीयांसः परशोरग्नेस्तीक्ष्णतरा उत ।
इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहितः

अथर्व० ३ । १६ । ४ ॥

कुल्हाड़े से तीक्ष्णतर, अग्नि से भी तीक्ष्णतर (क्षण में भस्म कर डालने वाले) इन्द्र के वज्र से भी तीक्ष्णतर वे हों जिनका मैं पुरोहित हूँ ।

पुच्छों के ढाई रुपये

इस मन्त्र से सिद्ध होता है कि पुरोहित खाली सुख के साथी न थे परन्तु युद्धादि समय में भी आगे होकर यथा योग्य सहायता किया करते थे । जो संकट में साथ देता हो और हर समय हित सोचता हो भला सुख में वह आगे क्यों न हो । इसी कारण ही तो सबसे पहले ' पुच्छों ' के रूप में पुरोहित को २॥) ढाई रुपये दिलाए जाते हैं । जो ढाई घरी का चिन्ह भी है ।

सलामियों का तीन रुपये से प्रारम्भ होना

ढङ्गों में जो भेट रूप मिलनी ३) दी जाती हैं । उस में कारण यह है कि भेट (सलामियें) तो पाँच रुपये से प्रारम्भ होतीं हैं, क्योंकि ' पांचों में परमेश्वर ' यह कहावत है । यह तीन रुपये तो १) एक रुपया पिता, १ एक बाबा, और एक परबाबे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का होता है । यह तीन रुपये ढङ्गों के साथ होते हैं । मिलनी के समय जो पिता को रुपये दिये जाते हैं वह मिलनी की भेट के होते हैं ।

वर की देखनी

पूर्व 'प्रथा पैर पाना' में लिख दिया है कि लड़के की देखनी स्त्रियें करती हैं । पुरुषों ने तो अभी तक लड़के को नहीं देखा इस लिये प्रथम मिलन होने के कारण भेटा में सब लोग रुपये देते हैं । और लड़का भी जान जाता है कि कौन २ कन्याकुल का समीपस्थ सम्बन्धी है । यह एक परिचय कराने की विधि है । आजकल शकुन के समय वर को कन्यागृह में बुला कर लोग शास्त्र और मर्यादा विरुद्ध कार्य्य करते हैं ।

प्रथा सरोड़ा

"सरोड़ा" ढङ्ग मिलनी हो जाने के बाद होता है और इसमें निम्नलिखित सामान होता है—

बांस का छाबा (जो टिक्के के समय लड़की वालों के घर से आया था) । नौ, ग्यारह या तेरह लड्डू (जो ढंगों के समय आये थे) । तवलबाज (जो टिक्के के समय आया था) । दही, तवलबाज में (जो चटूरे में ढंगों के समय आया था) । रेशमी फूल माला (जो टिक्के के समय आई थी) । एक गरी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गोला (जुट्ट) । चौदह १४ छुहारे । २ फेनियां । गुलभिस्त । लाल हलवान (जो ढंगों में दही वाले चटूरे के गले में पड़ा होता है) ।

यह सब सामान पुरोहित किसी सेवक या सेवकानी (नौकर) के हाथ उठवा कर वरपक्ष की कुछ स्त्रियों को साथ लेकर और चलते समय आगे से जलपूरित कलश का शुभ सूचक मेल कराकर लड़की वालों के घर जाता है । वहां लड़की वालों की देहली (दलीज) के दोनों पार्श्वों में तेल गिरवा कर घर के अन्दर जाता है । वहां कन्या को घुटनों के अन्दर हाथ करा, और पांव के नीचे एक पैसा रखकर लकड़ी के आसन (पटड़ी जिसमें लोहे के कील न लगे हों और मौली बन्धी हो) पर बिठा आंचल (झोली) में एक गरी गोला चौदह छुहारे डाल देता है । और फिर एक लड्डू, दही, फेनी, गुलभिस्त कुलदेवता के नाम और एक पितरों के नाम हाथ से लगवा लेता है । बाद में फूल माला किसी वरपक्षीय स्त्री द्वारा कन्या के गले में पहना देता है, और आंचल में बाकी बचे हुए लड्डू, दही, फेनी, गुलभिस्त डाल देता है । कन्या की माता वरपक्षीय किसी मान्य स्त्री के हाथ भेट रूप वर की माता को २) दो रुपये भेज देती है । वर पक्षीय पांच या सात स्त्रियें कन्या की झोली में पड़े हुए लड्डूओं और दही से मुख चोलन करातीं हैं । और वारा फेरा (खरायत) सिर से लगवा कर नापित या किसी सेवक को दे देती हैं । फिर लड़के वाली और लड़की वाली स्त्रियें आपस

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में दोहे (डोहे) गाती हुई अपने अपने घर लौट आती हैं । इस कर्म को सरोड़ा कहा जाता है ।

इस प्रथा का नाम सरोड़ा क्यों हुआ ?

"सरोड़ा शब्द के अर्थ की ओर ध्यान देने से कई प्रकार के अर्थ खेंचातानी से हो सकते हैं । मगर मेरे विचार में "सर+ओढ़" से बिगड़ कर "सरोड़ा" शब्द प्रसिद्ध हुआ जो वास्तव में संगत ही प्रतीत होता है । "सर+ओढ़" का अर्थ सर पर ओढ़ने का वस्त्र होता है । और यह पूर्व समय में 'वाग्दान' विधि के अनुसार वर पिता कन्या को गन्धादि मांगल्य द्रव्य तथा शुभवस्त्र, भूषण, ताम्बूलादि से पूजन करता था । आजकल वाग्दान के समय वस्त्रादि न देकर वही पूजन वर पिता सरोड़ा प्रथा में शास्त्र विधि को पूर्ण करता है पारस्कर गृह्यसूत्र के पदार्थ क्रम में लिखा है कि—कन्या पिता वर के पिता को कन्या देने का वचन देकर "वाचा दत्ता मया कन्या" इत्यादि मन्त्र को पढ़े । और वर पिता "वाचा दत्ता त्वया कन्या पुत्रार्थं स्वीकृतामया । " इत्यादि मन्त्र को पढ़कर यथाचार कन्या का पूजन करे । वर पूजन के विषय में न लिख कर कन्या पूजन के विषय में लिखता हूँ यथा—

ततो वर पित्रादिर्गंधाक्षत शुभवास्त्रादि युग्म भूषण ताम्बूल पुष्पादिभिः कन्यां यथा चारं पूजयेत् ततो ब्राह्मण आशीर्मन्त्रान्पठेयुः ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अर्थ—वर का पिता गन्धाक्षत और शुभवस्त्रादि तथा भूषण ताम्बूल पुष्पादि से कन्या का यथाचार पूजन करे और ब्राह्मण आशीर्वाद के मन्त्रों को पढ़े ।

वर का पूजन 'वाग्दान, के समय और वरवरण के समय हो चुका, मगर कन्या का पूजन जो वर पक्ष द्वारा होना था अभी तक नहीं हुआ उसको चार जाति क्षत्रिय 'सरोड़ा प्रथा, में करते हैं । अन्य जातियें तो वाग्दान के समय ही कन्या को एक तिलै चुर्न। (ओढ़ने का वस्त्र) भेज देते हैं । मगर चार जति क्षत्रिय और ब्राह्मण वर गृह की कोई वस्तु लेना अच्छा नहीं समझते इसलिये वाग्दान के समय भी न कुछ लेकर शास्त्रीय विधि तथा संस्कृति को पूर्ण करने लिये वस्त्र के स्थान में हलवान और रेशमी फूलमाला जो कन्या पिता की ओर से दी गई होती है, उसी से कन्या पूजन कर लेते हैं । जैसे सिर का वस्त्र सिर से होता हुआ कन्धों पर ओढ़ा जाता है उसी प्रकार फूल माला भी सिर से होती हुइ कन्धों पर धारण की जाती है और हलवान झोली में डाल दिया जाता है । इसलिये वस्त्र का काम हलवान रेशमी फूल माला से ही ले लिया जाता है ।

दूसरे फूलमाला का पहले वर के गले में पड़ना फिर कन्या के गले में पड़ना भी आपस मेंअन्योन्य वरण भी प्रकट करता है । जैसे कन्या पिता ने कन्या के भाई द्वारा वरवरण किया वैसे ही स्त्रियों द्वारा वर पिता तथा वर ने, कन्या का मान कर, फूलमाला द्वारा वरण कर, कन्या स्वीकृति का प्रमाण दिया ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वर अपने गले की माला इसलिये भेजता है कि—वराह पुराण में लिखा है कि भगवान् विष्णु ने अपने गले की माला लक्ष्मी को पहनाई थी। इस संस्कृति की याद में ही आज तक क्षत्रिय ब्राह्मण वर के गले की माला कन्या के गले में डालते आए हैं। जैसे—

विष्णुर्मालां स्वकण्ठस्थां हस्तेनादाय सस्मितः।
कमलायास्कन्धदेशे मुमोच सुमनश्रिताम् ॥

हसते हुए विष्णु भगवान ने अपने गले की माला हाथों में लेकर, लक्ष्मी के कन्धों पर डाली।

ऊपर के प्रमाण से सिद्ध होता है कि कन्या का पूजन वस्त्र के स्थान में हलवान और रेशमी फूलमाला से लिया जाता है। क्योंकि रेशमी फूलमाला ही से ज्ञान होता है, कि फूलमाला तो पुष्पों की माला होती है, यहां रेशम की माला से वस्त्र का काम लेना है, इसलिये रेशम जिससे वस्त्र बनाया जा सकता है, उसी से माला बनाई गई। इस माला से दो काम लिए जाते हैं एक फूल माला (पुष्प माला) दूसरे वस्त्र का, इसलिए इसको 'रेशमी फूलमाला' बोला जाता है।

यद्यपि चार जति क्षत्रिय वस्त्र नहीं लेते और वस्त्र के स्थान में रेशमी फूलमाला से ही काम चला लेते हैं, तो भी उन्होंने इस प्रथा का नाम "सर ओढ़ा (ओढ़ने का वस्त्र) रख कर अपनी जाति महत्त्वता और शास्त्रीय ब्राह्मविवाह की मरयादा स्थिर रखते हुए और वस्त्र के स्थान में रेशमी फूलमाला का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ज्ञान सर्वदा स्मरण रखने के लिये पूर्वजों ने इस प्रथा का नाम "सरोड़ा" रक्खा ।"

जल का आगे से मिलना

शकुन शास्त्रों में कन्या या सौभाग्यवती स्त्री का जल से भरा कलश लेकर आगे से मिलना शुभशकुन माना है । और वेदों में तो यज्ञ में (देव कर्मों में) जलों का आना विशेष फल देने वाला कहा है । जैसे—

आपो रेवतीः क्षपथा हि वस्वः
क्रतुं च भद्रं बिभृथामृतञ्च ।
रायश्च स्थः स्व पत्यस्य पत्नीः
सरस्वती तद् गृणते वयो धात् ॥

ऋग्वे० १० मं० ३० सू० १२ मं०

जल तुम धन के प्रभुस्वरूप इस कल्याणमय यज्ञ को सम्पन्न करो और अमृत ले आओ । धन और उत्तम सन्तानों के रक्षक होओ । स्तोता को सरस्वती और धन दो । अथर्ववेद में घड़ों में लाये हुए जल सुखदाई होते हैं लिखा है । जैसे—

शं त आपो धन्वन्याः शं ते सन्त्वनूप्याः ।
शं ते खनित्रिमा आपः शं याः कुम्भेभिराभृताः ॥

अथर्व० १९ ।२।२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सुखदायी हों तेरे लिये जल मरुस्थानो (रेगिस्तानों) के सुखदायी हों चशमों के, सुखदायी हों खोद कर निकाले हुए, और सुखदायी हों जो घड़ों से लाए गये हैं।

खाली घड़ों का मेल अशुभ माना है। जैसे—

अनुहवं परिहवं परिवाद पारवम् ।

सर्वैर्मेरिक्तकुम्भान् परातान्त्सवितः सुव ॥

अथर्व० १६।८।४

अनुहव (पीछे से अवाज पड़नी) परिहव, (बुराबुलावा) अर्थात् वापिस बुलाना बुरा शब्द, छींक पड़ना, और खाली घड़े इन सबको ही सविता परे धकेल दे।

इसी कारण विवाह में समय समय पर आगे से जल लेकर मिला जाता है। यह शकुन घर से बाहर मिलना चाहिये। स्त्रियें कई तो घरके अन्दर ही जल लेकर खड़ी हो जाती हैं। वास्तव में कूप से जल लाकर घर के बाहर मिलना चाहिए छींक का पड़ना भी इसी मंत्र के आधार पर बुरा माना जाता है।

द्वार पर तेल का गिराना

शास्त्रों और सूत्रों में द्वार के दोनों पार्श्वों में दो देवता माने है। एक 'धात्र' दूसरा 'विधात्र' बोधायन गृह्यसूत्र के द्वितीय प्रश्न आठवें अध्याय वलि प्रकरण के २७ सूत्र में लिखा है—

द्वार पार्श्वयो—धात्रे स्वाहा, विधात्रे स्वाहा ।२७।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अर्थात् द्वार के दोनों ओर एक वलि 'धात्र' और एक 'विधात्र' को देवें और धात्रे स्वाहा' विधात्रे स्वाहा इन मन्त्रों को पढ़े। तेल गिराने के विषय में अथर्ववेद में लिखा है कि द्वार पर तेल गिराने से घर में निऋति (दुखों का देवता) और अरातिः (दुष्ट भावनाएं कंजूसी आदि) घर में प्रवेश नहीं करती। जैसाकि—

अभ्यञ्जनं सुरभिसा समृद्धिर्हिरण्यं,
वर्चस्तदु पुत्रिममेव ।
सर्वा पवित्रा वितताध्यस्मत् तन्मा,
तारीन्निऋतिर्मोअरातिः ॥

अथर्व० ६ का० १२४ सू० ३ मं०

वह एक सुगन्धित मालिश तेल है। वह समृद्धि है, सोना और कान्ति है। वह पवित्र करने वाला है। इस लिये न हमें निऋति (दुखों का देवता) और न अरातिः (कंजूसी) आदि उलांघे।

इस से स्पष्ट है कि घर के बाहर से जो शुभ वस्तु घर में लाई जाती हैं। उनके ऊपर दृष्टि दोष और भूत प्रेतादि के जो दुष्ट प्रभाव हैं उन्हें तेल गिरा कर दूर किया जाता है। और यदि दुष्ट प्रभाव न हों तो भी तेल गिराना कोई बुरा नहीं लाभदायक ही है। इस बात को जान कर सर्वदा शकुन की वस्तु घर में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रवेश करने के समय द्वार पर तेल गिराया जाता है ।

दूसरा लाभ तेल गिराने का यह होता है कि कन्या वालों को सूचना हो जाती है कि सम्बन्धि आ गए हैं । अतः सावधान हो जाना चाहिये । और कन्या भी सावधान हो जाती है ।

घुटनों के अन्दर हाथ रखना

जब भी पूजन किया जाता है तभी घुटनों के अन्दर हाथ रक्खा जाता है, इस का कारण यह कि गोभिल गृह्य सूत्र प्रथम प्रपाठक खण्ड २ सूत्र २० में लिखा है—

न बाह्यांऽसः ॥ २० ॥

अर्थात् घुटनों के बाहिर स्कन्ध अर्थात् हाथ कर के कर्म न करे ।

क्यों कि घुटनों के अन्दर हाथ रखने से स्कन्ध भी स्वयं अन्दर ही रहते हैं । इसलिए यही प्रचलित हो गया है कि घुटनों के अन्दर हाथ रक्खो ।

काष्टासन (लकड़ी की पटड़ी) के सम्बन्ध में

पूजन के समय किसी न किसी आसन पर अवश्य बैठना लिखा है । और उस आसन की शुद्धि भी मन्त्रों के साथ की जाती है । शास्त्रों में चार प्रकार के आसन लिखे हैं । जो भिन्न भिन्न द्रव्यों से बने होते हैं । (१) सिंहासन जो स्वर्ण, चांदी,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पीतल आदि धातुओं से बना होता है । (२) 'काष्ठासन' लकड़ी का बना हुआ (चौकी पटड़ी आदि) । (३) 'शरासन' शरों (कानों) से बना हुआ पीठ (जिस को 'खारा' बोला जाता है) (४) 'शुद्धासन' जो शण (सण) सूत्र, और रेशम से बना हुआ होता है । पराशर जी का वचन है यथा—

सिंहासनं सुवर्णादि धातुना निर्मितं शुभम् ।
दारुभिर्निर्मितं चाथ शरैर्वा शुद्धमासनम् ॥

इन आसनों में 'सिंहासन' देवताओं के नीचे या राजाओं के नीचे दिया जाता है । और विवाह में काष्ठासन (लकड़ी का आसन या शरासन शरों का आसन (खारा) होता है । देवताओं के पूजन समय शुद्ध-आसन होता है ।

कई लोग लकड़ी के आसन के स्थान में जलाने वाली समिधा (लकड़ी) या वृक्ष की शाखा रख देते हैं । जो शास्त्र के अनुकूल नहीं क्यों कि शास्त्र में इसके अंगुली परिमाण और किस वृक्ष की लकड़ी हो यहां तक लिखा है । कालिका पुराण में आसन का परिमाण इस प्रकार लिखा है—

चतुर्विंशत्यंगुलैस्तु दीर्घं काष्ठासनं मतम् ।

अर्थात्—लकड़ी का असान चौबीस अंगुल लम्बा होता है । इस लिए पटड़ी २४ अंगुली लम्बी और शुद्ध चाहिए ।

पटड़ी पर मौली बांधना

लकड़ी के आसन पर मौली इस लिये बांधी जाती है कि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शास्त्रों में लिखा है कि लकड़ी के आसन पर कपड़ा लपेट कर पूजनादि करे। और पटड़ी यज्ञीय लकड़ियों से बनानी चाहिये। जैसे—

स्नात्वा चैव शुचौ देशे पीठे यज्ञिय दारुजे।
वस्त्राच्छन्ने उपासीत अभावे कुश विस्तृते ॥

स्नान करके पवित्र स्थान में यज्ञिय लकड़ी (आम, पीपल, जामन, देवदारू, बट' पलच्च (फला) चन्दन इत्यादि) के आसन पर वस्त्र बिछा कर उपासना करे। इसके न होने पर कुशा बिछा कर पूजनादि करे।

ऊपर के प्रमाण के अनुसार वस्त्र के स्थान पर मङ्गल सूत्र (मौली) बांध दी जाती है।

पटड़ी में लोहे की कीलों का निषेध

पटड़ी में लोहे के कील न होने चाहियें क्योंकि इसका भी शास्त्रों में निषेध है। जैसे देवी भागवत में लिखा है—

आयसं वर्जयित्वा तु कांस्य सीसकमेवच।

अर्थात् आसन में लोहा कांसी और सिक्का नहीं होना चाहिए।

विज्ञान (सांइस) के अधार पर भी लोहे का न होना लाभदायक है। क्योंकि पृथिवी में जो दक्षिणोत्तर एक विद्युत् प्रवाह चलता है। वह धातुओं में प्रवेश करता हुआ मनुष्य में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अपना दुष्ट प्रभाव डालता है । क्यों कि लकड़ी में इस विद्युत-प्रवाह का प्रवेश नहीं हो सकता इस लिए लकड़ी की पटड़ी (चौकी) में कील नहीं लगवाये जाते ।

पटड़ी पर पाओं के बल बैठने का निषेध

पूजन के समय पद्मासन बैठना शुभ होता है—और प्रौढ़पादासन (पाओं के बल बैठना) बैठने का निषेध लिखा है । जैसे—आचारमयूख में लिखा है—

दानमाचमनं होमं भोजनं देवतार्चनम् ।
प्रौढ़पादे न कुर्वीत स्वाध्यायं पितृतर्पणम् ॥

अर्थात् दान, आचमन, होम भोजन, देवपूजन, स्वाध्याय और पितृ तर्पण पाओं के बल बैठ कर नहीं करना चाहिए ।

पाओंके नीचे पैसा रखाना

पटड़ी पर बैठने के समय एक पैसा या दो पैसे पाओं के नीचे रक्खे जाते हैं । जो नापित (नाई) कर्म की समाप्ति पर ले लेता है । यह इसलिए है कि पूर्व समय में 'पादासन' कर्म समाप्ति पर नापित को दे दिया जाता था । मगर आज कल पादासन न तो रक्खा जाता है और न ही नापित को दिया जाता है उसके स्थान पर मूल्य रूप में नापित को पैसा दो पैसे पाओं के नीचे रख कर दिए जाते हैं । पाओं के नीचे पैसों का रखना यह प्रगट करता है कि पैसे ही पादासन हैं । क्योंकि पटड़ी के ऊपर तो वर बैठ जाता है और पादासन प्रचलित न होने के कारण

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पादासन का मूल्य पैसा दो पैसे नापित को दे दिये जाते हैं। राजाओं के घर पाओं के नीचे रुपया या दो रुपया रखने की प्रथा है।

जुट्ट छुहारों का आंचल में डालना

कन्या के आंचल में १ जुट्ट १४ छुहारे इसलिए डाले जाते हैं कि शास्त्रों में नारियल और उसके अन्दर का फल (जुट्ट) तथा छुहारे विवाह में माङ्गलिक माने हैं। जैसे भृगु जी ने कहा है—

नालिकेर फलं चैव तदन्तर-मन्यमप्युत ।
खार्जूरादि फलं राजन् विवाहे मंगलप्रदम् ॥

नालिकेर (नारियल(, उसके अन्दर की खाने वाली गिरी (जुट्ट) और खार्जूर फल विवाह में मंगल देने वाले होते हैं। दूसरे स्त्री की झोली में डालने का यह भी भाव प्रकट होता है कि पुरोहित जब इन को झोली में डालता है तब साथ में आशीर-वाद भी देता है कि तू फलवती हो। जैसे एक वृक्ष से अनेक फल होते हैं, उसी प्रकार इन फलों को तरह एक से अनेक हो अर्थात् पुत्रवती हो। नरियल और जुट्ट का विशेष प्रयोग इसलिए भी है कि इस के ऊपर छिलके में तीन आंख सी या तीन छेद बने होते हैं। इसलिये इस फल को संस्कृत में त्र्यम्बक भी कहा है। और त्र्यम्बक भगवान् शंकर का भी नाम है। इसलिए इस फल से प्रमात्मा का भी बोध होता है और उस के तीन गुणों का भी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यह फल हर ऋतु में मिल भी सकता है । इस लिये इस फल को विशेष रूप से विवाह आदि शुभ कर्मों के समय उपयोग में लाया जाता है । इन फलों के वैद्यक ग्रन्थो में विशेष गुण वर्णितहैं । जो स्त्रियों के लिये विशेष लाभदायक हैं ।

चौदह की संख्या इस लिये होती है कि इस में सात छुहारे कन्या के और सात वर के होते हैं और सात की संख्या प्रकृति में विशेष महत्व रखती है जिस का वेदों में भी महत्व वर्णित है । जैसे—ऋग्वेद ८ मंडल २८ सूक्त ५ मन्त्र में इन्द्र के अंश रूप सात मरूतों के सात प्रकार आयुध, आभरण, और दीप्तियों का वर्णन है । इसी प्रकार ऋ० ६ मं० ६६ सू० ६ म० और प्रथम मंडल १६४ सूक्त २ और ३ मंत्र में सात नदियों, सूर्य के सात घोड़ो और सात ऋषियों का वर्णन है । इस महत्व के कारण आज तक ऋषि सन्तान सात संख्या को विशेषमान देती आई है ।

सरोड़े में लड्डू दही आदि का उपयोग ।

सरोड़े में लड्डू दही आदि जो लाए जाते हैं उन से दो अभिप्राय होते हैं ।

(१) कन्या के पिता ने जो ढंगों में खाद्यपदार्थ वर के घर भेजे थे । उन को कन्या के खिलाने के लिए शकुन रूप में वरपिता भी कन्या को भेजता है । जैसे अन्य जातियों में बरात के खाने के पहले वरपिता कन्या को एक थाल में खाद्यपदार्थ छुहारे जुट्ट और रुपये एक लाल रूमाल से ढक कर भेज देता है । उसी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रकार खाद्यपदार्थों में से व पिता कन्या को सब पदार्थ भेज देता है।

(२) दूसरे वर की देखनी ढङ्गों में मनुष्यों द्वारा कन्या पक्ष की ओर से हो चुका। अब वर पक्ष की ओर से स्त्रियों द्वारा कन्या की देखनी लड्डूओं से मुख चोलन कराकर हो जाती है। देखनी का अभिप्राय यह होता है कि कन्यापक्ष के लोग वर को अच्छी तरह देख लें कि शास्त्रीय-आज्ञानुसार वर में जो गुण होने चहियें सब है या नहीं। इसी प्रकार वर पक्ष की स्त्रियें भी कन्या को देख लेती है। दूसरे विवाह के पूर्व देखने का यह भी अभिप्राय हो सकता है कि कोई दुष्ट मनुष्य विवाह के समय वर या कन्या का परिवर्तन (बदलना) तो नहीं कर लेता। जिस को विवाह के समय स्त्री पुरुष, कन्या और वर को पहचान लें कि यह वही है न जिनको हम ने पहले देखकर योग्य समझा था इस कारण सरोड़े का अङ्ग 'देखनी' भी बहुत उपयोगी प्रथा सिद्ध होती है।

वारा फेरा क्यों किया जाता है !

इस संसार में दीन, अनाथ, दरिद्र और अंगहीनजन भी समाज का एक अङ्ग होने के कारण उनकी पालाना करना भी मनुष्यों का एक धर्म है। इस बात को विचार कर पूर्वजों ने अनाथों को दान (खरायत) देना आवश्यक समझ कर इसको भी धर्म का अंग बना दिया था। जो आज तक भी वैसा ही चला

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आता है। यह दान सिर से लगवा कर दिया जाता है। सिर के चारों ओर धन घुमा कर देने के कारण उस धन को 'वाराफेरा कहते हैं।

दान और खरायत में भेद यह होता है कि दान तो केवल विद्वान् ब्राह्मणों को ही देना शास्त्रों में लिखा है। और खरायत चारों वर्णों में से कोई भी दीन, अनाथ दरिद्र और सेवक हो उसको भी देना लिखा है। नापित (नाई) भी एक सेवक होता है, और उस समय वही पास होता है इसलिये वही लेता है। अन्य सेवक पास होने पर लोग बांट कर दे देते हैं या अकेले सेवक को ही देते हैं। जैसे ढंगों में वर की देखनी के बाद वाराफेरा करके कन्यापिता वर के नफ़र (नौकर) को दे देता है। वैसे तो नापित वाराफेरा के अतिरिक्त लाग और उजरत भी ले लेता है।

प्रथा छन्ननियां

यह प्रथा विवाह से एक दिन पहले रात्री के समय स्त्रियों द्वारा की जाती है। कन्यापक्षवाली स्त्रियें एक नवोढ़ा (नई विवाही हुई) कन्या और उसके पति का ग्रंथी-बंधन करके, एक थाली में आटे का चारमुखिया दीपक तेल से जला कर और उस पर एक छलनी (छाननी) पीतल की ऊंधी कानों या लकड़ियों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के सहारे रखकर किसी सेवक या सेवकानी के हाथ उठवा कर लड़के वालों के घर जाती हैं । वहां दोनों पक्ष की स्त्रियें गीत गाती हैं और दोहे (डोहे) देती हैं । फिर लड़के के घर की प्रदक्षिणा करके आती हुई किसी दरजी को कन्या के लिये विवाह के समय पहनने के शुद्ध वस्त्र (चिल्ली चोला) सीने के लिये दे आती हैं, जो दूसरे दिन सिला कर ले आती हैं । (आजकल चिल्लीचोले के स्थान में लाल साड़ी और कमीज से ही काम चला लिया जाता है) । फिर अपने घर आकर छन्ननियां भरने वाले पति पत्नी (जिसका ग्रंथीबंधन किया था) को शकुन के लिये मुखचोलन करती हैं । छन्ननियां भरने वाले पति पत्नी को भोजन (रोटी)की १३ या २५ बड़ी पूरियें पहले ही दे दी जाती हैं, उनके लेने पर यह ज्ञान किया जाता है कि उन्होंने छन्ननियां भरना स्वीकार कर लिया है । दूसरे उनका सत्कार भी हो जाता है ।

छन्ननियां नाम कैसे हुआ ?

इस प्रथा का नाम "छलनियां" से बिगड़ कर "छन्ननियां" हुआ है, जिसका अर्थ "छलनी वाली प्रथा" होता है । आरती उतारने के लिये थाली में दीपक जला कर ले जाया जाता है । वायु से बुझ न जाए इसलिए ऊपर छलनी रख दी जाती है । इस प्रथा में विशेष रूप से छलनी नजर आने के कारण इस प्रथा को छन्ननियां कहा जाता है । वास्तव इस प्रथा में मुख्य दो

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

काम होते हैं। (१) वर की आरती उतारना। (२) घर की प्रदक्षिणा करना। समय के प्रभाव से आजकल वर की आरती तो उतारी नहीं जाती खाली उस चार मुखिया दीपक को लड़के वालों के घर तक ले जाकर वापिस लाया जाता है। और वर की प्रदक्षिणा के स्थान पर लड़के के घर की ही प्रदक्षिणा कर ली जाती है। किन्तु पूर्वकाल में तो वर की आरात्री (आरती) उतारी जाती थी और प्रदक्षिणा की जाती थी

वर की आरती उतारना और प्रदक्षिणा करना

शास्त्रों में आरती और प्रदक्षिणा करने का विशेष फल लिखा है। "षोड़षोपचार पूजन" में आरती उतारना भी एक अंग है। जो देवता और छः पूज्य पुरुषों के पूजन समय किया जाता है। 'पारस्कर गृह्यसूत्र' में लिखा है।

,षड्र्घ्याः भवन्ति—१ आचार्यः। ऋत्विक्। ३ वैवाह्यः। ४ राजा। ५ प्रियः। स्नातकः।

अर्थात् छः पूजनीय होते हैं। १ आचार्य (उपनयन कराकर वेद पढ़ाने वाला), २ ऋत्विक् (श्रौतस्मार्त्त कर्म में वरण किया हुआ) ।३ वर, ४ राजा, ५ मित्र, ६ स्नातक। इनमें वर की भी गणना है, इसलिये वर भी पूजनीय है। विशेष पूजन तो विवाह के समय होता है इस समय आरती ही उतारी जाती है। आरती उतारने के विषय में अथर्ववेद में लिखा है कि—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ऊर्जे त्वा बलाय त्वौजसे सहसे त्वा ।
अभिभूयाय त्वा राष्ट्रभृत्याय पर्यूहामि शतशारदाय

अथर्व० का० १६-३७-२

अर्थ—रस के लिये बल के लिये, ओज के लिये, साहस के लिये, दबाव के लिये, राष्ट्र की पुष्टी के लिये, सौ वर्ष जीने के लिये हे ज्योतिरूप अग्निदेव ! तुम्हें मैं चारों ओर से उठाता हूं ।

इस मंत्र से सिद्ध होता है कि ज्योति रूप अग्नि को उठा कर तेज लेने से बलादि प्राप्त होते हैं, और दिव्य चमक से चारों दिशाएं चमक जाती है । ज्योति क्या है जिससे आरती की जाती है इसके विषय में यजुर्वेद के तृतीय अध्याय के ९ मंत्र में लिखा है कि जो ज्योति है वह अग्नि देवता है सूर्य और वर्च (तेज) है यथा—

अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा । सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा । सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहाः ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा ॥

विज्ञान (साईन्स) के आधार पर भी सिद्ध होता है कि जो मुख के चारों ओर परिवेष अर्थात् चमक या किरणों का घेरा, जो अवतारों या महात्माओं के चित्रों में मुख के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चारों ओर रोशनी या किरणों का बना होता है वह सत, रज, तम तीन गुणों के प्रभाव से घिरा रहता है। जो कि सत्वगुण प्रधानावस्था में मनुष्य शान्ति स्वरूप नजर आता है। रजोप्रधान में क्रोधित स्वरूप नजर आता है। और तमोगुण प्रधानावस्था में मनुष्य भयानक नजर आता है। वही परिवेष आरती उतारने से सतोगुणी होता है। और उसके रज तथा तमगुण का विनाश होता है। यदि परिवेष रूप बिजली जो आकश में मुख के चारों ओर घेरा बनाए रखती है। सत्वगुण प्रधान हो तो मन सात्विक होता है। राजस या तामस होने पर मन भी राजस और तामस हो जाता है, जो आत्मा को शान्ति देने वाला नहीं होता। इस अवस्था में मन स्थिर नहीं रहता। और स्थिर न रहने पर अभीष्ट कर्म की सिद्धि नहीं होती।

इस लिए मन सात्विक करने के लिये आरती उतारना आवश्यक है। पूर्व समय में राजाओं और महापुरुषों की आरती उतारी जाती थी जिस का वर्णन पुराणों में विशेषतया आता है। देवताओं की आरती उतारने से उस मूर्ति में से राजस और तामस गुणों को निकाल कर सात्विक गुण प्रधान किया जाता है। जिन मूर्त्तियों में राजस तथा तामस गुण प्रधान होता है; उस में साधक (पूजा करने वाले) का मन ही नहीं लगता। और मन के न लगने से अभीष्ट फल नहीं मिलता उल्टे बुरा फल मिलने की संभावना रहती है। सात्वगुण प्रधान मूर्त्तियों में मन शीघ्र ही फल देता है, इसलिये मूर्त्तियों की भी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आरती उतारी जाती हैं ।

आरती घृत, तेल, मुशककाफूर आदि से उतारी जाती हैं। तेल से उतारना मध्यम हैं। दूसरे प्रदक्षिणा के विषय में जा मकान की प्रदक्षिणा की जाती है, वह वास्तव में वर की प्रदक्षिणा करना हैं। क्योंकि अथर्व वेद में प्रदक्षिणा के विषय में लिखा हैं कि—

यथेमे द्यावापृथिवी सद्यः पर्यैतिसूर्यः ।
एवा पर्यैमि ते मनो यथा मां,
कामिन्यसो यथा मन्नापगा असः ।

अथ० ६। ८। ३।

जैसे सूर्य झट द्यौ और पृथिवी के चारों ओर घूम जाता है इस प्रकार मैं भी तेरे मन के चारों ओर घूम जाऊं जिस से तू मेरे से कभी अलग न हो ।

इस से स्पष्ट हैं कि वर के मन को कन्या के मन में लगाने के लिए प्रदक्षिणा करना एक मुख्य विधि है, जिस के द्वारा आपस में प्रेम बढ़ कर अटूट संबन्ध पैदा हो जाए, इसलिए प्रदक्षिणा की जाती है। कन्या के प्रतिनिधि रूप नवोढ़ा (छन्नानियों वाले लड़का लड़की) वर की प्रदक्षिणा कर लेते हैं। दूसरे पूजन में प्रदक्षिणा करना एक अंग हैं। जब देवताओं का पूजन किया जाता है, तब प्रदक्षिणा भी की जाती हैं। मन्दिरों में मूर्त्ति के बाहिर प्रदक्षिणा भी इसी कारण बनी रहती हैं। शास्त्रों में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

" प्रदक्षिणा करने से पाप नष्ट हो जाते हैं " लिखा है ।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणायां पदे पदे ॥

अर्थात्—जन्मजन्मान्तरों में किये हुए पाप प्रदक्षिणा करने से कदम कदम पर नाश हो जाते हैं ।

भ्रमात्क यह विचार अपने दिल में नहीं लाना चाहिये कि " देवताओं की प्रदक्षिणा करने से तो ठीक पाप दूर हो जाते हैं, परन्तु मनुष्य की प्रदक्षिणा करने से पाप कैसे दूर हो सकते हैं । इसका उत्तर यह है, कि वर को विष्णु रूप मान कर उस की पूजा आरती और प्रदक्षिणा की जाती है । इसलिए कोई दोष नहीं रहता और प्रदक्षिणा करना विशेष फलदायक हो जाता है। शास्त्रों में लिखा है कि वर विष्णु समान होता है जैसे कि—

दाताऽहं वरुणो राजा द्रव्यमादित्यदैवतम् ।
वरोऽसौ विष्णुरूपेण प्रतिगृह्णात्वयं विधिः ॥

अर्थात्—दाता (यजमान) वरुण के समान है, द्रव्य (कन्या) आदित्य के समान हैं, ब्राह्मणवर विष्णु के समान है, दान देने लेने में यह विधि है । ब्राह्मण से अतिरिक्त वर रुद्र के समान होता है ।

मकान की प्रदक्षिणा करना ऐसे प्रचलित हुआ ज्ञात होता है जैसे कि समय के प्रभाव से वर प्रदक्षिणा कराने के लिए लज्जा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करता हो, और स्त्रियों में न आता हो, या उस समय घर पर न हो तब स्त्रियें उसके घर की ही प्रदक्षिणा कर लेती होंगी। कुछ समय बाद स्त्रियों और पुरुषों को वर की प्रदक्षिणा करना ही भूल गया होगा, और इसी को ही विधि मान कर वर के घर की ही प्रदक्षिणा करना विधि समझा गया होगा जैसे कि आजकल शहरो में किया जाता है। ग्रामों में तथा पूर्व प्रांत में अब भी आरती और प्रदक्षिणा स्त्रियों द्वारा घोड़ी आने पर की जाती है। आरती करना भी इसी कारण ही भूल गया होगा प्रतीत होता है। वास्तव में आरती करना और प्रदक्षिणा करना यह वेदानुकूल और शास्त्रानुकूल ही है।

प्रथा पीढ़ी पूजा

यह प्रथा विवाह के दिन या एक दिन पहले जिस दिन शान्ति (सैंत) करनी होती है उसी दिन सूर्योदय से पहले कन्या ही करती है। निम्नलिखित सामान रात्रि को ही तय्यार रखना चाहिए—

१ पीठासन [पीढ़ी]। १ चटाई। १ छाज। १ मन्थनी (कुड़मधानी)। १ मूसल (मुङ्गली)। १ ऊखल (उखली)। १ हल पंजाली (जो लकड़ी के छोटे से बने होते हैं)। सामग्री पूजन। १ खोपा। ७ छुहारे।

प्रातःकाल पुरोहित कन्या को साथ लेकर चतुर्मार्ग (चौरस्ता)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में गणपत्यादि ग्रहों का पूजन करा कर तथा पीढ़ी आदि वस्तुओं की प्रतिष्ठा करा कर मङ्गल सूत्र बांध देता है। गौरी पूजन के बाद गौरीदेवी के निमित्त १ खोपा (गरी गोले का आधा हिस्सा) ७ छुहारे और दक्षिणा सङ्कल्प करा देता है। इसके बाद घर आकर जहां छन्ननियां रखनी हों वहां चटाई बिछा कर कोने में सब सावान पीढ़ी के ऊपर छाज में रख दिया जाता है बस इसी का नाम पीढ़ी पूजा है।

उपयोगिता

कई लोग इस प्रथा को निरर्थक और पोपलीला हीं समझते हैं, यह उनकी भूल है क्योंकि वेदों और पुराणों में इस का मूल कुछ रूपान्तर से मिलता है, जैसे कि अथर्ववेद में इसका मूल इस प्रकार है, जो कि मैं आगे दिखाने का यत्न करूंगा।

पीढ़ी पूजा, गौरी पूजन होता है

पीढ़ी पूजा वास्तव में पीढ़ी पूजा नहीं गौरी पूजन है। जो कि रात्री के अन्त्य भाग में करने से अभीष्ट सिद्धि और सौभाग्य देता है। "गौरी देवी" कुल देवियों में मुख्य देवी है। सब कर्मों में इस का पूजन होता है। और वह देवियें यह हैं—१ गौरी २ पद्मा ३ शची ४ मेधा ५ सावित्री ६ विजया ७ जया ८ देवसेना ९ स्वधा १० स्वाहा ११ मातरः १२ लोक-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मातरः १२ धृतिः १४ पुष्टिः १५ तुष्टिः १६ आत्मकुल देवता । इनमें गौरी पूजन मुख्य है । मातृकाओं के पूजन के विषय में तथा मातृकाओं से कल्याण की कामना करने के लिये अथर्ववेद में इस प्रकार लिखा है—

मा नो मेधां मा नो दीक्षां मा नो हिंसिष्ट यत् तपः ।
शिवा नः शं सन्त्वायुषे शिवा भवन्तु मातरः ॥

अथर्व० १६–४०–३ ।

अर्थ—तुम मत हानि पहुँचाओ हमारी मेधा (बुद्धि) को मत हमारी दीक्षा को, मत हमारे तप को । वे हमारी आयु के लिये शिव हों माताएं हमारे लिए शिव (कल्याणकारी) हों ।

सामान्यतया तो सभी मातरों का पूजन होता ही है, परन्तु विशेष फल की इच्छाओं में विशेषतया उसी मातर का पूजन किया जाता है जो जिस फल के देने में समर्थ हो । क्योंकि कन्या को सौभाग्य और पति कुल में मान पाने की इच्छा होती है, इसलिये 'गौरीदेवी' जो इस कामना को पूर्ण करती है, उसी का पूजन किया जाता है । स्त्रियों के लिए गौरी पूजन करना पुराणों में विशेष रूप से पाया जाता है, नारद पुराण और स्कन्दपुराण में लिखा हैं सन्तान की और सौभाग्य की कामना वाली स्त्री सर्वदा गौरी पूजन के बाद यह प्रार्थना करे—

गन्ध पुष्पाक्षतैर्गौरीं पूजयामास मन्त्रतः ।
नमः शिवायै शर्वाण्यै सौभाग्यं संततिशुभाम् ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हे गौरि ! गन्ध पुष्प और चावलों से मैं पूजन करती हूँ तू मुझे सौभाग्य और संतान को दे । पुस्तक के विस्तार भय से श्लोक तथा अधिक भाव भी नहीं लिखता । पुराणों में गौरी-पूजन स्पष्ट लिखा है, मार्कण्डेय पुराण में गौरी देवी को नौ देवियों में आठवीं महागौरी नाम से लिखा है ।

महा गौरीति चाष्टमम् ।।

गौरीदेवी के पूजन तथा स्तुति करने से मंगल काम होते हैं यथा—

सर्वमङ्गल माङ्गल्ये ! शिवे ! सर्वार्थसाधिके !
शरण्ये ! त्र्यम्बके गौरि ! नारायणि ! नमोस्तुते ।।

तुम सब मंगलों की मूल भूता हो तुम कल्याण रूपिणी हो । तुम सब प्रकार की सिद्धि प्रदान करने में समर्थ हो, हे शरण्ये ! त्रिनयनि ! गौरि नारायणि ! आपको प्रणाम हो ।

भागवत पुराण में रुक्मणी विवाह के समय श्रीकृष्ण भगवान् ने रुकमणी को गौरीदेवी के मन्दिर में पूजन करते हुए ही ग्रहण किया था । रामायण में श्रीरामचन्द्र जी का श्री सीता जी से प्रथम मिलन भी श्री गौरी मंदिर में हुआ था । इससे यह सिद्ध होता है कि त्रेता और द्वापुर में भी गौरी पूजन होता था । विवाह के पूर्व कन्या को गौरी पूजन अवश्य करना चाहिये ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चौराहे में पूजन करना

ऊपर लिखे प्रमाणों से गौरी पूजन सिद्ध होता है। तंत्र शास्त्रों में तो चौराहे में अनेक कर्म करने लिखे हैं। विशेष कर बलीकर्म तो चौराहे में ही होता है गौरी पूजन रात्रि के अन्त्य भाग होने पर बलिकर्म चौराहे में ही करना लिखा है। जैसे कि "मंत्रमहोदधि" में लिखा है कि—

गृह्णयुग्मं शिवा स्वाहा बलिमंत्रोऽयमीरितः।
दद्यान्नित्यंबलिं तेन अंत्यरात्रे चतुष्पथे ॥

अर्थ—शिवा अर्थात् गौरी की बली मंत्रों द्वारा नित्य रात्रि के अंत्य भाग में चौराहे में जा कर देवे ॥

इसलिये कन्या सौभाग्य की कामना करती हुई रात्रि के अंत्य भाग में चौराहे में जा कर गौरी का पूजन कर के बलीरूप एक खोपा ७ सात छुहारे और दक्षिणा संकल्प कर के देती है। अथर्व वेद में भी चौराहे में कर्म करना लिखा है जिस के करने से पाप दूर हो जाते हैं। जैसे—

योनः पाप्मन् न जहासि तमुत्वा जहिमोवयम्।
पथामनु व्यावर्तनेन्यं पाप्मानु पद्यताम् ॥२॥

अ० ।६।२६।२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जो तू हे पाप हमें नहीं छोड़ता है उस तुझ को हम मार्गों के अलग २ होने वाले प्रदेश (चौराहे) में छोड़ते हैं पाप दूसरे किसी के पीछे जाए ।

पीढ़ी पूजन नाम क्यों पड़ा ?

क्योंकि गौरी पूजन प्रत्यक्षरूप में अनभिज्ञ लोगों को मालूम नहीं होता वह तो इस समय पीढ़ी का ही पूजन देखते हैं इसलिये गौरी पूजन को ही पीढ़ी पूजा समझते हैं, और इसी से ही इस का नाम पीढ़ी पूजा पड़ गाया है। वास्तव में गौरी पूजन ही है । पञ्जाब से इतर विशेषतया पूर्व प्रांत में गौरी पूजन के साथ उस दिन (गौरियों अर्थात् सौभाग्यवती यथाशक्ति ब्राह्मणियों) को भोजन कराया जाता है और वस्त्र तथा दक्षिणा दी जाती हैं पञ्जाब प्रान्त में इस प्रथा का लोप हो गया है ।

कौतुकागार (छन्ननियां) का स्थान कैसा हो ?

घर में आ कर दक्षिण और पश्चिम दिशा के मध्य अर्थात् कुच्छ नैऋत्य कौण में उत्तराभिमुख कौतुकागार (छननियों का स्थान) बनाना चाहिए कौतुकागार किसप्रकार बनाना चाहिये इस विषय में पराशर जी इस प्रकार लिखते हैं—

यज्ञोत्सवविवाहेषु विधायादौ च मंडपम् ।
धर्मदिक् पश्चिमे भागे कौतुकागारमुत्तमम् ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लेपितं शुद्धमृदया शुद्धये च सुशोभनम् ।
अधिष्ठितं सुकुम्भेन निश्छिद्रेण दृढेनच ।
चतुराननदीपेनाधिष्ठितेन सुशोभना ।
घृतेन तिलतैलेन ज्वलता वा दिवानिशम् ।
विधातृ प्रतिमां तत्र कन्या प्रयतमानसा ।
ब्रह्मचर्यव्रतवती स्नाता चैकाग्रमानसा ।
एकवस्त्रा च स्वमनः सयम्यालीसमन्विता ।
ध्यायेच्चतुर्मुखीमष्टभुजां च कमलासने ।
तिष्ठन्तीं कर्म्म-फलदां समर्थां योगसेविताम् ।
रूप-यौवन-सौभाग्य लब्धये यशसे तथा ।
गृहाधिपत्य-सिद्ध्यर्थं वश्याय गृहपुंसे ।
सर्वविघ्नविनाशाय "विवाहे मगलाय च" ।
पितुश्च श्वशुरस्यापि यशसे चार्थसिद्धये ।
विवाहकौतुकं हस्ते बिभ्रती कन्यकावृता ।
कौतुकागारमध्यासेदित्याद्याथर्वणी श्रुतिः ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भावार्थ—यज्ञ' उत्सव, विवाह इन सब में पहले मण्डप बना कर दक्षिण और पश्चिम के मध्य में उत्तम कौतुकागार बनावे। यह कौतुकागार गोवर और शुद्ध मिट्टी से लिपा हो, उस में छिद्र से रहित घट और चार मुखिया दीपक जो कि घृत अथवा तिलों के तेल से भरा हो दिन रात जलता रहे। इन दोनों को विधि पूर्वक स्थापन करे। और कन्या स्नानकर पवित्र मन वाली, एक वस्त्र से संयुक्त सखियों के साथ सौभाग्य यश और गृहाधिपति को प्रसन्न करने तथा सर्व विघ्नों को दूर करते हुए, विवाह में मंगल के लिए और पिता तथा श्वशुर को सुख प्राप्ति के लिये कमलासन में स्थित अष्टभुजी दुर्गा (गौरी) का ध्यान करे। यह आथर्वणी श्रुति है॥

कौतुकागार का नाम छन्नानियां कैसे हुआ?

ऊपर लिखे पराशर जी के वचनों से सिद्ध होता है कि कौतुकागार अर्थात् छन्ननियां अवश्य बनानी चाहिये। कौतुकागारस्थान का नाम छन्ननियां का स्थान इसलिए हुआ कि एक तो कौतुकागार संस्कृत शब्द कठिन होने से स्त्रियों को स्मर्ण नहीं रहता दूसरे आरती उतारने वाली थाली जिस पर छलनी रक्खी हुई होती है वह भी इसी स्थान पर ही रक्खी रहती है छाननी प्रसिद्ध होने के कारण "कौतुकागार" के स्थान पर "छन्ननियों

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

का स्थान" प्रसिद्ध हो गया मालूम होता है ।

अथर्व वेद में कौतुकागार

ऊपर पराशर जी के अन्तिम वचनों में लिखा है । "कौतुकागारमध्यासेदित्याद्याथर्वणी श्रुतिः" । अर्थात् कौतुकागार (स्त्रियों के बैठने का स्थान) बनाने में आथर्वणी श्रुति प्रमाण है । जब हम अथर्ववेद में देखते हैं तो इस का मूल मिलता है, मगर जैसे पराशर जी ने स्पष्ट लिखा है वैसे नहीं, रूपान्तर में स्त्रियों के बैठने का स्थान और प्रार्थना के विषय में श्रुति में लिखा है जैसे कि—

हविर्धानमग्निशालं पत्नीनां सदनं सदः ।
सदो देवानामसि देवि शाले९ ॥। ३ । ७ ॥
यस्त्वा शाले प्रतिगृह्णाति येन चासि मिता त्वम्
उभौ मानस्य पत्नि तौ जीवतां जरदष्टी ॥९ ३ ९॥

अर्थ—हविर्धान, अग्निगृह, पत्नियों (स्त्रियों) के बैठने का घर स्थान (कौतुकागार) और देवताओं का घर (मन्दिर) हे देविशाले ! (गृहअधिष्ठात्रि देवि) तू ही है ।

जो तुझे स्वीकार करता है और जिस से तू बनाई गई है, हे मान की पत्नि ! वे दोनों (वर कन्या) बुढ़ापे को पहुँचने वाले हो कर जीयें ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इन मन्त्रों से सिद्ध होता है कि स्त्रियों के बैठने का स्थान भिन्न बनाना चाहिये और वहां शाला अधिष्ठात्रीदेवी की प्रार्थना भी करनी चाहिये। सो प्रार्थना करने के लिये अष्टभुजी देवी की मूर्त्ति बना कर कलशों के ऊपर कौतुकागार में पूजन करना पराशर जी ने भी ऊपर लिख दिया है—

गृहाधिपत्य सिद्धयर्थकस्याय गृहपुष्टये। इत्यादि अर्थात गृहाधिपति (घर के अधिष्टात्रादेवता) को सिद्ध अर्थात् प्रसन्न करने के लिये और घर की पुष्टि के लिए कौतुकागार में प्रार्थना करनी चाहिये।

पीड़ी छाछ ऊखल आदि के विषय में

पीड़ी, छाज आदि का पूजन इस लिए होता है कि कोतुकागार में जिन वस्तुओं को स्थापन कर के कार्य साधन करना है उन की प्रतिष्ठा कर ली जाए। क्यों कि गौरी पूजन के समय गणपति पूजन भी किया जाता है इसलिए गणपति पूजन के साथ उन वस्तुओं की प्रतिष्ठा तथा उन के अधिष्ठात्री देवों का भी पूजन कर लिया जाता है ताकि घर जा कर फिर पुनः गणपति पूजन न करना पड़े।

यज्ञ एक बड़ा पवित्र कर्म होता है और इसमें जिन वस्तुओं का उपयोग होता है, वह बड़ी पवित्र और शुद्ध होनी चाहियें। इस लिए विवाह एक यज्ञ रूप होने के कारण इस में जो स्थाली-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाक, पुरोडाश और लाजा (फुल्लियें) हवन के लिये आवश्यक हैं, वह सब कन्या को अपने हाथ से बनानी चाहियें, पहले समय में ऐसा ही होता था। समय के प्रभाव से कन्या का स्वयं बनाना तो कहां रहा घर में भी नहीं बनाई जातीं, बाजार से ही मोल ले ली जाती हैं। जो अपवित्र भी हो सकती हैं। क्योंकि सब शकुन के काम कौतुकागार में ही होने चाहियें इसलिए यह सब छाज आदि साधन वहीं पर रक्खे जाते हैं। यद्यपि आजकल लाजा आदि घर पर नहीं बनाए जाते तो भी उस समय की याद के लिये आज भी सब साधन रख दिए जाते हैं। जैसे कि— पीठासन (पीढ़ी) कन्या के बैठने के लिए। धान को कूटने के लिए ऊखल और मूसल। धान को शुद्ध करने के लिए छाज, सखियों के बैठने के लिए तथा विवाह हो जाने के बाद वर और कन्या के बैठने के लिए चटाई जिस को कि पारस्करगृह्यसूत्र में भी लिखा है—

पश्चादग्नेस्तेजनीङ्कट वा दक्षिणापादेन,
प्रवृत्योपाविशति।

अग्नि के पश्चिम में वस्त्र से लिपटे हुए तिनकों को, या, चटाई को दक्षिण पाओं के नीचे रख कर बैठे।

पंजाब में तो तिनके रक्खे जाते हैं। क्योंकि चटाई भी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बैठने के लिये लिखी है और विवाह हो जाने के बाद कन्या को अनुगुप्तागार या कौतुकागार में मृगचर्म पर बैठाने के लिए विधि लिखी है, इसलिए ग्राह्य होने से मृगचर्म के स्थान में चटाई से ही काम लिया जाता है। हवनार्थ घृत बनाने के लिए मंथनी (मथानी) होती है। अपने हाथ से पवित्र भूमि तथा जल द्वारा धान्य और गोधूम (गेहूँ) पैदा किये हैं इस बात को दिखाने के लिये हल पंजाली रक्खी जाती है। हल पंजाली के विषय में कई लोग कहते हैं कि जैसे हल पंजाली बैल के गले में पड़ जाती है और वह उसे खेंचता है, इसी प्रकार गृहस्थरूपी हल पंजाली तुम्हारे गले में पड़ गई है और तुमने जीवन भर इसे निभाना।

लाजा अपने हाथ से बनाने के लिए छाजादि की आवश्यकता

यद्यपि आज कल विज्ञान द्वारा मशीने बन गई हैं तो भी अपनी संस्कृति स्थिर रखने के लिये यज्ञों में इन ही साधनों से काम लेना चाहिए क्योंकि अथर्व वेद में इन साधनों से काम लेना ही लिखा है। जैसे—

यान्युलूखलमुसलानि ग्रावाण एव ते ॥१५॥
शूर्पं पवित्रं तुष ऋजीषाभिषवणीरापः ॥१६॥

अ० ९। ६। १५। १६॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जो ऊखल मूसल हैं वे ग्राव ही हैं ॥ १५ ॥ शूर्प (छाज) (सोम का) पोना, तुष ऋजीव (सोम का फोग) है। जल (साम) निपीड़ने के जल हैं ॥ १६ ॥ इत्यादि विस्तार भय से अधिक नहीं लिख रहा यहां पर यज्ञीय पात्रों और साधनों का वर्णन है।

पीड़ी पूजा में मुख्य गौरी पूजन होता है। और साथ में गौणरूप से कौतुकागार निर्माण तथा हवन के लिए घृत, लाजा, स्थालीपाक, और आटा आदि द्रव्य निर्माण किये जाते हैं। क्यों कि अकेली कन्या से यह सब काम नहीं हो सकते इस लिये सहायतार्थ सखियें तथा सौभाग्वती स्त्रियें भी साथ बैठ कर इस कार्य में सहायता करती थीं। इसलिये आज तक भी कन्या के पास सखियें बैठा करती हैं।

प्रथा फुल्लकढ़ाई मांयां शान्ति और मंडल।

यह प्रथाएं चारजाति क्षत्रियों में विवाह के दिन या एक दिन पहले की जाती हैं। यह ४ चार कर्म हैं। १ फूलकढ़ाई, २ मांइयां, ३ शांत और ४ मंडल। पहले कर्म में पुरोहित गणेशादि का पूजन कराकर तणी (चप्पनियों) की प्रतिष्ठा करके

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

खूंटी में बांध देता है । इसके बाद हलदी मंजिष्ट (मजीठ) की प्रतिष्ठा करके पांच या सात सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा पत्थर से शिला पर पिसवाता है । फिर दो मट्टी के कुम्भों (कुज्जों) की प्रतिष्ठा करके बीच में पिसी हलदी तथा नापित द्वारा कढ़ाई में तले हुए मैदे के सात सात चौकोन फूल और सात सात गोल टिकड़े (छोटी मट्ठियें) डाल कर चपनियों से आटे के साथ मुख बन्द करके कुल देवता के पास रख देता है । छाज में १। सवा पाव या २॥ पाव गेहूँ और गुड़, मौली (जो चक्की को बांधी जाती है) तथा ५ पांच पैसे (जो पीसनेवाली लड़कियों के होते हैं) रखकर प्रतिष्ठा कराने के बाद लड़कियों द्वारा चक्की में पिसवा लेता है । इस आटे को 'चक्की चुङ्ग' का आटा कहा जाता है और हथलेवों में इसी आटे का उपयोग होता है । इस कर्म को फुल्ल कढ़ाई कहते हैं । इसके बाद दूसरा कर्म माइयां की जाती हैं । इसमें तेल और उद्वर्तन (वटना) की प्रतिष्ठा कराकर कन्या के सिर में तेल घास के कूर्च (कूची) से कन्या के सम्बन्धि एक २ पैसा डाल कर लगाते हैं, और उद्वर्तन हाथ में लगाते हैं । इसके बाद मांइयों का कपड़ा (सालू) और गरीछुहारा (जो नानकों की ओर से आता है) आंचल (झोली) में डाल दिया जाता है, और कुछ कुलदेवता तथा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पितरों के निमित्त हाथ से लगवा लिया जाता है । इस कर्म को मांइयां कहते हैं । इसके बाद तीसरा कर्म शान्ति की जाती है, जिसमें नवग्रह पूजन होता है और रक्षाबंधन (कंगना) तथा हवन होता है । इस शान्ति कर्म को करने के बाद कन्या को पहनाने के लिये हाथी दांत का चूड़ा चावलों में रखकर दक्षिणा सहित मातुल (मामा) संकल्प करके कन्या को देता है । और कन्या एक छोटी चूड़ी, चावल और दक्षिणा गौरी देवी के निमित्त सौभाग्य प्राप्ति के लिये संकल्प करके पुरोहित को दे देती है । इसके बाद चूड़ा कन्या के हाथों में पहना दिया जाता है । तथा चूड़े के साथ जो एक २ लोहे की चूड़ी पहनाई जाती है उसके साथ कलीरे (कलीरा खोपा और कौड़ियों से बनाया जाता है) बांध दिये जाते हैं । कई लोग चांदी की डोरीयें और चांदी के कलीरे भी बांधते हैं । इसके बाद चतुर्थ कर्म मंडल किया जाता है । मंडल में ग्रहों की बलियें आटे के टिकड़ों पर गुड़ोदन (मरूंड़ा) या उबले हुए गोधूम (घुगनियां) रखकर दी जाती है । और १ एक थाल में सात स्थान पर दो दो रोटियें (धगड़ियें) पके हुए मूंग और चावल तथा एक २ पैसा दक्षिणा का रख कर पत्तलें बनाई जाती हैं । फिर कन्या की माता कलश का पूजन करके जल धारा से इन पत्तलों के चारों ओर मंडल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गोलाकार रेखा) बनाती है। कन्या के सिर ऊपर लाल कपड़ा (सालू) लड़कियों द्वारा फैला दिया जाता है। फिर कन्या के हाथ से रोटी के टुकड़े हाथ से लगवा कर ७ सात बार फैलाए हुए कपड़े में डाल दिये जाते हैं। १ पत्तल कुल देवता की, १ ग्रहों की और १ पितरों की हाथ से लगवाई जाती है। १ पत्तल नाई, १ भाट और १ घर की वृद्धा स्त्री को दे दी जाती है। इसके बाद एक पत्तल कन्या की झोली में डाल दी जाती है। रोटी के टुकड़ों सहित फैलाया हुआ सालू कन्या को झोली में डाल दिया जाता है। इस कर्म को मंडल कहते हैं। ऊपर लिखी हुई सारी प्रथाएं वर से भी कराई जाती है। भेद हाथी दांत के चूड़े का पहनाना है बाकी सारा कर्म किया जाता है। पूर्व समय में लोग फुल्ल कढ़ाई मायां विवाह से सात पांच या तीन दिन पहले करते थे। अब भी गाओं के लोग बुआही जाती के ऐसा ही करते हैं। विशेषतया विवाह से तीन दिन पूर्व ही "हत्थभरा मांइयां" करते हैं शन्ति को वह भी विवाह के दिन ही करते हैं। चारजाति क्षत्रिय समय की लाघवता के लिये शन्ति के साथ ही फुल्लकढ़ाई, मायां करते हैं।

इस कर्म का फुल्लकढ़ाई मांइयां नाम क्यों हुआ ?

इस प्रथा का नाम "फुल्ल कढ़ाई माइयां" इसलिये पड़ा है

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कि इसमें कुज्जों में डालने के लिये नापित द्वारा मैदे के चार कोन फूल कढ़ाई में बनवाए जाते हैं। और वर तथा कन्या को मांइयां डाला जाता है, इस लिये प्रत्यक्ष रूप में "फूल और कढ़ाई देखने और मांइयां करने के कारण इस कर्म का नाम "फुल्लकढ़ाई मांइयां" पड़ गया ज्ञान होता है।

फुल्ल कढ़ाई वास्तव में अंकुरार्पण है

फुल्लकढ़ाई प्रथा में तणी प्रतिष्ठा कुज्जों का बंद करना हलदी का पीसना आदि जितने कर्म हैं सभी अंकुरार्पण कर्म में करने लिखे हैं। पूर्व तान्त्रिक समय में अंकुरार्पण विशेष रूप से किया जाता था, मगर जब से तन्त्रकर्मों का लोप होने लगा और तान्त्रिक लोग कम हो गये तब से यह कर्म गौण रूप हो गया। इस कर्म में जो कार्यरूप अर्थात् कुज्जों का बन्द करना, तणी-प्रतिष्ठा, हरिद्रा का पीसना आदि कर्म किये जाते थे, वह सभी शकुन रूप में अब तक भी किये जाते हैं। हां इतना अवश्य भेद हो गया है कि अंकुरार्पण में जो मुख्य कर्म बीजवन था उसका तो लोप ही हो गया है। मगर तो भी उसका संकेतमात्र अर्थात् अंकुरार्पण में जो ग्राम के बाहिर उत्तर दिशा में मट्टी बीज बोने के लिये लाई जाती थी वह अब भी विवाह के दिन नदी या कुम्हार से लाई जाती है, मगर बोई नहीं जती।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शास्त्रों में अंकुरार्पण कर्म,, को "अंकुरारोपण कर्म", भी कहा है। यह कर्म विवाहादि मंगल कर्मों में करना सिद्धान्त-शेखर में लिखा है।

प्रतिष्ठायां च दीक्षायां स्थापने चोत्सवे तथा ।
संप्रोक्षणे च शान्त्यर्थं विवाहे मौञ्जिबन्धने ।
सर्वमंगलकार्य्येषु कारयेदङ्कुरार्पणम् ॥

अर्थ—प्रतिष्ठा, दीक्षा, शिलास्थापन, उत्सव, प्रोक्षण, शन्तिकर्म, उपनयन और विवाह तथा सर्वमंगल कर्मों में अंकुरार्पण कर्म करना चाहिये। इसी प्रकार शारदातिलक संहिता, और महाकपिल पंचरात्र, में भी लिखा है। केवल तन्त्र शास्त्रों में अंकुरार्पण कर्म करना ही नहीं, अन्य सूत्रग्रंथों में अर्थात् पारस्करगृह्य सूत्र में विवाह के पदार्थक्रम में लिखा हैं—

कर्तव्यं मंगलेष्वादौ मङ्गलायाङ्कुरार्पणम् ।

मंगल कर्मों में मंगल प्राप्ति के लिए अंकुरार्पण कर्म करना चाहिए। इसी प्रकार शौनक जी और बृहस्पति जी का भी वचन है। आपस्तम्बगृह्यसूत्र में लिखा है कि—

तथा मङ्गलानि ॥१४॥ आवृतश्चास्त्रीभ्यःप्रतीयेरन् ॥१५॥

आप० गृ० खंड २। प्रथ० पटल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विवाह में मङ्गलकर्म सामन्त्रिक (अंकुरार्पण) अमन्त्रिक मांइयां और मंडलादि बलि कर्म सब वर्णों की स्त्रियों द्वारा करना चाहिए। इस सूत्र के अनुसार चार जाति क्षत्रिय "मांइयां और मंडलादि बलिकर्म" स्त्रियों द्वारा ही कराते हैं।

जैसा कि मैं पूर्व लिख चुका हूँ कि पूर्व समय में यह फुल्ल-कढ़ाई मांइयां विवाह से पहले तीन, पांच सात और नौ दिन हुआ करती थीं। वैसे ही यह अंकुरार्पण भी मंगलकर्म (विवाहादि) के तीन पांच सात और नौ दिनपहले करना महाकपिल पंचरात्र में लिखा है—

प्रशस्त यागदिवसात् पुरस्तात्सप्तमेऽह्नि शुभे नवमे वा पञ्चमेऽथ सुदिने सुमुहूर्त्ते मंगलाङ्कुरविधिं विदधीत् ॥

मंगलकर्म के दिन से नौ सात पांच तीन और शुभ मुहूर्त्त में अंकुरार्पण कर्म करना चाहिए। अब भी ग्रामों में तीन या पांच दिन पहले 'हत्थभरा मांइयां' नाम से इस कर्म को रूपान्तर से करते हैं। चारजातिक्षत्री शान्तिकर्म के साथ इसलिए करते हैं कि ऊपर श्लोक में यह भी लिखा है—"शुभ दिन और शुभ समय में करे।" इस वाक्यानुसार तथा समय की लाघवता के लिए शान्ति के दिन करते हैं। दूसरे कई समय तो पूज (कुल-देवता स्थापन) ही विवाह से एक दिन पहले होती है, इस अवस्था में तो तीन या पांच दिन पहले किस प्रकार कर सकते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिन में अंकुरार्पण करना

कई अन्य कर्म तो रात में भी कर लिये जाते हैं। मगर फुल्लकढ़ाई मांया दिन को ही इसलिये लोग करते हैं। कि हयशीर्षपञ्चरात्र में लिखा है—

तत्तकर्म दिवाकाले कुर्य्याद्रात्रौ न बुद्धिमान् ।

अर्थात् अंकुरार्पण दिन के समय ही बुद्धिमान् करे रात्री में न करे। इसलिये रात में यह कर्म नहीं किया जाता।

फुल्लकेढ़ाई मांइयां की अंकुरार्पण से समता

जैसे फुल्लकढ़ाई मांइयां में चप्पनियों को एक सूत्र में पिरो कर प्रतिष्ठा की जाती है और दो कुज्जों में नैवेद्य डालकर मुख बन्द कर दिया जाता है। तथा कुलदेवता विसर्जन दिन (वड्डीवधाने के दिन) तक कुज्जों और तणी को विसर्जन नहीं किया जाता वैसे ही अंकुरार्पण में भी तणीपूजन और कुज्जों का सात दिन तक स्थापन करके नैवेद्य द्वारा वली देना लिखा है। भेद इतना है कि ब्राह्मण लोग सात दिन की बलियें इकट्ठी ही सात चारकोन मैदे के फूल और सात छोटी मट्ठियें, मरूंडा, उवली हुई गेहूं (घुंगनियां) और पिसी हुई हलदी कुज्जों में डाल देते है। जैसे विवाह के दिन ब्राह्मण लोग मट्टी मंगवाते है वैसे ही अंकुरार्पण

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में मट्टी लाना लिखा है अब नीचे अंकुरापण की प्रमाणों सहित विधि लिखता हूँ जिससे स्पष्ट ज्ञान होता है कि अंकुरार्पण का नाम और विधि अज्ञानता के कारण भूल गई जिससे आजकल अंकुरार्पण कर्म को फुल्लकढ़ाई मांइयां एक साधारण कुलरीति ही समझी जाती है। वास्तव में अंकुरार्पण एक शास्त्रीय कर्म है जिसको प्रत्येक सनातन धर्मावलम्बी मनुष्य का करना धर्म है, अनभिज्ञता के कारण इस कर्म को निरर्थक कुलरीति समझकर इसको त्यागना नहीं चाहिये। शारदा तिलक में लिखा है—

पात्राणि त्रिविधान्याहुरंकुरार्पण कर्म्मणि।
पालिकाः (१) पञ्चमुख्यश्च (२) शरावाश्च (३) ततः क्रमात्॥
प्रोक्ताः स्युः सर्वतन्त्रेषु हरि (१) ब्रह्म (२) शिवात्मकाः (३)॥

अर्थ—अंकुरार्पण कर्म में तीन प्रकार के पात्र होते हैं। पालिक संज्ञक पात्र हरिस्वरूप, पञ्चमुख्य पात्र ब्रह्मस्वरूप, शराव संज्ञक पात्र (प्याले=चप्पनियां) रुद्रस्वरूप होते हैं। अर्थात् तणी (चप्पनियें) रुद्र स्वरूप होने के कारण, तणी के ऊपर रुद्र का पूजन और दोनों कुज्जों के ऊपर विष्णु और ब्रह्मा का पूजन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करे । इस विधि को सारस्वततन्त्र स्पष्ट लिखता है—

प्रोक्तेषु तेषु पात्रेषु ब्रह्मविष्णुशिवान् यजेत् ।

इसी को सिद्धान्तशेखर में और भी स्पष्ट लिखा है—

संपूजयेत् शरावेषु रुद्रं चन्दन पुष्पकैः ।

पालिकासु तथा विष्णुं ब्रह्माणं घटिकासु च ॥

अर्थ—शरावों (प्यालों) के ऊपर रुद्र का चन्दन पुष्पादि से पूजन करे । पालिका के ऊपर विष्णु का और घटिका के ऊपर ब्रह्मा का पूजन करे । ऊपर के प्रमाणों से स्पष्ट है कि प्यालों के ऊपर रुद्र पलिका पर विष्णु घटिका पर ब्रह्मा का पूजन करना चाहिये । जो कि कई विद्वान् कहा करते हैं कि यह आकाश पूजन है और कई इन्द्र और वरुण का पूजन बताते है यह कल्पना भ्रम मूलक ही प्रतीत होती है । इसलिए प्रार्थना हैं कि आगे से शास्त्रानुसार पूजन करके अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करनीं चाहिए । क्योंकि गीता में श्री भगवान् जी ने कहा है—

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ॥

न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम् ॥

जो शास्त्रोक्त विधि छोड़कर मनमाना करने लगता है, उसे न सिद्धि मिलती है न सुख मिलता है और न उत्तम गती ही मिलती है ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इन पात्रों के लक्षण इस प्रकार लिखे हैं—

स्थूलान्युच्चानि शरावाण्येव पालिका शब्देनोच्यन्ते ।
पालिका एव नीचाः पंच स्थिताः पञ्चमुख्याः उच्यन्ते ।
शरावाः प्रसिद्धा एव ।

मोटे और ऊपर को मुख वाले मट्टी के प्याले अर्थात् कुज्जे या सकोरे ही पालिक कहे जाते हैं। और नीचे मुखवाले अर्थात् बैठवें मुख वाले (पंजाबी में जिसे 'कुन्नी' कहते हैं) पांच कुज्जे पञ्चमख्य कहे जाते हैं। शराव (प्याले) तो प्रसिद्ध ही हैं। प्यालों में छेद करके सूत्र पिरो कर तणा बनाकर पूजन के विषय में और कितनी अंगुली प्रमाण होने चाहियें। इस विषय में शारदातिलक में इस प्रकार लिखा है—

एषामुत्सेधतोऽन्वेयैः षोडशद्वादशाष्टभिः ।
अंगुलैः क्रमशस्तानि शुभान्यावेष्टय तन्तुना ॥

सिद्धान्त शेखर में इस प्रकार लिखा हैं—

यथा सम्भवमानन्तु पालिकादि समाचरेत् ॥
शरावाः जलक्षालिताः सूत्रैश्च (त्रिगुणतन्तुना)
प्रकल्प्य पंक्तिषु च ताः प्रोक्त क्रमाद्विन्यसेत् ।

अर्थात् पालिक (कुज्जा), पञ्चमुख्य (निम्न मुख कुज्जा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अर्थात् कुन्नी) और शरावों (प्यालों) का प्रमाण क्रमशः सोलह १६ बारह १२ और आठ ८ अंगुल होना चाहिए, या यथासम्भव प्रमाण होना चाहिए । फिर शरावों (चप्पनियां) को सिंचन करके त्रिगुण (तीरा) सूत्र में पिरोकर पूजनार्थ पंक्ति में रक्खे ।

इन के स्थापन करने का मण्डप इस प्रकार बनाना लिखा है । ५ पांच रेखा पूर्व से पश्चिम को खेंचे, और ११ ग्यारह रेखा दक्षिण से उत्तर को खेंचे । इस प्रकार चालीस ४० कोष्ट हो जाते हैं । चारों ओर के कोष्टों को रङ्गों से भर दे, बाकी चार २ कोष्टों का एक २ मंडल (कोष्ट) रह जाता है । उन तीनों मंडलों में इन तीनों पात्रों को स्थापन करके उनमें बाज बो देदे, और उन पर विष्णु, ब्रह्मा और रुद्र का पूजन करे । विस्तार भय से मैं श्लोक लिख नहीं रहा ।

हलदी कूटना, तथा कुज्जों का बन्द करना

हल्दी को पीस कर कुज्जों में डालना और कुज्जों को चप्पनियों से आटे द्वारा, बन्द करने के विषय में इस प्रकार लिखा है ।

विकीर्य्यानेन मन्त्रेण हरिद्राचूर्णमिश्रितम् ।
तोय प्रवर्षयत्तेषु सिंचेत् तोयैर्दिनं प्रति ॥
वस्त्रैराच्छाद्य यत्नेन सुगुप्तानि च कारयेत ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रथम कहे मन्त्र से हल्दी के चूर्ण युक्त जल से नित्य उनमें सिञ्चन करे। यत्नपूर्वक ढक कर वस्त्र से आच्छादन करे पञ्जाब में हल्दी डाल कर कुज्जे आटे से बन्द कर देते हैं। और तणी की प्रतिष्ठा करके खूंटी में बांध देते हैं। परन्तु पूर्व प्रान्त में तणी को लाल कपड़े से लपेट कर ही बांधते हैं।

चौकोन फूल और टिकड़े क्या हैं

जो ७ सात चौकोन फूल और टिकड़े कुज्जों में डाल दिये जाते हैं। उनके विषय में लिखा है कि प्रतिदिन भिन्न २ देवताओं को बलीयें देवे और पूजन करे जैसा कि—

सप्तरात्रेषु कुर्वीत पूजनं सर्व देवताः।
नानोपहारबलिभिः पूजयेत परमेश्वरी ॥

सात रात्री देवताओं का पूजन करे और अनेक उपहारों से बलि देवे। आगे लिखा है कि पहली रात्री भूतों को तिल, लाजा (कुल्लियें) दही और सत्तुओं की बली देवे। दूसरी रात पितरों को तिल अन्न चावलों से। तीसरी रात यक्षों को दही सत्तू लाजा से। चौथी रात नागों को नारियल, जल, सत्तु, पीठा से। पांचवीं रात्री ब्रह्मा को कौलडोडे और चावलों से। छटी रात शिव (शंकर भगवान्) को पूड़ों की बली देवे। सातवीं रात्री विष्णु को गुड़ौदन (मरूंडा) से बली देवे। ऊपर लिखी बलि की वस्तुओं के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अनुसार ही नारयल के स्थान गरी छुहारा, टिकड़ों के साथ कौलडोडे, चावल, पूड़ों के स्थान मैदे की मट्ठिये मरूंडा और घुंगनियें बलि कर्म में दी जाती हैं।

भूतानि पितरो यक्षा नागा ब्रह्मा शिवो हरिः।
सप्तानामपि रात्रीणां देवताः समुदीरिताः॥
भूतेभ्यः स्युर्लाजतिलहरिद्राद्याशक्तवः।

विस्तार भय से प्रमाण रूप बलियों के श्लोक नहीं लिख रहा ऊपर देवताओं के नाम और बलियों का संकेत मात्र कर दिया है।

कुञ्जों का वामी नाम क्यों हुआ ?

आप्तवचन (वृद्धों की बातें) और परम्परागत कुलरीत भी निरर्थक नही होती। सांख्यशास्त्र में तो आप्तवचन एक प्रमाण माना गया है। और इसलिये फुल्लकढ़ाई के कुञ्जों को विद्वान् लोग "वामी" के कुञ्जे आज तक क्यों कहते चले आए। इस ओर जब ध्यान करें तो शास्त्र में हमें इसका कारण स्पष्ठ प्रतीत होता है। और यद्यपि आजकल "वामी" का अर्थ भ्रम के कारण पंजाबी भाषा के अनुसार वा=वायु, मी=वर्षा लोग करते हैं जो असंगत है, तो भी कुञ्जों को वामी कहना एक विशेष कारण है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अंकुरार्पण प्रयोग में लिखा है कि—

ततो वमिति मन्त्रेण विष्णुविषये पूजनम् ॥

अर्थात "वम्" इस बीजमन्त्र से विष्णु का पूजन करे। इस विधि के अनुसार लोग 'वम्' इस बीजमन्त्र से पूजन कराते रहे। जब तन्त्रों का ज्ञान कम हुआ और अज्ञानता से परम्परागत "वमीति" के स्थान में (वकार के अकार को दीर्घ और "ति" का लोप करके) वामी यह उच्चारण लोगों में प्रचलित हो गया तब से लोग कुज्जों को 'वामी' कहने लग पड़े जो आज तक इस अज्ञानता के कारण कुज्जों को वामी के कुज्जे समझा जाता रहा है।

पञ्जाब प्रान्त के ब्राह्मण और चारजाति क्षत्रिय ऊपर लिखा अंकुरार्पण कर्म अर्थात् फुल्लकढ़ाई मांइयां विवाह के समय ही करते हैं परन्तु पंजाब से इतर पूर्वप्रान्त में देवकाजों के समय भी इस कर्म को करते हैं। जैसा कि ऊपर श्लोकों में लिखा है कि गर्भाधान, पुन्सवन, नामकरण को छोड़ कर अन्य कर्मों में अंकुरार्पण कर्म करे इस वचन को चरितार्थ करते हैं।

मांइयां

मांइयों में कन्या को एक प्रकार से सौभाग्य द्रव्यों से अलंकृत किया जाता है। इस में उद्वर्तन (हलदी मंजिष्ठ युक्त स्निग्ध

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आटा) तथा तैल लगाया जाता है। और एक लालरङ्ग का वस्त्र (सालू) कन्या को पहनने के लिये दिया जाता है। पारस्कर-गृह्यसूत्र के पदार्थक्रम में लिखा है कि—

ततो वैवाहिके शुभे मुहूर्त्ते वधूवरयोस्तैलहरिद्रा
लेपनादि यथाऽचारङ्कार्यम् ।

विवाह के शुभ मुहूर्त्त में कन्या और वर को तैल, हलदी उद्वर्तनादि देश चाल के अनुसार लगाना चाहिये।

तैल लगाना

कन्या तथा वर के मस्तक में दक्षिण ओर तैल लगाने से तरावट के अतिरिक्त शत्रु नष्ट होने की प्रार्थना की जाती है। अथर्व वेद में तैल लगाने से शत्रु नष्ट होते हैं, लिखा है—

आज्यस्य परमेष्ठिज् जातवेदस्तनूवशिन् ।
अग्ने तैलस्य प्राशान यातुधानान् विलापय ॥

अथ० १॥७२॥

हे सब से ऊंचे स्थान में स्थित अपने आप को वश में रखने वाले जातवेदस अग्ने! (सूर्य), घी और तैल का भोग लगा और यातुधानों (शत्रुओं) को विलाप करा अर्थात् नष्ट कर। इस मंत्र में तैल के उपयोग का लाभ लिखा है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वटना लगाना

उद्वर्तन के विषय में अथर्व वेद में लिखा है कि उद्वर्तन से पवित्रता कान्ति और शारीरिक दोष दूर होते हैं।

सौभाग्यवतीस्त्रियों को उद्वर्तन (वटना) लगाना अथर्व वेद में विशेष फल दायक लिखा हैं—

इमा नारीरविधवाः सुपत्नीरांजानेन
सर्पिषा सं स्पृशन्ताम्।
अनश्रवो अनमीवाः सुरत्ना आ
रोहन्तु जनयो योनिमग्रे ॥

अ० वे० १८।२।५७।

ये स्त्रियां जो विधवाएं नही हैं, उत्तम पतियों वालियां हैं, वह घी सहित उबटन के साथ अपने आप को स्पर्श करें, आंसुएं न वहाती हुई, निरोग हुई, उत्तम रत्नों वाली पत्नियां घर में आरूढ़ हों।

लालरङ्ग के वस्त्र (सालू) की महत्वता

कन्या को मांइयों में जो लालरंग का वस्त्र दिया जाता है उस लाल रंग के वस्त्र के विषय में अथर्व वेद में पापों तथा रोगों का दूर होना लिखा है—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

परि त्वा रोहितैर्वर्णैर्दीर्घायुत्वाय दध्मसि ।
यथा यमरपा असदथो अहरितो भुवत् ॥

अ० वे० १।२२।२॥

दीर्घायु वाला होने के लिये तुझे हम लालरंगों से ढांपते हैं जिससे कि यह पाप रहित हो और पीलेपन से रहित हो जाए ।

लालरङ्ग की महत्त्वता जानते हुए ऋषियों ने हर एक माङ्गलिक कार्य में लालरङ्ग को उपयोग में लाया है ।

चक्की में पीसना

चक्कीचुंग (अर्थात् छाज में गेहूँ और गुड़ रख कर हथ लेवों के और पुरोडाश के लिये आटा पीसना) की गेहूँ को चक्की में पीसने के विषय में अथर्ववेद में लिखा है कि चक्की में पीसने से कृमि नष्ट होते हैं ।

इन्द्रस्य या मही दृषत् क्रिमेर्विश्वस्य तर्हणी ।
तया पिनष्मि सं क्रिमान् दृषदा खल्वां इव ॥

अ० वे० २।३१।१।

इन्द्र की जो बड़ी चक्की है जो हर एक प्रकार के कृमि को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दलने वाली है, उससे मैं कृमियों को इकट्ठे पीस डालता हूं, जैसे चणों को चक्की से।

मांइयों में मलिन तथा फटे वस्त्रों का होना।

प्रायः सभी प्रान्तो में जहां २ मांइयों की प्रथा है, वहां २ वर कन्या के वस्त्र मलिन तथा फटे हुए होते हैं। इसका कारण यह है कि विवाह से पूर्व ही अच्छे वस्त्रों से कान्ति के बढ़ जाने पर दृष्टिदोष हो जाने का भय होता है। और दृष्टिदोष हो जाने से बीमार हो जाने का भी भय रहता है। इस भय को दूर करने के लिए माइयों में मलिन और फटे हुए वस्त्र होते हैं। वैदिक समय में भी ऋषियों की यही धारणा और मर्यादा थी। ऋग्वेद में सूर्या के विवाह के वर्णन में सूर्या की मूर्ति कैसी थी इस विषय में लिखा है कि सूर्या के वस्त्र फटे हुए थे—

आशसनं विशसनं मथो अधिविकर्तनम्।
सूर्यया: पश्यरूपाणि तानिब्रह्मा तु शुन्धति॥

ऋग्वेद मं० १० सू० ८५ मं० ३५॥

सूर्या की मूर्त्ति कैसी है? देखो! इसका वस्त्र कहीं प्रथम फटा है। कहीं बीच में फटा हैं। और कहीं चारों ओर फटा हैं। जो ब्रह्मा हैं, वही इसका संशोधन करते हैं॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस वैदिक संस्कृति को क्षत्रिय आज तक निभाते चले आ रहे हैं। मगर आगे वैदेशिकसंस्कृति के प्रभाव से प्रभावित हुए २ स्त्री पुरुष अपनी संस्कृति को खो रहे हैं। जिस संस्कृति में कई गुण हैं उसको तो छोड़ रहे हैं, और जिसमें बाहरी दिखाव और भीतरी दोष हैं, उस संस्कृति को ग्रहण कर रहे हैं। यह कलियुग के प्रभाव का फल समझना चाहिये।

शान्तिकर्म-तथा ग्रहों का प्रभाव

मांइयों के बाद शान्ति करना लिखा है। क्योंकि ग्रहों का प्रत्येक मनुष्य पर प्रभाव पड़ता है, और उस प्रभाव के कारण मनुष्य सुखी और दुःखी होता है। विवाह के समय प्रतिकूल ग्रहों की तो विशेष रूप से ही शान्ति करनी चाहिये, मगर वैसे भी ग्रहों का प्रसन्नार्थ पूजन करना लाभदायक ही है। विवाह होने पर, स्त्री पुरुष के सम्बन्ध से दोनों के ग्रहों का परस्पर एक विशेष प्रभाव पड़ता है जो एक दूसरे को दुःखी या सुखी बनाने में कारण होता है। ज्योतिषशास्त्र में पुरुष की कुण्डली से स्त्री का और स्त्री की कुण्डली से पुरुष का सब वृत्तान्त कहना फलित-ज्योतिष में लिखा है। बुरे ग्रहों का फल शान्ति (उपाय) करने से दूर हो जाता है, यह भी लिखा है। अनुभव में भी देखा गया है, कि परस्पर ग्रहों का प्रभाव भी पड़ता है, और उपाय करने से

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दुष्ट प्रभाव दूर भी हो जाता है। यह बात मानवसृष्टि ही में नहीं यह सृष्टि के प्रत्येक वस्तु में पाई जाती है। जैसे अग्नि के पास जल रखने या अग्नि जल का सम्बन्ध करने से एक विशेष प्रभाव होता है। उस प्रभाव के कारण या तो जल सूख जाता है या अग्नि बुझ जाती है। यह तो दोनों के मेल से बुरे प्रभाव का फल है। यदि इस अग्नि और जल के सम्बन्ध को उपाय या शक्ति करके किया जाए, अर्थात् इन दोनों का विज्ञान द्वारा ठीक विधि से सम्बन्ध किया जाए, तो यही अग्नि और जल अञ्जन के रूप में शक्ति द्वारा रेल खेंचते हुए सुखदाई हो जाते हैं। और चूल्हे पर पात्र में रक्खे हुए अन्न पकाकर क्षुधा शान्त करके सुख देते हैं। बस इसी प्रकार संसार की सब वस्तुएं एक दूसरे के मेल से विशेष प्रभाव उत्पन्न करती हैं। विज्ञान (सांईस) का आधार इसी सिद्धान्त पर है। तन्त्रशास्त्र भी इसी सिद्धान्त को लेकर एक दूसरी वस्तु का अर्थात् सृष्टि के पांच तत्वों (पृथिवी जल तेज-वायु आकाश) को भिन्न २ प्रकार से सम्बन्ध करके उसमें आत्म शक्ति सञ्चारित कर अनेक प्रकार के चमत्कार दिखाता है। जैसे सृष्टि की प्रत्येक वस्तु का परस्पर विशेष प्रभाव होता है, वैसे ही ग्रहों का सृष्टि की प्रत्येक वस्तु पर प्रभाव होता है। सूर्य के प्रभाव से गरमी सरदी का होना ऋतुओं का बनना, अन्नादि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का पकना प्रत्यक्ष देखा जाता है। चन्द्रमा से समुद्र में जवार, भाटा देखने में आता है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का प्रभाव भी होता हैं। सूर्य की गरमी को दूर करने के लिये जैसे छाता (उपाय) किया जाता है। और सरदी में गरम वस्त्र पहने जाते हैं। इसी प्रकार ग्रहों का दुष्ट फल उपाय करने से दूर होता है। स्त्री पुरुष के सम्बन्ध से जो बुरा प्रभाव पड़ना होता है उसको ग्रहों की शान्ति करके दूर करना शास्त्र तथा वेदों में लिखा है—

ग्रहों की शान्ति के लिये अथर्ववेद में लिखा है कि—

शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा ।
शंनो मृत्युर्धूमकेतु शं रुद्रास्तिग्मतेजसः ॥

अ० वे० १६ । १० । १० ॥

शान्त हों हमारे लिये ग्रह चन्द्रमा सम्बन्धि शान्त हों आदित्य (सूर्य) राहु के साथ, शान्त हो हमारे लिये धूम केतु वाला मृत्यु, शान्त हो तीव्र तेज वाले रुद्र।

वैशम्पायन जी कहते हैं—

श्रीकामः शान्तिकामो वा ग्रह यज्ञं समाचरेत् ।
वृद्धयायुः तुष्टिकामो वा तथैवाभिचरन्पुनः ॥

अर्थात्—कर्म की सिद्धि श्री की प्राप्ति आयु वृद्धि और पुष्टि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की कामना वाले को पहले गणपति पूजन करके ग्रहयाग करना चाहिये ।

ऊपर के प्रमाणों से ग्रहयाग करना सिद्ध होता है ।

गाना बान्धना

ग्रहयाग में रक्षाबन्धन किया जाता है । इसी रक्षाबन्धन को पंजाबी में 'गाना' कहा जाता है । वैदिक समय में रक्षाबन्धन में स्वर्ण भी बांधा जाता था । जैसा कि यजुर्वेद में लिखा है—

यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यꣳ
शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।
तन्म आबध्नामिशतशारदाया—
युष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥

यजुर्वेद अ० ३४ मं० ५२ ॥

अर्थ—सुन्दर मन वाले दक्षवंशोत्पन्न जिस स्वर्ण को बहुत सेना वाले राजा के निमित्त बान्धते थे । उस स्वर्ण को सौ वर्ष जीने के लिये अपने शरीर में बांधता हूं, जिससे दीर्घजीवी होकर वृद्धावस्था को पहुंचूं ।

अब स्वर्ण के स्थान में खाली मंगलसूत्र (मौली) ही बांध

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिया जाता है। ग्रामीण लोग रक्षाबन्धन के साथ कोई २ स्वर्ण और प्रायः सभी चांदी बांधते हैं। रक्षाबन्धन का अर्थ ही स्पष्ट बता देता है कि वर कन्या की रक्षा के लिये ही रक्षाबन्धन किया जाता है।

हाथी दान्त का करभूषण (चूड़ा) पहनना

शान्ति कर्म में हवन करने के बाद कन्या को हाथी दांत का चूड़ा हाथों में पहनाया जाता है, जो कि लालरंग का होता है। अथर्ववेद में वर्चस (तेज) प्राप्त करने के लिये हाथी दांत की मणि बनाकर पहनना लिखा है। जो अब चूड़े के स्वरूप में नजर आती है। मणि को बांध कर अथर्ववेद में तीसरे काण्ड के बाइसवें सूक्त का पाठ करना लिखा है। मैं सारा सूक्त तो विस्तार भय से नहीं लिखता प्रमाण रूप एक मन्त्र लिख देता हूँ–

हस्तिवर्चसं प्रथतां बृहद्यशो
आदित्या यत्तन्वः संबभूव।
तत्सर्वे समदुर्मह्यमेतद्
विश्वेदेवा अदितिः सजोषाः ॥

अथर्व० ३। २२। १॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हाथी का वर्चस् (तेज, जो दांत के रूप में है) बड़ा यशवाला है, वह स्वयं फैले । जो अदिति से वर्चस् उत्पन्न हुआ है उस वर्चस को सबने मुझे दिया है । सब देवताओं ने तथा आनन्द मनाती हुई अदिति ने भी मुझे वर्चस् के लिये दिया है ।

इस मंत्र से सिद्ध होता है कि हाथी दांत के धारण से तेज और सौभाग्य प्राप्त होता हैं

चूड़ा लाल क्यों होता हैं ?

क्योंकि हाथी दांत सफेद होता है, इसलिये लाख चढ़ा कर सफेदी को लाल कर दिया जाता है । कि जिससे लालरंग के गुण भी प्राप्त हो जाए । लालरंग से हृदय की जलन और हृदय रोग दूर होते हैं तथा पाण्डूरोग दूर होता है । यह अथर्ववेद में लालरंग के गुणों के विषय में लिखा है=

अनुसूर्यमुदयतां हृद् द्योतो हरिमा च ते ।
गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परिदध्मसि ॥

अथर्व० १ । २२ । १ ॥

तेरे हृदक की जलन और पाण्डूरोग सूर्य की ओर चढ़ें । लाल बैल के रंग के समान लालरंग से हम तुझे ढांप देते हैं ।

इस मन्त्र से यह सिद्ध होता है, कि जो स्त्रियों में स्वाभाविक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हृदय जलन मनुष्यों से अधिक होती है, उस जलन को यह लालरंग हाथीदांत पर चढ़ाया हुआ शान्त करता है। और पाण्डूरोग (जिसमें सब कुछ पीला नजर आता है अर्थात् 'परनेह') दूर करता है। विज्ञान द्वारा भी प्रतीत होता है कि हाथों पर पहने हुए लालचूड़े की सूर्य किरणों से उत्पन्न हुई झलक मुख पर पड़ने से तेज देती है।

वैद्यक में भी प्रायः स्त्री सन्बन्धी रोगों में हाथीदांत का चूर्ण सेवन कराया जाता है। यहां तक की स्त्रियों के बन्ध्यापन कों भी हाथी दांत का चूर्ण विधिपूर्वक सेवन करने से दूर करता है।

कलीरे बांधने

वैदिक काल में जहां स्वर्णादि धातुओं के भी भूषण पहने जाते थे वहां सीप और कौड़ियों के भूषण बना कर हाथों में बांधे जाते थे। उस संस्कृति की याद आज कलीरा है। जिसमें आज तक यह परिवर्तन हो चुके हैं। कौड़ियों के गुच्छों के नीचे जो सीप बांधा जाता था, उसके स्थान में खोपा बंधने लगा है। इसके स्थान पर चांदी और स्वर्ण के भी बनने लग गये हैं। वैद्यकशास्त्र में सीप और कौड़ियों को औषधि में बहुत उपयोगी माना है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुराणों में तो कलीरों का वर्णन रुकमणी और सीता जी के विवाह प्रकरण में तो आता ही है। अथर्व वेद में भी इसका वर्णन है जैसे कि—

स्तोमा आसन् प्रतिधियः कुरीरं छन्दओपशः ।
सूर्याया अश्विना वराग्निरासीत् पुरोगवः ।

अथर्व० १४।१।८॥

(सूर्या के विवाह में) स्तोत्र ओढ़ने बने, छन्द कलीरे और चौक बने, दोनों अश्वि सूर्या के वरने वाले (बराती) बने और आगे चलने वाला अग्नि था ।

इस मन्त्र में सूर्या के विवाह का रूपक बांधा है। और छन्दों को कलीरे बताया है ।

मण्डल

विवाह आदि कर्मों में जहां ग्रहयाग किया जाता है वहां पर जो ग्रहों की बलियें दी जाती हैं और अंकुरार्पण कर्म का जो बलिकर्म अङ्ग है, उसी बलिकर्म को मंडल के ऊपर करने से इस कर्म को मंडल कहा जाता है। ग्रहों और देवताओं की बलियों को मंडल इस लिये कहा जाता है कि जो ग्रह स्थापन किये जाते हैं वह सभी तिलक नामक मंडल में किये

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जाते हैं बलियें क्योंकि मंडल में ही रक्खी जाती हैं इस लिये बलिकर्म को मंडल कहा जाता है । कात्यायन जी ने लिखा है—

विवाहादौ लिखेन्नित्यं तिलकं नाममण्डलम् ।
व्रतोपनयने चूड़े यत्र शान्ति रुदाहृता ।

अर्थात् विवाह आदि तथा शान्ति कर्मों में तिलक नामक मंडल को लिखे । तिलक नाम मंडल में बलियें करने के कारण बलि कर्म को भी मंडल ही समझा गया है । दूसरे बलि की वस्तुओं के चारों ओर जल धारा जो माता द्वारा कराई जाती है उसको भी मंडल ही कहा जाता है । शास्त्रों में मंडल का विधान इस प्रकार है—

आदित्या वसवो रुद्रा ब्रह्माचैव पितामहः ।
मण्डले तूपजीवन्ति तस्मात्कुर्वीतमण्डलम् ॥

आदित्य भगवान् आठ वसु ग्यारह रुद्र और ब्रह्मा यह मंडल में स्थित होते हैं । इस लिये मंडल करना चाहिये । मंडल न कने में दोष होता हैं यथा

यातुधानाः पिशाचाश्च क्रूराश्चैव तु राक्षसाः ।
हरन्ति रसमन्नं च मण्डलेन विवर्जितम् ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यातुधान पिशाच क्रूर और राक्षस अन्न के रस को हर लेते हैं। जहां पर मंडल न किया हो। इस लिये देवताओं की बलियों के चारों ओर जल से मंडल किया जाता है जिस से देवताओं की बलियों का रस राक्षसादि न ग्रहण कर सकें क्योंकि बलिकर्म में मंडल करना मुख्य कर्म होता है इस लिये बलिकर्म मंडल नाम से प्रचलित हो गया है।

मंडल में सालू फैलाना

मंडल करने के समय जो वर कन्या के ऊपर लालवस्त्र (सालू) फैलाया जाता है। वह भी विशेष महत्त्व रखता है। इसीलिये राजा और महापुरुषों के सिंहासन के ऊपर वैतानिक (चंदोया) फैलाया जाता है, यहां तक कि महल के बाहर भी राजाओं और महा-पुरुषों के ऊपर छत्र फैला रहता है।

अथर्ववेद में स्पष्ट लिखा है—

येन देवं सवितारं परिदेवा अधारयन्।
तेनेमं ब्रह्मणस्पते परि राष्ट्राय धत्तन॥

अथर्व० १६। २४। १।

जिस वस्त्र से देवताओं ने देवसविता को ढांपा उससे हे ब्रह्मणस्पते। इस पुरुष को राष्ट्र के लिये ढांपो।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस मन्त्र से सिद्ध होता है कि वर कन्या को वस्त्र से ढांपना ठीक ही है । वस्त्र से ढांप कर और बलिद्रव्यों को हाथ लगवा कर वस्त्र में भी डालते हैं, और ग्रहों पर भी रखते हैं । और बाद में वस्त्र इकट्ठा करके कन्या या वर की झोली में डाल देते हैं । यह बलियें पश्चात गौ को खिला दी जाती हैं ।

मण्डल के सम्बन्ध में ग्रहों के निमित्त ब्राह्मण भोजन भी कराया जाता है । ब्राह्मण भोजन न कराना हो तो इस के स्थान में पक्वान्न की पत्तलें (पांच २ लुच्चियें दो २ कचौड़ियें तथा हलुवा) और दक्षिण ग्रहों के निमित्त संकल्प कराकर ब्राह्मणों को दे दी जाती है ।

इन वैवाहिककर्मों को वैदिक होंने के कारण सभी को श्रद्धा पूर्वक अवश्य करना चाहिये । जिससे शास्त्रोक्त शुभफल प्राप्त हो सके ।

५—प्रथा कवारधोती

यह प्रथा ग्रहशान्ति के बाद होती है । इस में कन्या पक्षीय पुरोहित जी वरके घर से निम्नलिखित सामान ला कर कन्या को कौतुकागार (छन्ननियां) में बिठा कर सौभाग्य द्रव्यों से शकुन करा देते हैं । सामान यह है—

(१) एक लाल किनारे की धोती । (२) सवा सेर चावल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(३) ढाई पाओ खांड । (४) सवा सेर मैंहदी । (५) छपा हुआ कनेर (१ गरी गोला २ अमलतास फल ३ सुपारी ४ बादाम ५ छुहारा ६ अखरोट ७ बीचकड़ा, इन सातों को छापागर से गरीगोला स्वर्णरंग वर्क से और अन्य सब वस्तुओं को चान्दीरंग के वर्क से छपवा लिया जाता है और जिन में छापागर छेद भी मौली पिरोने के लिये कर देता है) (६) सात सरोच (१ इलायची २ लौंग ३ केसर ४ नख ५ तज ६ जलवित्री ७ जायफल) (७) एक गरीगोला २८ छुहारे २ खोपे (१ गरीगोले के दोनों हिस्से) (८) सात अट्टे मौली के । (६) १ नत्थ-धागा-पट्टी (जो पाओं की अंगुलियों में पहनने बाली "सुत्त" की शकल सी होती है) मगर आजकल इसके स्थान में मुन्दरी ही भेज दी जाती है । कई लोग सूतड़ा, और निच्छनी (सोने की चौंकी चेन में लगी हुई) या चेन भेज देते है । ऊपर लिखी सात वस्तुओं को लाल कनारे की धोती में सात स्थानों में गांठ देकर बांध दिया जाता है, और जेवर किसी डिबिया में रख कर पुरोहित जी को गांठों वाली धोती सहित दे दिया जाता है, जिस को पुरोहित जी जल पूरितकलश के मेल द्वारा शकुन करते हुए और कन्यागृह की देहली में तेल गिरवाकर कन्या गृह में ले जाते हैं,

(कनारधोती में बंधी वस्तुओं का उपयोग)

पुरोहित जी कन्या को कौतुकागार में बिठा कर धोती में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बंधी वस्तुओं को भिन्न २ पात्रों में रख लेते हैं। और धोती के किनारे पर मैंहदी का स्वस्तिक (गणेश) बना कर लड़का के सर पर रख देते हैं। ‘ वास्तव में यह धोती कन्या को पहिनानी चाहिये) और जेवर कन्या को पहना दिया जाता है। इसके बाद सात छुहारे एक खोपा छाज में रखा जाता है। सात छुहारे एक खोपा और दक्षिणा तथा चावल, खांड, मैंहदी, और मौली कन्या से सौभाग्यबृद्धि के लिये गौरीदेवी के निमित्त संकल्प कराली जाती है। एक जुट्ट १४ छुहारे झोली में डाल दिये जाते हैं। मैंहदी भीगो कर सात बार कन्या के हाथ में लगा कर पुरोहित जी धोती में पोंछ देते हैं। बाकी सब वस्तुएं कन्या की माता को दे देते हैं। जिन में से माता चावल पका कर कन्या को खाण्ड मिलाकर खिला देती है। क्योंकि विवाह के पूर्व सात्विक भोजन करना लिखा है, इसलिये चावल खिलाए जाते हैं। इसके बाद कन्या के हाथ पाओं में मैंहदी लगाई जाती है। इस कर्म को ‘कवारधोती’ कहा जाता है॥ (वेदी में बिठाने के समय कन्या के गले में कनेर डाला जाता है, और मौली ग्रंथी बंधन तथा सिर गूंथने के काम में आती है)।

इस प्रथा का नाम कवारधोती क्यों हुआ ?

यह ‘कवारधोती’ पूर्व समय में आज कल की धोती के समानरूप नहीं होती थी। यह एक ही लम्बावस्त्र होता था और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जिसको 'अहत वस्त्र' (जिस वस्त्र को काट कर दो टुकड़े न किया हो) या कुमारी का वस्त्र कहा जाता था। इस का लक्षण काश्यप जी ने इस प्रकार किया है—

अहतं यन्त्रनिर्मुक्तं वासः प्रोक्तं स्वयम्भुवा ।
शस्तन्तन्मङ्गले नूनन्तावत्काल न सर्वदा ॥

अर्थात् यन्त्र (खड्डी) से बन कर निकला हुआ एक ही वस्त्र 'अहतवस्त्र होता है' और यह मंगल के समय ही धारण किया हुआ शुभ होता है। यह 'अहत वस्त्र' कौतुकागार में कन्या को पहनने के लिये पति भेजता था। पूर्व छननियों की प्रथा में कौतुकागार के वर्णन में लिखा है कि कन्या एक वस्त्र पहन कर सहेलियों के साथ गौरीदेवी का पूजन करे जैसे कि—

एक वस्त्रा च सुमनाः संयम्याली समन्विता । इत्यादि

यही एक वस्त्र जो कन्या को भेजा जाता था उस को पूर्व समय में 'अहतवस्त्र' या 'कुमारिकावस्त्र' कहा जाता था। आज कल भी गाओं में तथा बुंजाही जाति में कई लोग धोती के स्थान में एक मलमल का या खद्दर का सफेद वस्त्र सात गज या सात हाथ भेजते हैं समयानुसार जब वस्त्र के स्थान में धोती भेजने लगे, तब से पञ्जाबी भाषानुसार कुमारिका का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रायवाचक शब्द कवारी और वस्त्र के स्थान में धोती होने के कारण 'कवारी की धोती' इस शब्द का समास करके 'कवारधोती' नाम प्रचलित हो गया है। कई लोग कवारधोती का पञ्जाबी भाषानुसार कवार का असभ्य अर्थ करते हुए असभ्य भाव प्रकट करते हैं। जो केवल भ्रम मात्र ही है।

पारस्करगृह्यसूत्र में इस धोती रूप वस्त्र को 'अहतवस्त्र' ही कहा है और साथ लिखा है कि अहतवस्त्र को पहन कर घर के अन्दर सौभाग्य प्राप्ति के लिये गौरीदेवी का कन्या पूजन करे जैसे कि—

अथ कन्या स्नाता परिहिताहतवस्त्रा गृहन्ताः—
सौभाग्यादि कामनया गौरीं पूजयित्वा
तत्रैव गौरीं ध्यात्वा तिष्टत्। पारस्कर गृ०सू० पदार्थक्रमे।

अर्थात् कन्या स्नान करके अहतवस्त्र को धारण कर घर के अंदर सोभाग्यादि की इच्छा करती हुई गौरी देवी का पूजन करके वहीं पर अर्थात् कौतुकागार में गौरीदेवी का ध्यान करती हुई बैठे॥

इस वचन के अनुसार अहतवस्त्र (धोती) पहना कर पूर्व स्थापित गौरीदेवी का कौतुकागार में पूजन कर नैवेद्यरूप में छुहारे, खोपा, चावल, खांड आदि संकल्प कराए जाते हैं। जो पुरोहित ले लेता है। पूर्व समय में चावल पका कर गौरी का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पायस (तस्मै) नैवेद्य रक्खा जाता था और प्रसाद रूप में लड़की को खिलाया जाता था। पूर्व प्रान्त में अब भी लड़के वाले 'रसो' बना कर लाते हैं (जिसमें लुचियां, तस्मै, पुरीयां और सबजी होती है) गौरजा (गौरीदेवी) को भोग लगा कर लड़की को खिलाते हैं।

अहतवस्त्र पतिकुल का क्यों होता है, पिता का ही क्यों नहीं पहना दिया जाता! इस विषय में ऋग्वेद में सूर्या के विवाह वर्णन में लिखा है कि, वधू के लिये वस्त्र पति देता है, और उसे दूसरा कोई नहीं छीन सकता जैसे कि—

ये वध्वश्चन्द्रं वहतुं यक्ष्मा यन्ति जनादनु।
पुनस्तान्यज्ञिया देवा नयन्तु यत आगताः॥

ऋग्वेद १०।८५।३१॥

जो लोग वर से वधू को मिले आह्लादजनक वस्त्र लेने को आए थे उन्हें यज्ञभागग्राही देवता उनके स्थान पर लौटा दें वा विफल प्रयास करदें। इस मन्त्र से सिद्ध होता है कि वस्त्र पतिकुलका ही होना चाहिये और इसी प्रमाण के अनुसार विवाह के बाद भी कबार धोती को दहेज के साथ वर को ही दे दी जाती है। वैदिक समय में भी ऋषियों की यही धारणा थी', और जिस संस्कृति को आज भी चारजाति क्षत्रिय और ब्राह्मण तथा अन्य लोग भी अपनाते चले आए हैं

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कनेर क्या है ?

पूर्व लिख दिया है कि कनेर में सात वस्तुएं गरीगोला आदि होती हैं, जिनको स्वर्ण तथा चांदी के वर्क चिपकाए होते हैं और उनमें छेदकर मौली में पिरो वेदी में बिठाने के समय कन्या के गले में उदर (पेट) तक या घुटनों तक लम्बा हार बना कर पहना दिया जाता है। इसी को कनेर कहा जाता है।

कनेर का वेद और सूत्रगन्थों से सम्बन्ध

कनेर वनस्पतियों द्वारा बनाया जाता है और उन पर सुनैहरा और सफेद रंग चढ़ा कर गले में पहनाया जाता है। इसके धारण करने का फल और कारण अथर्ववेद में इस प्रकार लिखा है कि—वरण नामक मणि जो वनस्पतियों से बनी होती है, उस को धारण करने से यश, बल,सामर्थ्य बढ़ता है, और शत्रु नाश तथा दुःखों का परिहार आदि अनेक फल प्राप्त होते हैं। इस मणी के विनियोग में लिखा है कि "अभया महाशान्ति" में इस वरण मणि को अभिमन्त्रित कर बांधने से ऊपर लिखे फल प्राप्त होते हैं। अथर्ववेद दशमकाण्ड के तीसरे सूक्त में वरणमणि के विषय में लिखा है। सारे सूक्त को न लिखकर कुछ मंत्र लिख देता हूँ। यथा—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अयं मणिर्वरणो विश्वभेषजः
सहस्राक्षो हरितो हिरण्ययः।
स ते शत्रूनधरान् पादयाति पूर्व-
स्तान् दभ्नुहि ये त्वा द्विषन्ति ॥

अथर्व० १०।३।३।

यह वरण मणि, सब का औषध. सहस्रों नेत्रों वाला, पीला सुनैहरी, वह तेरे शत्रुओं को नीचे गिराएगा, आगे हुआ, उनको मारेगा, जो मुझसे द्वेष करते हैं।

इस मंत्र से वरणमणि का सुनैहरा रंग और औषधियों से बनाना पाया जाता है जैसा कि कनेर को अब भी विशेष औषधियों से बनाकर सुनैहरी वर्क लगवा लेते हैं। इसके आगे वरणमणि का वनस्पति देवता और यक्ष्मा (तपेदिक) को दूर करना लिखा है—

वरणो वारयाता अयं देवो वनस्पतिः।
यक्ष्मो यो अस्मिन्नाविष्टस्तमु देवा अवीवरन् ॥

अथर्व० १०।३।५।

यह वनस्पति देवता 'वरण' यक्ष्मा को, रोकेगा जो इसमें आविष्ट हुआ है, और उसको देवताओं ने भी रोक दिया है।

मैं अधिक मन्त्र न लिखता हुआ इन मन्त्रों से यह ही सिद्ध करना चाहता हूँ कि वैदिक समय में जो मणियें पहनी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जाती थीं, वही समयान्तर के कारण कुछ रूपान्तर और नामान्तर में होकर अब तक भी धारण की जाती हैं। हां इन विषयों पर अन्वेषन न होने के कारण यह सब विधियें निरर्थक समझी जाती हैं। मेरा यह पूर्ण विश्वास है कि ब्राह्मण और क्षत्रियों में जो भी प्रथाएं हैं। वह वैदिक और शास्त्रीय सिद्धान्तों के अनुसार हैं। इसी कनेर के विषय में सांख्यायन गृह्यसंग्रह के विवाह प्रकरण में लिखा है कि—

ततो "नीललोहितं भवति" इत्यनेन मन्त्रेण उर्णामयमतसीमयं वा कचिद्रक्त कचिच्छुक्लं ग्रथितमणित्रयं सूत्रक कन्याया ज्ञातयो भ्रातृपितृव्यादयो ग्रीवायां बध्नन्ति। अपरे व्याचक्षते—आजानुलम्बी-कर्तव्यः—सांख्यायन गृह्यसंग्रहे—

अर्थ—इसके बाद "नील लोहितं भवति" इस मन्त्र से ऊन या अलसी के बने धागे में कहीं लाल कहीं श्वेत गांठ दी हुई तीन मणियें कन्या के गले में भाई; चाचा या कोई ज्ञाती का पुरुष बान्धे। कई आचार्य कहते हैं कि धागा घुटनों तक लम्बा होना चाहिये।

ऊपर के वाक्य से स्पष्ठ है कि कनेर कन्या के गले में अवश्य बांधना चाहिये। ऊपर लिखे सूत्र में 'नीललोहितं भवति'

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मंत्र से यह भाव प्रकट होता है कि कनेर के धारण करने से कृत्या दूर होती है। और वधू का कुटुम्ब बढ़ता है और पति कुटुम्बरूपी बन्धन में बन्धता है। यथा—

नील लोहितं भवति कृत्या सक्तिर्व्यज्यते ।
एधन्ते अस्या ज्ञातयः पतिर्बन्धेषु बध्यते ।

अथर्व० १४।१।२६॥

अर्थ—नीला लाल होता है, चिमटने वाली कृत्या धकेल दी जाती है इस वधू के ज्ञाती बढ़ते हैं पति बन्धनों में बांधा जाता है।

हां ऊपर लिखे प्रमाण में और आज कल प्रचलित प्रथा में दो बातों में भेद है। एक तो मणियों का तीन होना, और दूसरे मणि को कन्या के भाई,चाचा या सम्बंधी द्वारा बांध जाना। कनेर में आजकल सात वस्तुएं होती हैं, और पति द्वारा बन्धाया जाता है, इसका कारण अधिक समय है। या किसी आचार्य का मत भी हो सकता है। वैद्यक दृष्टि से भी यदि देखा जाए तो कनेर की प्रत्येक वस्तुओं में विशेष २ गुण हैं भृगु जी ने नालिकेर आदि फलों को विवाह में मंगलदायक माना है जैसे कि—

नालिकेरफलंचैव तदन्तर्भक्ष्यमच्युत ।
खार्जूरादिफलं राजान् विवाहे मंगलप्रदम् ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नारयल का फूल और उसके अन्दर की गिरी तथा खजूर आदि (बादाम, अखरोट, अमलतास, सुपारी, बीचकड़ा) विवाह में हे राजन मंगल दायक हैं।

सात सरोच की उपयोगिता

पूर्व लिखी सात औषधियें "सात सरोच" के नाम से कही जाती है। जिनका वर्णन शार्ङ्गधरसंहिता में आया है। वैसे यह शास्त्रों ने विवाह में मांगलिक द्रव्य माने हैं। इन को घिस कर कन्या के मस्तक पर लगाया जाता है। जिसको पंजाब में स्त्रियें 'पील लगाना' कहती हैं। यह मस्तक पर और आंखों के नीचे भी लगाया जाता है। इस में जो वस्तुएं हैं वह कन्या के शारीरिक तथा हृदय रोग को दूर करने में बहुत उपयोगी हैं। कन्या को पति दर्शन की उत्कण्ठा हृदय में ताप और मूर्छा तक भी कर सकती है। और काम वेगादि से मस्तक में पीड़ा तथा शरीर अस्वस्थ हो जाना असम्भव नहीं। इसी लिये इन औषधियों को घिस कर लेप कराया जाता है इन के गुण शालग्राम कृतनिघण्टु के कर्पूरादि वर्ग में इस प्रकार लिखे हैं।

(१) जावित्री=कफ, खांसी वमन, श्वास, कृमि, विष नाशक और रुचिकर हैं। (२) जायफल=गर्म, रोचक, अग्नि-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दीपक और कान्ति को उज्वल करने वाला, वमन तथा हृदय रोग को दूर करता है। (३) इलायची = वस्तिरोग नाशक और मुख की दुर्गन्ध को दूर करती है। (४) केसर = मस्तक पीड़ा को दूर करने वाला तथा स्फूरती आदि को उत्पन्न करता है। (५) नख = मुख की दुर्गन्ध और काम ज्वर को नाश करता है, तथा वर्ण उज्वल करता है। (६) लौंग = रुचिकारी, कफ नाशक और वात नाशक है। (७) तज्ज(तगर) = मस्तक रोग, रुधिरविकार, और भय तथा हृदयरोग को दूर करता है।

यह सात सरोच औषध होते हुए भी विवाह में वर पक्ष से ला कर शकुन इस लिये किया जाता है कि—पति दर्शन की उत्कण्ठा से स्त्रियों में कामजन्य तापादि दोष होना असम्भव नहीं। यदि कोई तापादि हो जाए तो पिता को उपचार न करना पड़े। इस बात को विचार कर ही पूर्वजों ने यह "सात सरोच" वर कुल से लाकर कन्या के मस्तक पर लेप करना एक शकुन मान लिया मालूम होता है। दूसरे यह सौभाग्य द्रव्य होने के कारण मंगल देने वाले हैं। सात सरोच और कनेर में जो सात २ वस्तुएं होती हैं। वह भी एक विशेषमहत्व को प्रकाश करती हैं। ऋग्वेद में मरुतों के सात प्रकार के आयुध, आभूषण और दीप्तियों का वर्णन है जैसे—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सप्तानां सप्त ऋष्टयः सप्तद्युम्नान्येषाम् ।

सप्तो श्रियो धिरे ॥

॥८ मं० २८ सू० ५ मं०

इन्द्र के अंशरूप सात मरुतों के सात प्रकार के आयुध, आभरण और दीप्तियां हैं। इसी प्रकार ऋ० वे०६ मं०६६सू० ६ मन्त्र में सात नदियों का वर्णन है। और मं० १ सूक्त१६४ मन्त्र २-३ में सूर्य के सात घोड़ों या सात चक्रों का वर्णन है यजुर्वेद के ३४ वें अध्याय के ५५ मंत्र में सात ऋषि और सात जलों (समुद्रों) का वर्णन है। क्योंकि ईश्वरीय प्रकृति में सात संख्या विशेष स्थान रखती है इस कारण मनुष्य भी इसी संख्या को विशेष अपनाता है।

मैंहदी लगाना।

मैंहदी हाथ पाओं में लगाने से दाह को दूर करती है। यह सब वस्तुएं विवाह से पूर्व ही उपयोग में इसलिये लाई जाती है, कि जिस कन्या को मस्तक पीड़ा, ऋतुनिरोध, मोह, हाथ पाओं में दाह तथा काम ज्वरादि दोष न हो सकें। शोक है कि अब लोग इन वस्तुओं को केवल शकुन ही समझते हैं। और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यथाविधि उपयोग में नहीं लाते। यदि लावें तो आशा है कि स्त्रियों को वह कष्ट न झेलने पड़े जो आज कल कइयों को झेलने पड़ते हैं।

(मौली और भूषणों का उपयोग)

मौली—एक लालरंग का मांगलिक सूत्र है। इसको कवार धोती में इस लिये भेजा जाता है, कि कन्या के बाल इस मौली से गूंथे जाएं और वेणी (गुत्त) में भी लगाई जाए। जो सौभाग्य का चिह्न प्रकट करती है। दूसरे वर का कन्या से ग्रंथीबन्धन भी इस मौली के ही साथ किया जाता है। ग्रंथीबन्धन से प्रेम-बन्धन दृढ़ होता है अथर्व वेद में लिखा है—

अभित्वा मनुजातेन दधामि मम वाससा।
यथासी मम केवलो नान्यासी कीर्तयाश्चन॥

अथर्व ७।३८।१॥

मनु से उत्पन्न हुए मेरे वस्त्र से तुझे बांधती हूँ, जिस से कि तू केवल मेरा हो दूसरियों का नाम भी न ले। इस से सिद्ध होता है, कि ग्रंथीबन्धन से प्रेमबन्धन दृढ़ होता है। इस वेद वाक्य को स्मरण करते हुए, ऋषिसंतान हिन्दू प्रेम बन्धन को दृढ़ करने के लिये ग्रंथिबन्धन आज तक भी करते चले आ रहे हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जाति भूषण श्री दुर्गादास जी महिरा उर्फ (प्रसिद्ध) लाली शाह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जाति भूषण श्री दुर्गादास जी मिहिरा
उर्फ़ (प्रसिद्ध) लाली शाह
प्रैज़िडैण्ट "अमृतसर पीसगुड्स ऐसोसियेशन"
अमृतसर ।

आप ने अपने पूर्वजों का अनुसरण करते हुए, कपड़े के ब्योपार में विशेष सफलता प्राप्त की, विशेष अनुभव प्राप्त कर के "प्रधानपद" प्राप्त किया और आज तक अपने बड़ों की शिक्षानुसार अपने कर्तव्य को विशेष उत्साह के साथ निभा रहे हैं। आप अपने सहयोगी ब्योपारी भाईयों के कष्टों को राज संसद तक पहुंचाने में सर्वदा तन; मन, धन, से संलग्न रहते हैं। आप ने अपने पूज्य पिता पितामहा आदि के नाम की पुण्यसमृति को चिरस्थाई रखने के लिये हरिद्वार आदि अनेक स्थानों पर यादगारें स्थापित की हुई हैं।

आप के चिरञ्जीव सुपुत्र श्री जानकी दास जी भी इसी सन्मार्ग पर चल रहे हैं और अपने पूज्य पिता की आज्ञा पालन करते हुए सज्जनता का परिचय दे रहे हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नत्थ कन्या के नाक में डाली जाती है। और पट्ठी (मुन्दरी) अंगुली में, तथा चैन गले में पहना दिया जाता है। जिसके द्वारा सौभाग्य का चिह्न ज्ञात होता है। दूसरे पट्ठी से जब वर कन्या घर में आता है तब वेदी में बैठनेसे पहिले शकुन (खड़ुकने) करने के समय "लस्सी मुन्दरी" खेल खेला जाता है। जिस का वर्णन प्रथा घोड़ी में किया जाएगा।

प्रथा वैण्डा

यह प्रथा 'घोड़ी प्रथा' से पहले होती है। कन्या पिता ने कन्या तथा वर को जो दहेज में वस्त्र देने होते हैं। वह इसी समय दे देता है। वस्त्र संख्या तथा अन्य वस्तुएं निम्नलिखित होती हैं। जैसे—

कन्या के तेवर (वस्त्र) अपनी शक्ति के अनुसार ३ तीन ५ पांच, ७ सात, ९ नौ, ११ ग्यारह, या १३ तेरह। लड़के के कपड़े (जो विवाह के समय वर पहन कर कन्या के गृह में जाता है) दो जोड़े जूते (कन्या के लिये और वर के लिये) आभूषण (जेवर) जो ढंगों में दिया था, और चांदी के बरतन १ नारियल मंगलसूत्र से लपेटा हुआ २ रु०साथ, इस सब सामान को एक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चादर में बांध किसी सेवक के सिर पर उठवा कर जल के मिलने का शुभ शकुन करते हुए लड़के के घर पुरोहित और कुछ स्त्रियें ले जाती हैं। वहां वर की माता को काष्टपीठ (पीढ़ी) पर बैठा कर वैण्डा आंचल (झोली) में पुरोहित जी डाल देते हैं।

'वैण्डा' का अर्थ और वेद में उल्लेख

चारजातिक्षत्रिय विवाह में दिये जाने वाले वस्त्रों को 'वैण्डा' या 'विहेण्डा, बोलते हैं। इन दोनों का अर्थ सामान्यता विवाह में दीये जाने वाले वस्त्र होता है। और 'वैण्डा' शब्द बान्धा दहेज' शब्द से बिगड़ कर वैण्डा प्रसिद्ध हुआ प्रतीत होता है। 'बांधा' शब्द का अर्थ बांधना और नियत करना होता है। पूर्व समय में एक दूसरे के देखा देखी अधिक से अधिक दहेज देने के कारण जो जनता को कष्ट उठाने पड़ते थे उन को दूर करने के लिये पूर्वजों (बड़ों) ने बांध दिया था अर्थात् नियत कर दिया था कि इस से अधिक दहेज कोई न दे, इस लिये इस को बान्धा दहेज कहा जाता था। दूसरे खुला दहेज न देकर प्रत्युत बांध देने के कारण ' बांधा दहेज' अर्थात् किसी कपड़े में बांधा हुआ दहेज बांधने का अभिप्राय यह था कि लोगों के दिखावे के लिये जो अधिक से अधिक देना पड़ता था वह न दिया जा सके और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अपनी सामर्थ्य के अनुसार बांध कर दहेज दे दिया जावे। मगर बड़ों का यह सब कुछ करना, लोगों ने अपनी मनमानी करके निरर्थक कर दिया और लोगों के घर जा २ कर दिखाना शुरू कर दिया। जिस से वही दोष अधिक देने का प्रारम्भ हो गया भाषा विज्ञान के अनुसार 'बांधा दहेज' में बांधा विशेषण और दहेज विशेष्य है। जब कोई वाक्य अधिक प्रचलित हो जाता है तो उसका विशेषण ही बोला जाता है। जैसे रेल पर जा रहा हूँ या रेल जा रही है यहां 'रेलगाड़ी' इस में गाड़ी विशेष्य को छोड़ कर विशेषण 'रेल' ही का प्रयोग होता है इसी प्रकार 'बांधा दहेज' में दहेज शब्द को छोड़ कर बांधा ही बोले जाने लगा और बिगड़ते २ पञ्जाबी में 'बांधा' के आ को ऐ और धा को डा हुआ जिसे वैण्डा शब्द प्रचलित हुआ। जो आज तक भी गुप्त और नियमित दहेज देने के अपने उद्देश्य को जता रहा है। शोक है कि लोग उद्देश्य से लाभ नहीं उठाते,

कन्या को दहेज देने के विषय में स्मृतियों तथा पुराणों में तो स्थान २ पर लिखा मिलता है, वेदों में भी इस का प्रसंग आया है जिस से ज्ञान होता है कि यह प्रथा वैदिक काल से चली आई है, ऋग्वेद के प्रथम मण्डल १२६ सूक्त मन्त्र २ और ३ में कक्षीवान् के विवाह में स्वनय नाम के राजा ने दहेज में आभूषण गौएं घोड़े और रथों के देने का उल्लेख आता है। यथा—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शतं राज्ञो नाधमानस्य निष्कान् छतमश्वान्
प्रयतान्त सद्य आदम् । शतं कक्षीवां असुरस्य
गोनां दिवि श्रवो जरमाततान ॥ २ ॥

ऋग्वेद १/१२६/२

असुर राजा के ग्रहण के लिये मुझ से याचना करने पर मैं कक्षीवान् ने उन से १०० सौ निष्क (आभरण या स्वर्ण माप) १० सौ घोड़े १०० बैल ले लिये। स्वर्गलोक में राजा नित्य कीर्ति विस्तार करेंगे. इसी प्रकार ३ मन्त्र में साठ हजार गौ काक्षीवान् को दहेज में देने का वर्णन है, और

ऐसे ही अथर्व वेद के पांचवें काण्ड के १७ सूक्त १२ मन्त्र में लिखा है—"नास्य जाया शतावही" इत्यादि,

इस मन्त्र में दहेज लाने वाली लिखा है, इन मन्त्रों से सिद्ध होता है कि वैदिक समय में भी दहेज दिया जाता था और उस संस्कृति की याद में आज यह 'वैण्डा' प्रथा की जाती है. भेद केवल इतना है कि पूर्व समय में कन्या पिता अपनी सामर्थ्य अनुसार दहेज देता था, किन्तु आज वर का पिता अधिक से अधिक मांगता है, जो समाज को हानी प्रद है वैसे तो 'खट्ट दान' भी दहेज ही है मगर चारजा क्षत्रिय भूषण और वस्त्र विवाह से पर्व ही दे देते हैं, खट्ट दान विवाह हो

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जाने के बाद करते हैं। कारण यह है कि 'खट' नामकों की होती है। ढंगों में भूषण और वैएडा में वस्त्र, कन्या पिता इस लिये देता है। क्योंकि 'ब्रह्मविवाह' में वर का भूषण और वस्त्रों से पूजन करके कन्या दान करना लिखा है, इसलिये कन्या पिता ढंग और वैएडा प्रथा के रूप में विवाह से पूर्व ही भूषण और वस्त्र पूजनरूप दे देता है।

वैंडा देने के बाद लौटती हुई स्त्रियें दिये हुए भूषणों में से एक गले का और एक भूषण कान का ले आती हैं, जिन को कि विवाह के समय कन्या को धारण कराया जाता है। क्योंकि कन्या को भूषण और वस्त्रों से अलंकृत करके दान करना लिखा है। इस लिये कन्या को अलंकृत करने वाले भूषण जो दिखावे के लिए ढंगों में दिये गये थे उन में से एक दो भूषण वापिस ले कर कन्या को विवाह में पहनाये जाते हैं। वर को देने के लिये एक अंगूठी (मुन्दरी) भी वापिस लाई जाती है।

(१) रु० और नारयल तम्बोल के रूप में वर की भेटा होती है। और वस्त्र पहनने के लिये होते हैं। जो घोड़ी के समय पहन कर कन्या गृह में जाता है। क्योंकि चारजातिक्षत्रिय 'ब्रह्मविवाह' को मुख्य मानते हैं इसलिये वर की वस्त्रों और भूषणों की भेटा से पूजा करते हुए, अपने गृह में ला कर कन्या

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दान करके देते हैं। 'ब्राह्मविवाह' के विषय में विशेषतया 'घोड़ी प्रथा' में लिखूंगा। (१)रु० और उत्तरीय वस्त्र (जौल्लां=ओढ़न) लड़के की माता की भेटा के होते हैं। शेष तृणीवस्त्र (तेवर अर्थात् स्त्रियों के तीन वस्त्र=नीचे का ऊपर का-और गले का) दहेज रूप में कन्या के लिये होते हैं।

प्रथा घोड़ी

यह प्रथा विवाह से पूर्व जब कन्यापत्तीय लोग वर को लेने के लिये घोड़ी लावें तब लड़के वाले करते हैं। इस समय निम्नलिखित सामान होता है—

केसर, फूल, फूलमाला, मुकुट, तलवार, सोहनसेहरा, वर के वस्त्र (जो वैएडा में आए थे) तथा केसरी मलमल का कुड़ता और पेची। सरबाले के वस्त्र, (१) रु० नारयल, (जो वैएडा में आया था) १ जुट्ट, २८ छुहारे, लौंग और लाचियां।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जब कन्यापक्षवाले घोड़ी साथ लाकर वर को लेने के लिये आवें, उस समय चारमुखिया दीपक खारे के नीचे जला कर ऊपर वर बैठे और स्त्रियों द्वारा सिरके ऊपर वस्त्र फैला कर स्नान करे तथा पात्रों से ५ चप्पनियों को फोड़े। फिर लकड़ी की पटड़ी पर बैठकर वस्त्रों की प्रतिष्ठा करके वस्त्रोंको धारण करे कंघी द्वारा चोटी को संवार कर शिरोवेष्टन (साफा) बांधे। आंखों में सुरमा लगाए (जो कि भाइयों की स्त्रियें लगाती हैं)। इसके बाद वर और सरवाले से गणपत्यादि ग्रहों का पूजन कराया जाता है, बाद में मुकुट की प्रतिष्ठा और मुकुट स्थित देवताओं का पूजन करा कर वर के मस्तक पर मुकुट बांधा जाता है। मुकुट के ऊपर सोहनसेहरा बांधा जाता है। और सिर पर फूलमाला चढ़ाई जाती हैं। तलवार की प्रतिष्ठा करके वर को दी जाती हैं। और पुरोहित रक्षाबंधन (गाना) बांध देता है। इसके बाद १ रु० नारयल जो वैण्डा में आया था वर की झोली में तम्बोल का डाल दिया जाता है। अन्य लोग भी जिन्होंने तम्बोल देना होता है दे देते हैं, जिसको राग (भाट) नाम ले २ कर बोलता जाता है। ग्रह विसर्जन के बाद वर को घोड़ी पर चढ़ाने के लिये जल के मेल से ले जाया जाता है। १ जुट्ट, २८ छुहारे, १ नारयल जो लडके की झोली में होता है नफर (नौकर जो वर के साथ जाता है) को किसी वस्त्र में बांध कर दे दिये जाते हैं। कई बुंजाही

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अरादरीयों में जंडी को शाखाका पूजन करके तलवार से वर काट देता है जब वर घोड़ी पर चढ़ता है उसी समय सरवाले को भी साथ ही घोड़ा पर चढ़ा दिया जाता है और उसके हाथ से दान रूप में चावल, दही, स्वर्ण, चांदी अनविद्धमोती नारयल और दक्षिणा लाल वस्त्र में बांध कर लगवा लिये जाते हैं। बहनें घोड़ी को चनों की दाल खिलाती हैं और घोड़ी के बालों को गूंथती हैं जिसको 'वागगूंथना' कहा जाता है। बहनों को वर बधाई के रुपये देता है। इसके बाद कन्या पक्ष नापित छैना(हाथ से बजाने वाला पीतल का खास बाजा) बजाता हुआ कन्या पक्ष के लोगों के साथ कन्यागृह में ले जाता है। इस समय वर पक्ष के लोग वर के साथ नहीं जाते। इस कर्म को घोड़ी, जंज या बरात बोला जाता है।

कन्यागृह में जाने के पूर्व वर का फूलों की वर्षा से स्वागत किया जाता है और घोडी से उतार कर वर को जनवासा अर्थात् कन्यागृह से भिन्न किसी स्थान में उतारा दिया जाता है। वहां पर वर और सरवाले को खाने के लिये कुछ मिठाई और गरी छुहरा दिया जाता है विवाह प्रारम्भ होने तक वर यहीं रहता है।

खारे पर स्नान करना

पूजनादि देवकार्यों में पवित्रता मुख्य होने के कारण

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विवाह से पूर्व अपने घर से ही वर मङ्गल स्नान करके जाता है। घर में जब मङ्गल स्नान करना हो तो आधार के बिना स्नान नहीं करना चाहिए। इसलिये आधार रूप कोई आसन होना आवश्यक है। क्योंकि ऊर्णादि आसन गीले हो जाते हैं इसलिये पीठासन (लकडी का आसन) या शरासन खारा) ही उपयुक्त हो सकता है। विवाह में शरासन की विशेषता होती है, इस लिये स्नान के समय वर को खारे पर स्नान कराया जाता है। इस स्नान को शास्त्र 'मंगल स्नान' कहते हैं।

वर के ऊपर कपड़ा फैलाने के विषय में 'प्रथा फुल्लकढ़ाई मायां' में विशेष रूप से लिखा जा चुका है।

चप्पनियों को फोड़ना तथा खारे के नीचे दीपक जलाना

विवाह रूप यज्ञ में अधिकार प्राप्ति के लिये तथा पाप निवृत्ति के लिये प्रायश्चित्तरूप पांच शराव अर्थात् मट्टी की चप्पनियें फोड़ी जाती हैं। जिससे यह ज्ञान किया जाता है कि विवाह यज्ञ में वर ने १ काम, २ क्रोध, ३लोभ, ४ मोह, ५ अहंकार, रूप पांच शत्रु नष्ट करके विवाह यज्ञ को निर्विघ्न समाप्ति के लिये सम्पूर्ण करने की प्रतिज्ञा की है। इस लिये पाओं से चप्पनियों को चूर्ण करता है। दूसरे इससे यह भी ज्ञान किया जाता है कि यदि कोई शत्रु युद्ध के लिये आएगा तो इन चप्पनियों की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तरह वर उन को नष्ट कर देगा। तीसरे इससे वर के बल की भी परीक्षा हो जाती है। यज्ञ प्रारम्भ करने से पहले स्नान करने के बाद अग्नि के आगे शत्रु नाश करने की प्रार्थना अथर्ववेद के मंत्र से की जाती थी। मंत्र को भूलकर उसके भाव को प्रत्यक्ष रूप में दिखाने के लिये आज तक इसकी याद में चप्पनियां फोड़ दी जाती हैं। प्रार्थना का मन्त्र यह है—

अयमाग्निः सत्पतिर्वृद्धवृष्णो रथीव
पत्तीन् जयत पुरोहितः।
नाभा पृथिव्यां निहितो दविद्युतदधस्पद
कृणुतां ये पृतन्यवः॥

अथर्ववेद ७६४,१॥

सन्तों (श्रेष्ठ पुरुषों) के पति पुरोहित इस अग्नि ने बढ़े हुए बलवालों को जीता, जैसे रथी प्यादों को पृथिवी पर नाभि (उत्तम यज्ञवेदी) में अत्यन्त चमकता हुआ वह 'उन' को हमारे पाओं के नीचे करे जो हम से लड़ना चाहते हैं।

इस मन्त्र में दो बातें लिखी हैं एक तो भूमि पर तथा वेदी में स्थित अग्नि के आगे प्रार्थना करना। दूसरे शत्रुओं को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाओं के नीचे कर के मसलना। इस मन्त्र के इन दोनों भावों को व्यवहार में लाते हुए ब्राह्मण क्षत्रिय आज तक भी इस की याद में खारे के नीचे भूमि पर चार मुखिया दीपक जला कर तथा चप्पनियां फोड़ कर वर को इन भावों को स्मरण कराते हैं। मालूम होता है कि जब से 'गृह्याग्नि' का घरों में स्थापन करना जाता रहा, तब से मङ्गल-स्नान करने के बाद अग्नि के आगे यात्रा में शत्रूओं को मारने की प्रार्थना करने के लिये समिधाओं से अग्नि प्रज्वलित न करके चार मुखिया दीपक जला कर ज्योतिरूप अग्नि प्रज्वलित करने की प्रथा प्रचलित हुई और अज्ञानता के कारण वेदी के स्थान में खारे से ही काम चला लिया है। क्योंकि वेदी चौकोन होती है और खारा भी चौकोन होता है। दूसरा भाव शत्रूओं के मारने का इस प्रकार दिखाया जाता है कि शत्रूओं को इन चप्पनियों की तरह चूर्ण कर दूंगा। इसी लिये उछल कर पाओं से चप्पनियों को फोड़ा जाता है, खारे के नीचे दीपक न जला कर किसी विशेष स्थान पर वेदी में अग्नि या ज्योति के आगे शत्रूनाशक प्रार्थना करना उचित और महत्व दायक है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

घोड़ी के साथ लड़के वाले क्यों नहीं जाते ?

तथा सरवाले के विषय में।

मनुस्मृति के तृतीय अध्याय में आठ प्रकार के विवाह लिखे हैं जैसे—(१)ब्राह्म, (२) दैव, (३)आर्ष, (४) प्राजापत्य, (५) असुर, (६) गान्धर्व (७) राक्षस, (८) पैशाच ।

इन में ब्राह्म विवाह करने का विशेष फल लिखा है, और जिस को ब्राह्मण क्षत्रिय करते आये हैं, इस का लक्षण यह है—

आच्छाद्य चार्चयित्वा च श्रुतिशीलवते स्वयम् ।
आहूयदानं कन्याया ब्राह्मोधर्मः प्रकीर्त्तिताः ॥

मनु० अ० ३,२७

भावार्थ-वस्त्र और भूषणादि से कन्या को अलंकृत कर तथा वर का पूजन करके वेदज्ञ विद्वान् और शीलवान् को स्वयं बुला कर कन्या दान करके देने को ब्रह्मविवाह कहा है,

इसी अध्याय के ३७ श्लोक में "ब्रह्मविवाह करने से कर्ता दश पूर्व और दश पर तथा एक अपने अर्थात् २१ पुरुषों (पीढ़ियां) का उद्धार करता है" लिखा है, इसी प्रकार याज्ञवल्कस्मृति के आचराध्याय विवाह प्रकरण ५८ अठावन श्लोक में भी लिखा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है। ऊपर लिखित प्रमाणों के अनुसार ब्राह्मण क्षत्रिय ब्राह्मविवाह को मुख्य समझते हुए, वर को लाने के लिये कन्या पक्ष वाले आप ही सवारी के लिये घोड़ी लेजाते हैं;और वर को साथ लाते हैं। इसी ही कारण वर के भाई बन्धू साथ नहीं जाते। केवल सेवा के लिये नफर (नौकर) और अंगरक्षक (सरबाला) साथ भेजा जाता है और इसी ही कारण सरबाला वर के पितृवंश तथा मातृ वंश का नहीं होता पूर्व समय में तो किसी शूरबीर को सरबाला (अंगरक्षक) बना कर भेजा जाता था। समय के प्रभाव से या लज्जा के कारण वीर मनुष्य की जगह पर भानजा या कोई बालक भेजा जाने लगा। जिस समय कोई मनुष्य जाता था, तब उसको वर के पीछे घोड़ी पर नहीं चढ़ाते थे। जब से कोई बच्चा या भानजा जाने लगा, तब से बच्चा होने के कारण वर के पीछे घोड़ी पर बैठाने लगे हैं। पूर्व प्रान्त (यू० पी०) में ब्राह्मणबालक को सरबाला बनाते हैं।

वर को अन्जन (सुरमा) लगाना

आंखों में सुरमा लगाने से आंख रोग तो दूर होते ही हैं और मनुष्य हर समय लगा सकता है, मगर यज्ञोपवीत और विवाह के मंगल स्नान में लगाना एक विशेष महत्त्व को रखता है

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अथर्ववेद में आंख रोगों को दूर करने के अतिरिक्त विशेष विधि द्वारा सेवन करने से यक्ष्म (तपेदिक) तक दूर होना लिखा है। यथा—

यस्याञ्जन प्रसर्पस्यङ्गमङ्गं परुष्परुः।

ततो यक्ष्मं वि बाधस उग्रो मध्यमशीरिव॥

अथर्व० ४।६।४।

हे आञ्जन! जिसके तू अङ्ग २ में जोड़ २ में घुसता है वहां तू यक्ष्म को निकाल फेंकता है एक तेजस्वी मध्य में रहनेवाले की नाईं।

विस्तार भय से अधिक नहीं लिखता सुरमे का व्यवहार वैदिक काल से चला आ रहा है। यज्ञोपवीत-संस्कार के समावर्तन कर्म में सुरमा मंत्र पढ़कर लगाया जाता है।

तलवार, वरवेष तथा मुकुट के विषय में

पूर्व समय में जब लोग यात्रा के लिये जाते थे तो अपना वेष एक सैनिक के समान सजाकर जाते थे। उस समय मनुष्य का शूरवीर होना ही प्रधान गुण माना जाता था आजकल की तरह 'सजावट' और सुकुमारता, गुण नहीं माना जाता था। आजकल जैसे हाथ में छड़ी रक्खी जाती है तब हाथ में तलवार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सजती थी। केसरी वाणा (वस्त्र) योद्धा का वेष होता था। उस समय की याद आज घोड़ी के समय दिखाई जाती है। यह समय सौ दो सौ वर्ष का नहीं प्रत्युत वैदिक काल का है। ऋग्वेद में वर वेष के विषय में वर्णन आता है यथा—

वरा इवेद्रैवतासो हिरण्यैरभि स्वधाभिस्तन्वः
पिपिश्रे। श्रिये श्रेयांसस्तवसो रथेषु सत्रा
महांसी चाक्रिरे तनूषु ॥

ऋग्वे० ५ मं० ६० सू० ४ मं०

विवाह के योग्य धनवान् युवा जिस प्रकार सुवर्णमय अलङ्कार, वस्त्र आदि तथा उदक के द्वारा अपने शरीर को भूषित करता है। उसी प्रकार सर्वश्रेष्ठ बलशाली मरुद्गण रथ के ऊपर समवेत होकर अपने शरीर की शोभा के लिये तेज धारण करते हैं।

इस मन्त्र से वस्त्रों और भूषणों से अलंकृत होकर शूरवीर का शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित होना सिद्ध होता है, मुकुट के विषय में यह ज्ञान होता है कि यह एक शिरस्त्राण (सिर की रक्षा के लिये कवच) है और मुकुट पर पांच देवताओं की मूर्तियें वर का आस्तिक होना और रक्षा करना प्रगट करती हैं। वर की रक्षाके लिये देवताओं को सिर पर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्थापित किया जाता है। शास्त्रों में पंचदेव पूजन सब कर्मों में प्रधान माना है। जैसे—

आदित्य गणनाथं च देवीं रुद्रं च केशवं।

पञ्च दैवत्यमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत् ॥

सूर्य, गणेश, देवी, रुद्र, (शङ्कर) और विष्णु ये पांच देवता होते हैं और इनका सब कर्मों में पूजन करना चाहिये।

(१) सूर्य, पांच देवों का वर्णन शास्त्रों में ही नहीं इन का वर्णन वेदों में भी आता है, जैसे कि ऋग्वेद में सूर्य का पूजन स्थान २ पर लिखा है—

हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुपह्वये।

स चेता देवता पदम् ॥

ऋ० मं० १ सू० २२ मं० ५ ॥

स्वर्णहस्तक (सुनैहरी किरणों वाले) सूर्य को रक्षा के लिये बुलाता हूँ। वही देव अपने भक्त को मिलने वाला पद बता देंगे। इस मन्त्र में सूर्य भगवान् से प्रार्थना की गई है। जो पांच देवों में एक हैं।

(२) गणपति (गणेश) के विषय में ऋग्वेद में लिखा है—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुप-श्रवस्तमम् । ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नःशृण्व-न्नूतिभिः सीदसादनम् ॥

ऋ० मं० २ सू० २३ मं० १

हे ब्रह्मणस्पति ! तुम देवों में गणपति और कवियों में कवि हो। तुम्हारा अन्न सर्वोच्च और उपमान भूत है। तुम प्रशंसनीय लोगों में राजा और मन्त्रों के स्वामी हो। हम तुम्हें बुलाते हैं। तुम हमारी स्तुति सुन कर, आश्रय प्रदान करने के लिये यज्ञगृह में बैठो।

इस मन्त्र में परब्रह्म परमात्मा को ही गणपति (गणेश) स्पष्ट कहा है, और यज्ञ में इस का आवाहन किया है। पुराणों में गणपति को शंकर (रुद्र) का पुत्र माना है, इस का मूल यजुर्वेद में मिलता है, जैसे कि—

प्रतूर्वन्नेह्यवक्रामन्नशस्ती रुद्रस्य गाणपत्यं

मयोभूरेहि । इत्यादि—

यजुर्वेद अ० ११ म० १५ ॥

हे विराट् देव ! हमारे शत्रुओं को मारते हुए, और हमारी निन्दा को निवारण करते हुए, और हमें सुख देते हुए, यहीं

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आओ। और आकर रुद्र देवता (शंकर) के गणपतित्व (गणेशत्व) को प्राप्त होवो। इत्यादि—

इस मन्त्र में विराट को रुद्रदेवता अर्थात् शंकर के गणपतित्व (गणेशपन) के प्राप्त होने की प्रार्थना है। जिससे स्पष्ट होता है कि गणपति का शंकर भगवान से सम्बन्ध है। गणपति पूजन करनेके लिये आधार रूप मूर्तियें भिन्न २ हैं, जैसे (१) अष्टदल के ऊपर (२) स्वस्तिक और (३) गणेश के 'गं' बीजमन्त्र

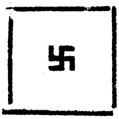

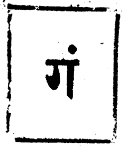

अर्थात् वामावर्त स्वस्तिक नीचे

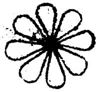

ऊपर दाए बाए जुड़े हुए, गणेश के चार 'गं' बीजमन्त्रों के ऊपर पूजन करने के लिये फल, सुपारी, गुड़, मृत्तिका (मट्टी का ढेला) के ऊपर रक्त सूत्र लपेट कर पूजन करना लिखा है। पञ्जाब प्रान्त में स्वस्तिक पर, पूर्व प्रान्त में अष्टदल पर, और तान्त्रिक लोग 'गं' बीजमन्त्र पर पूजन करते हैं। गं बीज के विषय में शारदातिलक में लिखा है कि—

पश्चान्तकं शशिधर बीजं गणपतेर्विदुः।

पश्चान्तको गकारः। शशिबिन्दुस्तद्युक्तं 'गं' बीजम्

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अर्थात् गणपति का 'गं' बीज होता है। इस में देशाचार और सम्प्रदाय प्रधान हैं।

(३) देवी के विषय में यजुर्वेद में वर्णन आता है। इस में एक देवी का ही वर्णन नहीं, प्रत्युत तीन देवियों सरस्वति, इडा, भारती का वर्णन है। जिस का कि पुराणों में महाकाली महालक्ष्मी, महासरस्वती, नामों से वर्णन है। जैसे कि—

तिस्रो देवीर्हविषा वर्धमाना इन्द्रं
जुषाणा जनयो न पत्नीः।
अच्छिन्नं तन्तुं पयसा सरस्वतीडा देवी
भारती विश्वतूर्तिः॥

यजुर्वेद अ० २० म० ४३॥

तीनों दीप्यमान् देवियें सरस्वति, इडा, भारती पुष्टि युक्त साध्वी स्त्रियो के समान, इन्द्र को सेवन करती हुई, दूध और हवि से यज्ञ को निर्विघ्न करें॥ ऋग्वेद मंडल १० सू० ७० मन्त्र ८ में और ऋ० म० २ सू ३ म० ८ में भी इडा, भारती और सरस्वती तीनों देवियों से प्रार्थना की है। इन मन्त्रों में देवियों का वर्णन और प्रार्थना करना है। जिनका सनातन जनता महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती के नामों से विशेष पूजन करती है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(४) रुद्र के विषय में तो यजुर्वेद के सोहलवें अध्याय में वर्णन है। मैं यहां उस के पहले दूसरे मन्त्र को लिखता हूँ। जिस में रुद्र का पर्वत पर निवास माना है। जैसे पौराणिक शंकर का कैलाश पर्वत पर वास मानते हैं।

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि

यजुर्वेद अ० १६ मं० २ ॥

कैलाश पर्वत पर स्थित हो कर प्राणियों के सुख को विस्तार करने वाले हे रुद्र ! जो तुम्हारा शान्त, मंगलरूप और सौम्य, तथा पाप फल को न देकर, पुण्यफल का ही देने वाला शरीर (शंकरस्वरूप) है,उस सुख भरे शरीर से हम को अवलोकन कीजिए।

इस मन्त्र में रुद्र का पर्वत 'कैलाश' पर रहना और प्रार्थना से रुद्रस्वरूप को त्याग कर शंकररूप सिद्ध होता है।

(५) विष्णु भगवान् का वर्णन तो वेदों में बहुत स्थानों पर आया हैं। मैं संकेत मात्र ऋग्वेद का एक मन्त्र लिखता हूँ। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल २२ सूक्त के १६ का मन्त्र से लेकर २१ मन्त्र तक विष्णु भगवान का वर्णन है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते ।

विष्णोर्यत् परमं पदम् ॥

ऋ० मं० १ सू० २२—२१ ॥

स्तुति करने वाले और मेधावी मनुष्य विष्णु के उस परम-पद से अपने हृदय को प्रकाशित करते हैं ।

इस मंत्र में विष्णु भगवान् की उपासना करना स्पष्ट लिखा है । ऊपर के प्रमाणों से पञ्चदेव पूजन सिद्ध होता है, जिस को शास्त्रों में विशेषरूप से लिखा है । विवाह के समय अपनी रक्षा के लिये इन देवताओं का पूजन करके कवचरूप मुकुट को सिर पर धारण कर लिया जाता है । इसलिये मुकुट पर इन देवताओं की मूर्त्तियें होती हैं । यह मुकुट स्वर्ण या चांदी का होता हैं । ऋग्वेद में शिरस्त्राण स्वर्ण का होना लिखा है । जैसे कि—

उक्षन्ते अश्वां अत्यां इवाजिषु नदस्य कर्णै स्तुरयन्त आशुभिः । हिरण्यशिप्रा मरुतो दविध्वतः पृक्ष याथपृषतिभिः समन्यवः ॥

ऋ० २ मं० सू० ३४ मं० ३

युद्ध में तुरङ्ग की तरह मरुद्गण विशाल भुवन को सिक्त करते हैं । वे घोड़े पर चढ़ कर शब्दायमान मेघ के कान के पास

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हौक द्रुतवेग से जाते हैं। मरुतो तुम हिरण्य (स्वर्ण) शिरस्त्राण (मुकुट) वाले और समान क्रोध वाले हो। तुम वृक्ष आदि कम्पित करते हो, तुम पृषतमृग पर चढ़ कर अन्न के लिये जाते हो।

इस मंत्र में स्वर्ण का शिरस्त्राण (मुकुट) लिखा है। असमर्थता के कारण चांदी का भी हो सकता है। तलवार के विषय में विस्तार भय से मैं प्रमाण रूप मन्त्रादि नहीं लिख रहा वेदों में तलवार के विषय में सूक्त भरे पड़े हैं। अथर्ववेद के ग्यारहवें काण्ड में नावें सूक्त के प्रथम मन्त्र में शत्रुओं पर विजय पाने के लिये तलवार की स्तुति की है और शूरवीर का एक अंग माना हैं। इसलिये वर के पास तलवार का होना आवश्यक हैं।

वर को गाना बांधना

गाना बांधना यह रक्षाबन्धन कर्म हैं। इस का वेदों में विशेषकर विधान आया है। स्वर्ण का गाना विशेष फल देता है। इसका वर्णन 'प्रथा फुल्लकढ़ाई मांयां' में कर दिया है। यहां पर केवल बांधने का फल लिखा जायगा। यजुर्वेद में लिखा है—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

न तद्रक्षाᳪसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः
प्रथमजᳪह्येतत् । यो बिभर्ति दाक्षायणᳪ
हिरण्यᳪ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स
मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ।

यजुर्वेद० ३४ । ५१ ।

इस के धारण करने वाले को राक्षस आक्रमण नहीं करते, पिशाच हिंसा नहीं कर सकते, क्योंकि यह देवताओं का प्रथम उत्पन्न हुआ तेज है। जो कोई स्वर्ण को धारण करता है, वह देवलोक में दीर्घ काल तक वास करता है और मनुष्य लोक में अपनी आयु को लम्बा करता है। गाना कैसा होना चाहिये इस विषय में संस्कार प्रदीप में लिखा है कि—

वेदमन्त्रैश्च कर्तव्या रक्षा शुभ्रैश्च सर्षपैः ।
कृत्वा पोटलिकां पूर्वं बध्नीयाद्दक्षिणे करे ॥

अर्थात्—सफेद सरसों की पोटली बनाकर वेदमन्त्रों से दक्षिण हाथ में बांधनी चाहिये। आज तक भी इसी विधि से गाना बनाया जाता है जो कि घोड़ी के समय वर के दक्षिण हाथ में बांधा जाता है।

क्योंकि घोड़ी के समय यात्रा का एक प्रकार से प्रारम्भ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

होता है, इस लिये इस समय रक्षाबंधन रक्षा के लिये उपयुक्त ही है।

बहनों का घोड़ी को दाल खिलाना

सब बहनें घोड़ी को दाल इसलिये खिलाती हैं कि यात्रा में घोड़ी किसी प्रकार का ऊधम न करे और उनके भाई को किसी प्रकार का कष्ट न उठाना पड़े। घोडी के सेवक (सहीस) पर विश्वास न करके अपने हाथ से खिलाती हैं।

वर को घोड़ी पर सवार करके क्यों ले जाया जाता है ?

सवारी के लिये सबसे उत्तम तथा सर्व सुलभ घोड़ा या घोड़ी ही होती है। युद्ध में घोड़े पर सवार होकर जाना श्रेष्ठ माना गया है। और यज्ञादि माङ्गलिक कर्मों में घोड़ी उत्तम मानी गई है। क्योंकि वर विवाहरूप यज्ञ में जा रहा होता है, इसलिये घोड़ी पर सवार होना श्रेष्ठ है। यद्यपि आजकल विज्ञान द्वारा मोटरकार आदि कई सवारियें निकल आई हैं। तो भी अपनी वैदिक संस्कृति को छोड़ना अच्छा नहीं, वैदिक काल में यज्ञों के समय घोड़ियों पर सवार होकर जाया जाता था इस बात को अथर्ववेद में लिखा है। जैसे—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यज्ञैः संमिश्लाः पृषतीभिर्ऋष्टिभिर्यामञ्छुभ्रासो अञ्जिषु प्रिया उत । आसद्या बर्हिर्भरतस्यसूनवः पोत्रादा सोमं पिबता दिवो नरः ॥

अथर्व० २० । ६७ ।४ ॥

यज्ञ में लगे हुए, अपने मार्ग पर चित्तकबरी घोड़ियों पर बर्छियों और भूषणों से चमकते हुए प्यारे मित्र, भरत के पुत्रो ! इस कुशा पर बैठ कर पोता के पात्र से सोमपियो हे द्यौ के वीरो ॥

इस मन्त्र में स्पष्ट है कि भरतपुत्र यज्ञ में सोम पीने के लिये घोड़ियों पर आए थे । इसलिये विवाह रूप यज्ञ में वर को भी घोड़ी पर सवार करके ले जाया जाता है । इसी भाव को लेकर पारस्करगृह्यसूत्र के पदार्थक्रम में लिखा है कि—

ततो वरः कृतनित्यक्रिय इष्टदेवतां पित्रादींश्च नमस्कृत्यतैरनुमोदितो यथा विभवमश्वादि यानमारुह्य वधूगृहं गत्वा इत्यादि ।

अर्थात् वर नित्य कर्म के बाद इष्टदेवता और पिता आदि को प्रणाम कर और उन की आज्ञा ले के घोडी पर चढ़ कर कन्या गृह में जावे । इस से स्पष्ट है कि शास्त्रों में घोड़ी पर चढ़ कर जाना लिखा है । इसलिये हिन्दुओं में घोड़ी पर चढ़ कर वर कन्यागृह में जाता है ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

छैना बजाना

छैना एक प्रकार का बाजा होता है ! और मंगल कर्मों में बाजे के शब्द को शुभ माना जाता है। आपस्तम्बगृह्यसूत्र के प्रथम पटल द्वितीय खण्ड १४ चौहदवें सूत्र में लिखा है कि—

तथा मङ्गलानि ॥ १४ ॥ —शखदुन्दभिवीणातूर्ण वादित्र संप्रवादनानि कुलस्त्रीगीतानि इत्यादि ।

मंगलानि विवाहे उपसंहर्तव्यानि ।

अर्थात् विवाह में शंख दुन्दभी वीणा छैना आदि बाजे तथा स्त्रियों के गीत मङ्गल सूचक होते हैं। इसलिये गाना बजाना भी करना चाहिये।

इसी प्रमाण के अनुसार विवाह में गाना बजाना किया जाता है।

प्रथा छन्नानियां भरना और शकुन करना

यह प्रथा लड़की वालों के घर जब घोड़ी आ जाए तब

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की जाती है। इस में 'प्रथा छन्ननियां' में लिखे नवोढ़ा (नई विवाही हुई) स्त्री और उसके पति को जिन्होंने पहले दिन छन्ननियां भरी थीं, उन्हें साथ लेकर कुछ स्त्रियें और नायन (नापित स्त्री) कुए से पानी लेने जाती हैं पानी भरने से पहले कुम्भकार (कुम्हार) से दो कुज्जे दो चार मुखिये दीपक और दरजी से चिल्लीचोला ले आती हैं! फिर कूपसे छन्ननियां भरने वाले लड़का लड़की से कुज्जों में जल भरवाती हैं जल भरनेकी विधी यह होती है कि—लड़के से एक हाथ के साथ छः ६ बार कुए से जल खिंचवाती हैं, और उसकी स्त्री उस जल को पृथवी पर गिरा देती है। और सातवीं बार दोनों स्त्री पुरुष मिल कर कूप से जल खेंचते हैं। फिर उस जल से दोनों कुज्जे भर कर छन्ननियों में स्थापित करके ऊपर चार मुखिया दीपक जला देती हैं। बाकी जल में नदी का जल, गंगा जल, या तालाब का जल मिला कर कन्या को स्नान करा देती हैं। इसके बाद लड़के को छन्ननियां वाले स्थान में लाने के लिये, जलता हुआ आटे का दीपक छलनी में रख कर द्वार पर लटका देती हैं। जिसको लड़का तलवार से नीचे गिरा देता है। तदन्तर द्वार पर तेल गिरा कर वर को जल के मेल से छन्ननियों में ले जाती हैं। वहां लड़का लड़की को छन्ननियों के आगे चटाई पर बिठा कर एक थाली में सात खड्-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

क्कने (आटे की ७ सात छोटी२कटोरियां और सात उनके ढकने) बना कर रख देती हैं। लड़की से ढकने उतरवाती जाती हैं, और वर से ढकने रखवाती जाती हैं। इस प्रकार छः वार करने के वाद सातवीं वार कन्या और वर दोनों मिल कर उन को ढक देते हैं। इसको खडुक्कने खेलना कहा जाता है। खडुक्कने खेलने के बाद थाल में जल और दूध डाल कर रख देते हैं और१रुपया पांच पैसे एक मुन्दरी लेकर नायन थालमें छोड़ती जाती है। वर कन्या एक दूसरे को हरा कर रुपये को यत्न से पकड़ते हैं। पहले रुपये को छः वार पकड़ना साधारण है सतवीं वार जो रुपये को पकड़ ले उसको विजयी (जीता) माना जाता है। इसको लस्सो मुन्दरी खेलना कहते हैं,

तदन्तर सातवीं वार जिसने रुपया पकड़ा हो वह अपनी मुठ्ठी में जोर से रुपये को पकड़ता है, दूसरा मुठ्ठी खोल कर रुपया लेता है, इसी प्रकार दूसरे से भी करवाया जाता है, जिस से मुठ्ठी खोल कर रुपया न लिया जाए उसको हारा (पराजित) माना जाता है, इस का नाम 'मुठ्ठ खोलना' है,

इस के पश्चात् कनेर (जो कवारधोती में वर्कों से छपा हुआ आता है) वर से मौली में पिरवा कर कन्या के गले में घुटनों तक लंबा या उदर तक लंबा धारण करा देती हैं, कन्या और उसकी माता को, गले, हाथ, और पैर पर तीन तीन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सुहागसूत्तरे (एक रेशमी धागे में एक कौड़ी एक छल्ला एक मनका एक स्लेट का टुकड़ा एक हाथी दांत का टुकड़ा, यह सब पिरोए हुए सुहाग सूत्तरे कहे जाते हैं) बांध देती हैं।

इस के बाद वर का पूजन करने के लिये मण्डप में बिठा देते हैं। जहां पर वरपूजन के बाद विवाह प्रारम्भ किया जाताहै

स्त्रियों का कूप से जल लाना और कुज्जे स्थापन करना

इस प्रथा को अनभिज्ञता के कारण कई लोग निरर्थक समझते हैं। मगर इस प्रथा का मूल सूत्रग्रंथों में विशेष रूप से पाया जाता है। जिसको मैं नीचे दिखाने का यत्न करूंगा।

विवाह में दो प्रकार के कर्म होते हैं। एक अमन्त्रिक दूसरे समन्त्रिक। अमन्त्रिक कर्म स्त्रियें करती हैं। आपस्तम्ब-गृह्यसूत्र में लिखा है—

आवृतश्चास्त्रिभ्यः प्रतीयेरन्।

आ० गृ० सू० प्रथम पटल २।१५।

अर्थात् वैवाहिक अमन्त्रिक कर्म सब स्त्रियें मिलकर करें। इसलिये छन्ननियां स्त्रियें ही भरने जाती हैं। कूप के जल से कुज्जे भर कर स्थापन करना और चारमुखिया दीपक जलाकर रखना पहले प्रथा पीड़ीपूजा के कौतुकागार प्रसङ्ग में विशेष रूप से लिख दिया है। छः वार जल खेंचकर स्त्री का गिराना और सातवीं वार दोनों का मिलकर जल खेंचना, यह शिक्षा देता हैं

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

कि गृहस्थ को दोनों स्त्री पुरुष मिलकर चलावेंगे तो गृहस्थ चलता है, एक के चलाये नहीं चलता।

कन्या को स्नान कराना

कन्यास्नान के विषय में गोभिलगृह्यसूत्र द्वितीय प्रपाठक १०।११ सूत्र में एक ज्ञातिकर्म लिखा है। जिस में कन्या को उबटन से मर्दन कर किसी सखी द्वारा मस्तक पर जल डालकर सारे शरीर के अंगों को विशेष कर प्रक्षालन (स्नान) कराना लिखा है।—

क्लीतकैर्यवैमर्षिवाऽप्लुतᳬ सुहृत् सुरोत्तमेन सशरीरां त्रिमूर्द्धन्यभिषिञ्चेत्। "काम वेद ते नाम मदोनामासीति" समानयामुमिति (पतिनामगृह्णीयात्) कारान्ताभिरुपस्थमुत्तराभ्यां प्लावयेत्। ज्ञातिकर्मैतत् ॥

अर्थात् यवचूर्ण या उड़द के चूर्ण से कन्या का सर्वांग मर्दन कर कन्या को किसी सखी द्वारा 'कामवेद ते नाम' इत्यादि मन्त्रों में पति का नाम लेकर और मन्त्र पढ़ कर कन्या के माथे पर तीन चार वार उत्तम जल डालदे। जिससे सारा शरीर और विशेष गुप्तस्थान अच्छी प्रकार धोया जाए। ऊपर लिखे मंत्र (सा० म० ब्रा० खं० १ म० १) के हैं वहां पर विशेष वर्णन है। इस

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कर्म को ज्ञाति कर्म कहते हैं। कन्या के स्नान के विषय में इसके आगे १७ वें सूत्र में और भी स्पष्ट लिखा है कि—

अथयस्याः पाणिं ग्रहीष्यन् भवति साशिरस्का-
प्लुता भवति ।

गो० प्र० २ खं० १ सू० १७

अर्थात् वर जिस कन्या का पाणिग्रहण करे उसको मस्तक पर्यन्त स्नान करा देवे। विवाह के दिन कन्या स्नान करती है।

द्वार पर छलनी टांगना-और कलश का मेल

जिस समय वर को कन्यागृह में लाते हैं, उस समय द्वार पर छलनी में दीप रख कर टांग देते हैं। वास्तव में दीपयुक्त छलनी टांगना वर का नीराजन (आरती) करना है। गाओं में अभी तक आरती ही की जाती है। पारस्करगृह्यसूत्र के पदार्थ क्रम में भी नीराजन (आरती) करना लिखा है। यथा घोड़ी पूजा में पृष्ठ १३३ पर लिखा है कि "ततो वर कृतनित्यांक्रियादि" इस में आरती उतारने के विषय में लिखा है कि वर घोड़ी पर चढ़ा कन्या गृह के द्वार पर पूर्व की ओर मुख कर ठहरे और स्त्रियें आरती करें तथा जल से भरा कलश लेकर मिलें फिर घर के अन्दर पूर्व की ओर मुख करके वर बैठे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इससे सिद्ध होता है कि वर को आरती उतारनी चाहिये, आरती उतारने का फल और वेदों से सम्बन्ध पूर्व प्रथाछन्ननियों में लिखा जा चुका है। यह छलनी टांगना भी एक प्रकार से आरती उतारना ही है। ऊपर लिखे के अनुसार द्वार पर जल लेकर कोई आदमी खडा रहता है। जिसके मेल से वर को घर के अंदर ले जाया जाता है। छलनी टांग कर यह भाव प्रगट किया जाता है कि जैसे दीपसे छलनी के अनेक छेद स्पष्ट दिखाई देते हैं, इसी प्रकार हमारे शत्रुओं से दिखाये जाने पर आपको हमारे अनेक दोष दिखाई देंगे। इसका उत्तर वर तलवार से देता है कि इस तलवार से मैं आपके शत्रुओं को ही नष्ट कर दूंगा तो फिर वह आप में झूठे दोष कैसे बताएंगे। यह कहकर वर जिससे छेद दिखते थे उस दीपक रूपी शत्रु और छेद रूपी दोषों को तलवार से काट कर गिरा देता है। इस प्रकार पूर्व समय में लोग वर की प्रतिभा देखा करते थे। छलनी टांग कर वर की आरती उतारना और बुद्धिपरीक्षा दोनों ही एक साथ हो जाते हैं।

खड्डुकने खेलना

खड्डुक्कने खेलना भी एक शास्त्रीय कर्म ही है। अनभिज्ञता के कारण कुछ इसमें अन्तर आ गया है सूत्रग्रंथोंमें इसको कन्या परीक्षा लिखा है। गोभिलगृह्यसूत्र के द्वितीय प्रपाठक में इसको

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस प्रकार लिखा है कि जिस कन्या से विवाह करना हो उसको किसी शकुनपरीक्षक (सामुद्रिक या ज्योतिषी) को दिखाकर विवाह करे। यदि कोई लक्षण देखने वाला न मिले तो निम्न लिखे विशेष स्थानों से मृत्तिका लाकर नौ ढेले बनवावे और कन्या से एक पर हाथ रखवावे। सूत्रोक्त फल के अनुसार देख कर फिर उस कन्या से विवाह करे जैसे कि—

वेद्याः, सीतायाः, ह्रदात्, गोष्ठात्, चतुष्पथात्, आदेवनात्, आदहनात्, ईरिणात्, सर्वेभ्यः सम्भार्यं नवमं समान् कृत लक्षणान् ॥४—६

पाणावाधाय कुमार्या उपनामयेदृतमेव प्रथमम् ऋतं नात्येति कश्चनर्त इयं पृथिवी श्रिता सर्वमिदमसौ भूयादिति तस्या नाम गृहीत्वैषामेकं गृहाणेति ब्रूयात् पूर्वेषां चतुर्णां गृह्णन्तिमुपय. च्छेत् सम्भार्यमपीत्येके ॥७—६॥

अर्थात्—यज्ञवेदी से, जोती हुई भूमि, गहरे जलस्थान, गोशाला, चतुष्पथ (चौरस्ता) द्यूतस्थान (जुआ खेलने की जगह) श्मशान, ऊषरभूमि इन सब स्थानों से मट्टी लेकर एक २

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ढेला बनावे और इन सब मट्टियों को मिलाकर एक ढेला बनावे इन ६ नौं ढेलों को हाथ में लेकर 'ऋतमेवेत्यादि से लेकर भूयात् यहां तक' मन्त्र को पढ़ और कन्या नाम लेकर कन्या को कहे कि इच्छानुसार एक ढेला उठा लो। यदि कन्या ऊपर लिखे पहले ४ चार स्थानों की मट्टी के ढेलों या नवम ढेले को उठावे तो उस कन्या को सुलक्षणा जान कर विवाह ले। और यदि चतुष्पथ, द्यूतस्थान, श्मशान या ऊषरभूमि के ढेलों को उठावे तो कुलक्षणा होने के कारण विवाह के योग्य नहीं यह समझे।

ऊपर लिखे सूत्रों से जाना जाता है कि पूर्व समय में इस विधि के अनुसार ही करते होंगे। मगर जब समयान्तर से या यवनों के राज्य में विप्लव के समय यह सब विधि न कर सकने के कारण आटे के ही ढेले बनाकर और उनमें उन२ स्थानों का अध्याहार (ख्याल करना) करके इस संस्कृति (मर्यादा) को पूरा कर लिया जाता होगा। बाद में अनभिज्ञता के कारण नौ की जगह सात, और ढेलों के स्थान पर ढकनों वाली कटोरियें बनने लग पड़ीं। और साथ में ही उपहास करने का एक साधन रूप खेल बन गया। जिसको कि अब खड़ुक्कने कहते हैं। जिसका अर्थ 'खेलने के लिये एक साधन' होता है। इस खेल से भी एक भाव प्रगट होता है जैसे कि—खड़ुक्कनों से वर को यह शिक्षा दी जाती है कि गृहस्थ तभी अच्छी प्रकार चल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सकता है जब कि गृहस्थरूपी रथ के दोनों चक्र (पय्ये) एक साथ चलें। अर्थात् गृहस्थ चलाने के लिये स्त्री पुरुष दोनों को ही समान उद्योग करना पडता है। जैसे इन खडुक्कनों को अकेला वर नहीं ढक सकता; जब तक इनको कन्या साथ नहीं ढकती इसी प्रकार कन्या भी नहीं ढक सकती जब तक वर साथ न ढकता। इस विधि से दोनों को शिक्षा दी जाती है।

दूसरा भाव यह भी प्रगट होता है कि वरकुल के दोष यदि कन्या न ढके (अर्थात् प्रगट करे) तो वर के लागातार ढकने पर भी नहीं ढके जा सकते। इसलिये कन्या को शिक्षा दी जाती है कि वरकुल के दोष प्रगट न करना क्योंकि फिर तुझे दोष ही दोष दिखाई देंगे। इसलिये दोष प्रगट न करके उन्हें गुणों में बदल देना जैसे इन खाली खडुक्कनों में वर ने इलायचीयें (लाचीयें) रख दी हैं।

इन प्रमाणों और युक्तियों से सिद्ध होता कि खडुक्कने खेलना निरर्थक (फजूल) नहीं। हां अब लोगों ने मूल कारण भूल कर इस को खेल ही बना दिया है।

लस्सी मुँदरी और मुष्टी (मुठ) खोलना।

लस्सी मुन्दरी और मुष्टीखोलना यह गूढ़ भावों और उप-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

देशों से परिपूर्ण दो प्रथाएं हैं। पहला भाव यह है कि वर और कन्या का परस्पर परिचय न होने के कारण जो संकोच (शरम) होता है, उसे इस से दूर किया जाता है। दूसरे इससे वर कन्या को यह ज्ञान कराया जाता है कि इस संसार में गृहस्थाश्रम चलाने के लिये लक्ष्मी (धन) का होना अत्यावश्यक है। और उसकी प्राप्ति के लिये मनुष्य का यत्न करना धर्म है। लक्ष्मी चाहे अपने उत्पत्ति स्थान क्षारसागर में भी चली जाए (जैसा कि पुराणों में वर्णन है) तो भी उसे प्राप्त कर लेंगे इस बात को दिखाने के लिये थाली में दूध और जल डालकर क्षीरसागर का दृश्य बनाया जाता है, और उस में से यत्न पूर्वक ढूंड कर लक्ष्मी प्राप्त की जाती है, इस उद्देश्य के पूर्ण होने पर, वर और कन्या अपनी २ जीत मानते हैं। मुष्टी में रुपया बन्द करके फिर दूसरे से मुष्टी खुलवा कर रुपया लेने का यह भाव होता है, कि संसार में रुपया प्राप्त करके सम्भाल कर रक्खो, और इसका उचित उपयोग करो, निरर्थक न खोवो, निरर्थक खोना तो कहां रहा, वर कन्या भी परस्पर एक दूसरे से बल पूर्वक भी निरथक खर्च के लिये नहीं ले सकते। दूसरे इससे परस्पर बल का भी ज्ञान हो जाता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लस्सी मुन्दरी से एक आध्यात्मिक भाव भी प्रगट होता है कि—संसार में मनुष्य के आने का उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति है और ईश्वर को प्राप्त करने के लिये सर्वदा यत्न करते रहना चाहिये। गृहस्थाश्रम जो चारों आश्रमों में उत्तम माना है, उस में भी शास्त्रदर्शितपथ पर चलने से मनुष्य ईश्वर प्राप्त कर सकता है। यह भाव लस्सीमुन्दरी से प्रकट होता है। जैसे कि—थाली में जल और दूध, संसार समुद्र है। और उस में लोभ, मोह, अहंकार, ईर्षा, और द्वेष, यह पांच पैसे तथा मुन्दरी माया रूप हैं, इन सभी को छोड़ कर ईश्वर का द्योतक जो रुपया है उस को प्राप्त करने का यत्न ही नहीं प्रत्युत प्राप्त कर लेना ही मनुष्य का धर्म है। यह भाव वर और कन्या को गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के समय बताया जाता है। जिस से दोनों का कल्याण हो सकता है। यदि वे ईश्वर में अपनी अगाधभक्ति बढ़ाते चले जाएं तो अन्त में मुक्ति को भी प्राप्त कर सकते हैं।

कन्या के गले में कनेर बांधना

कन्या को स्नान कराने के बाद गले में कनेर (वर्कों से छपा हुआ गरीगोला, अमलतास; सुपारी बादाम आदि जो कवार-धोती में लड़के वालों के घर से आता है) बांध दिया जाता है। इन वस्तुओं की उपयोगिता, और संख्यायनगृह्यसूत्र में लिखे कनेर बांधने के प्रमाण, पूर्व 'प्रथा कवारधोती' में विशेषरूप से लिख दिये हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सुहाग सूतरे बान्धना

विवाह में सुहागसूतरे बांधना, यह सौभाग्य प्राप्ति और रक्षा विधायक साधन है। दूसरे यह वैदिक मणियें हैं। जिन का वर्णन अथर्ववेद में विशेष रूप में आता है। विस्तार भय से दुबारा प्रमाण नहीं लिखता पूर्व प्रथा 'फुल्लकढ़ाई मांयां' और प्रथा घोड़ी में लिखा जा चुका है यहां भी परिचयमात्र दे देता हूँ। हाथी दांत का टुकड़ा 'हस्तिवर्चसमणि' है, लोहा 'लोहमणि' और मनका सीसकमणि नाम से आता है, कौड़ियों का 'कुरीरक' नाम से वर्णन है। इन सभी के धारण करने का फल विशेष रूप से सौभाग्यादि की प्राप्ति होते हैं, यह स्पष्ट लिखा है। दूसरे यह एक प्रकार का रक्षाबन्धन है। घोड़ी के समय वर को, विवाह के समय कन्या को, यह रक्षाबन्धन मणियें बांध दी जाती हैं।

ऊपर लिखे प्रमाणों और युक्तियों से यह सिद्ध होता है कि 'प्रथा छब्बनियों' में जितना कर्म किया जाता है वह सारा शास्त्र विहित और युक्तियुक्त कर्म 'कन्यास्नान' 'खडुक्कने' खेलना आदि शकुन अवश्य ही करना चाहिये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विवाहसंस्कार

विवाह-संस्कार जिस विधि से कराया जाता है, वह सर्व-मान्य पारस्करगृह्यसूत्र के अनुसार है। इसलिये इस विषय में विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं। तो भी मैं साधारणतया इस विधि के महत्व को और क्रम को संक्षेपमात्र में लिख देता हूँ, जिससे कि विशेष स्थलों के गूढ़ तत्त्व और भाव सामान्य लोग भी समझ जाएं। साधारणतया विवाह संस्कार के लिए निम्नलिखित वस्तुओं की आवश्यकता होती है—

२ खारे (शरासन)। ८ डांगें। २ चंदोये। छज्जली (शूप) फुल्लियां, (लाजा), चावल, ४ कुज्जे, कलश (घड़ा), दूध, दही, शहद, पलाशसमिधा, घृत, शंखी, चन्दन,केसर, ४ परने, १धोती, १ मुन्दरी वर को दे देने के लिए, शण, सिंदूर, रेत, पंचपल्लव, पूला. डोने, पुष्पमाला, सामग्रीपूजन, खट्टदान, की वस्तुएं, १३ गुणे, इलायची सुपारी, पान धूप, दीपादि तयोर चौंका पवाई (वर कीबहनों के लिये)। यह वस्तुएं पहले ही प्रस्तुत रखनी चाहियें।

पूर्व लिखा जा चुका है कि पारस्करगृह्यसूत्र में 'षड्ध्यां भवन्त्याचा।येत्यादि' अर्थात् छः पूज्य पुरुष होते हैं जिन में वरभी है इसलिये वर का विवाह से प्रथम पूजन किया जाता है। और जिसका क्रम इस प्रकार है—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जब वर छन्ननियां में खड्डुक्कने आदि शकुन कर लेता है तो मंडप ✿में गणपत्यादि पूजन, और वरपूजन, तथा विवाह संस्कार करने के लिये लाया जाता है।

वहां सबसे पहिले स्वस्तिवाचन तथा गणपत्यादि ग्रहों का पूजन करने के बाद 'साधुभवानास्ताम्' इत्यादि से वर का सत्कार किया जाता है। इसके बाद शास्त्ररीत्यानुसार वर का पूजन करने के लिये आसन दिया जाता है। यह आसन कुशाओं से बना हुआ त्रिकुश होता है। क्योंकि वर पहले ही खारे पर बैठा होता है, इसलिये आसन के स्थान पर कुशा का त्रिकुश दिया जाता है। खारे के नीचे माष (मां) और ताला (जंदरा कुंजी) इसलिये रक्खा जाता है कि तन्त्रशास्त्रानुसार माष (मां) बली रूप होते हैं इसी कारण आसन के नीचे रक्खे जाते हैं, और विवाह के पीछे जीवों को डाले जाते हैं। ताला अपनी चाबी और अपना एकीकरण जताता है। जैसे एकदूसरे के विना ताला और चाबी का उपयोग नहीं हो सकता, इसी प्रकार स्त्री

✿कन्या के चार हाथ चौड़ा, चार हाथ लम्बा, मंडप होता है। और मण्डप के बाहर ईशान कोन में वर के एक हाथ लम्बी एक हाथ चौड़ी, हवन के लिये वेदी होती है। और बांस गाड़कर यह वेदी और मण्डप बनाए जाते हैं। बीच में चंदोया और चारों ओर आम्रपत्र लगाए जाते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुरुष एक दूसरे के बिना गृहस्थ सुख प्राप्त नहीं कर सकते,इसी बात को लक्ष्य रखकर तांत्रिकों ने इसका उपयोग किया है। पाओं धोने के लिये पाद्य नाम से जल दिया जाता है। और विशेष मान करने का सूचक 'अर्घ' (जिसमें गन्धाक्षत आदि होते हैं) दिया जाता है वैदिक समय में यह अर्घ हर एक को नहीं दिया जाता था। पारस्करगृह्यसूत्र में छः पूज्य पुरुषों को ही देना लिखा है।

मधुपर्क

फिर आचमन करने के लिये जल दिया जाता है। और इसके बाद खाने के लिये मधुपर्क दिया जाता है। जिस में एक पल घृत, एक पल शहद और दो पल दही का योग होता है। यह खाद्यपदार्थों में अमृत समान पदार्थ है। इस के खाने से कई प्रकार के लाभ होते हैं, यह वैद्यकग्रंथों में विशेष रूप से लिखा है। ऋषिलोग इस मधुपर्क को छः पूज्यपुरुषों को ही दिया करते थे। और एक वर्ष में आचार्यादि को एक ही वार देते थे। आज कल लोग इस के गुणों को न जान कर खाते ही नहीं, और जूठा छोड़ देते हैं, जो कि सर्वथा शास्त्र विरुद्ध है। और इसके गुणों से भी वह वंचित रह जाते हैं। बड़े शोक से लिखना पड़ता है, कि हमारे नवयुवक धार्मिक प्रवृत्ति न होने के कारण हरएक बात

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

को निरर्थक ही समझते हैं। मगर आजकल पश्चमीय लोग शहद के लिए लाखों रुपये लगाकर मधुमक्खियों के छत्ते और कारखाने खोल रहे हैं। दूध दही और घृत के गुणों को देखते हुए हजारों गऊशलाएं (डेरीफारम) खोली जा रही हैं। क्या यह सब निरर्थक हैं? पूर्व समय में मधुपर्क का किसी को मिलना मानसूचक होता था। यद्यपि मधुपर्क का विशेष मूल्य नहीं तो भी पदक (मैडिल) की तरह जिसको यह मिले उसका बड़ा मान होता है

जिन बातों को आज लोग अच्छी समझनी लगे हैं उन को तो हमारे ऋषिलोग धर्म का रूप देकर हमेशा करने के लिये कह गये हैं। इस विषय में अधिक न लिखता हुआ सबसे प्रार्थना करता हूं कि मधुपर्क अमृत है, इस लिये इसको जूठा नहीं छोड़ना।

मधुपर्क खाने के बाद अङ्गों में बल प्राप्ति के लिये अङ्गन्यास करके अङ्गपुष्टी के लिये प्रार्थना की जाती है। इस के वाद हाथ में कुशा पकड़ कर और गौ स्तुति द्वारा अपने पापों का नाश कराया जाता है।

तदन्तर पंचभूसंस्कार करके वेदी में अग्नि स्थापन की जाती है। और कन्या को मण्डप में मातुल (मामा) या किसी अन्य सम्वन्धि के द्वारा लाकर गणपत्यादि का पूजन कराया जाता है। इसके वाद कन्यापिता वर को चारवस्त्र देता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जिनमें से वर दो वस्त्र कन्या को धारण कराता है, और दो स्वयं धारण कर लेता है। जिन मन्त्रों द्वारा वस्त्र धारण किये जाते हैं, उन में हाथ से बने हुए वस्त्रों का वर्णन है, इसलिये मशीन से बने वस्त्र के स्थान में हाथ से बना हुआ वस्त्र होना चाहिये ।

ग्रंथिबन्धन

तदनन्तर परस्पर देखने के बाद कन्यावर का ग्रंथीबन्धन और कङ्कणबन्धन किया जाता है। ग्रंथीबन्धन की विधि यह होती है कि २८ छुहारे और एक जुट्ट तथा दक्षिणा किसी कपड़े में बांधकर उस गांठ के साथ एक लम्बी मौली बांध दी जाती है। गांठ को कन्या के वस्त्र से बांधा जाता है, और मौली यज्ञोपवीत की तरह गले में डाल दी जाती है। और देशाचार से हथलेवें ❋ किये जाते। इसके बाद कन्या पिता हाथ में शंख दूर्वागन्धाक्षतादि लेकर कन्या दान करता है।

❋ चक्की चुंग के आटे को गूंध कर कटोरी शक्ल के दो पात्र बनाए जाते हैं, सुपारी और दक्षिणा उन में रखकर उन्हें कन्या के हाथों और वरके हाथों में सम्पुट किया जाता है। ऊपर मौली लपेट कर आर्शिवाद मंत्र पढ़ने के बाद गोत्रोचारण किया जाता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ग्रंथी बन्धन वराहगृह्यसूत्र में योक्रबन्धन नाम से लिखा है जैसा कि—

अथास्यै द्वितीयं वासः प्रयच्छति । तेनैव मंत्रेण दर्भरज्वा इन्द्राण्याः सन्नहन मित्यन्ती समायम्य पुमांसं ग्रंथि बध्नाति ।—

सं त्वां नह्यामि अद्भिरोषधीभिः ।

सं त्वां ह्यामि प्रजया धनेन सा सनद्धा सुनीहि भागदेयम् ॥

इत्यन्तरतो वस्त्रस्य योक्रेण कन्यां सन्नह्यति॥

अर्थात् कन्या को द्वितीयवस्त्र देकर 'सत्वांनह्यामि' इस मन्त्र को पढ़ कर वर के वस्त्र से कन्या का वस्त्र बान्धे। ग्रंथी बन्धन के विषय में प्रथा कवारधोती में पृष्ठ १०८ पर अथर्ववेद के ७।३८।१ मन्त्र के प्रमाण से विशेष लिखा जा,चुका है ।

कन्या का वर के दक्षिण ओर बैठना

कन्या का वर के दक्षिण में बैठना पद्धतियों में तो लिखा ही है। मगर यहां द्राह्यायनगृह्यसूत्र प्रथम पटल तृतीय खण्ड के ७ सातवें सूत्र का प्रमाण देता हूं जिसमें स्पष्ट लिखा है कि कन्या वर के दक्षिण में बैठे जैसे—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाणिग्राहस्य दक्षिणत उपविशेत् ॥ १॥

अर्थात् कन्या वर के दक्षिण में बैठे ॥

कङ्कणबन्धन के विषय में पूर्व 'प्रथाफुल्लकढ़ाई मांयां' और 'प्रथाघोड़ी' में लिख दिया है।

कन्यादान से पूर्व गोत्रोच्चारण करना

कन्यादान से पूर्व गोत्रोच्चारण करने का यह अभिप्राय होता है कि वर और कन्या का एकगोत्र में विवाह न हो जाए। क्योंकि एक गोत्र में विवाह करना शास्त्र विरुद्ध है। मनुस्मृति तृतीय अध्याय के पञ्चम श्लोक में लिखा है कि—

असपिण्डा तु च या मातुरसगोत्रा च या पितुः।
सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि मैथुने ॥५॥

अर्थात् उस स्त्री से विवाह करे जो माता की छः पीढ़ी तक की और पिता के गोत्र की न हो। विस्तार भय से अन्य स्मृतियों के प्रमाण नहीं देता। गोत्रोच्चारण में प्रपितामहा से लेकर पिता तक तीन वार पढ़ने के लिये 'कर्मदीपिका' में लिखा है कि—

प्रपितामहं समारभ्य गोत्रप्रवरादिकम्।
कुलसम्बन्धकरणं त्रिस्त्रिर्वारमुदीरणम् ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अर्थात् प्रपितामहा से लेकर पिता तक तीनवार नाम लेकर गोत्र सम्बन्ध उच्चारण करना चाहिये।

यहां पर यदि किसी को यह शङ्का हो कि चारजाति क्षत्रियों में, कपूर, मेहरे, और खन्नों का एक ही कौशल्य गोत्र में विवाह क्यों होता है। तो कृपया 'क्षत्रिय इतिहास और चारजाती क्षत्रियगोत्र निर्णय जो इस पुस्तक में प्रथम लगा हुआ है उसे ध्यान से पढ़ें जिस में इस का निर्णय किया है कि—इन तीनों जातियों के गोत्र नामों में कुच्छ थोड़ा सा अन्तर होने के कारण लोग वास्त्विक गोत्रनाम भूल गए, और एक ही गोत्र 'कौशल्य को बोलने लगपढ़े। वास्तव में इन तीनों का भिन्न२ गोत्र है। जैसे कपूरों का कौशिक, खन्नों का कौत्स, और मिहिरों का कौशल्य गोत्र है। इस लिये "इन तीन जातियों का एक गोत्र में विवाह होता है" यह शंका करनी भ्रममात्र ही है।

कन्यादान

स्मृतियों के और पुराणों में कन्यादान का फल विशेष रूप से लिखा है। दशमहादानों में कन्यादान की गणना है। सूतसंहिता में कन्यादान का फल इस प्रकार लिखा है—

अश्वमेधसहस्रस्य वाजपेय शतस्य च।
एककन्याप्रदानेन फलमाप्नोतिनाकलौ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अर्थात् एक हजार अश्वमेधयज्ञ करने का और एक सौ वाजपेययज्ञ करने का जो फल होता है, वह कलियुग में एककन्या दान करने से प्राप्त हो जाता है। इससे ज्ञात होता है कि कन्या दान का बहुत फल है। (विस्तार भय से अन्यस्मृतियों के प्रमाण नहीं दे रहा) । कन्या दान का अर्थ है—कन्या सम्बन्धि सब प्रकार के अधिकार दान लेने वाले वर को दे देना। और अधिकार देने की विधि शास्त्रों में इस प्रकार है, कि कन्यापिता शङ्ख में जल, पुष्प, सुपारी और चावल आदि डाल कर देशकाल का उच्चारण करके वर कन्या के गोत्र तथा प्रपितामह (परबाबा) से लेकर पिता तक नामों का उच्चारण करके सङ्कल्प करता हुआ कन्या का हाथ वर के हाथ में देवे। उपर्युक्त विधि में बृहत्पराशर ऋषि का वचन प्रमाण रूप में इस प्रकार है—

कन्यादानसमारम्भे दाता शंखे समादहेत् ।
दूर्वाक्षतफलं पुष्पं चन्दनं जलमेव च ॥

दाता कन्यादान करने के समय शंख में दूर्वा (कुशा) चावल, फल, पुष्प, चन्दन, जल, डाले। इत्यादि

संकल्प तथा गोत्रोच्चारण की विधि ऋष्यश्रृङ्ग ने इस प्रकार लिखी है—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अद्येत्यादि यथा काल ज्ञान कृत्वा तु दैशिकम् ।
सप्तम्यन्तंतु षष्ठ्यन्तं गोत्रं प्रवरमेव च । इत्यादि

अर्थात् कन्यादान के संकल्प में पहले देश और काल का उच्चारण करके सप्तम्यन्त या षष्ठ्यन्त गोत्रऔर प्रवरका उच्चारण करे, फिर वर के प्रपितामहा से लेकर पिता तक चतुर्थ्यन्त नामों का उच्चारण करे, इस प्रकार कन्या के प्रपितामह से पिता तक द्वितीयान्त नामों का उच्चारण करके 'पत्नीत्वेन तुभ्यमहं ददे' यह कह कर जल छोड़ दें। ऊपर लिखे सप्तम्यन्त, षष्ठयन्त आदि विभक्तियों का अभिप्राय यह है कि—गोत्र और प्रवर का उच्चारण सप्तम्य या सष्ठ्यन्त बोला जाय जैसें पञ्जाब में षष्ठ्यन्त 'कौशल्यगोत्रस्य त्रिप्रवरस्य इस प्रकार बोलते हैं। और वर के प्रपितामहा आदि के नाम सम्बन्धके साथ चतुर्थ्यन्त (प्रपौत्राय, पौत्राय, पुत्राय,) इस प्रकार बालते हैं। और इस चतुर्थी विभक्ति को कन्या सम्बन्ध में द्वितीयान्त 'प्रपौत्रीम्, पौत्रीम्, पुत्रीम्' इस प्रकार बोलते हैं ।

कन्यादान के संकल्प में जल का ग्रहण करना

कन्यादान के संकल्प में कई लोग (विशेषतया आर्य-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समाजी) शङ्का किया करते हैं, कि संकल्प में जल क्यों लिया जाता है। उसके उत्तर में ऊपर प्रमाण तो दे ही दिया है, और युक्ति द्वारा भी विज्ञान के आधार पर सिद्ध होता है, कि जल अवश्य लेना चाहिये। क्योंकि जल एक ऐसा द्रव्य है, कि इसके स्पर्श से शांति और सात्विक भाव उत्पन्न होते हैं। हम देखते हैं कि किसी पुरुष को क्रोध चढ़ा हुआ हो, तो उसको जल पिला देने पर उस का क्रोध शान्त हो जाता है। मूर्छा होने पर जल द्वारा चैतन्यता प्राप्त हो जाती है। और जल ही जीवन शक्ति में विशेष कारण होता है। इस से सिद्ध होता है कि कन्यादान के समय जल कन्यादाता को इन गुणों से युक्त करता है। और इस समय मन जो विशेष सात्विक होना चाहिये, उस को जल सात्विक करने में विशेष बल देता है। हिन्दुओं के विवाह में यही तो विशेषता है, कि जहां ऋषियों ने वेदमन्त्रों के उच्चारण द्वारा विवाहसम्बन्ध को दृढ़ बनाने के लिये अलौकिक शक्ति दी है। वहां कर्मकाण्ड द्वारा विज्ञान के बल से भी शक्ति देकर विवाहसम्बन्ध को अलौकिक रूप से दृढ़ किया है। दूसरे मतावलम्बीय और विदेशीय विवाहों में कुछ समय के लिये विवाह द्वारा स्त्री और पुरुषों के सम्बन्ध नियत किये जाते हैं। मगर हिन्दूविवाह में स्त्री और पुरुष दोनों स्थूलशरीर भिन्न २ होने पर भी सूक्ष्म शरीर मन्त्रों द्वारा एक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कर दिये जाते हैं (जैसा कि आगे दिखाया जावेगा)। इसी कारण ही तो संकल्प में जल और हवन द्वारा अग्नि का विशेष रूप से उपयोग किया जाता है। विज्ञान (साईंस) में हम देखते हैं कि भिन्न २ और आकार हीन निर्बल वस्तु को दृढ़ और रूपवान बनाने के लिये जल और अग्नि का प्रयोग किया जाता है। जैसा कि घड़ा बनाने के लिये मट्टि को पहले जल में गूंधा जाता है,तब घड़ा के आकारहीन मट्टी को जल ने आकार (रूप) दिया, फिर दृढ़ करने के लिये अग्नि में मट्टी को गरम किया जाता है। तब मट्टी जो धूल रूप थी, वह एक दृढ़ घड़े के रूप में हो जाती है। इसी विज्ञान को लेकर विवाहसम्बन्ध को करने से पहले वर और कन्या को स्नान कराया जाता है। (जो कि पूर्व 'प्रथा घोड़ी और छन्ननियों में लिखा जा चुका है) फिर संस्कार के समय मण्डप में प्रायः जल का प्रयोग किया जाता है इसके बाद हवन में अग्नि द्वारा उस विवाहरूप सम्बन्ध को दृढ़ किया जाता है। इसी कारण तो हिन्दुओं में विवाहविच्छेद (तलाक) नहीं है। बड़े शोक का कारण है कि इस समय विदेशी सभ्यता में रंगे हुए हमारे भाई इस विवाहविच्छेद को अच्छा समझने लग पड़े हैं। जिस का परिणाम भयङ्कर और हिन्दू धर्म को हानिकर ही है। जैसा कि विदेशियों और विधर्मियों में नमक मिर्च के झगड़े पर या किसी कारण मनमुटाव होने पर तलाक

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

दे दिया जाता है। जो कि समाचार पत्रों में प्रति दिन लिखा हुआ होता हैं।

अतः मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि हिन्दूसंस्कृति और हिन्दूधर्म में विश्वास रखते हुए तथा शास्त्रों की आज्ञा का पालन करते हुए अपने ही धर्म पर दृढ़ रहना चाहिये—

गीता में भगवान् श्रीकृष्णजीने कहा है—

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥

अर्थात्—यद्यपि परधर्म का आचरण सहज हो, तो भी उसकी अपेक्षा अपना धर्म विगुण (दोषयुक्त) हो तो भी अधिक कल्याणकारक है। अपने धर्म के अनुष्ठान में मृत्यु हो जाना भी श्रेष्ठ है और दूसरे का सुगम धर्म भी भयंकर होता है।

इस से सिद्ध होता है कि वेद, शास्त्र, स्मृति और पुराण जिस धर्म को प्रतिपादन करते हों, हिन्दुमात्र को उसी धर्म का सर्वदा अनुष्ठान् करना चाहिये। जिस से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्ति हो सके।

कन्यादान हो जाने के बाद वर 'स्वस्ति' यह कहता हुआ कन्या को ग्रहण करता हैं। तदनन्तर कन्यापिता दक्षिणारूप में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

एक सोने की अंगूठी वर को संकल्प करके देता है। क्योंकि शास्त्रों में लिखा है कि--

हतयज्ञमदक्षिणा।

अर्थात्–दक्षिणा के बिना यज्ञ हत (नष्ट) होता है। इस लिये कन्यादान की दक्षिणास्वर्ण की अंगूठी या गौओं का जोड़ा होती है। दक्षिणा के बाद वर "कोदात कस्मादात्" इत्यादि मन्त्र को पढ़ता हैं जिस के द्वारा काम (इच्छा रूपईश्वर) की की स्तुति जाती है।

विवाह में कन्या का नाम बदलना

वर कन्या के दक्षिण (दाँहिने) हाथ को अपने दक्षिण हाथ में ले कर कन्या से कहता है "हे कन्ये! मेरे मन के अनुसार तेरा मन हो जाए।" और कन्या का नाम (यह नाम पितृकुल के नाम से भिन्न बदल कर रक्खा जाता है। जो वर के नामाक्षर से कन्या का नामाक्षर ज्योतिष शास्त्रानुकूल हो) उच्चारण करता है। क्योंकि शास्त्र में लिखा है कि यदि कन्या दशवर्ष सात मास और तीन दिन से ऊपर हो तो उसका नाम बदल देना चाहिये। जैसा कि—

दशाब्दसप्तमासाः त्रिदिनाधिकयदा भवेत्

कन्यानामान्तरं धृत्वा चोद्वाहमुपकल्पयेत् ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अर्थात् यदि कन्या दशवर्ष सात मास और तीन दिन से अधिक आयु की हो जाए, तो उसका नाम परिवर्तन करके विवाहसंस्कार करे। इससे सिद्ध होता है कि विवाह में कन्या का नाम बदलना शास्त्रानुकूल ही है।

इसके बाद वर कन्या का हाथ पकड़े हुए ही हवन करने के लिये उस को वेदी के पास ले जाता है। इस ले जाने की विधी को पारस्करगृह्यसूत्र में निष्क्रमण कहा है।

दक्षिण दिशा में जल का घड़ा उठवाना

वेदी की दक्षिणदिशा में किसी बलवान् मनुष्य को जल से भरा हुआ घड़ा कन्धे पर उठवाकर अभिषेक करने तक चुपचाप खड़ा कर दिया जाता है।

चुपचाप खड़ा होने का अभिप्राय यह होता है कि उठाने वाले का ध्यान बातों में न लगजाए। क्योंकि बातों में लगकर ध्यान न रहने से घड़ा गिरने का और अग्नि का भय होता है।

दक्षिणदिशा में इसलिये खड़ा किया जाता है, कि उस दिशा में पितरों और राक्षसों का होना शास्त्रों में लिखा है। उस ही दिशा में जल लेकर खड़ा होने से राक्षस जल को नहीं लांघ सकते, और जहां शुद्ध जल हो वहां भी उनका वास नहीं हो सकता, तथा उस कुम्भ के जल में और प्रणीता के जल में हवन करने वाले मन्त्रों की शक्तियें स्थापित की जाती हैं। जो कि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अभिषेक करने से उपद्रव दूर करने वाली होती हैं (प्रमाणों को विस्तार भय से अधिक नहीं लिख रहा)

वर की प्रतिज्ञा

इस के बाद कन्या पिता के "परस्परं समीक्षेथाम्" (परस्पर देखो) कहने पर वर कन्या एक दूसरे की ओर देखते हैं और अघोर चक्षुरित्यादि चार मन्त्रों का वर उच्चारण करता है। जिनका संक्षेप में अभिप्राय यह है, कि हे कन्ये तू मेरे लिये और मैं तेरे लिये सब प्रकार से सुखदाई होऊं। पहले तुझे सोम-देवता ने ग्रहण किया और उसने तुझे कान्ति दी फिर गन्धर्वों ने ग्रहण किया जिन्होंने तुझे वाणी (बोलने की शक्ति) दी। इसके बाद अग्नि देवता ने ग्रहण किया और उसने तेज के अतिरिक्त सन्तान उत्पन्न करने की शक्ति को दिया। अब तुझे मैं ग्रहण करता हूँ जो कि जीवन पर्यंत सुखभोग और सन्ताना-दि से सुखी रक्खूंगा। और तूं पतिव्रता होकर मेरे लिये सुख-दाई हो। विवाह में वर की यही प्रतिज्ञा है।

तदनन्तर वर अग्नि की प्रदक्षिणा करके, कपड़ों में लिपटे हुए तिनकों को पात्रों के नीचे रखकर हवन के लिये ब्रह्मा आदि को आवरण करता है। इसके बाद प्रणीता आदि का स्थापन करके कुशाओं को अग्नि के चारों ओर बिछा कर कुशकण्डिका की शेषविधि करने के बाद प्रज्वलित अग्नि में घृत की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रयाश्चित्ताहूति देता है। तदनन्तर राष्ट्र भृत जयाहोम और अभ्यातानानामक आहूतियें देकर आज्याहूति देता है। जिनमें चार आहूतियें देकर पाञ्चवी आहुति कन्या वर के मध्य में 'अंतरपट' करके तथा मंत्र को मनमें पढ़ कर देता है।

अन्तरपट करना

कन्या और वर के मध्य में एक कपड़े से व्यवधान (परदा) कर दिया जाता है। क्योंकि यह आहूति मृत्युदेवता को दीजाती है इसलिये इस मन्त्र को मनमें पढ़ा जाता है। और कन्या को व्यवधान करके हवनवेदी में आवाहित मृत्युदेवता से एक प्रकार पृथक किया जाता है। इस विषय में संस्कार-भास्कर में लिखा है कि मृत्युदेवता को आहूति देने के समय अन्तरपट के बिना और मन्त्र ऊंचो स्वर से पढ़ना दोष कारक है। जैसे कि—

> 'रौद्रीं पैत्रीं तथा मृत्योः' इति कारिकायां दोष श्रवणाद्वरः वधूं वस्त्रेणान्तर्धाय मनसा मन्त्रं पठन् मृत्यवे जुहोति।

अर्थात् रुद्र पितर और मृत्यु सम्बन्धी मन्त्र वधू के साथ ऊंची स्वर से पढ़ने का दोष कारिका में लिखा है। इस लिये वर, वधू (कन्या) का वस्त्र से व्यवधान कर और मन्त्र को मनमें पढ़ कर मृत्यु देवता को आहूति देता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस भाव को लेकर मृत्यु की आहूति के समय अन्तरपट और उपांशु (मौन) मन्त्र पाठ किया जाता है।

इस अन्तरपट के विषय में एक मत यह भी है कि "परं मृत्यो: अनुपरे हि,, इस मन्त्र पर अन्तरपट नहीं करना चाहिए। प्रत्युत यह अन्तरपट जब कन्या को वर वस्त्र देता है, तब करना चाहिये क्योंकि वस्त्र धारण करने के समय अङ्ग नग्न न हो जाए इसलिये वस्त्र से आवरण (परदा) करना उचित ही है। दूसरे अन्तरपट के बाद परस्पर अभिमुखी करण भी यही सिद्ध करता है कि अन्तरपट न होने से पहले वर कन्या अभिमुखी ही हैं, तो पुन: अभिमुख क्यों लिखा जाता इससे सिद्ध होता है कि वस्त्रदान के समय अन्तरपट होना चाहिये। इस बात को पारस्करगृह्यसूत्र के पदार्थक्रम में इस प्रकार लिखा है—

> ततो मातुलादि कन्यानयनं करोति सा चागत्य प्रत्यङ्मुखी उपविशति। अत्र वधूवरयोर्मध्ये वस्त्रेणान्तरधानम्। इत्यादि

अर्थात् कन्या को मण्डप में मामा लाता है। और वह पूर्वाभिमुख बैठती है। इस समय वधू वर के मध्य वस्त्र से अन्तरपट किया जाता है। इसके बाद कन्यापिता के परस्पर देखो कहने पर अन्तरपट हटा कर 'समञ्जन्तु' इस मन्त्र से वर कन्या परस्पर देखें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ऊपर लिखे प्रमाण से कन्या को वस्त्र पहनाने के समय ही अन्तरपट करना सिद्ध होता है। आज कल भी कई बरादरियों में अन्तरपट की चादर होती है। और कन्या लाने से पहले ही वेदी के पश्चिम ओर वर कन्या के बीच व्यवधान करने के लिये फैला दी जाती हैं।

लाजा होम (लावां)

'लाजाहोम' अर्थात् 'फुल्लियों का हवन' कन्या करती है। इस में अग्नि के सन्मुख वर कन्या को पूर्वाभिमुख खड़ा किया जाता है। और वर की अञ्जली के ऊपर कन्या की अंजली (बुक) में कन्या के भाई जण्डी वृक्ष के पत्तों सहित घृत से भीगी हुई लाजा (फुल्लियें) डालते हैं। और कन्या—मन्त्र पढ़ कर अग्नि में डालती जाती है। उन मन्त्रों का यह भाव है—कि अग्निस्वरूप सूर्यदेव कन्या को मातृकुल से पृथक करें और पति कुल से न करें। पति की आयुर्दीर्घ हो और कुटुम्बी बढ़ें। पति पत्नि के प्रेम को अग्निदेव दृढ़ करें। पति की वृद्धि के लिये लाजाहोम किया जाता है। इस को वधू कर्तृक होम कहते हैं। यह वधू कर्तृकहोम इसलिये है कि इन मन्त्रों में ही आता है कि 'आयुष्मा नस्तु में पति-इत्यादि' अर्थात् मेरे पति की आयु बढ़े से पति की आयु बढ़ाने के लिये वधू ही इस के द्वारा प्रार्थना करती है।

इसके बाद अंगुष्ठ सहित कन्या का दक्षिण हाथ वर अपने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दक्षिण हाथ में ग्रहण करता है। अंगुष्ठ सहित हाथ इसलिये ग्रहण करता है कि—आश्वलायनगृह्यसूत्र में लिखा है।

'रोमान्तेसाङ्गुष्ठमुभयकामः' ।

अर्थात् पुत्र और कन्या सन्तान की इच्छा वाला अंगुष्ठ सहित तथा रोम रहित उत्तान (ऊपर को सीधा हाथ) का ग्रहण करे। और 'गृभ्णामि' इस मन्त्र को पढ़े।

इसी भाव को 'आपस्तम्बगृह्यसूत्र' में इस प्रकार लिखा है कि-

यदि कामयेत स्त्रीरेव जनयेयमित्यङ्गुलीरेव गृह्णीयात् ।

आपस्त०, द्वि० पटल०, ४ खण्ड, १२ सूत्र

आर्थात्—यदि कन्या सन्तान की ही इच्छा हो तो अंगुली ही ग्रहण करे।

यदि कामयेतपुंस एव जनयेयमित्यङ्गुष्ठमेव सोभीव ङ्गुष्ठमर्भाव लोमानी गृह्णाति ।

यदि पुत्र सन्तान की इच्छा हो तो लोमरहित उत्तान अंगुष्ठ को ग्रहण करे।

पारस्करगृह्यसूत्र में तो अंगुष्ठ और अंगुली सहित हस्तग्रहण की आज्ञा है। जिससे यह ज्ञान होता है कि पुत्र और कन्या दोनों ही की इच्छा होनी चाहिये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हाथ ग्रहण करने के समय जो मन्त्र बोला जाता है, उसमें वर प्रतिज्ञा करता है कि हे कन्ये! मैं तेरा हाथ इसलिये ग्रहण करता हूँ, कि तू गृहस्थाश्रम के सब सुखों को भोगती हुई, मेरे साथ वृद्धावस्था को प्राप्त हो, और तुझे भग, अर्यमा, और सविता देव ने मेरे घर की स्वामिन बनाने के लिये और आनंद भोगने के लिये दिया है। और हम सौ वर्ष तक जीयें. इत्यादि, हाथ ग्रहण के वाद कन्या का गृहस्थसम्बन्धि उत्तरदायित्व अर्थात् 'भार' पति पर हो जाता है, और कन्या ने जिसे अपनां हाथ पकड़ या है, उस समय से उसे अपना एक मात्र पति तथा सर्वस्व जाने और उसके अनुकूल रहे, कन्या का यह धर्म हो जाता है। हाथ पकड़ाने के बाद उत्तरदिशा में स्थित शिला पर कन्या को वर चढ़ाता है। जिसका भाव है कि हे कन्ये तू इस की तरह दृढ़ और स्थिर हो। तेरा मन मेरे में इस शिला की तरह स्थिर हो जाए। और हम जीवन सुख को भोगें।

इसके बाद शिला पर स्थित हुई कन्या "गाथा गायन" करती है। और अग्नि से प्रार्थना करती है। तदनन्तर आगे वधू (कन्या) और पीछे वर प्रणीता तथा ब्रह्मा सहित अग्नि की प्रदक्षिणा (लावां) करता है। और साथ ही अग्नि से प्रार्थना भी करता है। कि हे अग्निदेव! इस कन्या को प्रथम सोमने गंधर्वों को और गंधर्वोंने तुम्हें दिया। अब तुम मुझे इसको पुत्र पौत्र तथा सब सुखों के साथ दो।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वर, ऊपर लिखी विधी अर्थात् लाजाहोम, हाथ पकड़ना; शिलापर चढ़ना गाथा गायन और कन्या को आगे करके प्रदक्षिणा करना इसी प्रकार दो वार और करे। चोथी वार में केवल कन्या की अञ्जली में कन्या के भाईयों द्वारा शूर्प कोण (छज्जली का कोना) से फुल्लियें डलवाकर 'ओं भघाय स्वाहा' इस मंत्र से कन्या, अंजली द्वारा एक आहूति डाल देती है। और चौथी प्रदक्षिणा वर स्वयं आगे होकर करता है।

लग्न की चार ही प्रदक्षिणा (लावां) क्यों ली जाती हैं?

विवाह में वर कन्या को आगे करके तीन, और एक स्वयं आगे हो कर, सब मिला कर चार प्रदक्षिणा लेता है। इसका कारण यह है कि पूर्व लिखित समीक्षणकर्म (परस्पर देखना) के समय चार मंत्रों में से, द्वितीय मंत्र में लिखा है।

'सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः
तृतीयोऽग्निः— इत्यादि'।

अर्थात् सोम (चंद्रमा) ने प्रथम ढाईवर्ष कन्या को ग्रहण किया, (इसलिये प्रथम प्रदक्षिणा सोम की है। फिर ढाईवर्ष गंधर्वों ने ग्रहण किया, इसलिये द्वितीय प्रदक्षिणा गंधर्वों की हुई, तदनंतर ढाई वर्ष अग्नि ने ग्रहण किया, इसलिये तीसरी प्रदक्षिणा अग्नि की हुई)। इसके बाद चतुर्थ पति मनुष्यरूप वर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हुआ,(इसलिये चोथी प्रदक्षिणा वर की हुई) प्रथम तीनप्रदक्षिणा तो देवताओं की हैं, जिन में वर पीछे होता है और कन्या आगे। चौथी प्रदक्षिणा मनुष्य पति की है इसलिये पति ही आगे होता है। अतः तीन प्रदक्षिणा देवताओं की और एक पति की सब मिलाकर चार ही प्रदक्षिणा की जाती हैं। पहली तीन देवताओं की होने से वर पीछे रहता है, क्योंकि वर को अभी पूर्ण अधिकार प्राप्त नहीं हुआ। वास्तव में इन तीनों प्रदक्षिणाओं में देवता ही आगे होते हैं और कन्या पीछे। जब यह देवता अपना अधिकार वर को दे देते हैं, तब वर आगे होकर प्रदक्षिणा करता है। इसी कारण तीन प्रदक्षिणाओं में वर पीछे होता है, और चौथी में आगे होता है।

सप्तपदियों के विषय में विवरण

हिन्दुओं के विवाह में 'सप्तपदी' विवाहसंस्कार का एक प्रधान अङ्ग है। इसके बिना विवाह पूर्ण नहीं माना जाता। कन्यादान और पाणिग्रहण के मन्त्र तो पत्नी भाव के बोधक हैं। सप्तपदी होने के बाद पिता के गोत्र से हट कर कन्या पति गोत्र प्राप्त कर पत्नि बनती है। मनुस्मृति में लिखा है—

पाणिग्रहणका मन्त्रा नियतंदार लक्षणम् ।
तेषां निष्ठातु विज्ञेया विद्विद्भिः सप्तमे पदे ॥

अर्थात् पाणिग्रहण के मन्त्र पत्नि भाव के बोधक हैं, और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पूर्णपत्नी भाव को प्राप्त होना अर्थात् पतिगोत्र प्राप्तहोना सप्तपदी के अनन्तर होता है, ऐसा विद्वानों को जानना चाहिये।

यह मनु जी का वचन सप्तपदी को विवाह का प्रधान अङ्ग मानता है। सप्तपदी के बाद पतिगोत्र प्राप्त होता है यह बृहस्पति जी का वचन है जैसे—

स्वगोत्राद् भ्रश्यते नारी विवाहात्सप्तमे पदे।

सप्तपदी करने के विषय में पारस्करगृह्यसूत्र में लिखा है कि—

अथैनामुदीचीं (दिशमुदङ्मुखीं) सप्तपदानि-
प्रक्रामयत्येकमिषइत्यादिना।

अर्थात् लाजा होम के बाद वधू को अग्नि के उत्तर दिशा में उत्तरोत्तर सात पद 'एकमिषेविष्णुस्त्वानयतु' इत्यादि मंत्रों से चलावे। इसकी विधि इस प्रकार है कि अग्नि से उत्तर दिशा में घिसे हुए चन्दनादि द्वारा उत्तर से उत्तर सात मंडल (रेखा) चौकोन, त्रिकोन वर्तुल (गोल) क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य के लिये बनावे। उन में 'एकमिष इत्यादि' वचन वर के कहने पर वधू प्रथम दक्षिणपाओं (दायां पाओं) और पुनः वामपाओं (बायां पाओं) उसी मंडल में दक्षिण पाओं के साथ रक्खे अर्थात् दक्षिण पाओं से आगे वाम पाओं को न रक्खे। गोभिलगृह्यसूत्र में लिखा है—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मा सव्येन दक्षिणमतिक्राम ।। गो० गृ० सू० २।२।१३

अर्थात् दक्षिण पाओं को वामपाओं से मत उलांघ ॥

इस प्रकार मंडलों में स्थित होती हुई वधू, क्रमशः पति के वचनों को मानती हुई, अपने हृदय के भावों को प्रकट करती है। जिस से परस्पर सम्भाषण द्वारा 'मैत्रीकरण' भी साथ हो जाता है। मैत्री सात कदम चलने से और सात बार भाषण करने से दृढ़ हो जाती है शास्त्रों में लिखा है—

मैत्रीसप्तपदी प्रोक्ता सप्तवाक्याथवा भवेत् ।

अर्थात् सात पद साथ चलने से, या सात, वाक्य परस्पर बोलने से मैत्री दृढ़ होती है।

इस वचन के अनुसार सात पद चलाए जाते हैं, और सात वाक्य परस्पर भाषण कराए जाते हैं। सात बार भाषण और सात पाओं चलने से मैत्री होती है, यह बात तो सप्तपदी के मंत्रों में लिखी है जैसे—'सखे ! सप्तपदा भव इत्यादि' इस सातवें मंत्र में 'सखे' शब्द दिया है, जिसका अर्थ है मित्र। इस से सिद्ध होता है कि सात कदम चलने और सम्भाषण से मित्रता होती है।

वधू को सात पद चलाने के समय वर ईश्वर से अन्न, बल धन, सुख, पशुकल्याण, छः ऋतुओं के सुख और सातों लोकों में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विख्यात होने और अपने अनुकूल करने के लिये प्रार्थना इसलिये करता है, कि हर प्रकार नया काम जब भी किया जाता है, तब उस समय की ईश्वरीय शक्तियें ग्रहों के रूप में उस ही समय के अनुसार अपना अच्छा और बुरा फल देती हैं। इसलिये बुरे फल को दूर करने के लिये विवाह का शुभ मुहूर्त और शुभ लग्न देखा जाता है। और इसी कारण ईश्वर से हर काम में प्रर्थना की जाती है। क्योंकि विवाहकर्म हो जाने के बाद जब वधू पतिगृह में प्रवेश करेगी तब अपने साथ अच्छे और बुरे फल भी ले जाएगी, इसलिये उस समय बुरे फल साथ न जाएं, इस कारण पहले ही विवाह यज्ञ में स्थित देवताओं और ईश्वर से प्रार्थना की जाती है कि इस वधू का प्रथम कदम हमारे घर में अन्न की वृद्धि करे। दूसरा बल की तीसरा धन की चौथा सुख की पांचवां पशुओं की छटा ऋतुओं के सुख की और सातवां अपने अनुकूल करने की वृद्धि करे।

सप्तपदी से वर और वधू को एक विशेष शिक्षाप्राप्त होती है कि गृहस्थाश्रम में अन्न, बल, धनादि सात वस्तुओं की परमावश्यकता है, और इनके बिना गृहस्थाश्रम चल ही नहीं सकता इसलिये जब वर विवाह करलेता है, उस समय ऋषियों ने गृहस्थ के लिये, इन आवश्यक वस्तुओं को सप्तपदी के रूप में याद दिलाया। उस समय वर ने ईश्वर से इन वस्तुओं की प्राप्ति के लिते प्रार्थना की और वधू ने इसमें सहयोग देने के लिये अपने हृदय के शुद्ध भाव प्रगट किये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस सप्तपदी के रूप में पतिपत्नी सम्भाषण द्वारा ऋषियों ने जो शिक्षा दी है उसको यदि कोई विद्वान् विस्तार से वधू वर को समझा दे तो मेरे विचार में वधू वर को गृहस्थ सुखमय बनाने के लिये सब उचित्त शिक्षाएं मिल जाती हैं। और उन से गृहस्थ सुख मय व्यतीत किया जासकता है। वह सम्भाषण शिक्षा ऋषियों ने इस प्रकार लिखी है कि वर जब प्रथम मंत्र पढ़ कर कन्या को प्रथम पद चलने को कहे तब कन्या प्रथम वाक्य कहे। इसी प्रकार सातों मन्त्र सातों वाक्य परस्पर कहें। पुस्तक के विस्तार भय से मन्त्र और श्लोक नहीं लिखता केवल उनके भाव लिख देता हूं जैसे कि—

जब कन्यादान और लाजा होम हो चुका तो वर ने कन्या से कहा कि हे प्रिये! स्त्रियें तो पति के वामांग में बैठती हैं, तू मेरे दक्षिणांग में क्यों बैठी है।

इसके जवाब में कन्या कहती है कि हे पतिदेव! यह सत्य है कि कन्यादान और लाजा होम हो चुका, मगर जब तक सप्तपदी न हो विवाह पूर्ण नहीं होता। इसलिये सप्तपदी के प्रत्येक पद पर मेरे प्रार्थनारूप सात वाक्य हैं, वह यदि आप को स्वीकार हों तो मैं आपके वामांग में बैठूंगी। तब वर ने कहा कि विष्णु-रूप में तुझे अन्न की वृद्धि के लिये प्रथमपद चलाता हूं। तब कन्या ने उन वाक्यों में से प्रथम वाक्य यह कहा कि—

(१) धन धान्य भोज्य और व्यंजन आदि पदार्थ जो आपके

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

घर में हों वह सभी मेरे अधीन करने,(अधीन करने का यह अर्थ नहीं कि उन सभी पदार्थों की एक मात्र कन्या ही स्वामिनी है, इसका अर्थ यह है कि जैसे पति उन पदार्थों को अपनी इच्छानुसार व्यवहार में ला सकता है,उसी प्रकार कन्या भी व्यवहार में ला सके) आपको जो कुछ भी बाहर से धनादि पदार्थ मिलें वह सभी मेरे मान के लिये, घर में लाने। बिना विशेष कारण के न कभी अपने घर से अन्यत्र भोजन करना और न हो शयन करना। यदि आप को यह स्वीकार हो तो मैं वामांग बैठने के लिये प्रथमपद चलती हूँ।

(२) इस बाक्य को स्वीकार करने के बाद वर दूसरे पद पर कहता है कि—विष्णु रूप मैं तुझे दूसरा पद बल की पुष्टि के लिये चलाता हूं (तेरा दूसरा कदम हमारे घर में सभी जीवों को बलयुक्त बनावे) ।

इसके उत्तर में कन्या कहती है—हे स्वामिन् ! मैं आप के घर के सभी काम करूंगी, सास श्वसुर आदि बन्धुओं तथा आप की आज्ञा में रहूंगी। मगर आपने सर्वदा मेरी रक्षा और पालना करनी होगी और न ही मुझे कभी त्यागना होगा।

(३) तीसरे पद में वर धन की पुष्टि के लिये तथा वृद्धि के लिये कहता है। जिस के उत्तर में कन्या कहती है कि—हे स्वामिन् ! मेरे माता पिता ने कष्ट से पाली हुई मुझे संकल्प द्वारा आप को दिया और मेरा नाम तथा गोत्र भी बदला, इस लिये

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आज से आप ने ही मेरा पालना करनी होगी। मैं आप से भिन्न किसी अन्य पुरुष को मन में भी चिन्तन नहीं करूंगी।

(४) चतुर्थ पद में वर ने सुख की वृद्धि के लिये प्रार्थना की जिसके उत्तर में कन्या ने कहा कि— हे पतिदेव ! मैं प्रतिज्ञा करती हूं कि आप के सुख दुःख में मैं आप का सर्वदा सहयोग (साथ) दूंगी। और मधुर भाषण तथा सेवा द्वारा आप को सुखी करूंगी इस के अतिरिक्त आप की आयु वृद्धि के लिये और सौभाग्य प्राप्ति के लिये गौरी देवी का पूजन करूंगी। आप मुझे भूषण, वस्त्र तथा शृंगार के गन्धमाल्यादि द्रव्य ला कर देने जिन के द्वारा मैं आप को सुखी कर सकूं॥

(५) पांचवे पद में वर ने पशुओं के सुख की प्रार्थना की जिस के उत्तर में कन्या ने कहा कि—हे स्वामिन्! अपने कुटुम्ब की सर्वदा पालना करनी होगी, और घर में जिन वस्तुओं की आवश्यकता होगी लानी पड़ेगी। एक मेरी यह प्रार्थना है कि यदि किसी कारण मेरे से कोई भूल हो जावे तो अपने चित्त में क्रोध न करना मुझे उस भूल को बता देना मैं उसे दूर कर दूंगी।

(६) छटे पद में वर ने छःओं ऋतुओं का सुख प्राप्त करने की प्रार्थना की है। अर्थात् हर ऋतु में जिन वस्तुओं की आवश्यकता हो वे सभी प्राप्त हों। जिनके उत्तर में कन्या ने कहा—हे स्वामिन्! मेरे बन्धु आज से आपके दास हो गए हैं। और अपनी सामर्थ्य के अनुसार उन्हों ने आपकी भेंटा की है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपने यह कभी न कहना कि तेरे पिता ने क्या दिया। एक स्थान पर इकट्ठे रहने के कारण मेरी भूल से आप को क्रोध आवे तो कृपया उस भूल को क्षमा करना क्योंकि मैं आप की दासी हूं और दासों के अपराध स्वामी सर्वदा क्षमा करते आए हैं।

(७) सातवें पद में वर कहता है; हे सखे! तू मेरे पीछे चलती हुई भूर्भवादि सात लोकों में प्रसिद्ध हो, मैं विष्णुरूप तुझे ले जाता हूं। उत्तर में कन्या कहती है।

होम यज्ञ व्रत आदि धार्मिककर्मों में ग्रंथीबन्धन करके मैं आपके वामांग में बैठूंगी। आपके किये पुण्यकर्मों में से आधा पुण्य लूंगी और पाप नहीं। तथा अपने पुण्य से पुण्य नहीं दूंगी, प्रत्युत पाप का भाग दूंगी। (क्योंकि स्त्री के पापी होने का उत्तरदायित्व पति पर ही है और पति की असावधानी से स्त्री पापिनी बनी। इस लिये पति उसके पाप का भागी बना। पुण्य का भाग इसलिये इस ने नहीं देना क्योंकि पति के धन से और पति के साथ बैठकर पुण्य कर्म करना होता है इसलिये पति को पुण्य का भाग स्वयं प्राप्त है तो स्त्री ने पुण्य क्या देना है। पति के पाप का भाग इसलिये नहीं लेगी, क्योंकि पुरुष स्त्री की अनुमति के विना स्वतंत्र पाप कर्म करता है, अतः स्त्री उस पाप की भागी नहीं बनती)। आज ब्रह्मा के बनाए विधान के अनुसार आप मेरे पति बने है। यहां पर अग्नि और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मण्डल में आवाहित देवता, तथा उपस्थित ब्राह्मण और बन्धु इस विवाह कर्म के साक्षी हैं आज आपने मेरा हाथ पकड़ा है जिसे आयु भर नहीं छोड़ना होगा।

इन पर लिखे हुए वाक्यों को कई लोग विधर्मियों के विवाह की तरह 'इकरारनामा' समझते हैं। यह उनकी भूल है क्योंकि हिन्दूविवाह में यही तो विशेषता है कि वह उनकी तरह कुछ समय के लिये स्थूलइन्द्रियों का सम्बन्धमात्र ही नहीं समझते प्रत्युत वह तो इस विवाह विधि द्वारा ईश्वरीयशक्ति से दम्पति के आत्मा, मन, प्राण, सूक्ष्म और स्थूल शरीर के पारस्परिक सम्बन्ध पैदा करते हुए मोक्ष को भी प्राप्त कर लेते हैं और एक दूसरे के बाद भी पुनर्जन्म में मिलने का उद्यापन आदि उपाय करते हैं।

ऊपर के सात वाक्य परस्पर कहने के बाद स्वीकृतिरूप वर भी एक वाक्य कहता है जो इस प्रकार है—

सत्य तथा प्रियभाषण,द्वारा क्रोध तथा आलस्यसे रहित होकर मेरे वचन को मानोगी, और मेरे माता पिता की सेवा करोगी तो मैं वचन देता हूं, कि मैं सर्वदा तेरा पालन करूंगा। मैं पति-धर्म को पालन करूंगा, और तूने स्त्री-धर्म को पालन करना अर्थात् परपुरुष के साथ एकान्त में बैठना, बगीचे में जाना, क्रीड़ा करना, हंसना, गाना बजाना तथा सम्भाषण करना आदि पतिव्रता स्त्री का धर्म नहीं, अपने घर में सुख दुःख भोगना और पतिव्रतधर्म पालन करना ही स्त्रियों का धर्म है। यदि इन धर्मों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

को तूने पालन किया तो मैं भी तेरा सर्वदा पालन करूंगा।

आजकल प्रायः कई ब्राह्मण स्थान भाव से या कन्या के संकोच के कारण कन्या के आगे पटड़ी पर सात आटे से रेखा बना देते हैं। और उन को वर के प्रतिपद्चलने की आज्ञा करने पर कन्या के पाओं द्वारा अंगूठे से क्रमशः सातों रेखा मिटवा देते हैं। या कन्या के अंगुठे को वर के हाथ से पकड़वा कर मिटवाते हैं। और कई ब्राह्मण ग्रंथोबन्धन की गांठ द्वारा रेखायें मिटवाते हैं। यह उन की भूल है क्योंकि सूत्रों में यह विधि कहीं नहीं लिखी।

सप्तपदी के बाद कुम्भ से अभिषेक किया जाता है। तथा कन्या को दिन में सूर्य और रात को ध्रुवतारा दिखाया जाता है। जिस का भाव यह होता है, कि हम सूर्य तथा ध्रुव की तरह उज्ज्वल और स्थिरचित्त हो कर सौ वर्ष तक गृहस्थ के सुखों को भोगें।

इस के बाद वर कन्धे के ऊपर से हाथ ले जा कर कन्या के हृदय को स्पर्श करता हुआ कहता है कि हे कन्ये; मैं अपने व्रत अर्थात् शास्त्रविहितनियमों को तेरे हृदय में धारण करता हूँ। मेरे चित्त के अनुकूल तेरा चित्त हो। मेरे वचन को एक मन होकर मान। और प्रजापति तेरे को मेरे में नियुक्त (जोड़ना) करें। इस के बाद कन्या की मांग में अर्थात् सिर के बालों में सिन्दूर लगाया जाता है। जिसका भाव यह है कि स्त्रियें

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दें। इस अवसर पर कन्या को वर के वामभाग में बैठा देते हैं।

स्विष्टकृद्धोम के बाद ब्रह्मा को दक्षिणासहित पूर्णपात्र दिया जाता है। फिर ब्रह्मग्रंथीविमोक के बाद प्रणीता के जल से मार्जन किया जाता है। प्रणीता को उलट कर, और कुशाओं को घृत लगा कर अग्नि में डाल दिया जाता है। और फल पुष्पादि से पूर्णाहूति करके त्र्यायुष द्वारा वर के अंगों पर भस्म लगाई जाती है। इस के बाद दृढ़पुरुष (कोई सम्बन्धि मामा आदि या और कोई मनुष्य अथवा वर) कन्या को अनुगुप्तगार (चारों ओर से परदे वाला स्थान या छन्ननियों का स्थान) में मृगचर्म या शण से बने लालरङ्ग के वस्त्र पर बैठाता है।

विवाह के दिन से, तीन दिन और तीन रात तक वर वधू खारी वस्तुएं तथा अधिक नमकीन वस्तुएं नहीं खाते। और भूमि पर शयन करते हुए ब्रह्मचारी रहते हैं। क्योंकि सूत्रग्रंथों में लिखा है कि एक वर्ष, या बारह रात्रि, या छः रात्रि; अन्त में तीन रात्री तक अवश्य ब्रह्मचारी रहें। इसलिये न्यूनसे न्यून तीन रात्री अवश्य ही ब्रह्मचारी रहना चाहिये।

चतुर्थीकर्म

यद्यपि चतुर्थीकर्म विवाह के चतुर्थरात्री में ही करना लिखा है, तो भी आजकल लोग समय के प्रभाव से विवाह के साथ ही

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस कर्म को कर लेते हैं। क्योंकि आजकल लोगों की स्थिति ही ऐसी है कि चार दिन तक इस कर्म को यथावत नहीं कर सकते इस बात को विचार कर और कर्म लोप न हो इसलिये विवाह के साथ ही इस कर्म को किया जाता है। चतुर्थी कर्म विवाह का एक प्रधान अङ्ग है। इसके बिना विवाह पूर्ण ही नहीं होता और कन्या को वधू नहीं कहा जा सकता। चतुर्थीकर्म का फल मार्कण्डेय जी ने लिखा है कि कन्या शरीर के ८४ चौरासी दोष चतुर्थी कर्म से दूर होते हैं जैसे कि—

चतुराशीति दोषाणि कन्यादेहेतु यानि वै।
प्रायश्चित्तकरं तेषां चतुर्थीकर्मह्याचरेत्॥

अर्थात्—कन्या के शरीर में जो चौरासी दोष हैं उनके प्रायश्चित्त रूप यह चतुर्थीकर्म करना चाहिये।

यह चतुर्थीकर्म कन्या के आत्मा का संस्कार है, और सन्तान तथा पति सम्बन्धि अनिष्टफल को दूर करने वाला है। इसके न करने से दोष होता है। जैसा कि शास्त्रों में लिखा है—

यदा न कुरुते कर्म चतुर्थ्यांत्रमादितः।
इह जन्मनि बन्ध्या स्यात् वैधव्यं जायते पुनः॥

अर्थात् चतुर्थी कर्म न करने से स्त्री बन्ध्या और विधवा होती है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चतुर्थीकर्म घर के अन्दर ही करना लिखा है। और इसकी विधि इस प्रकार है, कि हवन के लिये कुशकण्डिका करने के बाद अग्नि में घृत से आहुति देवे और स्रुव का शेष पृथूदक पात्र (प्रणीता और प्रोक्षणी पात्र से भिन्न पात्र) में डाले। इसके बाद स्थालीपाक (पायस आदि चरु) और घृत से हवन करके वर पृथूदकपात्र से जल लेकर वधू के सिर पर मन्त्र पढ़ कर छिड़के। उस मन्त्र में लिखा है कि हे कन्ये! इस जल अभिषेक से तेरे शरीर के पति, सन्तान पशु, घर और यश को नाश करनेवाला दोष दूर हो, और मेरे साथ वृद्धावस्था तक सुख भोग। इसके बाद आहुति दिये हुए शेष स्थालीपाक को वधू के खाने के लिये देवे। इसके खाने से शरीर के अन्दर का भी संस्कार हो जाता है। और दो शरीर होते हुए भी सूक्ष्म शरीर एक हो जाता है। क्योंकि मन्त्र में लिखा है, मैं अपने प्राणों को तेरे प्राणों में, अस्थियों को अस्थियों में, मांस को मांस में, त्वचा (चमड़ा) को त्वचा में स्थापन करता हूँ। इसके बाद वर वधू के कंधे पर हाथ ले जाकर हृदय को स्पर्श करे। इस कर्म को चतुर्थीकर्म कहते हैं। और इस विवाह के उत्तरकर्म को करने के बाद जो वधू से सन्तान जन्म लेगी उसमें विद्या, बुद्धि आदि विशेष गुण होंगे और वही बालक संसार में होनहार हो सकता है। यही कारण है कि भारतवर्ष के पूर्वज संसार को शिक्षा देते थे। आज संस्कारों से श्रद्धा हटने के कारण भारतवर्ष घोर अंधकार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में पड़ा हुआ है। और स्वयं विद्या के लिये दूसरों की शरण लेता है।

प्रथा वेदकरते

विवाहसंस्कार हो जाने के बाद लड़के वालों का डोली लेने जाना ही वेदकरते कहाता है। वास्तव में वेदकरते का अर्थ है, वेदी में कर्म करने वाले। इस समय लड़के वालों को निम्नलिखित सामान साथ ले जाना चाहिये।

१ एक टोकरे में सुहागरा। (छुहारे, बादाम, लाचीदाना) ५ जुट्ट २० खोपे, दो टोकरी लड्डु सुहाग चूड़ा, परांदा, कंघी हाथीदांत की, अतर, जुत्ती (वधू के लिये) वधू के कपड़े, झिमी (वधू का उत्तरीय वस्त्र) मौली, मैंदी भिगी हुई, मौली (मंगल सूत्र) फूल, फूलमाला, भूषण (जेवर) पानस (डोली) डोली के ऊपर डालने के लिये चुन्नी (वस्त्र) [illegible] डालने के लिये और शकुन डालने के लिये मिठाई [illegible] जो वहने लाते हैं।

इस सब समान के साथ लड़कीवालों के घर जाकर और वेदी में वर पिता अपने लड़के से, विवाह में लिये हुए कन्यादान और साथमें अन्य वस्तुएं जा दशमहादानों मे भी आती है

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैसे लोहा तिल आदि उनका 'प्रतिग्रहदोष' अर्थात्, दान लेने के भार रूप दोष को दूर करने के लिये गौदान या उसके स्थान में दक्षिणा कुलपुरोहित को दान करके देता है, जिस को गोपर दान या गुप्तदान भी कहते हैं। इसके बाद वर तथा कन्या के कल्याण के लिये जप संकल्प भी कराया जाता है, तथा ब्रह्मण को कर्तव्यता आदि लाग दिये जाते हैं॥

पुष्पाञ्जलियें

दानादि करने के बाद वर और कन्या को आशीर्वाद देने के लियेपुष्पाञ्जलियें की जाती हैं। जिनमें ब्राह्मणों के मन्त्र पढ़नेके बाद कन्या के सिर पर, वर तथा कन्या के माता पिता और सम्बन्धि पुष्प चढ़ाते हैं। जिन मन्त्रों का भाव संक्षेप में इस प्रकार होता है।

हे कन्ये ! जैसे ब्रह्मा की गायत्रि, विष्णु की लक्ष्मी; शंकर की पार्वती, सूर्य की सुवर्चला, चन्द्रमा की रोहिणी, मदन की रती दलीप की सुदक्षिणा, वसन्त की धृति, वसिष्ट की अरुन्धती श्री रामचन्द्र जी की सीता, इत्यादि जो पतिव्रतास्त्रियें हुई हैं तू भी उनकी तरह सौभाग्यवती और पतिव्रता हो इत्यादि। इसके बाद वर के ऊपर भी पुष्प चढ़ाये जाते हैं। और अभिषेक किया जाता है। जिस में सब देवताओं और सब ऋषियों से प्रार्थना की जाती है, कि आप इस वर और कन्या को मङ्गल प्रदान

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करें, और इनकी आयु बढ़े तथा पुत्र पौत्र युक्त हों इत्यादि आशीर्वाद दी जाती हैं,

इसके बाद वर, कन्या के सिर पर पुष्पमालाएं चढ़ाई जाती हैं, जिन में वरपिता कन्या के गले में पुष्पमाला के साथ स्वर्ण माला (चेन) भी चढ़ाता है,

केसर से चौंका (लेपन) पाना

तदनन्तर बहनें केसर के साथ चौंका (लेपन) डाल देती हैं। 'चौंकापाना' एक प्रकार से विवाहसंस्कार हो जाने के बाद ग्रहविसर्जन कराना है। विवाह से पहले ग्रहपूजन के लिये जो आटे से चौक पूरा गया था उस चौक में (ग्रहों की मूर्त्तियों) का मनार्थ केसर के जल से लेपन दिया जाता है। और बाद में वर कन्या को मण्डप से विदा करने के पहले बहनें ही कन्या की झोली में १४ छुहारे १ जुट्ट तथा मिठाई का थाल डालती हैं, और वर की झोली में फल और कूजे डाल देती हैं। इसके बाद कन्यापिता बहनों के मनार्थ भेटारूप में वस्त्र और एक या दो रुपये देता है। तदनन्तर पूर्णाहूति' करने के बाद सिर जोड़ी करके तथा मुकुट-वधाकर (उतारकर) वर को घृत में मुख दिखाया जाता है।

छायापात्र का फल

शास्त्रों में घृत में मुख देखने का बहुत फल लिखा हैं जैसे—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

घृतेन वर्धते आयुः घृतेन वर्धते बलम् ।

घृतेन वर्धते तेजः घृतदर्शनं पापविनाशनम् ॥

अर्थ—घृत से आयु; बल और तेज बढ़ता है, तथा घृत के दर्शन से पाप दूर होजाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि छायापात्र करना चाहिये। विज्ञान से भी सिद्ध है कि घृत में मुख देखने से मनुष्य के "औरा" (मुख के चारों ओर फैला हुआ तेज-पुञ्ज) के तामसी गुण (दुःखादि) को घृत ग्रहण करलेता है। और सात्विक गुण प्रदान करता है। घृत विष को भी हर लेता है।

बाद में छुहारे से मुखचुला कर वर कन्या को मण्डप से उठा लिया जाता है।

प्रथा सुहागरात

यह प्रथा छन्नानियों के आगे की जाती है। इसमें कन्या और कन्यामाता की झोली में सुहागरात डाली जाती है। उत्तरीय (ऊपर का वस्त्र) के चारों किनारों में सुहागरात बांधकर, कन्या की झोली में एक टोकरी लड्डूओं की और १४ छुहारे १ जुट्ट डाला जाता है। और कन्यामाता की झोली में १ टोकरी लड्डूओं की; १४ छुहारे, १ जुट्ट, कन्या के वस्त्र जूती, सुहागपुड़ा, कंघी, अतर, परान्दा, एक रुपया नारयल (जो वर के पास तम्बोल वाला होता है) और मौली डालकर सुहागरात न्यून से न्यून

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ढाईबुक (अंजली) डाली जाती है। और कन्या को पहनाने के लिये भूषण भी दिये जाते हैं इसके बाद कन्या को सुहागपुड़े के द्रव्यों से अलंकृत करके और वस्त्र पहना कर खडुक्कने आदि शकुन शास्त्र करने के बाद खटदान करने के लिये लाया जाता है।

सुहागरात के समय शृंगार करना

सुहागरात के समय कन्या को जो अलंकृत किया जाता है, उस का कारण यह है, कि वैदिक समय में कन्या, विवाह हो जाने के बाद जब पतिगृह में जाती थी, तो उस के बालों को कंघी द्वारा साफ कर तथा अलंकृत करके भेजा जाता था। वही संस्कृति आज तक चली आ रही है। अथर्ववेद के का० १४ सू० १ मं० ५५ में सूर्या के विवाह सम्बन्ध में अलंकृत करके भेजना लिखा है जैसे—

बृहस्पतिः प्रथमयाः सूर्यायाः,

शीर्षे केशां अकल्पयत्।

तेनेमामश्विना नारीं पत्ये सं शोभयामसि ॥

बृहस्पति ने पहले सूर्या के सिर पर बालों को सजाया, उसके साथ हे अश्वियो। हम इस नारी को पति के लिये सजावें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस मन्त्र से कन्या को पतिगृह में भेजने के समय अलंकृत करना सिद्ध होता है। पति के पास जाने की प्रथमरात्री होने के कारण इसे सुहागरात बोला जाता है।

सुहागपुड़ा

सुहागपुड़ा में सौभाग्यप्रद औषधियें होती हैं। और जिनको पूर्व समय में घिस कर कन्या के मस्तक पर लगाया जाता था। जिससे ताप शांत रहता था। आज कल कई लोग तो उस पुड़े को ही कन्या के सिर पर बांध देते हैं। (जो शास्त्र विरुद्ध है) अथर्ववेद का० ७ सू० ३६ मन्त्र ५ का विनियोग 'कौशिक सूत्र' में औषधि को सिर पर लगाने के लिये लिखा है। और मंत्र यह है—

यदि वासी तिरोजन यदि वा नद्यस्तिरः।

इयं ह मह्यं त्वामोषधिर्बद्ध्वेव न्यानयत् ॥

(हे पति ! यदि तेरा मन) दूर चला गया है, यदि नदियों से परे चला गया है, सर्वथा मेरे लिये यह औषधि, उसे और तुझे मानो बांध कर ले आवे।

इस मन्त्र में पतिप्रेम को औषधिद्वारा दृढ़ करने के विषय में लिखा है। इसीलिये औषधि को विवाह के समय सुहागपुड़े

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में बांधा जाता है। और पूर्व समय में इसको घिस कर कन्या के मस्तक पर लगाया जाता था। जिस को अब भी कई लोग मस्तक पर लगाते हैं। और इस को इस समय 'पील लगाना' कहा जाता है। तदनन्तर कन्या को अलंकृत करके खट्टदान की जाती है।

प्रथा खट्टुदान

खट्टदान में कन्या और वर को एक शय्या (पलङ्ग) पर बैठाया जाता है। और गणपत्यादिग्रहों का पूजन करके और उपयोगीद्रव्य बरतन, वस्त्र, गुणे, चावल, दूध आदि संकल्प करके वर को दिये जाते हैं। संकल्प करने के बाद जल से शय्या का मण्डल ((जल से गोल रेखा करना) किया जाता है। इस के बाद सबसे पहले कन्यामाता एक रुपया नारयल (जो घोड़ी के समय वर को दिया गया था) वरको देकर छंद सुनती है, तदनन्तर सब सम्बन्धि एकर रुपया देकर छंद सुनते है।

छन्द सुनने का कारण

छंद इस लिये सुनते हैं कि पारस्करगृह्यसूत्र के प्रथम काण्ड आठवीं काण्डिका सूत्र ग्यारह में लिखा है कि—

ग्रामवचनं च कुर्युः॥

अर्थात स्त्रियें ग्रामवचन बोलें। इस वचन के अनुसार जब

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्त्रियें किसी वस्तु का नाम लेकर सवाल करती थीं, तब वर उस वस्तु का छन्द बना कर उत्तर देता था, जिसके द्वारा वर की प्रतिभा का पता चल जाता था। आज कल स्त्रियों के बचन तो नहीं होते मगर वर के वचन बोले जाते हैं। जिन को 'छन्द' कहा जाता है।

कन्या द्वारा धान (धांइयों) का फैंकना

छन्दों के बाद वर कन्या आशीर्वाद देते हुए. सब बन्धुओं की आंचल (झोली) में धान्य शकुन रूप डालते हैं। और आशीर्वाद में जो मन्त्र बोला जाता है, उस का अर्थ इस प्रकार है। जैसे--मेरी माता चिरकाल तक जीवे, और मेरा पिता स्वस्थ (नीरोग) रहे मेरे भाई की आयु दीर्घ हो, मेरे सब सन्बन्धियों के घर में धन धान्य सर्वदा रहे।

डोली

इस आशीर्वाद को देता हुआ वर, कन्या को किसी रथ या पालकी में बैठा कर अपने घर ले जाता है।

गोभिलगृह्यसूत्र में लिखा है कि विवाहकर्म हो जाने के बाद कन्यादाता कन्या को पतिगृह पहूंचावें जैसे कि—

समाप्तायमुद्वहन्ति ॥ गो० प्र० २ खं० २ सूत्र १८।

अर्थ—विवाह का सब कर्म हो जाने पर उस वधू को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सम्बन्धिलोग पालकी या रथ आदि पर सवार करा कर पति के घर पहूंचावें। इसी कारण तो विवाह को उद्वाह कहते हैं। आज कल भी लोग अपने घर से जहां तक हो सके पालकी को स्वयं उठा कर पहूंचाते हैं। आपस्तम्बगृह्यसूत्र में लिखा है—

परिषेचनांत कृत्वोत्तराभ्यां योक्त्रं विमुच्य
तां ततः प्र वा वाहयेत् प्र वा हारयेत् ॥

अप० पट० २ खं० ५ सू० १३

अर्थात् परिषेचन के बाद ग्रंथीबन्धन खोल कर उस वधू को किसी रथ पर चढ़ा कर भेजें या स्वयं पालकी में बैठा कर ले जावें। इन प्रमाणों से सिद्ध होता है कि कन्या को पालकी आदि में बैठा कर ले जाना चाहिये।

प्रथा पानीवारना और शकुन शास्त्र

जब पालकी (डोली) वर के घर आती है, उस समय वर की माता जिसने कि पहले ही 'लस्सी पैर' ❀ पाया होता है, घर की

❀जब घोड़ी जाती है, उसके बाद वर की माता पवित्र वस्त्र पहन कर और मीठे चावल या मिठाई खाकर एक खुले बरतन में दूध और पानी डालकर उसमें अपना दक्षिणपाओं रख कर बैठी रहती है। इसका अभिप्राय यह है कि विवाह के लिये गये हुए वर की शुभ चिन्तक हो कर भगवान् से प्रार्थना करती है कि यह विवाह शुभ कारक हो।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

देहली (मुख्य द्वार) पर आकर वर कन्या के सिरसे गुड़ और जल घुमा कर सातवार गुड़खाती और जल पीती हैं। इसका कारण यह है कि माता अपने पुत्र और वधू को देखकर फूली नहीं समाती और उस का वात्सल्य प्रसन्नता से उछल पड़ता है। इस कर्म को मुख्य द्वार की देहली पर इस लिये किया जाता है कि आपस्तम्बगृह्यसूत्र में लिखा है—

न च देहलीमधिनिष्ठ ते ॥

आप० पट०२ खं० ६ सू० ६।

अर्थात् प्रवेश करने के समय देहली के ऊपर न बैठे और न ठैहरे। इस बात को जान कर वर माता पहले ही स्वयं देहली के पास खड़ी हो जाती है कि कहीं वर कन्या देहली पर खड़े न हो जाएं इस लिये आप देहली (दलीज) के पास खड़ी हो कर शकुन कर लेती है। और इसी प्रमाण के आधारपर देहलीपर कोई काम नहीं किया जाता। वर कन्या को साथ लेकर वर माता घर के अन्दर ही ले जाती है। जहां पर उसने पहले ही सात वर्तनों में आटा, चावल, घृत, गुड़, कपास,ऊन और हलदी मंजिष्ठ (मजीठ) की गंडिया रक्खे होते हैं ले जाती हैं। वहां पर उन बरतनों में उसका हाथडलवाकर सातवार सब वस्तुएं निकलवाती हैं। जिस से यह प्रकट किया जाता है कि सप्तपदियों में जो वर ने प्रतीज्ञा की थी कि धन धान्य और खाद्य पदार्थ तेरे आधीन करूंगा, वह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

घरमें आते ही पूरी कर दी है। इसी प्रकार रुपयों की थैलीमें हाथ डलवाकर धन पर अधिकार भी प्रकट कर दिया जाता है। थैली में खाली हाथ ही नहीं डलवाते प्रत्युत उस से मांग कर रुपये लेते हैं, जितने कि वह दे दे। इस प्रकार वधू का प्रभुत्व सिद्ध किया जाता है।

तिलपल्ले

तिलपल्ले इस प्रकार खेले जाते हैं कि वधू से आकर वर का एक २ सम्बन्धि तिल मांगता है, और वधू पास पड़े हुए तिलों में से अंजली भर कर देती है, और लेने वाला वही तिल वधू को देता हैं, इसी प्रकार सात वार करने के बाद थोड़े से तिल ले कर खा लेता है। जिस समय एक दूसरे की अंजली में तिल देते हैं, उस समय अपने २ सम्बन्ध (रिश्ते) का कविता में उच्चारण भी करते जाते हैं। इसका कारण यह है, कि नई आई हुई अपरचित वधू को वरके सब बन्धुओं से परिचय करा दिया' जाय, इस प्रकार एक खेल द्वारा परिचय करा दिया जाता है। जिस को 'तिलपल्ले खेलना' कहा जाता है, तिलपल्लों के विषय में बाराहगृह्यसूत्र के वधूप्रवेश प्रकरण में लिखा है कि वधू प्रवेश के बाद बधू की गोदी में बालक देवे और अंजली को फलों से भर दे या तिलतण्डुलों से जैसे कि—

फलानामंजलिं पूरयेत् तिलतण्डुलान् वा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस सूत्र के अनुसार तिलपल्लों द्वारा परिचय कराया जाता है।

वधू की गोदी में बालक बैठाना

जब कन्या बरतनों में हाथ डाल लेती है, तो उसकी गोदी में एक छोटी आयु का बालक बैठा दिया जाता है। उसका कारण यह है कि—गोभिलगृह्यसूत्र में लिखा है—प्र०२खं०६सू०—६॥

गृहागतां पतिपुत्रशीलसम्पन्ना ब्राह्मण्योऽवरो
प्यानडुहे चर्मण्युपवेशयन्तीह गाव इति।
तस्याः कुमारमुपस्थ आदध्युः तस्मै शकलो.
टानञ्जलावावपेयुः फलानि वा॥ गोभि०

अर्थ—पतिघर के पास लाई हुई उस वधू को, पति पुत्रवाली और शीलसम्पन्ना ब्राह्मणीगण सवारी से उतार कर तथा 'इह गावः' इस मन्त्र को पढ़ कर बिछाए हुए मृगचर्म के ऊपर बैठावें। उस बधू की गोद में उन्हीं में से कोई ब्राह्मणी एक लड़के को अर्पण करे। उस लड़के की अंजली में खेलने का शकलोट (मट्टी का गेंद) या फल देवे। इसी प्रकार आपस्तम्बगृह्यसूत्र द्वितीय पटल खंड ६ सूत्र ११ में भी लिखा है।

इन सूत्रों के अनुसार आजतक भी गोदीमें बालक दिया जाता है। और उसको जुट्ट (गरी गोला) दिया जाता है, जो कि गोल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भी होता है, और फलभी होता है। गोदीमें बालकदेनेका अभिप्राय यह होता है ताकि एकतो वधू इस घर में आकर सन्तान वाली हो। दूसरे वधू को भी ज्ञान कराया जाता है, कि विवाह का उद्देश्य भोग नहीं, प्रत्युत पितृऋण से मुक्त होने के लिये पुत्र उत्पन्न करना है।

प्रथा सत्तोहूरा

सत्तोहूरा वर वधू को एक वस्त्र पर बैठा कर गणपत्यादि पूजन के बाद किया जाता है। क्योंकि पारस्करगृह्यसूत्रका० १ कं० ८सू० १०म लिखा है कि—

इदपुरुष आनुडुहेरोहिते चर्मण्युपवेशयति ॥

अर्थात् इदपुरुष (वर) वधू को मृगचर्म पर बैठाता है। आजकल चर्म पर न बैठा कर चर्म के स्थान पर वस्त्र से ही काम ले लिया जाता है। इसमें वर वधू के वस्त्र भी विवाह समय के ही होते हैं। कुड़ता, पेची वर का और झिम्मी (उत्तरीय वस्त्र) वधू की होनी आवश्यक है। विवाहसमय के वस्त्र इसलिये होते हैं कि सत्तोहूरा वास्तव में 'चतुर्थीकर्म' के पूर्व करने का कर्म है। क्योंकि चतुर्थीकर्म चौथी रात को न करके विवाह के साथ ही आहुतियें डाल कर कर लिया जाता है। इसलिये उसके पूर्व जो विवाह से दूसरे दिन कर्म होना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

था। वह कर्म चतुर्थीकर्म के बाद किया जाता है, इस लिये जो विवाह के वस्त्र चतुर्थीकर्म तक होते थे, वही सत्तोहूरा में भी होते हैं। पारस्करगृह्यसूत्र के प्रथम काण्ड कण्डिका नौ में लिखा है—

अस्तमितानुदितयोर्दध्ना तण्डुलैरक्षतैर्वा (होमः)

अर्थात् सायं प्रातः दही, चावल, यवादि से होम करे। इस सूत्र के अनुसार आजकल हवन न करके उस के स्थान में बलि कर्म कर दिया जाता है। अर्थात् हवन के स्थान पर अजारन (दो २ छोटी रोटियें) चावल, चनों की दाल और सीरा (लिपसी) देवताओं के नाम हाथ से लगवा लिये जाते हैं। इसके आगे दसवीं कण्डिका के पांचवे सूत्र में विवाह के, अंत में ब्राह्मण भोजन कराना लिखा है 'ततो ब्राह्मण भोजनम्' इन अजारनों के द्वारा ब्राह्मण भोजन भी साथ समझा जाता है, क्योंकि मण्डल करके ब्राह्मणभोजन कर्म प्रारम्भ में हो चुका, और कर्म समाप्ति पर जो ब्राह्मणभोजन करना इस सूत्र में लिखा है, कर्म लोपन कर के नाम मात्र ब्राह्मण भोजन तथा हवन के स्थान में बलि कर्म कर लिया जाता है।

आजकल सत्तोहूरा इस प्रकार किया जाता है कि—गणपत्यादि पूजन के बाद खड़ुक्कने आदि शकुन किये जाते हैं। इसके बाद वर का गाना और कन्या के कलीरे खोल दिये जाते

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हैं, तथा ग्रंथीबन्धन भी खोल दिया जाता है। अजारन वर वधू के हाथ से लगवा लिये जाते हैं। और एक २ अजारन वर कन्या की झोली में डाल दिया जाता है। वर की झोली में एक रुपया नारयल और वधू की झोली में १४ छुहारे एक जुट्ट जो वधू के पिता के घर से, आटा चावल, चनों की दाल तथा गुड़ के साथ आया था डाल दिया जाता है। वधूपिता के घर का आटा चावल इस लिये होता है कि यह कर्म चतुर्थीकर्म से पहले कन्यापिता के घर ही होता था। और चतुर्थीकर्म वर के घर होता था। क्योंकि चतुर्थीकर्म पहले करके वर अपने घर चला आया है, इस लिये दूसरे दिन का कर्म जो कन्यापिता के घर होना चाहिये था। उस कर्म का सामान कन्या पिता भेज देता है।

शकुन के नारयल छुहारे झोली में डालने के बाद स्थालीपाक (तस्मै या चावल आदि) जो वर ने खाया हो वही वधू को खिलाया जाता है जिसको 'मिस्स तिस्स' कहते हैं। इस का कारण यह है कि गोभिलगृह्यसूत्र के प्र० २ खं० ३ सूत्र २१ में लिखा है कि दूसरे दिन स्थाली पाक बनाकर हवन करें और फिर भोजन करने के बाद उच्छिष्ट वधू को देवे। स्थाली पाकं कुर्वीत् इत्यादि के अनन्तर लिखा है—

भुक्त्वोच्छिष्टं वध्वै प्रदाय यथार्थम् ॥

अर्थात् स्थालीपाक पकाकर तथा देवताओं को आहुतियें या

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बलियें देकर वर भोजन करे। इसके बाद खाने से बचे अन्न को वधू को खाने के लिये देकर स्वयं यथेच्छ विचरण करे,

इस सूत्रके अनुसार वधू को वर के किये हुए भोजन मेंसे खिलाया जाता है। ऊपर विधि में लिखा है कि सत्तोहूरा में ग्रंथी बन्धन भी खोला जाता है। इसका कारण यह है कि पूर्व 'डोली'के प्रकरण में आपस्तम्बगृह्यसूत्र के द्वितीय पटल खंड ५ सूत्र १३ का जो प्रमाण दिया है, उसमें लिखा है कि "परिषेचन" के बाद ग्रंथीबन्धन खोलने पर उस वधू को किसी रथ या पालकी पर चढ़ाकर पतिगृह में भेजे" इस सूत्र में डोली पूर्व समय में चतुर्थी कर्म के दिन होती थी, अर्थात् चौथे दिन होती थी तब तक तो दूसरे दिन की कृत्य हो चुकी होती थी इसलिये उस समय तो ग्रंथी खोल दी जाती थी। मगर जब कि आजकल चतुर्थीकर्म और डोली विवाह के साथ हो जाते हैं तो इस कारण द्वितीय दिन की कृत्य न हो सकने से डोली के समय ग्रन्थीबन्धन नहीं खोला जाता। इस दूसरे दिनकी कृत्य को करके अर्थात् सत्तोहूरा करके ही ग्रंथीबन्धन खोला जाता है। पारस्करगृह्यसूत्र में लिखे विवाहकर्म के बाद 'औपासन होम' करना लिखा है, और वह होम चावलों से करना लिखा है। यह 'औपासन होम' पारस्करगृह्यसूत्र के विवाहकर्म की समाप्ति वाली आठवीं कण्डिका के बाद नावी कण्डिका में आता है। और दसवीं कण्डिका में डोली ले जाते हुए रास्ते में नैमित्तिक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कर्म का उल्लेख है। तदनन्तर ग्यारवीं कण्डिका में चतुर्थीकर्म है। इस प्रकरण को देखकर जाना जाता है कि पिता के घर में जो आठवीं कण्डिका में तीन दिन तक ब्रह्मचारी रहना तथा भूमि पर सोना लिखा है, उन दिनों में जो 'औपासन कर्म किया जाता था, वही आज 'चतुर्थीकर्म के बाद पतिगृह में हवन, न करके बलीरूप ही चावलादि द्वारा कर्म किया जाता है। जिस को आजकल सत्तोहूरा के नाम से बोला जाता है।

प्रथा जनानीमिलनी

इस प्रथा में वर वधू की सम्बन्धिनी स्त्रियों का परस्पर परिचय कराना उद्देश्य होता है। और वह इस प्रकार होता है कि वधू की माता एक वंशपात्र ('छाब्बा' जो प्रथा सरोढ़ा' में लड्डू रखकर आया था) में दो अट्टे मौली के, सात पान लगे हुए, एक जुट, १४ छुहारे, एक श्वेत चादर रङ्गने के लिये, और गुलानारी (लाल और केसरी) रङ्ग लेकर, और अपनी संबंधिनी स्त्रियों को साथ लेकर वर के घर जाती है। वहां वर की माता अपनी सम्बन्धिनी स्त्रियों को लेकर बैठी होती है। वह भी मिलनी के लिये एक श्वेत चादर रङ्ग, पान, मौली, और जुट छुहारे लेकर बैठी होती है। वर की माता वधू को अपने घर के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वस्त्र और भूषण पहना कर वर के साथ स्त्रियों के बीच पीठासन (पीढ़ी) पर बैठा देती हैं। भटन (भाटकी स्त्री) दोनों चादरों को रख देती हैं। जिनका कन्यामाता और वर की माता अपने २ सिर पर करके मौली और पुष्पमाला एक दूसरी के गले में डाल देती हैं। दो पुष्पमाला वर वधू के गले में डाल दी जाती हैं। जुट छुहारे एक दूसरी की झोली में डालने के बाद वर वधू की माता परस्पर गले मिलती हैं। और वधू की माता वर की माता की भेटा में रुपये देती है इसके बाद वर पिता वधू की माता के सिर पर गुलाब छिड़क कर पुष्पमाला देता है, और उससे रुपये ले लेता है। इसके बाद वर माता अपनी संबंधनियोंके रुपये लेतीहै।

इस समय कई स्त्रियें मिलनी करने के वाद सम्बन्धिनियों के रुपये समौले (इकट्ठे) ही देती हैं। इसके बाद कन्या माता वर वधू को साथ लेकर अपने घर चली आती है इस कर्म को 'जनानी मिलनी' कहते हैं।

प्रथा काण्डा

यह प्रथा वास्तव में 'देवकोत्थापन' और मण्डपोद्वासन' कर्म है। जो छन्ननियों में कन्या ने गौरीदेवी को स्थापन किया था उसी गौरीदेवी का पूजन और भेटा वर पक्ष से की जाती है जिस की विधि इस प्रकार है—वर की माता एक टोकरी में सुहागरात (गरी छुहारा) मिठाई, या लड्डु और फल तथा वधू

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कासालूचारपू साथ लेकर कन्यागृह में जाता है। वहां छत्रनियों के आगे वर वधू को बैठा कर वर का पुरोहित दीपक जला कर गरी छुहारा और फल गौरीदेवी की भेंटा करता है, तथा पितरों के निमित्त हाथ से लगवा लेता हैं। कन्या की झोली में १४ छुहारे जुट मिठाई फल तथा गरी छुहारा डाल देता है। और वर को फल दे देता है, काजल आंखों में लगाने के लिये देकर, मैंहदी हाथ से लगवा कर दी जाती हैं। बधूमाता भेंटा रूप में वरमाता को रुपये और वस्त्र देती हैं। इस कर्म को कांडा कहा जाता है। इसी दिन अच्छा मुहूर्त हो तो कुल देवता विसर्जन (वड्डी वधाना) किया जाता है। कुल-देवता विसर्जन के समय मिष्टान्न और दक्षिणा वर- वधू से कुल देवता के आगे रखवाई जाती हैं, और देवी को नमस्कार करवाने के बाद इस मन्त्र से पुरोहित प्रार्थना करता है।

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय।

आयुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिं यजमानं च वर्धय॥

अर्थ-हे ब्रह्मणस्पते! उठ, देवों को यज्ञों के साथ जगा। यजमान के आयु, प्राण, प्रजा, पशु और कीर्ति को बढ़ा।

इस को पढ़ने के बाद पुरोहित सबको मिष्टान्न का प्रसाद देता हैं, और कुलदेवता विसर्जन कर देता हैं।

इति वैवाहिक-प्रथा-दर्पण समाप्त।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बुंजाहियों की वैवाहिक प्रथाएँ

शगुन [सगन] लड़की वाले के घर

बुंजाही बरादरी में शकुन के समय नीचे लिखी वस्तुएँ दी जाती हैं। जो लड़की वाला लड़के वालों के घर पहुंचाता है।

७ छुहारे, १ जुट, केसर, फूलमाला, १ रुपया, मिठाई के पांच या सात थाल फल और रुपये यथा शक्ति होते हैं। रुपयों की गणना ग्यारह, इकत्तीस, इकावन, एक सौ एक तक होतीहैं।

शकुन लड़के वालों के घर

लड़के वाला अपने घर कुच्छ सम्बन्धि तथा इष्टमित्रों सहित बैठकर लड़के से पंडित जी गणपति पूजन कराकर ऊपर लिखे सामान में से केसर का तिलक लगा देते हैं और छुहारे, जुट्ट, मिठाई, रुपये लड़के की झोली में डाल देते हैं। इसके पश्चात् लड़की वालों के घर शकुन की चुन्नी भेज दी जाती है जिस में निम्न लिखित वस्तुएँ होती हैं।

साड़ी, जम्पर [कमीज़] भूषण (जेवर) लड्डू, (सवा सेर, ढाई सेर, या पांच सेर) ढाई सेर ब्रिद (बादाम, छुहारे, लाची दाना, पताशे छोटे, सौगी (किसमिस) ढाई जुट, ७ अट्टे मौली (मंगल सूत्र) १ पाओ मैंहदी, १ पाओ चीनी, और सवा पाव चावल।

ऊपर लिखी वस्तुएँ लड़की वाले के घर पुरोहित जी द्वारा भेज दी जाती हैं। और भूषण व कपड़े विवाह के पश्चात् लड़के वाले को लौटा दिये जाते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भोचा

विवाह से पूर्व (लड़के वाले दूर के रहने वाले हों तो एक मास और समीप रहने वाले हों तो विवाह के कुच्छ दिन पहले, या यथोचित समय में) भोचा अर्थात् साहे चिठी (लग्न पत्रिका) लड़की वाला लड़के वालों के घर भेज देता है। जिस में नीचे लिखी वस्तुएँ होती हैं। नारियल, १४ छुहारे १ जुट्ट १ तयोर (लड़के की माता के कपड़े) शृङ्गारदान, कूजे, या खांड ढ़ाई पाओ लग्न पत्रिका (साहेचिट्ठी) मैंहदी सवा पाओ, चावल ढ़ाई पांओ।

लड़के की झोली में साहेचिट्ठी डाली जाती है, और पंडितजी साहेचिट्ठी तथा कार्यक्रम सुना देते हैं। लड़की वाले पुरोहित को ढाई रुपये से लेकर ग्यारह रुपये तक यथा शक्ति लाग दे दिया जाता है।

हत्थ भरा मांयां

इसके पश्चात् हत्थ भरा मांयां शान्ति और मण्डल अपने अपने घर कर लिये जाते हैं। यदि परदेश में लड़के वालों ने विवाह करने जाना हो और रास्ते में नदी आती हो तो लड़के वाले लड़की वालों के घर शान्ति करते हैं।

विबाह के दिन यदि लड़के वालों ने परदेश से आना हो तो ब्रात के पहुंचने पर लड़की वाला उनका स्वागत करने के लिये जाता है, और लड़के वालों को जनवासे (जंज घर) में उतारा दे कर हलूफा (दही और लडडू) भेज देता है। किन्तु आजकल इसके स्थान पर पूरी आदि भोजन, या चाय आदि

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

खिलाते हैं। शान्ति हो जाने के पूर्व लड़के वाले तेल, १४ छुहारे, १ जुट्ट, १ नरेल, और १ रुपया लड़की वालों के घर भेज देते हैं। इसे तेल या छुहारा भेजना कहा जाता है।

कवार धोती

शान्ति हो जाने के बाद "कवार धोती" लड़के वाला भेजता है, जिसमें नीचे लिखी वस्तुएँ होती हैं।

१ धोती या ढ़ाई गज़ मलमल, चावल मैंहदी, मौली, छुहारे, जुट्ट, किसमिस, कनेर (कलियर) सतसरोच, खांड, (चीनी) नारियल, १ रुपया, मुन्दरी, नत्थ, यह सब वस्तुएँ पुरोहित जी और गुलाबपाशी के सहित लड़के के बहनोई या किसी सम्बन्धि को साथ ले जाकर लड़की का इन वस्तुओं से सगन कर आते हैं। इस समय कई लोग तो बाजा भी बजाते हैं। लड़की वाले मिठाई, और २) रुपये नज़र के जो सम्बन्धि साथ गया हो दे देते हैं, और पुरोहित जी लाग दे देते हैं।

घोड़ी

लड़के से गणपत्यादि पूजन कराने के पश्चात् मुकुट का पूजन करके लड़के के मस्तक पर बांध दिया जाता है और जंडी का पूजन करके लड़की वालों के घर पहुँच कर गुलाब छिड़का जाता है। पिता, बाबा, और मामा की तीन मिलनियें होती हैं। कई लोग बाबा के स्थान पर भाई की मिलनी करते हैं। इस के पश्चात् बरात के भोजन करने से पहले १ थाल भोजन का, १ जुट्ट, १४ छुहारे रुमाल ऊपर डालकर २१) रुपये लड़की के लिये भेजे जाते हैं। जिन में से लड़की वाला रुपये लौटा देता है और भोजन लड़की को खिला देता है। यदि बरात परदेश में जानी हो तो लड़के वाले यात्रा से एक दिन पहले

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"बई घोड़ी" कर लेते हैं। जिस में मुकुट नहीं बाधा जाता, केवल सेहरा चढ़ा कर जएडी, और बहनों की बागों का सन्न किया जाता है। उस दिन लड़का बाहर कहीं रहता है, अपने घर नहीं लौटता।

विवाह

विवाह के समय सुहागपुड़ा सुहागपटारी अन्तरपट की चादर और फूल सेहरे और छाया पात्र साथ लेकर वर पक्ष के दो सम्बन्धि वर के साथ जाते हैं। विवाह हो जाने के पश्चात् वर और कन्या से गोदानादि, दान दक्षिणा संकल्प कराने के पश्चात् आशीर्वाद रूप फूल सेहरे चढ़ा कर मुकुट बढ़ा दिया जाता है, और वर अपने स्थान पर आ जाने के बाद डोली लाने के लिये नियत समय परी बिद साथ ले जाकर कन्या गृह में वर पक्ष के लोग दाज देख लेते हैं। भोजन करने के पश्चात् वरी दिखा कर लड़की को पहनने के लिये लड़की की माता की झोली में वस्त्र दे दिये जाते हैं और शगन शास्त्र करने के बाद खट्ट दान करके डोली (कन्या विदा) कर दी जाती है। विवाह के दिन या किसी नियत दिन को जनानी मिलनी (सम्बन्धि-नियों का मिलाप) होती है। कई लोग स्त्रियों को भी साथ ही बुला लेते हैं, और जनानी मिलनी कर देते हैं।

दिल्ली वाले चारजाति क्षत्रियों की प्रथाएं

इन की प्रथाओं में कढ़ाई पूजन, हलूफा (ढंग) तनी छूना और रसो, कवारधोर्त' का भेद ही है। विशेष ज्ञान के लिये इस बरादरी की छपाई हुई पुस्तक "रस्म-रिवाज खत्रियान" जो कि स्वर्गीय चौ० ला० बहादुर सिंह खन्ना प्रेजीडेएट, खत्री उपकारक पंचायत देहली, की लिखी हुई है, खत्री उपकारक विद्यालय कटरा नील, बाग दिवार दिल्ली से मिलती है, पढ़ें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुस्तक प्रकाशन में आर्थिक सहायकों की नामावली

रुपये　　　　　　　　नाम

३००) श्री बाबा लालू जसराय जी, फण्ड के

२००) लाला दुर्गादास जी मिहिरा (लाली शाह) प्रैजिडैंट अमृतसर पीसगुड्स ऐसोसियेशन, अमृतसर।

२००) फ़र्म मैसर्ज़ जयदयाल कपूर, ऐण्ड सन्ज़ सौदागरान कागज़, चावड़ी बाज़ार, देहली।

१०१) लाला मुलखराज जी मिहिरा–मालिक एलफिंसटन होटल, हौर्न बाई रोड, बम्बई।

१०१) लाला चरणदास जी सेठ–फ़र्म मैसर्ज़ हरिराम दीनानाथ १६० क्रौस स्ट्रीट, कलकत्ता।

५१) राए बहादुर लाला जानकीदास जी कपूर, जनरल मर्चैंट्स, कनाट प्लेस, नई देहली।

५०) राए बहादुर लाला लक्ष्मणदास जी मिहिरा १७ राम किशोर रोड, सिविल लाइन, देहली।

Ac. Gunratnasuri MS　　Jin Gun Aradhak Trust

५०) लाला दयाराम जी कपूर, हार्डवेयर मर्चेंट्स हौजकाजी देहली।

३१) लाला लच्याराम जी कपूर, प्रौपर्टी एजएट्स, कनाट प्लेस नई देहली।

३०) लाला लालचन्द जी खन्ना बैंकर, डिपटी गंज, देहली।

२५) लाला किशन चन्द कक्कड़, मालिक, क्लिफटन कम्पनी करोल बाग, नई देहली।

२५) लाला अमरनाथ जी मिहिरा, औफ मैसर्ज धनीराम एण्ड सन्ज, हौज काजी देहली।

२५) गुप्तदान।

२०) राए बहादुर लाला देवीचन्दजी खन्ना, टिम्बर मर्चेंटस एण्ड गवर्नमैण्ट कन्स्ट्रैक्टर, १६A/१६ अजमलखां रोड दिल्ली।

२०) लाला सीताराम जी मिहिरा, मैनेजिंग डायरैक्टर कमर्शल बैंक आफ इण्डिया, चान्दनी चौक देहली।

१५) लाला देवी दास जी कपूर, मालिक फर्म रवे ब्रादर्ज चीपजोन कवीजन्वे न्यू देहली।

१०) लाला रामलाल जी खन्ना, बी० ए० कैसरे हिन्द सुप्रिन्टैण्डैण्ट महकमा डाक, नई देहली।

१०) लाला लालचन्द जी खन्ना एम० ए० इनकमटैक्स औफिसर (रिटायर्ड) नई देहली

१०) लाला नरेन्द्रनाथ जी सेठ, मैनेजर युनाइटिड कमर्शल बैंक लिमिटिड, कलकत्ता।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

१०) लाला सत्यप्रकाश कपूर (ज्यूलर) मालिक 'कपूर दी हट्टी' नई देहली।

१०) राए साहिब लाला खजान सिंह जी मिहिरा, गवर्नमैंण्ट पैंशनर तुर्कमान गेट देहली।

१०) मैसर्ज़ ऐच० ऐम० डोयल कपूर मशीनरी मर्चैंट्स हौज़ काज़ी देहली।

१०) लाला बिशनदास जी मिहिरा, मालिक मैटरो होटल नई देहली।

१०) लाला देवीदास जी कपूर बैंकर सराफा मार्कीट चान्दनी चौक देहली।

१०) डाक्टर लाल चन्द जी कपूर, ओरिजनल रोड नई देहली।

१०) चौधरी लाला हरिचन्द जी खन्ना, इण्डियन वाच कम्पनी चान्दनी चौक, देहली।

१०) लाला गणपतराम जी कपूर (बैंकर औफ़ लाहौर) गुड़गांवा।

१०) खन्ना हाफ़ टोन कम्पनी हौज़ काज़ी देहली।

१०) राम रक्खामल्ल जी कपूर, प्रकाशक

१३७४) — जोड़

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुस्तक प्रकाशन में व्यय (खर्च)

कागज़	४०२—१०—०
छपाई	८०५—१२—०
ब्लाक बनवाई	३७—१५—०
जिल्द बंधवाई	७०— ०—०
इस पुस्तक के नवीन संस्करण के उपलक्ष में, पं० भक्तराम जी को उपहार (नज़राना) रूप घड़ी	५०— ०—०
जोड़	१३६६— ५—०
आय	१३७४— ०—०
व्यय	१३६६— ५—०
शेष	७—११—०

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुस्तक मिलने के पते

१—रामरक्खा मल्ल कपूर मन्त्री क्षत्रिय सभा लाहौर टी० २३ अटलग्रो समीप सैंट्रल तार घर नई देहली ।

२—मैसर्ज़ धनीराम एण्ड सन्ज़ हार्डवेयर, टूल व मशीनरी मर्चैंटस हौज़क़ाज़ी देहली ।

३—मैसर्ज़ जयदयाल कपूर एण्ड सन्ज़ सौदागरान काग़ज़ चावड़ी बाज़ार देहली ।

४—चौधरी हरिचन्द जी खन्ना इण्डियन वाच कम्पनी समीप टौनहाल चान्दनी चौक देहली ।

५—पण्डित भक्तराम जी भींगण मालिक चमन प्रिन्टिंग प्रेस गली कैत वाली पहाड़ गंज नई देहली ।

नोट- ... १ आने

भेजे ... जी जावेगी ।

नोट- ...

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust